बापूकी
प्रेम-प्रसादी



प्रेम



[illegible]

घनश्यामदास बिड़ला

बापू की प्रेम प्रसादी

खण्ड ३

गांधी-युग की
एक महत्वपूर्ण पत्रावली

हिंदी भवन प्रकाशन

• प्रकाशक भारतीय विद्या भवन बम्बई • प्रथम संस्करण १९७८
• मूल्य दस रुपये • मुद्रक रूपक प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली ३२



સમર્પણ

બાપૂકી યહ પ્રેમ પ્રસાદી બાપૂકો સમર્પણ

બાપૂને સમય સમય પર મુઝે જો પત્ર લિ
। મૈંને જો ઉત્તર લિખા ઉન સબકા યહ સં
હૈ। મહાદેવ ભાઈ ઇત્યાદિને ભી જો મુઝે લિ
આ મૈંને ઉત્તર લિખા, ઉન સબકા ભી સમાવેશ ઇ
ઇસલિયે હૈ કિ વે સબ પત્ર-વ્યવહાર બાપૂકી
પ્રેરણા યા સમ્મતિ સે હી હુઆ હૈ। મૈંને
દેવદાસ કો જો લિખા વહ સબ બાપૂ કે લિયે હી
ઉન સબકો બાપૂકે હી પત્ર વ્યવહાર માન
ઇસ પ્રકાશન મેં ઇસલિયે સ્થાન દે દિયા
કિ યદિ મેરે પત્રોં કો નિકાલ દિયા જા
તો સારી શૃંખલા ટૂટ જાતી હૈ।

બાપૂકે અધિકતર પત્ર હિંદી મેં હી
પર યદિ કભી ઉન્હોંને મુઝે અંગ્રેજી મેં લિ

उनकी ओर से महादेवभाई इत्यादि ने अंग्रेजी में
पुस्तिका, तो उन सब ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद
करके इसमें समावेश हुआ है। जब अंग्रेजी का
प्रकाशन होगा तो उसी तरह सब हिन्दी ग्रंथों का
अंग्रेजी में अनुवाद करके समावेश होगा।

इस प्रकाशन से बापू के मानस को प्रत्यक्ष करने का जन समाज को एक अनुपम अवसर मिल जाता है। शिक्षा भी मिलती है, क्योंकि बापू के ग्रंथों में सब तरह का मसाला है। सब से महत्व की बात यह समझनी है कि इन सब में व्यक्तिगत आदेश, राजनैतिक और धार्मिक आदेश जो भी है वह एक महात्मा के हृदय की पुकार, एक साधु पुरुष के और एक पुरुष के उद्गार हैं, जो आम जन समाज के जीवन में उपयोगी और शिक्षाप्रद हैं और अपने जीवन में उतारा करने यो

के ध्यान का आसन है मेरा [illegible]
[illegible]
में [illegible] और मैंने उनकी [illegible]
[illegible] यह प्रकाशन है। ध्यान का [illegible]
और [illegible] प्रकार [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible]
[illegible] दिया। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible]
[illegible]।

[illegible]
[illegible] है। [illegible]

मैं मानता हूँ उनके बापू [illegible] लेखों
लिखे हैं। बापू एक माँ बन गये हैं। उन्होंने
इस [illegible] लिखकर मुझे [illegible]
किया।

छपाने का हेतु तो यह है कि लोगों को बापू
के मनुष्य हृदय की [illegible] महात्मा गांधी - [illegible] में
महात्मापन में। मानना भी हेतु है कि मैं दो
[illegible] के बाद [illegible]
[illegible], जो कि बापू का [illegible]
को दो [illegible] होगा। [illegible]
[illegible] है। इसलिये भी यह [illegible]
सकते हैं।

मेरे जीवन में ईश्वर की यह दया रही है
कि मैं बहुत प्रेम पाता रहा हूँ - यह सम्पर्क [illegible]
[illegible] रहा - और सम्पर्क से मैं बहुत कुछ सीखा हूँ।
उनके द्वारा सरदार पटेल जैसे [illegible] भी मैंने
पाये। भगवान का यह [illegible] उपकार [illegible]

। कार्य की सिद्धि के मुझे उत्तेजित करते हैं
क्योंकि -

'सफलता की किरण धुंधला
उभरता है दिल में आता है

चलती हुई गुदड़ी रोगों के
देख सकती नारी हैं''

ने जो निरादर है उनके बाबत [illegible] [illegible]
[illegible] है। बाबा एक बापु पूछते है। उन्होंने
[illegible] [illegible] [illegible] मुझे [illegible] [illegible]
किया।

उपवासका हेतु तो यह है कि लोगोंको बापू
के मृत्युसे [illegible] महादेवभाईकी - [illegible]
[illegible]। दूसरा भी हेतु है कि मैं हो
[illegible] के बाद [illegible] [illegible]
[illegible], क्यों कि बापू [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] हो। [illegible]
मेरी [illegible] है। इसलिये भी यह [illegible]
[illegible] है।

मेरे जीवनमें ईश्वरकी यह दया रही है
कि मैं [illegible] प्रेमपात्र [illegible] - यह [illegible]
[illegible] - उनके [illegible] मैं [illegible]।
उनके [illegible] [illegible] [illegible] जिनमें [illegible]
[illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]

...ની [illegible] મુઝે ઉત્કંઠિત કિયા હૈ.

...કિ -

'[illegible]
[illegible] કરતી હૈ

[illegible] હુઈ [illegible]
[illegible] ગાતી હૈ"

ઘનશ્યામદાસ

प्रस्तावना

गाधीजी पत्र व्यवहार म बहुत ही नियमित थ। पत्र-व्यवहार के द्वारा ही वे असख्य लोगा स हार्दिक सम्बध रख सकत थे और उन्ह जीवन के ऊचे आदश सिद्ध करने के लिए प्रेरित करत थे। जिसके साथ सम्ब ध आया उसके व्यक्तिगत जीवन म हृदय से प्रवेश पाना उसकी योग्यता उसकी खूबी और उसकी गहराई को समझकर उसके विकास मे मदद देना, यह थी उनके पत्र-व्यवहार की विशेषता। गाधीजी का पत्र-साहित्य उनके लेखा और भाषणा के जितना ही महत्व का है। उनके व्यक्तित्व को समझने के लिए उनका यह पत्र साहित्य बहुत ही उपयोगी है। मैंने देखा है कि पत्रो म उनकी लेखन शली भी अनोखी होती ह। ससार मे शायद ही ऐसा कोई नेता हुआ होगा जिसन अपन पीछे गाधीजी के जितना पत्र व्यवहार छोड रखा हो।

गाधीजी का पत्र व्यवहार पढते समय मुझे हमेशा यही प्रतीत हुआ है, माना मैं पवित्र गगाजी म स्नान और पान कर रहा हू। मुझे उसम हमेशा पवित्रता और प्रसन्नता का ही अनुभव हुआ है। उसके इद गिद का वायुमडल पावन, प्राणदायी और प्रशमकारी है।

इसीलिए जब श्री घनश्यामदासजी बिडला न गाधीजी के साथ का अपना पत्र-व्यवहार मेरे पास भेज दिया तो मुझे बडा आनन्द हुआ और उत्साह के साथ मैं उसे पढने लगा। जसे-जसे पढता गया वसे वसे स्पष्ट होता गया कि यह केवल घनश्यामदासजी और गाधीजी के बीच का ही पत्र व्यवहार नही है। इसम ता गाधीजी के अभिन्न साथी स्व० महादेवभाइ देसाइ और घनश्यामदासजी के बाच का पत्र-व्यवहार ही सबस अधिक है। इसके अतिरिक्त गाधीजी के अन्य साथियो, देश के बड़े नताओ और कायकर्ताओ अग्रज वाइसरायो और कूटनीतिज्ञा के साथ का पत्र-व्यवहार भी है और उनकी मुलाकाता का विवरण भी।

सक्षेप म—हमारे युग का एक महत्व का इतिहास इसमे भरा हुआ है।

यह दखकर मेरे मुह से उद्गार निकल पडा

'काश! यह सारी सामग्री पाच साल पहले मेरे हाथा मे आती।'

आज मेरी उम्र इक्यानवे वर्ष की है। विस्मरण ने अपनी हुकूमत मेरे दिमाग पर जोरों से चलाना शुरू कर दिया है। कई महत्व की बातें अब बड़ी रफ्तार के साथ भूलता जा रहा हूं। मुझे विषाद के साथ कबूल करना चाहिए कि पांच साल पहले यह सामग्री मेरे हाथ में आती तो जितनी गहराई में उतरकर मैं उसमें अवगाहन कर सकता उतना आज नहीं कर पाऊंगा। फिर भी मैं मानता हूं कि *मूलभूत तत्वों के चिंतन की बैठक अब भी मुकम्मल साबूत है।* उसी के सहारे मैं इस सागर में डुबकी लगाने का ढाढ़स कर रहा हूं।

सन १६१५ के पहले हमारे देशवासियों ने स्वराज्य प्राप्ति के तरह-तरह के प्रयोग आजमाकर देखे थे। हमने विद्रोह का प्रयोग करके देखा। प्रार्थना विनय का मार्ग भी आजमाया। औद्योगिक प्रगति में आगे बढ़ने के प्रयत्न किये। सामाजिक सुधार के आंदोलन चलाये। धर्म निष्ठा बढ़ाने की भी कोशिशें की। स्वदेशी और बहिष्कार के रास्ते से भी चले और बम पिस्तौल का मार्ग भी अपनाकर देखा। स्वराज्य के लिए जो जो इलाज सूझे, या सुझाये गये सब लगन के साथ आजमा कर हम भारतवासियों ने देखे। फिर भी न तो स्वराज्य नजदीक आया, न आशा की कोई किरण दिखाई दी। हमारे चंद प्रयत्न तो अंग्रेजों का राज हटाने के बदले उसे मजबूत करने में ही मददगार हुए। देश बिलकुल घोर निराशा में पड़ा हुआ था, जब सन १६१५ में गांधीजी दक्षिण आफ्रिका से भारत लौट आये।

दक्षिण आफ्रिका में जहां न हमारा राज था न वायुमंडल वहां गांधीजी ने अनपढ़, करीब-करीब असंस्कारी और दुर्दैवी भारतीयों की मदद से सत्याग्रह का एक तेजस्वी आंदोलन चलाकर उसमें सफलता पाई। दक्षिण आफ्रिका के इस अभिनव प्रयोग की और उसके नेता कर्मवीर गांधी की खबरें हमने यहां बड़े आदर के साथ पढ़ी थीं या सुनी थीं। भारत लौटते ही जब गांधीजी ने आसेतु हिमाचल यात्रा करके सत्याग्रह की अपनी जीवन दृष्टि को समझाना शुरू किया, तब स्वराज्य की जिन्हें सचमुच भूख थी वे सब लोग उनकी ओर आकर्षित हुए। देखते ही-देखते गांधीजी के हृदय का तार राष्ट्र हृदय के तार के साथ एकराग हो गया और सारा देश उनके पीछे निःसंकोच होकर चलने के लिए तैयार हुआ। गांधीजी भारतीय संस्कृति और भारतीय पुरुषार्थ के महान प्रतिनिधि बने। त्याग संयम और तेजस्विता की भाषा बोलने लगे जो भारतीय लोकहृदय की भाषा थी। उनकी असाधारण विनम्रता और लोकोत्तर आत्मविश्वास को देखकर देश का विश्वास हुआ कि अवश्य ही यह कुछ करके दिखानेवाले हैं।

और जिस प्रकार सभी नदियां अपना सारा जल लेकर समुद्र को जा मिलती हैं उसी प्रकार स्वराज्य की लालसावाले हम भिन्न भिन्न संस्कारों, पृष्ठभूमियों

और जीवन प्रणालिया के सभी लोग गाधीजी से जाकर मिले। प्रसन्नता के साथ हमने उनके नेतृत्व को स्वीकार किया और उनके दिखाये हुए कार्यों म अपना अपना हिस्सा अदा करने के लिए प्रवत्त हुए।

उस समय उनके निकट सपक मे आये हुए, उनके गिन चुने आत्मीय जना म श्री घनश्यामदासजी बिडला का स्थान अनोखा है।

यह तो सभी जानते हैं कि घनश्यामदासजी देश के इन गिने धनिका मे स एक है। उनका मुख्य क्षेत्र तो औद्योगिक ही रहा ह। लाग यह भी जानते हैं कि उन्होने खूब कमाया है और अनेक सत्कार्यों म मुक्तहस्त स खूब खच भी किया है। गाधीजी को जब भी धन की जरूरत महसूस हुई, उन्होने बिना सकोच घनश्यामदासजी के सामने वह रखी और घनश्यामदासजी न बिना विलब के उसकी पूर्ति की है।

गाधीजी की अनेक शिक्षाओ मे एक महत्व की शिक्षा थी कि 'धनिको को अपने-आपको अपनी सपत्ति के धनी नही मानना चाहिए बल्कि ट्रस्टी बनकर समाज की भलाई के लिए उसका उपयोग करना चाहिए।" 'यह समाज की ही सपत्ति मेरे पास है, मैं उसका धरोहर या विश्वस्त हू' ऐसा समझकर ही उसका विनियोग करना चाहिए। घनश्यामदासजी को यह शिक्षा तत्वत मान्य न होते हुए भी उन्होने वह अच्छी तरह से हृदयगम की है। देश म अनेक जगहा पर बिडला के नाम स जो शिक्षण सस्थाए धमशालाए अस्पताल आदि चल रह है, वे इसकी गवाही देत है। उनकी अपनी सस्थाओ के अलावा ऐसी अनेक सस्थाए देश म हैं जो प्रधानतया बिडलो क दान स चल रही हैं। गाधीजी की करीब करीब सभी सस्थाए घनश्यामदासजी के धन से लाभान्वित हुई है। स्व० जमनालालजी बजाज को छोडकर शायद ही दूसरा कोई धनिक होगा, जिसने घनश्यामदासजी के जितना गाधी-काम का आर्थिक बोझ उठाया हो।

एक प्रसिद्ध किस्सा है

गाधीजी दिल्ली आये हुए थे। उन्ही दिनो गुरुदेव रवीन्द्रनाथ भी अपनी विश्वभारती क लिए धन सग्रह करने हेतु दिल्ली पहुचे। वे जगह जगह अपने नाटय और नत्य का कायक्रम रखत थ और बाद मे लोगो स धन के लिए प्राथना करत थ। गाधीजी का यह सुनकर बडा दुख हुआ। इतना बडा पुरुष बुढापे म धन इकट्ठा करने क लिए सो भी केवल साठ हजार रुपयो क लिए इस प्रकार अपने नाटय और नृत्य का प्रदशन करता फिरे यह गाधीजी को असह्य हुआ। उन्हे तुरत घनश्यामदासजी का ही स्मरण हुआ। महादेवभाई स उन्हे कहलवा दिया आप अपने धनी मित्रो को लिखें और छह जन दस-दस हजार की रकम गुरुदेव को भेजकर हिन्दुस्तान को इस शम स बचा लें।

कहने की आवश्यकता नहीं कि स्वयं घनश्यामदासजी ने यह पूरी रकम गुरुदेव को गुप्तदान के रूप में भेजकर उनको चिंतामुक्त कर दिया।

गांधीजी ने अपनी संस्थाओं के लिए तो उनसे रुपये लिये ही, दूसरों को भी इस तरह दिलाये। इस पत्र संग्रह में ऐसे कई प्रमाण मिलेंगे, जिनसे यह मालूम होगा कि गांधीजी ने किन किन लोगों को बिड़लाजी के द्वारा आर्थिक सहायता पहुंचाई थी और बिड़लाजी ने किस हद तक अपनी संपत्ति गांधीजी के चरणों में अर्पित की थी।

सचमुच एक तरह से यह एक अद्वितीय सम्बन्ध था।

लेकिन इस पर से कोई यह न मान बैठे कि उदारता के साथ दान देना इतना ही केवल घनश्यामदासजी का गांधी कार्य के साथ सम्बन्ध रहा है।

स्वराज्य की जो साधना गांधीजी ने हमारे सामने रखी उसके दो प्रमुख अंग थे। एक था रचनात्मक और दूसरा राजनैतिक।

गांधीजी ने देखा कि 'सामाजिक प्रतिष्ठा का उच्च नीच भाव' और 'सांस्कृतिक प्रणाली के लिए पसन्द किया हुआ आप पर भाव' इन दो तत्वों की नींव पर हमने अपना समाज विधान तैयार किया है। परिणाम स्वरूप शांति स्वास्थ्य और सहजीवन के तत्व हमारे समाज जीवन में होते हुए भी हम राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता को संभालने में असमर्थ हुए हैं। भारतवर्ष का पूरा इतिहास इस कमजोरी का प्रमाण रहा है।

हमारी इस राष्ट्रीय कमजोरी को हटाकर भविष्य के प्राणवान सर्वोदयी नव समाज का निर्माण करना गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता अस्पृश्यता निवारण खादी ग्रामोद्योग राष्ट्रभाषा प्रचार जैसे अठारह-बीस कार्यक्रम देश के सामने रखे और कहा कि इस कार्यक्रम का पूरा अमल ही पूर्ण स्वराज्य है।

गांधीजी का यह कार्यक्रम केवल दया धर्म मूलक सेवा कार्य का कार्यक्रम नहीं था बल्कि बहुवंशी बहुजाति बहुधर्मी बहुभाषी विशाल भारत को संघटित करने का एक दीर्घदर्शी प्रयास था। मानस परिवर्तन के द्वारा जीवन-परिवर्तन और जीवन परिवर्तन के द्वारा समाज परिवर्तन की सार्वभौम क्रांति का यह अभिक्रम था। इसमें गांधीजी ने पुराने मूल्यों को नया रूप देना प्रारम्भ किया था।

घनश्यामदासजी ने इस कार्यक्रम की क्रांतिकारी संभावनाओं को पहचानकर उसे हृदय से अपनाया। हिन्दू मुस्लिम एकता और अस्पृश्यता निवारण जैसे कार्यक्रमों में उनकी कितनी गहरी दिलचस्पी थी और उनको अमल में लाने के लिए उन्होंने क्या क्या किया इसका प्रमाण इस संग्रह के कई पत्र देते हैं। गांधीजी के

साथ उनका अगर कही मतभेद रहा हो तो वह कुछ अश म खादी की अथनीति के बारे म रहा होगा। इस मामले मे व स्वतत विचार रखत हैं। फिर भी ध्यान खीचनवाली बात तो यह है कि स्वतत्र विचार रखते हुए भी एक निष्ठावान सनिक की भाति व चरखा कातत रहे, यहा तक कि उन्होने खादी का व्रत भी लिया। उनके इस अनुशासन प्रिय स्वभाव पर गाधीजी मुग्ध थे। उन्होने अपनी खुशी व्यक्त करने के लिए घनश्यामदासजी को एक खास किस्म का चरखा भी भेंट म दिया था और उनके कते हुए सूत की सराहना करके 'जिस पवित्र काय का आपने आरम्भ किया है, उसको आप हरगिज न छोडें' इस प्रकार की नसीहत भी दी थी।

गाधीजी की एक विशषता थी। व मनुष्य के सदगुणो को तुरत परख लत थे और देश हित के लिए उसका पूण उपयोग कर लेते थ। हमारा अपने ऊपर जितना विश्वास होता है, उससे कही अधिक विश्वास गाधीजी का हम पर था। हमको गढते समय वे 'हमारी कमजोर श्रद्धा को मजबूत बनाते थे' और अत म हमारी सामान्य शक्ति स अधिक काम सहज ही हमस करा लेत थे।

धनिक होते हुए भी धन की माया से अलिप्त रहने की घनश्यामदासजी की आकाक्षा को गाधीजी न परख लिया था। उनकी व्यवहार कुशलता को भी परख लिया था। उनके विकास म मददगार होने के लिए गाधीजी न जो उनका माग दशन किया है उसम व्यापक मनुष्य जीवन के अनेक छोटे मोटे पहलुओ पर एक क्रान्तदर्शी शिक्षा शास्त्री का प्रकाश हमे देखन को मिलता है। गाधीजी के पत्रो की यह सबसे बडी विशेषता है।

इसम भी विशेष बात तो यह है कि स्वय घनश्यामदासजी के विनम्र और निमल जीवन का चित्र भी हम इस पत्र सग्रह म देखने को मिलता है।

घनश्यामदासजी गाधीजी के प्रति आकर्षित हुए, गाधीजी की धम परायणता, नकनीयती और सत्य की खोज की उत्कटता को देखकर वह धीरे धीरे उनके परमभक्त बन गये। गाधीजी जो भी जिम्मेदारी उठात थे उसका बोझ अपने सिर पर लेना घनश्यामदासजी न अपना कत्तव्य माना और पूरे हृदय के साथ वह अदा किया।

मगर उन्होन अपना पूरा हृदय उत्साह के साथ उडेल दिया था गाधीजी के राजनतिक काय मे। गाधीजी और सरकार के बीच उन दिनो पर्दे की आड म जो कुछ चलता था उसका भीतरी इतिहास हम इस पुस्तक म पढन को मिलता है। हमारे युग के व दिन ही ऐसे थ कि प्रतिदिन कुछ-न-कुछ नया इतिहास गाधीजी के आस पास हुआ या बना करता था। घनश्यामदासजी को गाधी काय के इसी अग

में विशेष और गहरी रुचि थी। हर छोटी-बड़ी बात में गहराई के साथ ध्यान देते देते वे धीरे धीरे उन गिने चुने व्यक्तियों में माने जाने लगे जो गांधीजी का राजनैतिक मानस अच्छी तरह से समझते हैं। देखते ही देखते वे गांधीजी के राजनैतिक मानस के विश्वासी व्याख्याता के रूप में अंग्रेज राजनीतिज्ञों के सामने आत्मविश्वास के साथ पेश आने लगे। गांधीजी किस दिशा में सोच रहे हैं इसका ख्याल अंग्रेज राजनीतिज्ञों को करा देना और अंग्रेजों के मानस का ख्याल गांधीजी को करा देना यह उन्होंने अपनी जिम्मेदारी मानी। यह स्वेच्छा-स्वीकृत जिम्मेदारी थी जो उन्होंने असाधारण कुशलता और सफलता के साथ निभाई।

इस पुस्तक में घनश्यामदासजी का जो चित्र विशेष रूप से नजर के सामने आता है वह है एक कुशल राजनीतिज्ञ का और वह कौरवों के दरबार में समझौते के लिए गये हुए श्रीकृष्ण का स्मरण हमें करा देता है।

करीब बत्तीस साल तक चले हुए इस पत्र व्यवहार को देखकर प्रथम मेरे मन में आया कि मैं इसकी तीन स्वतंत्र पुस्तकें बनाने की सलाह दूं। एक में सिर्फ गांधीजी और घनश्यामदासजी के बीच का ही पत्र-व्यवहार हो, जिससे हम इस बात का दर्शन कर सकें कि कितने विविध विषयों की गहराई में उतरकर और प्रत्येक विषय का मर्म समझकर गांधीजी कैसे अपने माने हुए आत्मीय जनों का मार्गदर्शन करते थे और किस प्रकार अपना वात्सल्य उन पर उड़ेलते थे।

दूसरी पुस्तक में सिर्फ महादेवभाई और घनश्यामदासजी के बीच का ही पत्र व्यवहार हो जिसमें दो निकटतम स्नेहियों के निश्चिंत वार्तालाप की खुशबू का हम अनुभव करें।

और तीसरी में बाकी की सभी सामग्री हो जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व रखती है।

मगर सोचने पर मुझे लगा कि नहीं, जो सामग्री यहां है वह वैसी ही एकत्र प्रकाशित की जानी चाहिए जैसी वह क्रमशः यहां दी गई है भले ही पुस्तक का आकार बढ़ जाय या इसे दो जिल्दों में प्रकाशित करना पड़े। यह कोई मनोरंजन के लिए लिखी हुई पुस्तक नहीं है। यह तो एक सागर है जो पूरे ऐतिहासिक महत्व रखता है। आनेवाली पीढ़ियां जब हमारे जमाने का समग्र की कोशिश करेंगी तब उन्हें यह सन्दर्भ-ग्रंथ बहुत ही उपयोगी और आवश्यक मालूम होगा। इतिहास के विद्यार्थियों के लिए इसमें काफी महत्व की सामग्री भरी हुई मिलेगी। यह एक बहुत ही कीमती ऐतिहासिक दस्तावेज है जिसका पूरा महत्व भविष्य की पीढ़ियां ही जानेंगी।

मर जस गाधी भक्त को तो इससे लोकोत्तर प्रेरणा मिली है।

इस उम्र म और तबीयत की ऐसी हालत म यह प्रस्तावना तयार कर सका उसका बहुत बडा श्रेय मेरे तरुण साथी श्री रवीद्र केलेकर की मदद का है।

स्नेहाधीन,

काका कालेलकर के
सादर वंदेमातरम्

अनुक्रमणिका

१९३७

बिना तारीख के पत्र

१९३८

बिना तारीख के पत्र

बापू की प्रेम-प्रसादी

१९३७ के पत्र

१

ग्रासवेनर हाउस
पार्क लेन
लन्दन, डब्ल्यू० १
[illegible] जुलाई १९३७

प्रिय महादेवभाई

मुझे रायटर से अभी-अभी फोन द्वारा खबर मिली कि बापू के कहने पर कांग्रेस कार्यकारिणी ने छह प्रांतों में पद ग्रहण करने का निर्णय लिया है। मैं बेहद खुश हुआ। मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि बापू ने बिलकुल ठीक निर्णय लिया है। ऐसा निर्णय करवाना किसी और के लिए सम्भव नहीं था। मेरी तो यही धारणा है कि मांगों को अंशतः स्वीकार कर लिया गया है, पर जैसी परिस्थिति है, उसे देखते हुए किसी साधारण कोटि के राजनेता के लिए यह कदम उठाने का साहस करना सम्भव नहीं होता। यह हमारा परीक्षा काल है और इसमें मुझे कोई सन्देह नहीं है कि बापू के मार्गदर्शन में कांग्रेस मंत्रि मंडल न केवल सबसे बढ़-चढ़ कर सफल सिद्ध होंगे, बल्कि हम अपने अंतिम लक्ष्य की ओर भी अग्रसर हो सकेंगे।

मेरी धारणा है कि बापू ने अपने अंतःकरण की प्रेरणा से यह जान लिया था कि इस समय यही सलाह देना आवश्यक है। पर मेरी यह धारणा कि इस निर्णय में मेरे पत्र ने भी कुछ हाथ बटाया होगा, एक मिथ्या गर्व तो नहीं है? कम-से-कम इतना तो है ही कि यद्यपि मैं बापू के फार्मूले को पूर्णतया स्वीकृत कराने में सफल नहीं हुआ तो भी बापू की सफलता की राह में मुझे भी सफलता मिली। पर यह भी हो सकता है कि ऐसी बात न हो।

अब मैं कल लार्ड हैलिफैक्स से मिलूंगा और दो एक दिन में सर फाइण्लेटर स्टीवार्ट से भेंट करूंगा। साथ ही, लार्ड जेटलैंड तथा लार्ड लोदियन से भी दुबारा मिलूंगा। यहां से विदा होने से पहले दो एक अन्य राजनेताओं से भी मिलने का विचार है। मैं उन्हें यह बताऊंगा कि कांग्रेस को पद-ग्रहण करने के लिए राजी करने में कठिनाई हुई है और यदि अब उन्होंने इस राजनैतिक खेल में बराबर के औचित्य का ध्यान नहीं रखा तो कांग्रेस को सत्ता बनाए रखना सम्भव नहीं होगा। मैं उन्हें इस बात की आवश्यकता सुझाऊंगा कि सरकारी अमले को सीमा उल्लंघन न करने दिया जाए। मैं उन्हें यह भी बताऊंगा कि कांग्रेस के शासन-काल में उनमें

से दो एक राजनेताओ का भारत भ्रमण करना अच्छा होगा।

मैं तुम्हें यह बता दू कि राजाजी के पत्र ने मेरी आशाओ पर तुषारपात कर दिया था तब भी मैंने काग्रेस द्वारा यह पद ग्रहण किये जाने की अपनी आशा नही गवाई। आशा बने रहने का एक कारण यह भी था कि तुमने खामोशी अख्तियार कर रखी थी। तुम जानते ही हो कि मेरे यहा आने के बाद तुमने मुझे एक भी चिट्ठी नही लिखी, और मैंने स्वगत कहा कि यह मौन व्रत आकस्मिक नही हो सकता, अवश्य ही इसके पीछे बापू का निर्देश छिपा हुआ है। इसका एक ही अथ था कि बापू का मन किस दिशा मे दौड रहा है इसका सकेत तुम्हारे पत्र से कही प्रकट न हो जाय। शायद वर्धा म होनेवाली कायकारिणी की बैठक तक बापू यह बात मन ही म रखना चाहते थे।

जब मैंने अगाथा के पास लोदियन को लिखे गए बापू के पत्र की नकल और खुद तुम्हारा पत्र देखा तो मैंने मन ही मन उनम कही गई बातो का अपना ही अथ लगा लिया और मैं समझ गया कि मुझे तुमने जान बूझकर पत्र नही लिखा है और इसका कुछ कारण है। मेरी इसी प्रतीति ने मेरी आशा को बलवान बनाया, और जब आज रायटर स मुझे पता चला कि काग्रेस ने पद ग्रहण करने का निणय लिया है तो मुझे बडा हप हुआ आश्चय बिलकुल नही हुआ।

अब तुम लिखो कि मैं यहा लोगो से क्या कहू ? मुझे पूरी तरह सूचित रखो ताकि मेरे लिए जो कुछ करना सम्भव है सो मैं कर सकू। मैं तुम्ह पिछले पत्र म लिख ही चुका हू कि सफल मनोरथ न रहने पर भी मैंने यहा लोगो को प्रभावित अवश्य किया है। मेरा विश्वास है कि यह व्यक्तिगत सम्पक आगे चलकर बहुत काम आएगा।

बापू से कह देना कि मैं बिलकुल स्वस्थ हू। शुरू शुरू म जब मेरे पास विशेष काम नही था तो मैंने पटेबाजी सीखने म कुछ समय बिताना शुरू किया। जब काम बढ गया तो पटेबाजी का प्रशिक्षण लेना बन्द कर दिया। पर मैं व्यायाम खूब करता हू। मेरे लिए पटेबाजी कोई नयी चीज नही थी। लडकपन मे खब लाठी चलाई है खब कुश्ती लडी है। मैं वह पुराना अनुभव ताजा करना चाहता था। पर यह सब बेकार लिख रहा हू क्योकि यह सब तुम्हारे विनोद की सामग्री बन कर रह जाएगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

२

ग्रासवेनर हाउस
पार्क लेन
लन्दन, डब्ल्यू० १
८ जुलाई, १९३७

प्रिय महादेवभाई,

आज लार्ड हैलिफैक्स से बात हुई। मैंने उन्हें यह बात सुझाई कि अब गवर्नरों और सरकारी अमले को भी अपना पार्ट अदा करना चाहिए। मैंने उनसे कह दिया कि कांग्रेस ने शासन विधान को अमल में लाने के लिए पद ग्रहण नहीं किया है बल्कि इसलिए किया है कि वैसा करने से उसको लक्ष्य सिद्धि में सहायता मिलेगी। मैंने कहा कि कांग्रेस अपनी उद्देश्य सिद्धि के लिए दो मार्गों का सहारा ले सकती है या तो शासन विधान को अमल में लाकर या फिर सीधी कारवाई करके। फिलहाल कांग्रेस ने सीधी कारवाई का मार्ग छोड़कर शासन विधान का मार्ग अपनाया है। यदि गवर्नरों और नौकरशाही ने अपना पार्ट अदा करने में कोताही न की तो कांग्रेस शासन विधान की सीमाओं के भीतर रहकर काम करेगी अन्यथा उसे दूसरा रास्ता ढूंढना पड़ेगा। राजनीतिमत्ता का तकाजा तो यही है कि गवर्नरों और सरकारी अमले को इस संबंध में पार्लियामेंट की अभिलाषा अच्छी तरह बता दी जाए और वे अपना पार्ट अदा करने में जी-जान से जुट जाएं।

उन्होंने मुझे इस संबंध में आश्वासन देते हुए कहा, 'मैं आपसे पहले ही कह चुका हूं और फिर दुहराता हूं कि इस विषय में किसी प्रकार का संशय नहीं रखना चाहिए। अंग्रेज चरित्र ही ऐसा है कि वह अपने आपको नवीन परिस्थितियों के अनुकूल अविलम्ब ढाल लेता है। सरकारी अमले के भारतवासी अंश को इसमें कुछ देर लग सकती है, पर अंग्रेजों को देर नहीं लगेगी।'

तुम्हें शायद मालूम होगा कि तीथल में बापू ने मुझे बताया था कि कांग्रेस द्वारा पद ग्रहण किये जाने के बाद वह शायद वाइसराय से भेंट का आग्रह करके सीमा प्रांत के प्रस्तावित दौरे की बात उठाएंगे। जब मैंने लार्ड हैलिफैक्स को यह बात बताई तो वह बड़े खुश हुए। बोले, लार्ड लिनलिथगो को भी बापू से मिलकर बड़ी प्रसन्नता होगी तथा उनकी योजना की पूर्ति में कोई बाधा खड़ी नहीं होगी।

मैंने उनसे कहा कि सीमा प्रांत का दौरा उतना महत्त्व नहीं रखता, जितनी कि यह बात कि वाइसराय बापू के साथ मेल मुलाकात रखकर व्यक्तिगत मैत्री का

संबंध स्थापित करें।

मैंने यह शंका व्यक्त की कि कांग्रेसी शासन-काल निर्विघ्न साबित नहीं होगा। बीच-बीच में अड़चनें पैदा होती रहेंगी, और यदि लार्ड लिनलिथगो की बापू से जान-पहचान हो जाएगी, तो वह उनकी सलाह कभी भी मांग सकते हैं, जिससे उन्हें काफी सहायता मिलेगी। उन्हें भी ऐसी ही शंका है। यह बात कि बापू के साथ मैत्री का संबंध जुड़ने का लार्ड लिनलिथगो अवश्य फायदा उठाएंगे। मैं समझता हूं अब बापू को अपना कार्यक्रम पहले से ही बना लेना चाहिए।

मुझे लार्ड लोदियन के नाम लिखे बापू के पत्र में बड़ी दिलचस्पी रही। उन्होंने लार्ड लोथियन को भारत आने का निमंत्रण दिया है। कुछ दिन पहले मैंने भी उनके साथ बातचीत में यह प्रसंग उठाया था और मैं समझता [redacted] वह इस सुझाव पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहे हैं। मैंने लार्ड हैलिफैक्स से इस बात का जिक्र किया और अपनी ओर से यह सुझाव पेश किया कि लार्ड लोथियन ही क्यों अन्य लोग भी भारत आकर व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करें। मैंने इस संदर्भ में सैलबरी और चर्चिल के भी नाम लिये। उन्हें यह विचार रुचा। वह बोले कि व्यक्तिगत मैत्री का संबंध स्थापित करने के अलावा ये लोग कांग्रेस को ब्रिटिश इरादों से तथा अंग्रेज जनता को कांग्रेस के इरादों से परिचित कर सकेंगे।

आज शाम मैं सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट से फिर मिला। मैंने जिन बातों की चर्चा लार्ड हैलिफैक्स से की थी उनमें भी की और उनके उत्तर भी प्रायः लार्ड हैलिफैक्स के उत्तरों के समान ही थे। लार्ड जेटलैंड से भी मिलूंगा और उन्हें भी यही बातें बताऊंगा जो अन्य लोगों को बताता आ रहा हूं। तुमने कोई ताजा सामग्री भेजी तो वह भी मित्रों के आगे प्रस्तुत कर दूंगा।

यहां से रवाना होने से पहले सम्भव है प्रधान मंत्री से भी मिलना हो जाए। मुझे सारी बातें बताते रहो। यदि यहां से चल पड़ने से पहले मुझे और कुछ करना हो तो मुझे लिखने से मत चूकना।

कल रात मैंने शुस्टर दम्पति के साथ खाना खाया। आज शुस्टर के साथ भारतीय अर्थ-व्यवस्था पर बातचीत बड़ी रोचक रही। मैंने उसे बताया कि सामाजिक कार्यों के लिए धन जुटाने के मामले में कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती हैं। मैंने सुझाव मांगे तो मैं यह देखकर चकित रह गया कि बापू ने सेगांव में फरवरी में जो-कुछ बताया था लगभग वही बात सर जॉर्ज ने भी कही।

शुस्टर ने कहा कि भारत में ब्रिटिश राज की सबसे बुरी विरासत उच्चतर श्रेणी के अधिकारियों के रूप में है। साथ ही उसने कहा कि जो हो चुका सो हो चुका अब उसमें फेर-बदल करना सम्भव नहीं है। पर हम लोगों को स्वतंत्र रूप से

कुछ-न कुछ करना चाहिए। जो काम इस समय रुपया कमाने की प्रेरणा से किया जाता है वह आगे चलकर सेवा की भावना से प्रेरित होकर किया जाना सम्भव बनाना होगा। उसने प्रश्न किया, 'सामाजिक काय के लिए डॉक्टरो और अध्यापको को इतने ऊचे वेतन क्यो दिये जाए ? यह सारा काम सहकारिता के आधार पर क्यो न किया जाए ? जब आपके पास ७० करोड हाथ परिश्रम करने को प्रस्तुत हैं तो आपको पूजी की चिंता करने की क्या जरूरत है ? यदि काम सहकारिता के आधार पर किया जाए, जिसे दूसर शब्दो म सशोधित समाजवाद' कहा जा सकता है तो रुपये की जरूरत नही रहेगी। कम से-कम बहुत बडी तादाद में तो अवश्य ही नहीं रहेगी।"

उसने कहा कि मुझे नार्वे स्वीडन आदि देशा मे आकर वहा की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना चाहिए। मुझे डेनियल हैमिल्टन का स्थान देखने का भी सुझाव दिया। बोला मेरे लिए भारत म कुछ अधिक कर सकना इसलिए सभव नही हुआ कि वहा सार काम पैसा कमाने के उद्देश्य स किये जाते हैं। बैंकिंग जाच कमीशन पर भारत सरकार को २० लाख रुपये खच करने पडे। इग्लैंड तक म भी कुछ सौ पौंडो से अधिक खच नही बैठता। इग्लड मे पसा कमाने का ध्येय रहता है पर भारत मे तो सेवा की भावना को प्रोत्साहित करना वाछनीय ह। लेकिन वहा इस समय पसा कमाने की प्रवत्ति का ही दौर दौरा है। जब सेवा की भावना जाग्रत और विकसित हो जाएगी, तो यह प्रवत्ति कम हो जाएगी।'

साथ ही उसने मुझे यह चेतावनी भी दी कि मैं इस विषय पर सैद्धांतिक भाषा म चर्चा न करू, नही तो भारत का अनुदार वग डर जाएगा। पर इस बात म उसका दढ विश्वास है कि बापू की प्रेरणा स सेवा की भावना को बल मिलेगा और तब बडे बडे बजट बनान की जरूरत नही रहगी। दूसर शब्दो म वह रुपय के माप-दण्ड का स्थान परिश्रम क माप दण्ड का देन के पक्ष म है।

अब बापू यग इण्डिया का प्रकाशन पुन आरम्भ कर दें, तो कसा रह ? मैं यह कदापि नही चाहूगा कि हरिजन एक राजनतिक पत्र बन जाए। एक-साथ दो-दो पत्र निकालना भी ठीक नही जचता। पर 'यग इण्डिया की अपनी एक परिपाटी है, और इस नाम को भुला देना ठीक नही रहेगा। इसलिए अधिक उत्तम यही रहेगा कि 'यग इण्डिया का प्रकाशन पुन आरम्भ कर दिया जाए और हरिजन बन्द कर दिया जाए। इसका नतीजा यह होगा कि तुम 'यग इण्डिया' म राजनतिक लेख भी लिख सकोगे और हरिजनोद्धार-सम्बधी लेख भी ठीक जिस प्रकार उन गुजरे दिना मे बापू किया करते थे।

आशा है तुम इस पत्र क साथ भेजी जा रही टाइम्स की कटिंग म यह दस्ताग

कि सम्पादक ने 'संघर्ष' और 'तोड फोड' में अंतर समझाने की कोशिश की है। अब इन लोगो की समझ मे यह अंतर आने लगा है।

उस दिन मैं श्री बटलर के साथ दोपहर का भोजन कर रहा था। मालूम पड़ता है कि किसी दिन वह भारत मे गवर्नर बनकर आयेगा। सभी कोई संतुष्ट दिखाई पड़ते हैं और इसमे भी संदेह नहीं कि सब कांग्रेस की सहायता करना और उसके प्रति सहानुभूति का रुख अपनाये रखना चाहते हैं। कुछ दिन बाद चर्चिल से भी भेंट होगी। लार्ड डर्बी ने दोपहर के खाने पर मुझे और ओलिवर स्टेनले को बुलाया है और स्टेनले इस समय व्यापार बोर्ड मे हैं और कैबिनेट मे भी हैं। बबई के गवर्नर श्री रॉजर लमले मेरे यहा रात के भोजन पर आ रहे हैं।

इन सारे व्यक्तिगत सम्पर्कों के दौरान मैं इन लोगो के गले यह उतारना चाहता हू कि कांग्रेस ने शासन विधान को महज कारगर बनाने के लिए पद-ग्रहण नहीं किया है बल्कि अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए सत्ता सभाली है। मैं इन लोगो को समझाता आ रहा हू कि उन्हे कांग्रेस की प्रगति मे बाधा न डालकर उलटे उसकी सहायता करनी चाहिए। यदि बाधा डाली गई तो कांग्रेस को सीधी कारवाई का पथ अपनाने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। पर मैं सभी को सहानुभूति से ओत प्रोत पा रहा हू। सभी मुझे यह आश्वासन देते नहीं अघाते कि ब्रिटिश जनता कांग्रेस को अपने लक्ष्य की दिशा मे अग्रसर होने का समर्थन करेगी। लेकिन इन लोगो की निगाह मे मात्र औपनिवेशिक स्वराज्य ही एक लक्ष्य है। यदि स्वतत्रता का अर्थ ब्रिटिश साम्राज्य से सम्बन्ध विच्छेद है तो सबके-सब विरोध मे उठ खड़े होगे। पर सम्बन्ध विच्छेद करने का सुझाव तो जवाहरलालजी का है बापू का नहीं। औपनिवेशिक स्वराज्य मे हम सम्बन्ध विच्छेद करने की स्वतत्रता रहती है और यही यथेष्ट है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

३

मगनवाडी,
वर्धा (मध्य प्रांत)
९-७-३७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके सभी पत्र पहुचे है। और अब कल तडके ही आपका तार आ गया। खबर भी कितनी जल्दी यात्रा करती है। कार्यकारिणी के प्रस्ताव की खबर यहां के कोटि-कोटि नर नारियों से पहले आपके पास जा पहुंची। यह तो कह ही दू कि आपके आह्लाद मे यहा के असख्य नर नारी भाग ले रहे है। हमारे राष्ट्रीय चरित्र म स्थायित्व का अभाव है, हम शीघ्र ही उद्वेलित हो जाते हैं। यदि कार्य कारिणी के पीछे समूचे देश का समर्थन रहता, तो मैं यह निश्चयपूर्वक कह सकता हू कि हम ब्रिटिश हुकूमत का भी आश्वासन प्राप्त कर सकते थे। पर सरकार हमारी कमजोरियो को हमसे अधिक जानती है। क्या उसे पता नहीं है कि हमारे पास देश के कोने कोने से आये उन्माद से भरे तारो और पत्रो का तांता लग गया है ?

पर अंत भला सो सब भला। यदि प्रस्ताव की मुलम्मबाजी न की जाती तो मैं अधिक सुखी होता। पर जवाहरलाल तो जवाहरलाल ही ठहरे। एक विदेशी आलोचक ने कह दिया कि 'जो लजानेवाली शर्तें लगाई गई हैं उनसे जवाहरलाल व्यक्तिगत रूप से ममाहत व्यक्ति प्रतीत होते हैं उनकी मनोव्यथा आयरलैंड के रुख की याद दिलाती है। काश, गांधीजी ऐसा आभास न देते कि वे झुक रहे हैं। वह विनयशील हैं और कभी कभी प्रश्नकर्त्ता को उसकी दीनता का बोध भी करा देते है और सो भी स्वय उसी के दाप से, पर वह सभी स्थितियो म आत्मगौरव' का परिचय देते हैं।'

प्रस्ताव बापू की एक व्यक्तिगत विजय है। जवाहरलाल और उनके मित्रो का आचरण भी बहुत बढिया रहा पर बापू के बिना स्थिति पर काबू पाना कठिन हो जाता। राजाजी के क्या कहने हैं शीघ्र ही वह अपना सिक्का जमा लेते हैं। जनता को अनिश्चय तथा किंकर्त्तव्यविमूढ-जैसी मनोदशा से उत्पन्न हुई दीर्घ कालीन व्यथा से राहत की आवश्यकता थी, अब उस निवृत्ति का अनुभव होगा एसा मेरा विश्वास है। पर यह स्थिति अधिक दिनो तक टिकनेवाली है इसम मुझे संदेह है। लेकिन हमे पहले से ही कठिनाइयो की बात नही सोचनी चाहिए।

कि सम्पादक ने 'सघर्ष' और तोड फोड' म अतर समझाने की कोशिश की है। अब इन लोगो की समझ म यह अतर आने लगा है।

उस दिन मैं श्री बटलर के साथ दोपहर का भोजन कर रहा था। मालूम पडता है कि किसी दिन वह भारत म गवनर बनकर आयगा। सभी कोई सतुष्ट दिखाई पडते हैं और इसम भी सदेह नही कि सब काग्रेस की सहायता करना और उसके प्रति सहानुभूति का रुख अपनाये रखना चाहते हैं। कुछ दिन बाद चर्चिल से भी भेंट होगी। लाड डर्बी ने दोपहर के खाने पर मुझे और ओलिवर स्टेनले को बुलाया है और स्टेनले इस समय व्यापार बोड म हैं और कबिनट म भी हैं। बबई क गवनर श्री रोजर लमले भर यहा रात के भाजन पर आ रहे हैं।

इन सारे व्यक्तिगत सम्पर्कों के दौरान मैं इन लागो के गले यह उतारना चाहता हू कि काग्रेस न शासन विधान का महज कारगर बनाने के लिए पदग्रहण नही किया है बल्कि अपन लक्ष्य की ओर बढ्न के लिए सत्ता सभाली है। मैं इन लोगा को समझाता आ रहा हू कि उन्हे काग्रेस की प्रगति म बाधा न डालकर उलटे उसकी सहायता करनी चाहिए। यदि बाधा डाली गई, तो काग्रेस को सीधी कारवाई का पथ अपनाने क लिए बाध्य होना पडेगा। पर मैं सभी को सहानुभूति से ओत प्रोत पा रहा हू। सभी मुझे यह आश्वासन देत नही अघाते कि ब्रिटिश जनता काग्रेस को अपने लक्ष्य की दिशा म अग्रसर होने का समथन करेगी। लेकिन इन लागा की निगाह म मात्र औपनिवेशिक स्वराज्य ही एक लक्ष्य है। यदि स्वतत्रता का अथ ब्रिटिश साम्राज्य स सम्बन्ध विच्छेद है तो सबके-सब विरोध मे उठ खडे होग। पर सम्बन्ध विच्छेद करने का सुझाव तो जवाहरलालजी का है बापू का नही। औपनिवेशिक स्वराज्य म हमे सम्बन्ध विच्छेद करने की स्वतत्रता रहती है और यही यथेष्ट है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाइ दसाइ
वर्धा

३

मगनवाडी,
वर्धा (मध्य प्रात)
६-७-३७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके सभी पत्र पहुचे हैं। और अब कल तड़के ही आपका तार आ गया। खबर भी कितनी जल्दी यात्रा करती है। कार्यकारिणी के प्रस्ताव की खबर यहा के कोटि-कोटि नर-नारियो से पहले आपके पास जा पहुची। यह तो कह ही दू कि आपके आह्लाद म यहा के असख्य नर-नारी भाग ले रहे हैं। हमारे राष्ट्रीय चरित्र म स्थायित्व का अभाव है हम शीघ्र ही उद्वेलित हो जाते हैं। यदि कार्यकारिणी के पीछे समूचे देश का समर्थन रहता तो मैं यह निश्चयपूर्वक कह सकता हू कि हम ब्रिटिश हुकूमत का भी आश्वासन प्राप्त कर सकते थे। पर सरकार हमारी कमजोरियो को हमसे अधिक जानती है। क्या उसे पता नहा है कि हमारे पास देश के कोने-कोने स आये उन्माद से भरे तारो और पत्रो का ताता लग गया है ?

पर अन्त भला सो सब भला। यदि प्रस्ताव की मुलम्मवाजी न की जाती, तो मैं अधिक सुखी होता। पर जवाहरलाल तो जवाहरलाल ही ठहरे। एक विदेशी आलोचक ने कह दिया कि जो लज्जाजनक शर्तें लगाई गई हैं उनसे जवाहरलाल व्यक्तिगत रूप से मर्माहत व्यक्ति प्रतीत होते हैं उनकी मनोव्यथा आयरलैंड के रुख की याद दिलाती है। काश गाधीजी ऐसा आभास न देते कि वे झुक रहे हैं। वह 'विनयशील हैं और कभी कभी प्रश्नकर्त्ता को उसकी दीनता का बोध भी करा' देते हैं और सो भी स्वय उसी के दोष से पर वह सभी स्थितियो म आत्मगौरव' का परिचय देते हैं।'

प्रस्ताव बापू की एक व्यक्तिगत विजय है। जवाहरलाल और उनके मित्रो का आचरण भी बहुत बढिया रहा पर बापू के बिना स्थिति पर काबू पाना कठिन हो जाता। राजाजी के क्या कहने हैं शीघ्र ही वह अपना सिक्का जमा लेते हैं। जनता को अनिश्चय तथा किंकर्त्तव्यविमूढ जैसी मनोदशा से उत्पन्न हुई दीर्घकालीन व्यथा से राहत की आवश्यकता थी, अब उसे निवृत्ति का अनुभव होगा ऐसा मेरा विश्वास है। पर यह स्थिति अधिक दिना तक टिकनेवाली है इसमे मुझे सदेह है। लेकिन हमे पहले से ही कठिनाइयो की बात नहीं सोचनी चाहिए।

भूलाभाइ ने लार्ड हैलिफैक्स का सदेशा बापू के पास ज्यो का-त्यो पहुचा दिया है और बापू बडे कृतज्ञ हैं।

अब आपका क्या प्रोग्राम है ? वहा और कितने दिन ठहरने का विचार है ?

पता नही आपने फ्रास के लुर्द्स को देखा है या नही ? वहा के जादू भरे स्रोत म स्नान मात्र स कैसर दुसाध्य क्षय रोग, व्रण आदि के रोगियो का चमत्कारपूर्ण आरोग्य लाभ होता है। प्रख्यात डाक्टरो द्वारा लिखे गये अधिकारपूर्ण वत्तान्त मैंने पढे हैं। अब तो नोबल पुरस्कार विजेता कारेल ने भी उनकी पुष्टि की है। वहा हर साल हजारो रोगी जाते हैं। वहा एक चिकित्सा मिशन भी है, जो ऐसे चमत्कारपूर्ण स्वास्थ्य-लाभ के ठीक ठीक आकडे एकत्र करता है। यदि मैं आपके साथ गया होता तो स्वय को वहा ले जाने को अवश्य हठ करता। देखने लायक जगह है। आप अपनी आखो-देखी जो बात बतायेंगे मैं उसे उन सभी लोगो क वत्तान्त स अधिक प्रामाणिक मानूगा जिन्हे मैंने न कभी दखा है, न जिनके बारे म मैं कुछ जानता ही हू।

जब आप वापस लौटें तो क्या मैं आपको दो तीन चीजें लाने का कष्ट दे सकता हू ? हरोट अथवा सेल्फ्रिज म बढई के काम के बढिया औजार मिलते हैं। वे विज्ञान के यत्र भी बेचते हैं। ये वैज्ञानिक यत्र रसायन शास्त्र के विद्यार्थियो के लिए बडे काम के सिद्ध हुए हैं। क्या आप ये चीजें मेरे लडके के लिए ला सकेंगे ? आप जानते ही हैं कि मैं उसकी शिक्षा दीक्षा घर पर ही कर रहा हू। उसे वैज्ञानिक प्रयोगो का शौक है, पर मैं ये प्रयोग कैसे करू ? ये पिटारिया उसके बडे काम आयेंगी। आप किसी ऐसे आदमी को जानते हो जो ये चीजें ला सके तो ठीक, नहीं तो खुद कष्ट उठाइये।

कलेनबक ६ तारीख का जहाज से रवाना हुए है।

सप्रेम
महादेव

४

ग्रासवनर हाउस,
पार्क लेन,
लन्दन, डब्ल्यू० १
१२ जुलाई, १९३७

प्रिय महादेवभाई,

ऐसा मालूम पड़ता है कि इन तथाकथित नरम दलवालों में से कुछ ने यहां अभी से इस ढंग से बात करना शुरू कर दिया है जिससे लोगों की यह धारणा हो जाए कि कांग्रेस अधिक दिनों तक पद-ग्रहण नहीं कर पायेगी। इन लोगों के बारे में यह कथन चरितार्थ होता है कि 'अभिलाषा विचार को जन्म देती है।' इन लोगों की बातचीत की शैली कुछ इस प्रकार की है "अगर जवाहर ने राजद्रोह फैलाना शुरू किया तो क्या होगा? क्या उन्हें गिरफ्तार किया जायगा? यदि ऐसा नहीं किया गया तो गवर्नर को हस्तक्षेप करना पड़ेगा।" यहां के राजनेताओं और राजनीतिज्ञों में इसी प्रकार की बेहूदा बातें फैलाई जा रही हैं। पर ऐसी बातों का कोई असर पड़ता दिखाई नहीं देता है।

मैंने ऐसे ही एक नरम दलवाले को चुनौती दी कि वह जरा यह तो बताये कि जवाहरलाल के राजद्रोह फैलाने की बात में उसका क्या अभिप्राय है। उसने कहा, वह स्वतन्त्रता की बातें करने लग जायेंगे। मैंने मुंहतोड़ उत्तर दिया, "स्वतन्त्रता की बात करने में बुराई भी क्या है? क्या प्रत्येक उपनिवेश को संबंध विच्छेद करने की स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं है? दक्षिण अफ्रीकी यूनियन के सदस्य संबंध विच्छेद करने की बात तो इस समय भी कर रहे हैं।" मैं यह सब तुम्हें यह बतलाने के लिए लिख रहा हूं कि नरम दलवालों को कांग्रेस के पद ग्रहण करने से खुशी नहीं हुई है क्योंकि कांग्रेस शासन-कार्य में लग जायेगी तो इन लोगों के इतिहास का सदैव के लिए अंत हुआ समझो। ये लोग अब भी शासन करने का स्वप्न देख रहे हैं।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

५

मगनवाडी
वर्धा,
१६ जुलाई, १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी,

आप मेरी खामोशी का कारण समझ गये यह खुशी की बात है। ऐसा जान बूझकर किया गया था और अनिवार्य भी था क्योंकि कहने योग्य कोई बात थी ही नहीं। मैं यह देख रहा था कि देश के कोने-कोने से जो पत्र आ रहे थे उनसे बापू का झुकाव पद ग्रहण करने की ओर बढ़ता जा रहा था। पर लार्ड जटलैंड की दूसरी स्पीच ने उन्हें इस बाबत अंतिम निर्णय लेने को तत्पर कर दिया। लार्ड जेटलैंड ने अपनी उस स्पीच के दौरान इस आलोचना का खण्डन किया था कि उन्होंने मेल मिलाप का रास्ता बन्द कर दिया है। उस स्पीच का बापू पर अनुकूल प्रभाव पड़ा। जब कार्यकारिणी की बैठक से तीन दिन पहले जवाहरलाल यहां आए तब तक बापू यह बात तय कर चुके थे और जवाहर की तारीफ में यह कहना पड़ेगा कि उन्हें राजी करने में कठिनाई नहीं हुई। कार्यकारिणी की बैठक के दौरान उनका रवैया भद्र रहा जो उनके अनुरूप ही था और यही कारण था कि बैठक का काम निर्विघ्न सम्पन्न हो सका।

यह सब भी इतिहास का एक परिच्छेद था। बापू ने इस मामले को जिस भावना से हाथ में लिया सो भी बता दूं। जब राजाजी और उनके संगी साथियों ने शपथ ली तो राजाजी ने बापू का तार भेजकर उनके आशीर्वाद की कामना की। बापू ने तार तो भेजा पर ताकीद कर दी कि उसे प्रकाशित न किया जाए। तार इस प्रकार था निजी। बैठक के पथ प्रदर्शन में मुझे सतत प्रार्थना से प्रेरणा मिली। आप पर कितना भरोसा करता हूं आप जानते हैं। भगवान आपका कल्याण करें। इसे प्रकाशित मत करिये। सदस्यों को संदेश देने का मुझे अधिकार नहीं है। यह काम जवाहरलाल के जिम्मे है। सप्रेम।

लार्ड हैलिफैक्स आदि लोगों से बातचीत के दौरान आप इस तार का हवाला दे सकते हैं चाहें तो तार की भाषा भी उद्धृत कर सकते हैं। बापू ने विधायकों को जिस भावना के साथ विधान-सभाओं में जाने का परामर्श दिया है उसका अन्दाज 'हरिजन' में लिखे उनके इस लेख से होता है जिसकी नकल आपके पास भेज रहा हूं। मैं एक प्रति अगाथा को भी भेजना चाहता था पर अब मेरे पास

कोई प्रति नही बची है। वह चाहे तो हरिजन कार्यालय से मगा लें। इस लेख की अग्रेजी मे क्या प्रतिक्रिया होती है सो जानना चाहूगा। इसका पता आप अपनी वाली प्रति दिखाकर लगा सकते हैं, क्योकि अ यथा उ है यह लेख पढने का अवसर शायद न मिले। आप इसकी और अधिक प्रतिया तयार कर मित्रो को भेज सकते हैं। मैं राजाजी के उस भाषण की कटिंग भी भेज रहा हू जो उ होंने गवनर के आह्वान के दो दिन पहले दिया था।

सप्रेम,
महादेव

सलग्न बापू का लेख

कांग्रेसी मत्रिमण्डल

जब कायकारिणी तथा अ य काग्रेसी पद-ग्रहण के प्रश्न पर मेरी सम्मति पर ध्यान देने के लिए तयार हैं तो मेरा भी जन-साधारण के प्रति यह कत्तव्य हो जाता है कि मैं अपना विचार उनके सामने रख दू। 'हरिजन' के सचालन म मैंने अपने लिए जो सीमाए स्वेच्छा से निर्धारित की थी, उनका यतिक्रम करने की सफाई देने की मैं कोई जरूरत नही समझता। भारत शासन कानून को सब कोई भारत की स्वतत्रता के ध्येय के लिए नितान्त अपर्याप्त समझते हैं। लेकिन यह कितना ही कमजोर और मर्यादित कानून हो यह सभव है कि तलवार के शासन का स्थान बहुमत द्वारा सचालित शासन ले ले। इस दिशा म यह एक शुभ प्रयत्न है। तीन करोड नर नारियो को मताधिकार प्रदान करने तथा उनके हाथो मे शासन क व्यापक अधिकार देने को अ य किसी नाम से पुकारना सम्भव नही है।

इस आशा से यह विधान हमारे ऊपर थोपने की चेष्टा की गई है कि हम शन शन इसे एक अच्छी चीज मानने लगेंगे, अर्थात हम अ त म अपने शोषण-काय को वरदान के रूप म ग्रहण कर लेंगे। इस आशा को निराशा के रूप म बदलना तभी सम्भव होगा, जब इन तीन करोड मतदाताओ के प्रतिनिधि पद-ग्रहण करके इन सारे अधिकारो का उपयोग बुद्धि विवेक से करेंगे और इनके रचयिताओ के निहित इरादो को निकम्मा साबित कर देंगे। यह काम कानून की सीमा म रहते हुए आसानी से हो सकता है। वास्तव मे, शासन विधान के रच यिताओ स अपेक्षित आचरण से भि न आचरण करके ऐसा किया जा सकता है। वे हमसे इस शासन विधान के माध्यम से जो काम कराना चाहते हैं वह हम न करें। उदाहरण के लिए मत्री लोग शिक्षा के लिए आवश्यक धन आबकारी कर से प्राप्त करने के बजाय शिक्षा को स्वावलबी ही बना दें। और मादक द्रव्य निषेध कानून

लागू कर दें। यह सुझाव कुछ चौंकानेवाला प्रतीत होगा पर वास्तव में है यह पूर्णतया व्यवहार्य तथा तर्कसिद्ध। जेलखाना को कारखानों और सुधारगृहों में बदल दिया जाए। वे खर्चीले और दण्ड देनेवाले विभाग न रहकर स्वावलंबी शिक्षण संस्थाएं बनाई जा सकती हैं। इर्विन गांधी समझौते का केवल नमक वाला अंश ही जीवित है पर गरीबों को अब भी नमक कहां करमुक्त मिलता है? अब कम से-कम कांग्रेसी प्रांतों में तो यह करमुक्त कर ही दिया जाए। जितना कपड़ा खरीदा जाए सब खादी हो। नगरों की अपेक्षा गांवों और ग्रामीणों पर अधिक ध्यान दिया जाए। ये उदाहरण अकस्मात ही चुन लिये गए हैं। इन सारे कामों को वृद्ध रूप से हाथ में लिया जा सकता है, पर अभी इस दिशा में कोई कोशिश तक नहीं हुई है।

अब रही मंत्रियों के व्यक्तिगत आचरण की बात। कांग्रेस का अध्यक्ष तीसरे दर्जे में यात्रा करता है क्या मंत्री लोग पहले दर्जे में जायेंगे? कांग्रेस का अध्यक्ष मोटी खादी का कुर्ता मिर्जई और धोती पहनता है, क्या मंत्री लोग पाश्चात्य वेश भूषा धारण करेंगे और पाश्चात्य ढंग का खर्चीला रहन-सहन अपनायेंगे? पिछले सत्रह वर्षों में कांग्रेसियों ने कमाल की सादगी सीखी है। राष्ट्र अपने मंत्रियों से यह अपेक्षा करेगा कि वे लोग इस सादगी को अपने अपने प्रांत की शासन व्यवस्था में भी अमल में लाएं। यह उनके लिए गर्व की बात होगी, लज्जा की नहीं। हमारा देश संसार में सबसे दरिद्र देश है लाखों प्राणी अर्ध पेट खाते हैं। उसके प्रतिनिधि अपने निर्वाचकों के रहन-सहन से भिन्न प्रकार का रहन सहन नहीं अपना सकते। अंग्रेज लोग यहां विजेताओं की हैसियत से आए उन्होंने विजितों की असहायावस्था की ओर पीठ करके अपने ढंग के जीवन-स्तर का जन्म दिया। यदि मंत्रिगण गवर्नरों तथा सुपोषित नौकरशाही की नकल करने से बचे रहें तो इतने ही से भली भांति प्रकट हो जाएगा कि कांग्रेस की मनोवृत्ति और उनकी मनोवृत्ति में कितना अन्तर है। हमारे और उनके बीच साझेदारी का नाता जुड़ना उतना ही असम्भव है जितना एक भीमकाय और एक बौने के बीच।

कांग्रेसी लोग यह न समझ बैठें कि सादगी का ठेका उन्होंने ही ले रखा है और न यह सोचने लगें कि उन्होंने १९२० में कोट पतलून और मेज-कुर्सी का परित्याग करके गलती की। मैं खलीफा अबूबकर और खलीफा उमर का दृष्टांत पेश करता हूं। राम और कृष्ण प्रागैतिहासिक महापुरुष हैं इसलिए इस संदर्भ में नाम लेना उचित नहीं लगता, पर इतिहास हमें बताता है कि प्रताप और शिवाजी सादगी के जीते जागते उदाहरण थे। शक्ति हाथ में रहते उन्होंने क्या कुछ किया इस बारे में लोगों की अलग अलग रायें हो सकती हैं पर खलीफा अबूबकर और

खलीफा उमर के बारे म दो रायें हो ही नहीं सकती। ससार की सम्पदा उनके कदम चूमती थी, पर उन्होंने जैसा कठोर जीवन बिताया उसकी मिसाल दुनिया के इतिहास म ढूढ न मिलेगी। खलीफा यह बरदाश्त न कर सके कि उनके मातहत सिपहसालार दूर देशो म मोटा कपडा और मोटा आटा छोड और किसी चीज स जीवन चलायें। काग्रेसी भी १६२० मे विरासत म मिली सादगी से काम लेंगे, तो हजारो रुपयो की बचत कर सकेंगे गरीबो को आशा प्रदान करेंगे और सम्भवत शासन के ढाचे को भी बदल सकेंगे। मेरे लिए यह कहना आवश्यक है कि सादगी का अर्थ फटेहाल रहना कदापि नहीं है। सादगी मे कुछ ऐसा सौदर्य है जिसे कोई भी देख सकता है। साफ-सुथरे और चुस्त दिखाई देने के लिए पैसे की जरूरत नहीं है। शान शौकत और तडक भडक अधिकतर छैलछबीलेपन के पर्यायवाची हैं। तडक भडक को एक ओर रखकर जो काम किया जायेगा, उससे यह साबित करना सभव होगा कि जनता की आकाक्षाओं की पूर्ति की दिशा म यह नया शासन विधान कितना अनुपयुक्त है। साथ ही इस व्यवस्था का अन्त करने के हमारे सकल्प को भी बल मिलेगा।

ब्रिटिश पत्र भारत को हिंदू व मुसलमान—इन दो भागो म बाटने मे लगे हुए हैं। काग्रेस-बहुल प्रातो को हिन्दू प्रात और अन्य प्रातो को मुस्लिम प्रात बताया जा रहा है। उन्हें इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि यह सरासर झूठ है। मैं तो यही आशा किये बैठा हू कि इन छहो प्रातो के मत्री अपने आचरण द्वारा इस बारे मे सारे सशयो का निवारण करेंगे। वे अपने मुसलमान सहकर्मियो को दिखा देंगे कि वे हिंदू, मुसलमान सिख ईसाई, पारसी इस प्रकार क भेद भाव म विश्वास नहीं रखते। न वे सवर्ण और अवर्ण हिन्दुओ म ही कोई भेद करेंगे। वे अपने प्रत्येक काम से यह सिद्ध कर देंगे कि उनकी दृष्टि म सब समान हैं। सभी इस भारत भूमि की सन्तान हैं न कोई ऊचा है, न नीचा। दरिद्रता और जलवायु सबके हिस्से म समान रूप स आई है। बडी बडी समस्याओ का सबको समान रूप से सामना करना है। यद्यपि अग्रेजी व्यवस्था के व्यावहारिक स्वरूप स हमे यह प्रतीत होता है कि इस व्यवस्था का लक्ष्य हमारे लक्ष्य स भिन्न है, तथापि जो नर नारी इन लक्ष्यो का प्रतिनिधित्व करते हैं वे एक ही मानव परिवार के सदस्य हैं। अब य सब इतिहास म पहली बार एक जगह एकत्र होंगे। मैंने मानवता के दृष्टिकोण स इस विधान का जो अध्ययन किया है यदि वह ठीक है तो कहना होगा कि य दोनो जातिया—अग्रेज और भारतीय—अपना-अपना इतिहास लेकर एक जगह एकत्र होंगी। दोनो की अलग-अलग पृष्ठभूमि है अलग-अलग लक्ष्य हैं। अब ये दोनो जातिया अपनी-अपनी विचार शैली और परिपाटी की सार्थकता एक-

लागू कर दें। यह सुझाव कुछ चौंकानेवाला प्रतीत होगा पर वास्तव मे है यह पूर्णतया व्यवहार्य तथा तर्कसिद्ध। जेलखानो को कारखानो और सुधारगहो म बदल दिया जाए। वे खर्चीले और दण्ड देनेवाले विभाग न रहकर स्वावलबी शिक्षण सस्थाए बनाई जा सकती हैं। इर्विन गाधी समझौते का केवल नमक वाला अश ही जीवित है पर गरीबो को अब भी नमक कहा करमुक्त मिलता है ? अब कम से-कम काग्रेसी प्रातो मे तो यह करमुक्त कर ही दिया जाए। जितना कपड़ा खरीदा जाए सब खादी हो। नगरो की अपेक्षा गावो और ग्रामीणो पर अधिक ध्यान दिया जाए। ये उदाहरण अकस्मात ही चुन लिय गए हैं। इन सारे कामो को वध रूप से हाथ मे लिया जा सकता है पर अभी इस दिशा मे कोई कोशिश तक नही हुई है।

अब रही मत्रियो क व्यक्तिगत आचरण की बात। काग्रेस का अध्यक्ष तीसरे दर्जे म यात्रा करता है क्या मत्री लोग पहले दर्जे म जायेंगे ? काग्रस का अध्यक्ष मोटी खादी का कुर्ता मिर्जई और धोती पहनता है क्या मत्री लोग पाश्चात्य वेश भूषा धारण करेंगे और पाश्चात्य ढग का खर्चीला रहन-सहन अपनायेंगे ? पिछले सत्रह वर्षों म काग्रसियो ने कमाल की सादगी सीखी है। राष्ट्र अपने मत्रियो से यह अपेक्षा करेगा कि व लोग इस सादगी को अपने अपने प्रात की शासन व्यवस्था मे भी अमल मे लाए। यह उनके लिए गव की बात होगी लज्जा की नही। हमारा देश ससार मे सबसे दरिद्र देश है लाखो प्राणी अध पेट खाते हैं। उसके प्रतिनिधि अपने निर्वाचको के रहन-सहन से भिन्न प्रकार का रहन सहन नही अपना सकते। अग्रेज लोग यहा विजेताओ की हैसियत से आए उ होने विजितो की असहायावस्था की ओर पीठ करके अपने ढग के जीवन-स्तर को जन्म दिया। यदि मत्रिगण गवनरो तथा सुपोषित नौकरशाही की नकल करने स बचे रह तो इतने ही स भली भाति प्रकट हो जाएगा कि काग्रेस की मनोवत्ति और उनकी मनोवृत्ति मे कितना अतर है। हमारे और उनके बीच साझेदारी का नाता जुड़ना उतना ही असम्भव है जितना एक भीमकाय और एक बौने के बीच।

काग्रेसी लोग यह न समझ बठें कि सादगी का ठेका उन्होने ही ले रखा है और न यह सोचन लगें कि उन्होंने १९२० म कोट पतलून और मेज-कुर्सी का परित्याग करके गलती की। मैं खलीफा अबूबक्र और खलीफा उमर का दृष्टात पेश करता हू। राम और कृष्ण प्रागतिहासिक महापुरुष हैं इसलिए इस सदभ मे नाम लेना उचित नही लगेगा पर इतिहास हमे बताता है कि प्रताप और शिवाजी सादगी के जीते-जागते उदाहरण थे। शक्ति हाथ म रहते उन्होने क्या कुछ किया इस बार म लोगो की अलग-अलग रायें हो सकती हैं पर खलीफा अबूबक्र और

खलीफा उमर के बारे म दो रायें हो ही नहीं सकती। ससार की सम्पदा उनके कदम चूमती थी, पर उन्होंने जसा कठोर जीवन बिताया उसकी मिसाल दुनिया के इतिहास मे ढूढे न मिलेगी। खलीफा यह बरदाश्त न कर सके कि उनके मातहत सिपहसालार दूर देशो म मोटा कपडा और मोटा आटा छोड और किसी चीज स जीवन चलायें। काग्रेसी भी १९२० से विरासत मे मिली सादगी से काम लेंगे, तो हजारो रुपयो की बचत कर सकेंगे गरीबो को आशा प्रदान करेंगे और सम्भवत शासन के ढाचे को भी बदल सकेंगे। मेरे लिए यह कहना आवश्यक है कि सादगी का अर्थ फटेहाल रहना कदापि नहीं है। सादगी म कुछ ऐसा सौंदर्य है जिसे कोई भी देख सकता है। साफ-सुथरे और चुस्त दिखाई देने के लिए पैसे की जरूरत नहीं है। शान शौकत और तडक भडक अधिकतर छैलछबीलेपन के पर्यायवाची हैं। तडक भडक को एक ओर रखकर जो काम किया जायेगा, उससे यह साबित करना सभव होगा कि जनता की आकाक्षाओ की पूर्ति की दिशा म यह नया शासन विधान कितना अनुपयुक्त है। साथ ही, इस व्यवस्था का अन्त करने के हमारे सकल्प को भी बल मिलेगा।

ब्रिटिश पत्र भारत को हिन्दू व मुसलमान—इन दो भागो म बाटने मे लग हुए हैं। काग्रेस-बहुल प्रातो को हिन्दू प्रात और अन्य प्रातो को मुस्लिम प्रात बताया जा रहा है। उन्हें इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि यह सरासर झूठ है। मैं तो यही आशा किये बैठा हू कि इन छहो प्रातो के मत्री अपने आचरण द्वारा इस बारे म सारे सशयो का निवारण करेंगे। वे अपने मुसलमान सहकर्मियो को दिखा देंगे कि वे हिन्दू, मुसलमान सिख, ईसाई पारसी इस प्रकार के भेद भाव म विश्वास नहीं रखते। न वे सवर्ण और अवर्ण हिन्दुओ मे ही कोई भेद करेंगे। व अपने प्रत्येक कार्य से यह सिद्ध कर देंगे कि उनकी दृष्टि मे सब समान हैं। सभी इस भारत भूमि की सन्तान हैं न कोई ऊचा है न नीचा। दरिद्रता और जलवायु सबके हिस्से म समान रूप से आई है। बडी बडी समस्याओ का सबको समान रूप स सामना करना है। यद्यपि अग्रेजी व्यवस्था के व्यावहारिक स्वरूप से हमे यह प्रतीत होता है कि इस व्यवस्था का लक्ष्य हमारे लक्ष्य से भिन्न है तथापि जो नर नारी इन लक्ष्यो का प्रतिनिधित्व करते हैं वे एक ही मानव परिवार के सदस्य हैं। अब ये सब इतिहास मे पहली बार एक जगह एकत्र होंगे। मैंने मानवता के दृष्टिकोण स इस विधान का जो अध्ययन किया है यदि वह ठीक है तो कहना होगा कि य दोनो जातियां—अग्रेज और भारतीय—अपना-अपना इतिहास लेकर एक जगह एकत्र होंगी। दोनो की अलग-अलग पृष्ठभूमि है अलग-अलग लक्ष्य हैं। अब ये दोनो जातियां अपनी अपनी विचार शैली और परिपाटी की सार्थकता एक-

दूसरे से स्वीकार कराने की कोशिश करेंगी। संस्थाएं प्राय जड और निष्प्राण होती है पर जो लोग उनका उपयोग करते हैं या उनमे शामिल होते हैं वे तो चेतन होते हैं प्राणवान होते हैं। यदि अंग्रेज तथा अंग्रेजियत के रग म रग भारतीय काग्रेस के दृष्टिकोण को जो वस्तुत भारत का दृष्टिकोण है, देख पायेंगे तो सग्राम मे स्वत ही काग्रेस की विजय हो जायेगी, और रक्त की एक बूद गिराये बिना पूर्ण स्वराज्य हो जायगा। मैं इसी को अहिंसात्मक पद्धति की क्रांति कहता हू। यह पद्धति मूर्खतापूर्ण कोरी कल्पना पर आधारित तथा बिलकुल अव्यावहारिक भले ही लगे, पर विधान को सार्थक बनाने म काग्रेसियो को भारतवासियो को, तथा अग्रेजो को एकमात्र इसी पद्धति का सहारा लेना होगा। हम पद ग्रहण करने को राजी हो गये इसका यह अर्थ कदापि नही है कि हम इस शासन विधान को सफल करने मात्र की कोशिश म लगे रहेंगे। काग्रेसी लोग जिस ध्येय सिद्धि म जुटे हैं, उस मार्ग पर उन्हें आगे बढानेवाला यह एक गम्भीर वधानिक कदम-मात्र है जिससे एक ओर रक्तपातपूर्ण क्रांति स और दूसरी ओर व्यापक पमाने पर उठ खडे होनेवाले सविनय अवज्ञा आन्दोलन से बचा जा सकता है। भगवान करे यह सफल हो।

६

ग्रासवेनर हाउस,
पार्क लेन
लन्दन, डब्ल्यू० १
१७ जुलाई १९३७

प्रिय महादेवभाई

इस डाक स मेरे लिए इसके सिवा और कोई बात लिखने योग्य नही रह गई है कि इस समय बापू की प्रख्याति चरम सीमा तक जा पहुची है। यहा लोग उनकी विवेक-बुद्धि, उनकी निर्णय करने की क्षमता तथा उनके अन्य सद्गुणो की प्रशसा करते नही अघाते, और उनकी साख इस समय चोटी पर है। पर जिस बात से मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता हो रही है वह यह है कि यहा हर कोई यह कहता है कि यदि काग्रेस ने प्रातो म शासन काय सुचारु रूप स चला लिया, तो हमने स्वतत्रता सौंपने की जो अवधि सोच रखी है उसके दशमाश समय मे उसकी

उपलब्धि हो जायेगी। एक मित्र बोल उठा भगवान की सौगंध, यदि आप लोग ठीक ढंग से शासन प्रबंध चला सके तो अगला वाइसराय अपनी जेब में औपनिवेशिक स्वराज्य का दस्तावेज लेकर यहां से विदा होगा।

ऐसी मनोवृत्ति का जन्म हुआ यह संतोष की बात है, क्योंकि इसका भी महत्त्व है। पर जहां सब कोई कांग्रेस के पद-ग्रहण करने से बेहद खुश हैं वहां मुझे अपने लोगों की स्थिति देख-देखकर बेचैनी हो रही है। मेरा यह आंतरिक विश्वास है कि यह हमारे लिए परीक्षा की घड़ी है और यदि हम कसौटी पर खरे नहीं उतरे तो हम घड़ी की सुई विपरीत दिशा में घुमा देंगे। इस समय जिस चीज की सबसे अधिक जरूरत है वह है भ्रष्टाचार शून्य शासन कार्य और आपस का संगठन। मुझे जिस बात की आशंका है वह यह है कि कहीं साम्प्रदायिक उपद्रवों की संख्या में वृद्धि न हो जाए, और हमारे ही आदमी हमें परेशान न करने लग जाएं।

अभी उस दिन मैं लार्ड डर्बी के यहां खाना खा रहा था। मण्डली में लार्ड विलिंग्डन, लार्ड हार्डिंग तथा अन्य कई लार्ड थे—सब चोटी के लोग। मैं लार्ड विलिंग्डन के पास बैठा था। चर्चा का विषय था—भारत। हमने क्या चर्चा की होगी तुम खुद ही सोच लो।

कार्यकारिणी की वर्धावाली बैठक के बाद से मुझे तुम्हारी कोई चिट्ठी नहीं मिली। तुम कुम्भकर्ण की नींद ले रहे दिखाई दे रहे हो।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

७

भाई घनश्यामदास

तुम्हारी भारी चिट्ठियां मैंने बड़े ध्यान से पढ़ीं। तुम्हें लिखने का समय भी नहीं मिला इच्छा भी नहीं थी। और लिखता भी क्या? प्रतिक्षण अवस्था बदल और सुधर रही थी। ऐसी हालत में कुछ लिखना मुनासिब नहीं होता। औरों का लिखना तो इसलिये जरूरी था कि वे मुझे जितना अधिक प्रभावित कर सकें

करें। तुम्हारी चिट्ठियों का मुझपर कितना असर हुआ कह नहीं सकता। पर इतना तो कह ही दूं कि विदेश से जो पत्र आए उनका मुझपर इतना प्रभाव नहीं पड़ा जितना भारत में घटित होनेवाले घटनाचक्र का प्रभाव पड़ा। तुम चाहो, तो मेरी तुलना एक ऐसी निरीह गर्भवती से कर सकते हो जो प्रसव के लिए तैयार बैठी हो और जिसके गर्भ में कितना कुछ हो रहा है क्या हो रहा है इसका बयान उस बेचारी की सामर्थ्य से बाहर है। पर एक बात कह दूं ? कार्यकारिणी की बैठक में जवाहर ने जो-कुछ कर दिखाया लाजवाब था। वह मेरी निगाह में पहले से ही काफी ऊंचे थे अब वह और ऊंचे उठ गए हैं। तिस पर तुर्रा यह कि हममें अब भी मतभेद है।

हमारी परेशानियों का आलम तो अब शुरू हुआ है। मंगलप्रद परिणाम खुद हमारी सामर्थ्य सत्य की उपासना सत्साहस संकल्प जागरूकता और नियंत्रण पर ही निर्भर है। तुम जिस काम में जुटे हुए हो वह भी अच्छा ही है। अधिकारियों को यह समझ लेना चाहिये कि कार्यकारिणी के प्रस्ताव में मुलम्मेबाजी से काम नहीं लिया गया है। उसका एक एक शब्द मर्मपूर्ण है और उसे कार्यरूप में परिणत किया जायेगा। साथ ही जो कुछ किया गया ईश्वर के नाम पर, और उसपर भरोसा करके। तुम साधु हो, मेरी कामना है कि तुम साधु ही बने रहो।

बापू के आशीर्वाद

सेगांव
१८ जुलाई १९३७

८

मगनवाड़ी
वर्धा (मध्य प्रांत)
सोमवार १९ जुलाई १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी

बापू का कलवाला पत्र तो पढ़ा ही होगा। मैंने अपने नोट में कहा था कि मैं स्थिति स्पष्ट कर दूंगा। पर ऐसा लगता है कि न तो बापू ने डॉ० चोइथराम के तार को और न पत्रों में प्रकाशित समाचार को ही गलत समझा। वास्तव में

बापू का तो यह कहना था कि मंत्रियों तथा उनके सेक्रेटरियों के लिए बड़े-बड़े वेतन की बात स्वीकार करने के बजाय वह सभी विधायकों के लिए १००) मासिक वेतन नियत किये जाने को श्रेयस्कर समझेंगे। मैं कल संध्या समय उनसे मिला तो देखा कि इस प्रश्न को लेकर वे उद्विग्न हैं। मैंने पूछा कि क्या उन्होंने कार्यकारिणी की हाल की बैठक में इस बात का स्पष्टीकरण नहीं किया था। बापू ने उत्तर दिया कि किया तो था पर जवाहरलाल की यह धारणा थी कि वेतन में कमी की जायेगी तो जो लोग शहरों में रहते हैं उन्हें पूरा नहीं पड़ेगा। बापू बोले "इस विषय को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा हुई हो या न हुई हो यह बात मामूली-सी समझवाले आदमी के भी गले उतरनी चाहिए कि राज्य के उच्चतम पदाधिकारी के लिए अधिक-से-अधिक ५००) मासिक रखा जाये। यदि हम भारी वेतन से आरम्भ करेंगे, तो हम कहां जाकर रुकेंगे ?" इसके बाद उनका मौन आरम्भ हो गया और उन्होंने एक लेख मेरे सुपुर्द कर दिया जिसकी नकल इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। यह जाहिर था कि बापू २ ३ बजे ही उठ बैठे होंगे और प्रार्थना के समय तक उन्होंने यह लेख तैयार कर लिया होगा।

मैं इस लेख की नकल सारे मुख्य मंत्रियों के पास भेज रहा हूं। यह आपके पास बुधवार की सुबह तक पहुंच जायगा। मैं आपके 'हां' या 'न' में उत्तर की अथवा आपकी सविस्तार टीका की प्रतीक्षा बुधवार की संध्या या बृहस्पतिवार की सुबह तक करूंगा। हरिजन शुक्रवार को छपता है।

आपका
महादेव

संलग्न बापू का लेख

मंत्रियों का वेतन

शिक्षा क्षेत्र के एक सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्ता ने कुछ इस प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं— आशा है समाचार-पत्रों में छपी इस रिपोर्ट से आपको आनन्द नहीं हुआ होगा कि कांग्रेसी मंत्रियों ने अपने लिए ५०० रु० मासिक वेतन तथा रहने और दौरा करने के निमित्त ३०० रु० लेने का निश्चय किया है। वेतन का यह परिमाण पहले के वेतन से कम है, केवल इतना ही यथेष्ट नहीं है। इस प्रश्न को इस दृष्टिकोण से देखना सर्वथा अवांछनीय है। इस प्रश्न को एकमात्र इसी दृष्टिकोण से देखना उपयुक्त होगा कि इस वेतन का परिमाण संसार के इस परमदरिद्र देश के लोगों की औसत आय के अनुपात में कितना उतरता है। कांग्रेस के सेक्रेटरी और एक मंत्री में क्या अंतर है ? आपने विद्यापीठ अखिल भारतीय कांग्रेस

कमेटी तथा अन्य सस्थाओं के लिए उच्चतम वेतन ७५ रु० निर्धारित किया है। विद्यापीठ के किसी अध्यापक के लिए कल को मंत्री बनना बिलकुल सम्भव है, पर वह मंत्री बनते ही ७५ रु० के बजाय ५०० रु० क्या पाने लगे ? फर्ग्युसन कॉलेज का उदाहरण लीजिए। वहा भी अध्यापकों को ७५ रु० से अधिक नहीं मिलता था। एक मंत्री तथा उसके सेक्रेटरी के वेतनों में भी किसी प्रकार का अन्तर क्या हो ? यह सब अपनी नियुक्ति खुद ही कर लेते हैं। क्या उन्हें यह भेद भाव बरतने का कोई अधिकार है ? मैं स्वीकार करता हू कि यह सारी बात मेरी समझ से बाहर है। मैं तो यही आशा लगाये बैठा हू कि समाचार-पत्रों में छपी यह रिपोर्ट निराधार होगी और इन सभी छह कांग्रेसी प्रान्तों के मन्त्रिगण अपने आचरण के द्वारा यह सिद्ध कर देंगे कि जिन करोड़ों बुभुक्षित नर-नारियों के नाम पर उन्होंने पद ग्रहण किया है उनके वे सच्चे प्रतिनिधि हैं। उन्हें मोटर गाड़ियों की क्या जरूरत है ? वे अपने दफ्तरों तक पैदल चलकर क्यों न जाए या ट्रामों या बसों का उपयोग क्यों न करें ? मैं जापान हो आया हू। वहा के वेतनों का परिमाण रिपोर्ट में दिये गये परिमाण से काफी नीचा है। जापान एक स्वतन्त्र देश है और हमसे कहीं अधिक समृद्ध है। यदि हम मन्त्रियों के पदों को ऐश-आराम का साधन बना देंगे तो इसका अर्थ यह होगा कि शासन विधान के श्रीगणेश से ही हम उसका भजन करने में जुट जायेंगे। अब जबकि आपने हरिजन के स्तम्भों में इस प्रकार के विषयों की चर्चा आरम्भ कर दी है तो क्या इस बारे में अपनी सम्मति व्यक्त करके इस दोष का निवारण नहीं करेंगे ? हा यदि रिपोर्ट निराधार हो तो बात दूसरी है।

उक्त शिक्षा प्रेमी के साथ जो बातचीत हुई उसका यही सारांश याद पड़ता है। मैं इन सज्जन की मनोव्यथा समझता हू। उनकी तरह मुझे भी यही आशा है कि जो रिपोर्ट छपी है वह भ्रामक है। इस सदर्भ में यह याद रखना उचित होगा कि कांग्रेस ने अपने प्रस्ताव में ५०० रु० उच्चतम वेतन निर्धारित किया है। जहा तक मुझे याद पड़ता है इस रकम में सभी कुछ आ जाता है, इससे अधिक की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए।

मो० क० गांधी

६

वर्धा
१६ जुलाई, १६३७

प्रिय घनश्यामदासजी,

इस पत्र के साथ 'हरिजन' के लिए लिखे बापू के एक संक्षिप्त लेख की नकल भेज रहा हूं। बापू का दिमाग किस दिशा में काम कर रहा है, इसका आभास आपको इस लेख से हो जाएगा।

यह अगाथा को भी दिखा दीजिए। जल्दी में लिख रहा हूं।

आपका,
महादेव

संलग्न : बापू का लेख

बुनियादी अंतर

एक क्षण के लिए पुरानी और नयी व्यवस्था के पारस्परिक अंतर पर विचार करना आवश्यक है। इस अंतर को पूरी तरह हृदयंगम करने के लिए हम कुछ देर के लिए विधान की संकीर्णता को भूल जाय। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि कांग्रेस पद-ग्रहण करके अधिक-से अधिक दूरी तक पहुंची है, सभी कांग्रेसियों को यह देखना है कि इनके हाथ में किस तरह का अधिकार आया है। पहले मंत्री लोग गवर्नरों के नियंत्रण में रहते थे अब वे कांग्रेस के नियंत्रण में हैं। वे कांग्रेस के प्रति उत्तरदायी हैं। उन्हें जो दर्जा मिला है, कांग्रेस की बदौलत मिला है। यद्यपि गवर्नरों और सरकारी अमले को हटाया नहीं जा सकता, तब भी उनकी जवाबदेही मंत्रियों के प्रति है। पर मंत्री लोग उनपर एक मर्यादा तक ही नियंत्रण रख सकते हैं। इस तथ्य को सामने रखकर मंत्रिगण कांग्रेस की अर्थात जनता की शक्ति सामर्थ्य को ठोस रूप दे सकते हैं। जब तक मंत्रिगण विधान की सीमाओं के भीतर रहेंगे, उन्हें सब-कुछ करने की छूट रहेगी, भले ही उनके कर्म गवर्नरों को अरुचिकर लगें। वस्तुस्थिति की जांच पड़ताल करने से पता लगेगा कि जब तक जनता हिंसा का परित्याग किए रहेगी, मंत्री लोग राष्ट्रीय शक्ति के विकास के लिए बहुत-कुछ करने को स्वतंत्र रहेंगे।

इस अधिकार के समुचित उपयोग के लिए यह आवश्यक है कि जनता कांग्रेस और उसके मंत्रियों के साथ हार्दिक सहयोग करे। यदि कोई मंत्री अपना कर्त्तव्य

पालन करने मे ढिलाई करत तो इसकी शिकायत अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी से कोई भी आदमी कर सकता है और राहत की माग कर सकता है। पर कानून को कोई अपन हाथ म नही ले सकता।

काग्रेसियो को भी यह बात ध्यान म रखनी चाहिए कि काग्रस की क्षमता को चुनौती देनेवाली राजनतिक पार्टी मैदान म नही है। इसका कारण यह है कि गावो म किसी अन्य राजनतिक पार्टी न अभी प्रवेश नहा किया है। यह कोई एक दिन का काम नहो है। फलत जहा तक मैं देख पाता हू मन्त्रियो के लिए काग्रेस का पूण स्वराज्य का ध्येय सामने रखकर काम करने की असीम सुविधा है। पर इसक लिए यह जरूरी है कि वे ईमानदारी स्वाथ-त्याग परिश्रम और जागरूकता से काम लें तथा बुभुक्षित जन-समुदाय के कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहे। इसम शक नहा कि विधान ने मन्त्रियो के लिए राष्ट्र निर्माण-काय पर व्यय करने के निमित्त धन की समुचित व्यवस्था नही की है पर यह भी भ्राति मात्र है। मैं सर डेनियल हैमिल्टन क इस कथन की साथकता म आस्था रखता हू कि असली धन परिश्रम है धातु नही। कागज द्वारा पोषित श्रम अधिक नहीतो उतना कारगर ता है ही जितना परिश्रम द्वारा पोषित कागज। भारत म ऊचे ऊचे पदो पर रह एक अग्रेज अथशास्त्री क उदगार य हैं भारत को हमारी सबस बुरी देन यह रही कि हमन उसपर मोटी मोटी तनख्वाहोवाले अमल को लादा है। जा हो चुका उसका क्या किया जाय पर अब मुझे स्वतन्त्र रूप म कुछ करना है। इस समय जो-कुछ रुपया कमान की मनोवत्ति स किया जा रहा है वह अब सवा की भावना स अनुप्राणित होकर करना चाहिए। अध्यापको और डाक्टरो को मोटी तनख्वाह देन की जरूरत क्या है? क्या यह काम सहकारिता क आधार पर किया जाना सम्भव नही है? जब आपके पास ७० करोड हाथ काम म जुटने को तयार हैं तो आपको रुपये की चिन्ता क्या करनी चाहिए? यदि सारा काम सहकारिता क आधार पर किया जाय तो वह वास्तव म समाजवाद का ही एक सशोधित रूप होगा। इस तरह रुपये की जरूरत नहा पडगी कम स कम अधिक मात्रा मे तो कदापि नही पडेगी। मैं इसकी पुष्टि छोटे स गाव म पाता हू। सगाव के चार सौ वयस्क नर नारी प्रतिवष १० हजार रुपये अपनी जेबो म आसानी से रख सकते है। बस उनके भर कहने पर चलन की देर है। पर व ऐसा नहा करते क्योकि उनम सहकारिता की भावना का अभाव है। व विवेकयुक्त परिश्रम की कला से अनभिज्ञ है। वे कोई नयी बात सीखना नहीं चाहते हैं। अस्पश्यता ने उनका रास्ता रोक रखा है। यदि उन्हे एक लाख रुपया द दिया जाय तो व उसका सदुपयोग करने म असमथ रहेंगे। अपनी ऐसी दशा के लिए वे खुद ही जिम्मदार हैं। व, अर्थात हम मध्यम

श्रेणी के लोग। जो बात सगाव के बारे में सोचक है वही अन्य गावों पर भी लागू होती है। सगाव म हमारी सतत मेहनत सफल हो तो रही है, पर गति मन्थर है। सरकार इस दिशा म एक पैसा अतिरिक्त खर्च किए बिना बहुत कुछ कर सकती है। सरकारी कर्मचारी लोगों को हैरान परेशान करने के बजाय उनकी सेवा मे जुट सकते हैं। ग्रामीणों से जबरन कोई काम नही कराना चाहिए। उन्हें ऐसी शिक्षा देनी चाहिए, जिससे उनके नैतिक, मानसिक, भौतिक और आर्थिक बल में वृद्धि हो।[१]

मो० क० गांधी

१०

ग्रासवेनर हाउस,
पार्क लेन
लन्दन डब्ल्यू० १
२० जुलाई १९३७

प्रिय महादेवभाई

आखिरकार तुम्हारा ६ तारीख का पत्र आ ही पहुचा। उसे पढ़कर मन कुछ खिन्न हुआ, क्योंकि मुझे ऐसा लगा कि तुम्हारे विचार म काग्रेस का निर्णय युक्तियुक्त तो नही था, पर लोगों की उतावली के कारण उससे बचने का कोई उपाय नही था। पर तुमने अगाथा को जो पत्र लिखा है उसे पढ़कर मुझे अपनी धारणा म परिवर्तन करना पड़ा। मुझे आशा है कि जो निर्णय लिया गया है वह इस कारण से नही कि हमारे राष्ट्रीय चरित्र म स्थायित्व का अभाव है बल्कि इस कारण कि वही निर्णय ठीक था। तुम्हारा यह कथन ठीक ही है कि यदि हम अड़े रहते तो जो आश्वासन चाहते थे, वह हमे मिल जाता। पर वैसी उपलब्धि उपादेय सिद्ध होती इसमे मुझे सन्देह है। सम्भवत गांधी इर्विन पैक्ट के इतिहास की पुनरावृत्ति हो जाती। दूसरी ओर उसका यहा पर हद दर्जे का अनुकूल प्रभाव पड़ा है और यदि यह प्रयोग असफल रहा तो उसका दोष हम अपनी ही कठिनाइयों को देना होगा। पर मेरा विश्वास है कि यह प्रयोग सफल ही होगा असफल नही। यह हमारी परीक्षा की घड़ी है। यदि हमने कठोर परिश्रम किया तथा बुद्धि विवेक से काम लिया साथ ही हम बापू का मार्गदर्शन मिलता रहा तो हम इस अग्नि

परीक्षा में खरे उतरेंगे।

तुम्हारा यह समझना बिल्कुल ठीक नहीं है कि यह सब अधिक दिनों तक टिकने वाला नहीं है। वास्तव में यह सब न केवल बहुत अधिक काल तक टिकेगा ही, बल्कि इसके द्वारा हम अपने अंतिम ध्येय के बहुत निकट आ पहुंचेंगे। पर यह गवनरों पर नहीं स्वयं हमारे ऊपर निर्भर करेगा। इस सम्बन्ध में मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूं कि मैं आज जब बम्बई के मनोनीत गवनर श्री रोजर लम्ले के साथ दोपहर के भोजन पर था तब हमारी बातचीत लगभग दो घंटे चली। वह हम लोगों के बारे में अधिक से-अधिक जानकारी हासिल करना चाहता था। वह बापू से भेंट करने के लिए खासतौर से उत्सुक है। कहता था कि भारत पहुंचने पर उनसे जल्दी-से जल्दी मिलने की कोशिश करेगा। अब यह बताओ कि इसकी व्यवस्था कैसे की जाय। बापू बम्बई बहुत कम जाते हैं पर शायद गवनर से मिलने के लिए चले जाएं। उसने उतने ही महत्त्व की एक और बात भी पूछी—'क्या मंत्री लोग उसके निमंत्रण पर उसके साथ भोजन करने आयेंगे?' मैंने कहा कि मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता। मैंने उसे बताया कि वास्तव में बापू दावतों के खिलाफ हैं पर मंत्री लोग बुलाए जाने पर खाने पर आ सकेंगे या नहीं इस बारे में उस जिम्मेदार व्यक्ति से बात करनी चाहिए वह बापू ही हैं।

नया गवनर सितम्बर के मध्य तक बम्बई पहुंचेगा। मैं भी लगभग उन्हीं दिनों जहाज से उतरूंगा और सम्भव है वहां के लिए रवाना होने से पहले मैं उससे मिलूं।

मुझे से देवदास के तुम्हारे सुझाव के बारे में मैं इतना ही कहूंगा कि इस समय जल्दी से जल्दी भारत लौटने के अलावा मुझे और किसी चीज में दिलचस्पी नहीं है। पर ऐसा लगता है कि मुझे सितम्बर के मध्य तक शायद यहीं अटके रहना पड़े।

हां मैं उद्योगिनी के बढ़िया औजारों और वैज्ञानिक प्रयोग के बढ़िया किट्स जरूर लेता आऊंगा और भी कुछ मंगाना हो तो लिखो।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

११

ग्रासवेनर हाउस,
पार्क लेन
लंदन डब्ल्यू० १
२२ जुलाई १९३७

प्रिय महादेवभाई

आज मैंने चर्चिल के यहां दोपहर का भोजन किया और उनके साथ दो घंटे बिताए। सदैव की भांति इस बार भी वह बड़ी सहृदयता से पेश आए पर भारत के बारे में उनका अज्ञान ज्यों का-त्यों है।

वह मुझे देखते ही बोले, 'तो, एक महान प्रयोग का आरम्भ हो गया है, है न ?' मैंने उत्तर में कहा, 'सो तो है, आरम्भ तो हो गया है पर उसकी सफलता के लिए आपकी सहानुभूति और सद्भावना चाहिए।' उन्होंने मुझे आश्वासन दिया पर साथ-ही-साथ कहा, 'यह सब खुद आप लोगों पर निर्भर है। आप जानते ही हैं कि राजा के हस्ताक्षर होने के बाद से मैंने विधान के विरुद्ध जबान तक नहीं हिलाई है। आप इस प्रयोग को सफलतापूर्वक निभा ले गये तो आप अपने लक्ष्य स्थान पर स्वतः ही पहुंच जायेंगे। संसार भर में प्रजातंत्र की कैसी छीछालेदर हो रही है, आप जानते ही हैं, पर आप लोग प्रजातंत्र को सफल सिद्ध कर पायेंगे तो आपको और भी आगे बढ़ने में कोई कठिनाई नहीं होगी। आप हमारे साथ न्याय का व्यवहार कीजिए, हम आपका साथ देंगे।'

मैंने पूछा, "न्याय के व्यवहार से आपका क्या अभिप्राय है ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'प्रांतों को संतुष्ट कीजिए, उनमें शांति का वातावरण निर्माण कीजिए, लोगों को खुशहाल बनाइए। हिंसा मत करिये, अंग्रेजों की हत्या मत करिये।' मैंने उत्तर दिया, 'आपने जो-कुछ कहा है उससे मैं तो अवाक् रह गया। क्या आप सचमुच यह मानते हैं कि हम अंग्रेजों की हत्या करेंगे ?' उन्हें मेरे सहज लहजे पर आश्चर्य हुआ। पर उन्होंने मेरा यह आश्वासन स्वीकार किया कि भारत हिंसा में विश्वास नहीं रखता। मैंने कहा, 'कट्टर-से-कट्टर अतिवादी कांग्रेसी को भी अंग्रेज विरोधी नहीं कहा जा सकता। वह स्वतंत्रता के ध्येय में अवश्य विश्वास रखता है, पर इसलिए उसे अंग्रेज विरोधी बनने की जरूरत नहीं है।' उन्होंने पूछा कि "क्या यह बात जवाहरलाल पर भी लागू होती है ?" मैंने कहा, 'निस्संदेह। मैं पूंजीवादी हूं, वह समाजवादी हैं। और सामाजिक मामलों में मेरा

उनसे मतभेद है, पर यदि निष्पक्षता से काम लिया जाय, तो कहना पड़ेगा कि वह एक महान पुरुष हैं, नीयत के साफ हैं, और अंग्रेज विरोधी तो बिलकुल ही नहीं हैं। आप एक बार भारत आकर अपनी आंखों से देखिए कि वहां कैसा वातावरण है। इससे हम भी बड़ी सहायता मिलेगी।' वे बोले, 'मैं अवश्य आना चाहूंगा। लिनलिथगो ने तो मुझे न्योता दे भी रखा है। बस मिस्टर गांधी के निमंत्रण की आवश्यकता है, तुरंत चल पड़ूंगा। आप अपने नेता को मेरी शुभकामनाएं दीजिए, और कहिए कि मैं उनकी पूरी सफलता की कामना करता हूं। समाजवाद से लोहा लेने में कभी मत हिचकिचाइए। धनसंग्रह एक अच्छी चीज है, क्योंकि उसकी सहायता से नये मार्ग खोज निकालने की प्रवृत्ति को बल मिलता है। अलबत्ता, पूंजीपतियों को सेवकों-जैसा आचरण करना चाहिए, स्वामियों-जैसा नहीं।'

यूरोपीय राजनैतिक स्थिति के भविष्य के बारे में उन्होंने काफी संशय प्रकट किया। आनेवाले एक साल तक लड़ाई नहीं छिड़ेगी, ऐसी उनकी धारणा है, पर उसके बाद क्या होगा, सो वे नहीं बता सकते। बोले, 'ये डिक्टेटर पागलों जैसा आचरण कर रहे हैं। अपना सिक्का जमाये रखने के लिए वे जो न कर गुजरें, थोड़ा है। एक ओर रूस उत्तरोत्तर कम साम्यवादी होता जा रहा है, तो दूसरी ओर जर्मनी अधिकाधिक समाजवादी बनता जा रहा है। इस प्रकार एक हद तक दोनों एक ही मार्ग पर चल रहे हैं। अकेला ब्रिटेन ही ऐसा देश है, जहां प्रजातंत्र पनप रहा है। मैंने इंग्लैंड के शस्त्रीकरण का आंदोलन इसलिए उठाया कि इस संसार में राष्ट्रों का शासन या तो न्याय के बल पर होता है या भौतिक शक्ति के बल पर। पर न्याय का मार्ग अपेक्षाकृत बेहतर मार्ग है। आपके पास भौतिक शक्ति का अभाव होगा, तो आप न्याय का प्रतिपादन करने में असमर्थ रहेंगे। अब हमारे पास शक्ति है, इसलिए हम न्याय का प्रतिपादन करने में समर्थ हैं। इटली एक साम्राज्य स्थापित करने का स्वप्न देख रहा है।'

इस लहजे में वह देर तक बोलते रहे। इस बार उन्होंने मुझसे अनुरोध किया है कि मैं उन्हें भारत की स्थिति के बारे में अभिज्ञ रखूं। मैंने वचन दिया।

मैं जो वृत्त भेजता रहा हूं, उनमें से कुछ एक के प्रति बापू की क्या प्रतिक्रिया हुई, वह मुझे अवश्य बताओ।

कुछ कटिंग भेज रहा हूं, जो बापू को दिलचस्प लगेंगे। 'मार्निंग न्यूज' तो लोगों के कानों में विष उंडेलता ही रहता है। पर इससे क्या हुआ? हम ठीक रास्ते पर चलते रहें।

तुम्हारा
घनश्यामदास

१२

वाइसराय शिविर
भारत
२३ जुलाई, १९३७

प्रिय मिस्टर गांधी,

जब मैं शिमला वापस लौट रहा होऊं तब यदि आप आकर मुझसे नयी दिल्ली में मिल सकें, तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। यदि यह सुझाव आपको ठीक जंचे तो क्या आगामी बुधवार, ४ अगस्त को, सुबह ११॥ बजे वाइसराय भवन में भेंट का समय आपके लिए सुविधाजनक रहेगा ?

मुझे आपसे किसी सार्वजनिक विषय पर चर्चा नहीं करनी है। पर मुझे आपसे मिलकर हार्दिक प्रसन्नता होगी और मुझे पूरी आशा है कि आपके लिए आना सम्भव होगा।

भवदीय
लिनलिथगो

प्रतिलिपि

१३

वर्धा
२३ ७ ३७

प्रिय घनश्यामदासजी

बापू का वह लेख जिसकी अग्रिम प्रति मैंने पिछले हफ्ते के पत्र के साथ भेजी थी लोगों को बहुत पसंद आया। 'टाइम्स ऑफ इंडिया' ने उसे प्रकाश डालनेवाला बताया और 'स्टेट्समैन' ने उस पर विस्तार के साथ टिप्पणी की। 'स्टेट्समैन' के उक्त अंक की कटिंग भेज रहा हूं। साथ ही, मंत्रियों के वेतन के विषय पर लिखे गये लेख की नकल भी भेज रहा हूं। यह लेख प्रकाशित नहीं किया जा रहा है क्योंकि यह तभी प्रकाशित किया जाता जब मुख्य मंत्रिगण इसे पसंद करते। इस लेख को छापने में सभी मुख्य मंत्रियों को आपत्ति है। पर इससे बापू के मानस का दिग्दर्शन

होता है। बापू ने लेख रद्द तो कर दिया है पर वह खामोश रहनेवाले नहीं हैं। ठीक जिस प्रकार उन्होंने अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ को अस्तित्व में लाने के तुरत बाद ही हमारे अपने रहन सहन को ग्राम्य रूप देने की हठ की थी उसी प्रकार अब उनकी हठ है कि मंत्री लोग भारतीय जन साधारण की मनोवृत्ति अपनायें। बेचारे मंत्री लोग अभी में छटपटा रहे हैं और दया की याचना कर रहे हैं। राजाजी कहते हैं मैं बापू की सारी बात समझ गया हूं पर बापू को जरा सब्र से काम लेना चाहिए। वह मुझसे जो कुछ करने को कहेंगे मैं अवश्य करूंगा पर मैं अपने सहयोगियों से यह सब कैसे करा सकूंगा? मुंशी (कन्हैयालाल माणिक लाल) ने लिखा है 'दया करिये और जो कुछ हम आपके चरणों में चढ़ायें, उसी से संतोष कर लीजिए। जो हमारी सामर्थ्य के बाहर हो उसकी अपेक्षा मत करिये।

उधर नयी जिम्मेदारियों ने राजाजी जैसे शुद्ध मानसवालों की नींद हराम कर रखी है। राजाजी का तो कहना है कि बापू उनसे जितने की अपेक्षा करते हैं, उसके आसपास तक पहुंचने के प्रयत्न में ही उनका प्राणान्त हो जायगा। ऐसे व्यक्तियों में उनकी परेशानियां तो और भी बढ़ गई हैं जो पदों की आस लगाये बैठे थे। अब वे निराश हो गये हैं तो मलाबार और उड़ीसा में साम्प्रदायिक दंगों की बात कहकर मन का ताप निकाल रहे हैं। कुछ लोगों को मंत्रिमंडलों में नहीं लिया जा सका। हार्निमन दिन रात अपने स्तम्भों में यह लिख लिखकर कि सरकार ने नरीमान को खत्म कर दिया और साथ ही न्याय और कानून का भी गला घोट दिया, साम्प्रदायिकता की आग में ईंधन झोंकने में लगा हुआ है।

पर मुझे आशा है कि समय के साथ-साथ यह सब भी बीती बात हो जायेगी और हम ठोस काम में लग जायेंगे। जब नये मंत्रिमण्डलों का गठन पूरा हो जायगा तो ये लोग भी खामोश हो जायेंगे।

आजकल बापू की तबीयत ठीक नहीं रहती। कार्यकारिणी की बैठकों ने उन्हें थका डाला है। मुझे पता लगा कि वह सामर्थ्य से बाहर परिश्रम कर रहे थे। अब वह विश्राम ले रहे हैं। पर उन्हें पुराना ढर्रा अपनाने में क्या देर लगती है? अगर कोई उन्हें प्रार्थना के बाद रोज मौन धारण करने को राजी कर पाये तो बड़ी बात हो। इससे कम-से-कम रात में आराम से सो सकेंगे। आप उन्हें लिखियेगा। मैं सरदार और जमनालालजी से भी यही कहने का विचार कर रहा हूं।

आपने पूछा है कि क्या यंग इंडिया का पुनर्जीवित करना ठीक नहीं रहेगा? अवश्य रहेगा। पर बापू का विचार है कि वह ऐसा करने से पहले यह देखेंगे कि वर्तमान मंत्रिमण्डल कैसे चल रहे हैं। कौन कह सकता है कि सब-कुछ ताश के पत्तों

के मकान की तरह अचानक गिर नहीं पडेगा। इसलिए वह फिलहाल 'हरिजन' को ही अधिक अच्छा बनाने के प्रयत्न में हैं और इतने में ही सतुष्ट रहेंगे। उन्होंने इस काम में हाथ लगा भी दिया है। इस सप्ताह का लेख भेज रहा हूं। बापू ३-४ महीने ठहरकर देखेंगे कि मत्रि मडलो ने अपने लिए स्थान बना लिया है और वे निर्धारित योजना को कार्यान्वित करने में जुटे हुए हैं, तो हम यग इडिया भी निकालेंगे। अकेले इस एक लेख से और अब दो लेखो से हरिजन की ग्राहक सख्या तेजी से बढ़ने लगी है।

क्या आप मेरे लिए या मेरे दफ्तर के लिए स्टेट्समन्स इयर बुक' (नवीन सस्करण) तथा एक आधुनिक एटलस अपने साथ ला सकेंगे? मुझे अब गवारो जैसी आदत छोडकर शहरी बनना होगा। यह चिट्ठी अगाथा को भी दिखा दीजिए।

सप्रेम

आपका
महादेव

यह पारितोषिक वितरण नहीं है

मेरे पास विभिन्न प्रातो से लोगो की शिकायतें आ रही हैं कि मत्रिमडलो में उन्हें अथवा उनके मित्रो को नहीं लिया गया। वे चाहते हैं कि मैं हस्तक्षेप करूं। मैं तो नहीं समझता कि ऐसा कोई प्रात बचा हो, जहा से ऐसी शिकायतें न आई हो। कुछ पत्रो में तो भयकर परिणाम की धमकी दी गई है कहा गया है कि यदि इन इन लोगो को नहीं लिया गया, तो साम्प्रदायिक दगे शुरू हो जायेंगे।

सबसे पहले तो यह बता दू कि मैंने मत्रियो को चुनने के मामले में एक बार भी हस्तक्षेप नहीं किया है, ऐसे मामलो में दखल देने की न तो मेरी इच्छा है न अधिकार। क्योंकि मैंने काग्रेस से बिलकुल नाता तोड लिया है। काग्रेस के काय में मेरा योगदान पद-ग्रहण करने से उत्पन्न होनेवाली समस्याओ का हल तलाश करने तथा पूर्ण स्वराज्य के ध्येय की ओर प्रगतिशील रहने के लिए आवश्यक नीतियो का अनुसरण करने तक ही सीमित है।

पर मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा है कि ये असख्य लोग जो मुझे ढेर की ढेर चिट्ठिया भेज रहे हैं इस भ्रम में हैं कि मत्रि पद पुरानी सेवाओ के पारितोषिकस्वरूप है इसलिए कुछ काग्रेसी तो निश्चित रूप से मत्रि मडलों में शामिल किये जाने के अधिकारी हैं ही। इन सज्जनो से मेरा कहना यह है कि मत्रियो के पद सेवा-कार्य

के विभिन्न क्षेत्र मात्र हैं जिनमे उन लोगो को जिन्हे इन पदो के लिए चुना गया है अपनी पूरी शक्ति और योग्यता का उपयोग करना होगा। अत इन पदो के लिए छीना झपटी का सवाल ही पैदा नही होता। निहित हितो को सतुष्ट रखने के लिए मत्रियो के ओहदे कायम करना एक हद दर्जे का गलत काम होगा। अगर मैं मुख्य मत्री होता और मुझे ऐसी मागो का सामना करना पडता तो मैं तो अपने निर्वाचको से कह देता किसी और को अपना नेता चुनो। इन पदो की जिम्मेदारी निभाना हसी खेल नही है। वास्तव म ये पद काटो के ताज हैं प्रसिद्धि के ताज नही हैं। यह पद कवल इसलिए ग्रहण किया गया है कि अपने ध्येय की ओर बढने मे इसके माध्यम से गति मिलती है या नही यह देखा जाय। यदि स्वार्थी या गलत ढग के उत्साह से ओतप्रोत तत्त्व मुख्य मत्रियो पर अपना दबदबा बैठाने मे और प्रगति के माग म रोडे अटकाने मे समथ हुए तो यह बडे दुर्भाग्य की बात होगी। जिन व्यक्तियो को अधिकार का चोगा पहनाया गया है यदि उनसे आश्वासन लेना आवश्यक था तो शेष समुदाय से असदिग्ध वफादारी, समझदारी और स्वेच्छापूर्वक अनुशासन के आचरण का वचन प्राप्त करना और भी अधिक आवश्यक है। लक्ष्य सिद्धि के निमित्त काग्रेस ने जो साधन निर्धारित किये हैं यदि काग्रेसियो ने उनमे पर्याप्त मात्रा म आस्था नही रखी और अपने आचरण द्वारा स्वार्थ-त्याग तथा सयम की भावना का परिचय नहा दिया तो देश जिस घोर सग्राम म लगा है उसम विजय की आशा करना व्यर्थ सिद्ध होगा।

कराची के प्रस्तावो ने यह स्पष्ट कर दिया है कि काग्रेस के तत्त्वावधान म मत्रियो के पदो म आर्थिक दृष्टि म कोई आकर्षण नही है। मैं यह कहे बिना नही रह सकता कि ५०० रु० को अधिकतम के बजाय न्यूनतम वेतन कहना एक गलती थी। ५०० रु० अतिम सीमा थी। यदि देश पर बढ चढे वेतन न लदे होते तो हम ५०० रु० को भी अधिक मानते। काग्रेस ने पिछले १७ वर्षों से कम-से कम ७५ रु० मासिक का ही उचित समझा है। उसकी तीनो बडी भारतव्यापी रचनात्मक सस्थाओं—राष्ट्रीय शिक्षण खादी तथा ग्रामोद्योग—म अधिकतम वेतन ७५ रु० ही रहा है। इन सस्थाओ म जो लोग काम करते हैं वे योग्यता की दृष्टि स किसी भी समय मत्रि-पद के लायक सिद्ध हो सकते हैं। इन लोगो मे प्रतिष्ठित शिक्षा शास्त्री कानून विशारद रसायन विशेषज्ञ तथा व्यापारी हैं जो सहज ही आसानी से ५०० रु० मासिक से अधिक कमा सकते थे। मत्री बन जाने से ही हम लोगो को इतना भिन्न क्या समझने लगें ? पर अब तो पासा पड चुका है। मेरे उदगार बिलकुल व्यक्तिगत उद्गार हैं। मुख्य मत्रियो के विवेक तथा लोगो के निर्णयात्मक तरीके के बारे म मेरी बडी ऊची धारणा है। शायद उन्हें लगा होगा कि वे जिस

परिस्थिति का सामना कर रहे है उसमे यही ठीक रहेगा। मैं इन पत्र-लेखको के समक्ष जो बात स्पष्ट करना चाहता हू वह यह है कि यह पद वेतन के आकर्षण के कारण ग्रहण नही किये गए हैं।

य पद पार्टी म केवल उन्ही को दिये जा सकते है, जो अपने सिर आई जिम्मे दारियो को निभाने मे सक्षम समझे जायेंगे।

किसी भी व्यक्ति की योग्यता की सबसे बडी कसौटी तो यह है कि समूची पार्टी उसकी योग्यता की कायल हो। कोई मुख्य मन्त्री केवल अपनी पसद के किसी पुरुष या स्त्री को पार्टी पर एक क्षण के लिए भी नही थोप सकता। उसे मुख्य मन्त्री केवल इस कारण बनाया गया है कि उसमे लोगो को समझने तथा पार्टी का विश्वास अर्जन करने की क्षमता है और उसमे अन्य ऐसे गुणो का समावेश भी है जो नेता बनने के लिए आवश्यक है।

मो० क० गाधी

१४

बापू का लेख

अपेक्षाए

हमारा यह देश ससार भर म सबसे दरिद्र है। काग्रेसी मन्त्रियो ने अपने लिए जो वेतन-स्तर निश्चित किया है वह देश की गरीबी को देखते हुए बहुत ऊचा है, ऐसी सम्मति व्यक्त करने मे मैंने सकोच नही किया है। प्रो० के० टी० शाह ने जल्दी में जो नोट भेजा है और जिसे पाठकगण अन्यत्र पढेंगे उससे पता चलता है कि देश की औसत आय ४ पौंड है जबकि ब्रिटेन की औसत आय ५० पौंड है। दुर्भाग्य से, हमे ब्रिटिश उत्तराधिकार का भार अभी कुछ दिन और वहन करना पडेगा, और भरसक कोशिश करने पर भी आदर्श स्तर हमारी पहुच के बाहर ही रहेगा। अब वेतन और भत्ते की बात तय हो चुकी है। शेष यही प्रश्न रह जाता है कि क्या मन्त्रिगण उनके सचिव तथा सदस्यगण अपने-आपको वेतन का अधि कारी प्रमाणित करने के लिए आवश्यक कठोर परिश्रम करने को उद्यत रहेंगे ? क्या सदस्यगण राष्ट्र की सेवा म अहर्निश लगे रहगे और अपने काय का पूरा ब्योरा पेश करने को तत्पर पाये जायेंगे ? हम इस भ्राति म कदापि नहीं पड़ना

चाहिए कि जैसी स्थिति है वैसी ही हम चाहते थे अथवा वैसी ही होनी चाहिए।

और इतना ही यथेष्ट नहीं है कि मन्त्रिगण सादगी से रहें और कठोर परिश्रम करें। उन्हें यह भी देखना है कि वे जिन जिन विभागों की देखभाल कर रहे हैं वे भी उनका अनुकरण कर रहे हैं या नहीं। न्याय पहले की भांति महंगा नहीं रहना चाहिए और न्याय करने में पहले की तरह देर भी नहीं होनी चाहिए। अब तक तो न्याय पैसेवालों के विलास की सामग्री रहा है और दांव लगानेवालों के कौतुक का विषय बना है। पुलिस को जनता का त्रास देने के बजाय उसके प्रति मित्रों जैसा आचरण करना सीखना होगा। शासन व्यवस्था का ऐसा कायापलट होना चाहिए कि वह साम्राज्यवादी शोषकों की आवश्यकताएं पूरी करने के बजाय गरीब से गरीब ग्रामीण के अभावों की पूर्ति करे।

यदि मन्त्रिगण की चली तो जो लोग जेलों में बंद हैं और जिन पर हिंसात्मक कार्यवाहियों के आरोप हैं वे भी अब रिहा कर दिये जाएंगे। यह कोई मामूली बात नहीं है। कांग्रेस तो अहिंसा में भरोसा रखती है इसलिए इसका महत्त्व और बढ़ जाता है। कांग्रेस हिंसा की छोटी छोटी बातों को भी गहन गम्भीर मानती है जबकि उसे एक महान् सत्ता को अपदस्थ करना है। वह हिंसा की व्यक्तिगत कार्यवाहियों का सामना दण्ड व्यवस्था की संगठित हिंसा से नहीं बल्कि अपराधी व्यक्तियों से मैत्री का नाता जोड़कर उन्हें अहिंसा सिखाने और हिंसा के खिलाफ लोकमत तैयार करने की उपादेयता में विश्वास रखती है। उसकी कार्य प्रणाली निरोधात्मक है दण्डात्मक नहीं। दूसरे शब्दों में, कांग्रेस सेना के सहयोग और पुलिस के माध्यम से शासन कार्य नहीं चलाएगी वह तो जन साधारण के अधिक से अधिक सहयोग और सद्भाव से प्राप्त अधिकार से काम लेगी। वह शस्त्रबल से नहीं जनता जनार्दन की सेवा के बल पर हुकूमत करेगी। वह जो-कुछ करेगी जनता के नाम पर करेगी क्योंकि वह जनता की प्रतिनिधि संस्था है।

अब तक ज़ब्त रखा गया साहित्य अब सबको उपलब्ध रहेगा। कुछ ऐसी भी निषिद्ध पुस्तकें हैं जिनके पठन-पाठन से सम्भव है हिंसा को प्रोत्साहन मिले अश्लीलता जोर पकड़े या साम्प्रदायिक भावना बलवती हो। इस सारे ज़ब्तशुदा साहित्य को मुक्त करने का अर्थ हिंसा, अश्लीलता अथवा साम्प्रदायिक रागद्वेष को परवाना देना नहीं है। आपत्तिजनक साहित्य से निपटने में वह प्रबुद्ध जनमत के मुक्त समर्थन की अपेक्षा रखेगी। मन्त्रिगण अपने प्रान्तों में हिंसा घृणा तथा अश्लीलता का जोर पकड़ते देखेंगे तो अपराध विधान की धाराओं का आश्रय लेने से पहले कांग्रेसी संगठनों और अन्ततोगत्वा कार्यकारिणी समिति से सक्रिय सहयोग की याचना करेंगे। वास्तव में कांग्रेस की सफलता का मापदण्ड पुलिस और सेना

का एक प्रकार से निष्क्रिय सिद्ध करने के प्रयत्न मे निहित है। यदि उसन सकट की वेला म पुलिस तथा सेना का सहारा लिया, तो उसे शासन काय के अयोग्य समझा जाना चाहिए। इस शासन विधान को निकम्मा साबित करने का एकमात्र तरीका यही है कि अपन शासन काय से काग्रेस सेना के उपयाग को बिलकुल अनावश्यक तथा पुलिस की सहायता का कवल असाधारण परिस्थितियो म ही ग्राह्य माने। एक सज्जन ने सुझाव दिया है कि सेना और पुलिस का अधिक मत्री सूचक नामकरण किया जाए। यह सुझाव उत्तम है।

मो० क० गाधी

१५

वर्धा

२७ ७ ३७

प्रिय मित्र

आपके कृपा पत्र के लिए धन्यवाद।

मैं इधर कुछ दिना म सीमा प्रात म खान साहब अब्दुल गफ्फार खा के प्रवेश पर लग प्रतिबन्ध को उठा लेने की सभावना तथा वहा जान क अपने विचार के सबध म चर्चा करने क निमित्त आपसे भेंट का अनुरोध करने की बात साच रहा था। हालाकि मर वहा जाने पर कोई बन्दिश नही है पर मैं अधिकारियो की इच्छा के विरुद्ध वहा नही जाना चाहता था।

अत आपके पत्र का दुहरा स्वागत है। मैं यह मान लता हू कि इन दोना बातो की चचा के बार म कोइ आपत्ति नहा होगी। मुझे आगामी ४ अगस्त सोम वार का दिन के ४॥ बजे वाइसरायभवन म उपस्थित रहन म प्रसन्नता हागी।

आपका

मो० क० गाधी

महामहिम वाइसराय,

नयी दिल्ली

१६

ग्रासवेनर हाउस,
पार्क लेन,
लन्दन डब्ल्यू० १
२७ जुलाई, १९३७

प्रिय महादेवभाई

मुझे तुम्हारा पत्र तथा तुम्हारे लेख की प्रतिलिपि अभी-अभी मिली है। तुमने लेख की नकल भेजकर अच्छा ही किया क्योंकि मैंने लार्ड जटलैंड से आज ही बात की थी और उनका कहना था कि उक्त लेख उनकी नजर से नहीं गुजरा है पर पत्रों में जो कुछ निकला है उसके आधार पर उन्होंने यह धारणा बनाई है कि माना मिस्टर गांधी ने वामपंथियों को थोड़ा बहुत खुश करने के लिए यह लेख लिखा था। मैंने पूछा कि उनका अभिप्राय लेख के किस वाक्य से है? पर वह कुछ नहीं बता सके केवल अपनी अस्पष्ट धारणा ही दुहराकर रह गए।

मैंने लार्ड जटलैंड का ध्यान लेख के दो वाक्यों की ओर विशेष रूप से आकृष्ट किया। एक तो वह था जिसमें बापू ने ब्रिटेन की तलवार का स्थान बहुमत को देने की बात कही है। दूसरा यह कि पद ग्रहण एक ओर रक्तपातपूर्ण क्रांति से तथा दूसरी ओर सविनय अवज्ञा से बचने के लिए किया गया है। उन्होंने पूरा लेख देखने की अभिलाषा प्रकट की। मैंने लेख की नकल भेजने का वचन दिया है।

पर एक बात जाहिर है। ठीक जिस प्रकार हम लोगों में विश्वास का अभाव है इसी प्रकार उनमें भी है। यद्यपि मुझे इसमें संदेह नहीं है कि धीरे धीरे इस अविश्वास की भावना का अंत हो जाएगा। अन्य बातों की चर्चा के दौरान मुझे लगा कि वह बापू और वाइसराय के एक दूसरे के निकट आने की अभिलाषा रखते हैं। मैंने उन्हें बताया कि जब मैं भारत से रवाना हो रहा था तो बापू ने संयोगवश यह कहा था कि सम्भव है वह सीमा प्रांत के प्रश्न पर बात करने के निमित्त वाइसराय से मिलें पर मैं यह निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि अब भी उनका वैसा ही इरादा है साथ ही मैंने सुझाव दिया स्वयं वाइसराय ही गांधीजी को लिखकर मिलने का निमंत्रण क्यों नहीं दे देते?' भारत-सचिव को यह सुझाव पसंद आया। शायद वह वाइसराय को लिखें भी पर उन्होंने यह भी कहा कि सारी कठिनाई इस बात की है कि गांधीजी अनेक बार कह चुके हैं कि कांग्रेस में उनका कोई स्थान नहीं है। भारत-सचिव का शायद यह अभिप्राय रहा होगा कि कांग्रेस में

अपना कोई दर्जा न रहने का बहाना लेकर बापू वाइसराय द्वारा आमंत्रित किये जाने पर भी भेंट न करें। वाइसराय और बापू की मुलाकात से पहले वाइसराय और जवाहरलालजी की मुलाकात की उपादेयता के बारे में लार्ड जेटलैंड को संदेह था। हो सकता है, वह वाइसराय को लिखें।

पर इस संबंध में बापू की वर्तमान विचारधारा क्या है मुझे बता सकोगे? मैंने यह बात अपनी पिछली चिट्ठी में भी उठाई थी पर अभी तक उत्तर नहीं आया है। आशा है, मेरे काम में हाथ बटाने के लिए तुम मुझे पूरी तरह सूचित रखोगे। इधर सेगांव में क्या हो रहा है इस बाबत मुझे कुछ पता नहीं है और तुम चाहते हो कि मुझे जानकारी रहनी चाहिए, सो तुम्हें मेरी मदद करनी होगी।

मैंने राजाजी के नाम बापू के तार की नकल लार्ड हैलिफक्स के पास भेज दी है। मुझे यकीन है कि उन्हें वह तार अच्छा लगेगा। मैंने 'हरिजन' में बापू के प्रकाशित लेख की नकलें भी लार्ड हैलिफक्स, लार्ड लोदियन तथा श्री बटलर को भेज दी हैं। तुम्हें मालूम ही है कि बटलर भी भारत के बारे में अपनी जानकारी बनाये रखने को उत्सुक हैं।

तुम्हें मेरे पत्रों से अंदाज लगा होगा कि अगले जाड़ों में कुछ प्रमुख अंग्रेजों का भारत भ्रमण मैं कितना जरूरी समझता हूं जिससे उनके साथ हमारा सम्पर्क स्थापित हो सके। मैं दो वर्ष बाद की बात सोच रहा हूं, जब हमें अगले कदम के बारे में बातचीत चलानी होगी। यह सम्पर्क तब बड़े काम आएगा। हमारे प्रमुख लोगों को भी अगले वसंत में यहां आकर लोगों से मिलना जुलना चाहिए। अब सबसे पहले यह बताओ कि बापू को यह सुझाव कैसा जंचा। मैं तुम्हें लिख ही चुका हूं कि चर्चिल ने मुझे यह बताया है कि उन्हें लार्ड लिनलिथगो का निमंत्रण तो मिल चुका है पर यदि बापू भी उनके भारत आगमन के पक्ष में हों तो शायद वह भारत के लिए चल पड़ेंगे। यदि बापू को चर्चिल का यह सुझाव ठीक लगे तो मैं अर्ल बाल्डविन के सामने यह बात रखूंगा। यों उनका राजनैतिक क्षेत्र में अब पहले जैसा योगदान नहीं है। फिर भी उनका प्रभाव अक्षुण्ण है। यहां मैंने इस सुझाव की चर्चा जिस किसी से की, उसी ने इसे पसंद किया। पर जब तक मुझे बापू के विचार का पता नहीं लगेगा मैं इस मामले को आगे बढ़ाना पसंद नहीं करूंगा। इन शीर्षस्थ नामों में से कोई भारत जाएगा ऐसा तो मुझे नहीं लगता है पर यदि यह सुझाव उनके सामने रखा जाए, तो इस पर सोच विचार करने के बाद सम्भव है दो एक जाने को राजी हो जाएं।

लार्ड हैलिफक्स अपने एक पत्र में लिखते हैं : 'मैं आपसे इस बारे में बिलकुल

सहमत हूं कि कांग्रेस की कठिनाइयां का अब आरम्भ होता है, पर उसे यह भरोसा रखना चाहिए कि उसके साथ हमारी सदभावना प्रचुर मात्रा में है ही।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

पुनश्च

कुछ रोज के बाद मैं एक ट्रेड पैक्ट के बारे में एक विस्तृत पत्र बापू को लिखने वाला हूं। गरज यह है कि यदि मुझे ऐसा लगे कि हम अमुक तरह की संधि कर लेनी चाहिए तो ऐसा करने के पहले बापू से मशविरा करना चाहता हूं और उनकी तथा हमारे अन्य राजनैतिक नेताओं की राय जानना चाहता हूं। आशा है जब मैं लिखूंगा तब बापू सारी बात को समझकर मुझे हां या ना' में उत्तर भेज देंगे। कोई काम हम करें और बाद में देश को वह पसंद न आवे यह तो ठीक नहीं। इसलिए कुछ करने के पहले बापू की राय जाननी होगी। बापू मुझे ऐसा न लिख दें कि यह मामला मेरे क्षेत्र के बाहर है। व्यापारियों की मनोवृत्ति हम जानते हैं और यह भी जानते हैं कि वे सब अपने अपने क्षेत्र के लाभ की ही सोचेंगे। सार्वजनिक लाभ का विचार तो बापू ही कर सकते हैं और इस संबंध में वे चाहें तो वल्लभभाई राजेन्द्र बाबू आदि से सलाह करें। हम यदि कोई गुंजाइश मालूम नहीं दी तो हम खुद न तो कुछ करेंगे और न बापू को ही कष्ट देंगे। पर जो चीज मुझे पसंद आए उसे करने के पहले सलाह लेनी होगी। बापू मुझे उसके बारे में अपनी राय दें यह निवेदन है।

घनश्यामदास

१७

ग्रासवनर हाउस
पार्क लेन
लन्दन डब्ल्यू० १
२८ जुलाई १९३७

प्रिय महादेवभाई,

इस पत्र के साथ भारत-सचिव की संक्षिप्त स्पीच का एक अंश भेजता हूं जो उन्होंने शर्मा द्वारा आयोजित दोपहर के भोजन के समय आज दी थी।

"उन्होंने सर आर० एस० शर्मा के इस कथन के साथ सहमति व्यक्त की कि राजनैतिक स्थिति के प्रति दृष्टिकोण में बड़ा परिवर्तन हुआ है और यह परिवर्तन बड़े ही महत्त्व का है।' उन्होंने कहा 'मैं स्थिति को जैसा कुछ समझ सका हूं उस आधार पर कह सकता हूं कि भारत प्रगति के पथ पर चलकर अब इस मंजिल पर जा पहुंचा है जहां मार्ग दो दिशाओं में बढ़ता है। भारत को यह तय करना है कि उसे कौन-सा मार्ग पसंद है। एक मार्ग के कोने पर लिखा हुआ है 'क्रांति' दूसरे मार्ग के कोने पर लिखा है 'विकास'। मेरी भारत के बारे में सदैव यह आस्था रही है कि उसने क्रांति के पथ का अनुसरण करने के बजाय विकास का पथ अपनाने की अधिक क्षमता दिखाई है। यद्यपि किसी को भविष्यवाणी करने का दुस्साहस नहीं करना चाहिए, फिर भी मेरी यह आशा सार्थक ही सिद्ध हुई है।"

"अब हमारा एकमात्र कर्त्तव्य यह है कि वातावरण में जो अविश्वास व्याप्त हो गया है, उस पर विजय पाएं और कांग्रेस में संदेह की जिस भावना ने घर कर लिया है उसका निवारण करें। कांग्रेस ने पद ग्रहण करने का निर्णय लेते समय जिस भाषा का प्रयोग किया था उसमें सन्देह का संकेत था। फिर भी कांग्रेस ने पद ग्रहण किया। अविश्वास और सन्देह का वातावरण दोनों ओर मौजूद है और यदि कांग्रेस और सरकार के अब तक के संबंधों को ध्यान में रखा जाए तो ऐसा वातावरण स्वाभाविक ही है। पर मेरा विश्वास है कि ज्यों ज्यों कांग्रेस को शासन सम्बन्धी अनुभव होता जाएगा यह वातावरण भी उसी अनुपात में क्षीण होता जाएगा।

इस दौरान हम जो बात मन में अपने ध्यान में रखनी है वह ब्रिटेन और भारत के एक-साथ आगे बढ़ने की बात है—यह एक ऐसा चित्र है जिसमें दोनों एक दूसरे की सहायता करते दिखाई देते हैं—ऐसा चित्र जिसमें हम लोग भारत

का अधिक-से अधिक प्रदान करने को प्रस्तुत दिखाई दें। यदि हम यह चित्र अपनी आंखों के सामने रखेंगे तो भारत में मेरी आस्था न्याय्य सिद्ध होगी।

सप्रेम

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

१८

ग्रासवेनर हाउस,
पार्क लेन,
लन्दन, डब्ल्यू० १
२६ जुलाई १९३७

पूज्य बापू,

आपका हाथ से लिखा हुआ पत्र मिला। मैंने उसकी प्रतीक्षा नहीं की थी। महादेवभाई के पत्र आते ही हैं। हाल में तो हर डाक से आने लगे हैं पर आपके पत्र से मुझे काफी उत्साह मिलता है। कभी कभी लगता है कि कोई गलती तो नहीं हुई। बाकी तो ईश्वर जैसी सूझ देता है वैसे ही चलता हूं। ध्येय तो एक ही है कि हमारा मंगल हो। मंत्रियों के वेतन के संबंध में आपके लेख की तथा राजाजी को लिखे आपके पत्र की नकलें मिलीं। यदि मंत्री लोग सादगी से रहें तो खूब प्रभाव पड़ेगा। यह सत्य है कि जापान में लोग बहुत सादगी से रहते हैं। मैंने सुना है कि हमारी मुद्रा में चार सौ रुपये से ज्यादा वहां वेतन नहीं है पर यह भी सही है कि वहां करोड़पति भी उसी सादगी से रहता है। हमारे यहां पैसेवालों का खर्च ऊंचा है बल्कि बहुत ऊंचा है और मंत्रियों के लिए कुछ अंश में धनिकों का यह रहन सहन उनकी सादगी में बाधक बनेगा। या मंत्रियों की सादगी धनिकों के लिए एक उदाहरण होगी। आपने ठीक ही कहा है कि सादगी से रहना भी एक कला है। इस कला से हम लोग अनभिज्ञ हैं। हमारे चाकर अनभिज्ञ हैं। इसलिए हम लोगों का ऊंचा रहन सहन कुछ अंश में अनिवार्य हो गया है। पर मेरा खयाल है कि हम लोगों का रहन सहन सादगी का हो जाय तो भविष्य की समालोचना और आफतों से हम लोग बच जाएंगे और श्रेय तो मिलेगा ही। मुझे तो भड़कीला रहन-सहन

प्रिय भी नहीं है। पर दुविधाएं भी हैं। जैसे जाति बंधन, वैसे ही यह बंधन भी कुछ अंश में बाहर का है। मैंने कई बार सोचा है कि नये करों में व्यक्तिगत खर्च पर भी कर हो। मृत्यु-कर की अपेक्षा व्यक्तिगत खर्च कर कहीं अधिक आवश्यक है। किसी अर्थशास्त्री से इस बारे में एक बार मैंने बात की थी तो ऐसा याद पड़ता है कि उसने मुझे बताया था कि किसी जगह ऐसा है। ५००) प्रति कुटुम्ब के खर्च पर कोई कर नहीं, इससे अधिक पर ज्यों-ज्यों खर्च ज्यादा त्यों-त्यों कर दुगुना-चौगुना तक हो, तो फिर धनिकों का धन दान-पुण्य या व्यापार में लगे और ट्रस्टी की कल्पना सार्थक हो। मुझे तो इससे काफी सुख मिलेगा। इंग्लैंड में किसी समय 'विंडो टैक्स' था। शायद इसका ध्येय धनिकों पर कर लगाना ही रहा होगा।

विनीत,
घनश्यामदास

१९

ग्रासवेनर हाउस
पार्क लेन
लन्दन डब्ल्यू० १
३० जुलाई, १९३७

प्रिय महादेवभाई

कल शाम लार्ड लोदियन मिलने आये थे। भविष्य के बारे में देर तक बातें होती रहीं। मैंने उनसे कहा, 'कांग्रेस ने पद-ग्रहण तो कर लिया है, पर ऐसा उसने केवल वर्तमान शासन विधान को सफल बनाने के निमित्त नहीं किया है, बल्कि इसका अपनी अभिरुचि के अनुरूप शासन विधान को स्थापित करने के उद्देश्य से किया है। आप लोग जैसा चाहते थे, वैसा कांग्रेस ने किया। अब यह बात आपके सोचने की है कि इस शासन विधान को अमल में लाकर वह अपनी पसन्द का शासन विधान कैसे प्राप्त करेगी।' उन्होंने उत्तर में कहा, 'अभी आप न तो सरकारी अमले को ही छेड़िए, न साम्प्रदायिक समस्या को ही हाथ लगाइए। पर सामाजिक प्रगति के अन्य क्षेत्रों में आप गवर्नरों के हस्तक्षेप को कदापि सहन मत करिए। धीरे-धीरे यह एक परिपाटी का रूप धारण कर लेगा, और इस प्रकार

प्रांतीय स्वराज्य की उपलब्धि में काय पूरा हो जाएगा। रहा केन्द्र, सो मेरी धारणा है कि व्यवस्था स्थापित होने के उपरांत कांग्रेस अपना मंत्रिमण्डल बनाने में सफल होगी।

मैंने कहा कि केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा की ३७५ सीटों में से कांग्रेस केवल १०० सीटें ही जीत पायगी और इस प्रकार अल्प मत में बनी रहेगी। उन्होंने उत्तर दिया कि यदि कांग्रेस बहुमत में न भी हो तो भी सबसे बड़ी पार्टी के नाते बहुमत उसके पक्ष में रहेगा। मैंने इस तथ्य का खण्डन नहीं किया। इसके बाद उन्होंने सुझाव दिया कि हम अभी से सेना के बजट को चुनौती देना आरम्भ कर देना चाहिए। इसके फलस्वरूप हम गवर्नर जनरल से इस बाबत बातचीत करने का अवसर मिलेगा और शनै शनै सेना के बजट में हमारी आवाज अधिकाधिक महत्त्व प्राप्त करने लगेगा। मैंने पूछा केवल इतना ही से सेना अथवा विदेश संबंधी मामलों पर हमारा अधिक नियंत्रण कैसे हो जायगा ? आपका दावा है कि शासन विधान में स्वतः विकास के बीज मौजूद हैं। अब आप ही बताइए कि हम वह चीज कैसे प्राप्त कर सकेंगे जिसे औपनिवेशिक स्वराज्य के नाम से पुकारा जाता है।

लार्ड लाथियन को मानना पड़ा कि इसके लिए एक नये कानून की जरूरत होगी। तब मैंने उन्हें इस बारे में अपना दृष्टिकोण बताया। मैंने यह स्वीकार किया कि यदि व्यवहारकुशलता और मेल जोल से काम लिया गया तो ऐसी परिपाटियों का जन्म मिल सकता है जिनके द्वारा प्रांतीय औपनिवेशिक स्वराज्य दो-तीन वर्षों में ही प्राप्त हो जाय। हम कानून और व्यवस्था को अक्षुण्ण रखना होगा और साम्प्रदायिक मामलों में निष्पक्षता बरतनी होगी। नौकरशाही सचमुच सेवकों जैसा आचरण करने लगेगी। यह सब तो होगा और हो जाय तो संतोष का विषय बनेगा पर केवल इतने ही से केन्द्र में उन बातों का हस्तांतरण हो जाएगा जो औपनिवेशिक स्वराज्य के लिए जरूरी है इस बारे में मुझे सन्देह है। इसलिए मैंने कहा, मेरा सुझाव यह है कि शासन विधान को सफलतापूर्वक अमल में लाने के बाद भारत से एक छोटा सा प्रतिनिधि मंडल यहां आवे जिसमें लोकप्रिय लोग रहें और जो ब्रिटिश कैबिनेट के मंत्रियों से अनौपचारिक बात करके उन्हें यह बतलायें कि हम लोगों ने वर्तमान शासन विधान के माध्यम से आगे बढ़ने की भरसक चेष्टा की पर जबतक नया विधान लागू नहीं किया जायगा प्रगति सम्भव नहीं होगी। इस प्रतिनिधि मंडल की कोशिश हो कि यहां की सरकार को समझा बुझाकर भारत को नया शासन विधान देने के लिए तैयार करें। प्रतिनिधि मण्डल को यह स्पष्ट रूप से बता देना होगा कि भारत अपनी वर्तमान स्थिति से संतुष्ट

नहीं है और यदि कोइ स्थायी समझौता नही हुआ तो सीधी कारवाई करनी पडेगी।

इसके बाद मैंने लार्ड लोदियन से पूछा कि क्या ऐसा कदम उठाने से यहा की सरकार को समझदारी से काम लेने और हमारी बात की ओर ध्यान देने के लिए राजी कर पायेंगे ? समय आने पर यहा की सरकार और जनता हमारे प्रतिनिधि मण्डल का स्वागत करने को तयार रहे इसलिए मैंने सुझाया कि अगले दो तीन साल हम शासन विधान को पूणतया सफल बनाने और पारस्परिक सम्बध स्थापित करने मे लगाने चाहिए। इग्लड के प्रमुख व्यापारी भारत जायें और भारत के व्यापारी यहा आयें।

लार्ड लोदियन ने मेरे विचार को अच्छा बताया और यह आशा प्रकट की कि समय आने पर ऐसे विचार का ब्रिटिश मानस पर गहरा प्रभाव पडेगा। उन्होने कहा कि यह मार्ग अपनाने से, सभव है, हमें अपना मनोरथ पूरा करने मे सफलता मिले। बोले कि उन्होंने बापू को चिट्ठी लिखी है और सम्भव है कि आगामी नवम्बर के मध्य तक शायद वह भारत के लिए रवाना हो जायें। उन्होंने कहा कि मैं यह बात अपने तक ही रखू। मैंने पूछा, "क्या आपने अपना कार्यक्रम बना लिया है ?" वह बोले "नहीं मेरा इरादा स्पीचें झाडने का नहीं है।" मैंने उत्तर मे कहा "मैं आपसे स्पीचें झाडने को नहीं कह रहा हू। मैं तो सिर्फ यह जानना चाहता हू कि भारत मे आप अग्रेजों के अतिथि होकर जायेंगे, या भारत के। उन्होंने उत्तर दिया "निश्चित रूप से भारत का।" मैंने कहा "इतने से ही काम नहीं चलेगा। आपको वहा अधिक-से-अधिक काग्रेसियों से मिलना चाहिए। साथ ही आपको राजभवनों मे नहीं, भारतवासियों के यहा ठहरना चाहिए।"

मैंने उनसे पूछा कि जब वह दिल्ली और कलकत्ते मे होंगे, तो क्या मेरे यहा ठहरना पसन्द करेंगे ? उन्होंने उत्तर दिया "एक दो दिन के लिए तो राजभवनों मे ठहरना ही पडेगा पर बस मुझे आपके यहा ठहरने मे प्रसन्नता होगी।"

मैंने उन्हें बताया कि मैं चर्चिल से भी ऐसा ही अनुरोध कर चुका हू पर वह शायद तभी जायेंगे जब बापू उन्हें आने का निमत्रण देंगे। यह बात जानकर उन्हें बडी दिलचस्पी हुई। उन्होंने मेरे इस विचार से सहमति व्यक्त की कि मैं अर्ल बाल्डविन से भी वैसा ही अनुरोध करने का विचार कर रहा हू।

जब मैंने उनसे कहा कि यदि दो-तीन वर्ष बाद भी कोई प्रगति नहीं हुई तो भारत सीधी कारवाई करेगा तो उन्होंने सीधी कारवाई का अर्थ यह लगाया कि मैं रक्तपातपूर्ण क्रान्ति की बात कह रहा हू। उन्हें अहिंसात्मक सविनय अवज्ञा की कल्पना तक करना असम्भव-सा लगता है। उनकी धारणा है कि फिलहाल

जवाहरलाल बापू के कहने म इसलिए चल रह हैं कि उनके लिए और कोई चारा नही है पर समय आने पर वह उठ खडे होंगे और चूकि उनकी अहिंसात्मक सविनय अवज्ञा म आस्था नही है इसलिए वह भारत को शांति के माग पर ल जायेंगे। तरुण समाज उनके पीछे हो लेगा। इसका नतीजा यह होगा कि पूजीवादी समाज तानाशाही की प्रणाली अपना लेगा और किसान लोग साम्यवाद का नारा बुलन्द करेंगे।

मैंने उन्हें बारम्बार यह बताया कि वह यूरोपियन हैं इसलिए वह साम्यवाद और तानाशाही को छोडकर और किसी वाद की कल्पना तक नही कर सकत पर भारत म एक और वाद पनप रहा है और उसकी आशिक सफलता भी हुई है। वह वाद है अहिंसात्मक क्रान्तिवाद।' मैंन उन्ह आश्वासन दिया कि काग्रेस सीधी कारवाई का माग तभी अपनाएगी जब कि उसका काय विशुद्ध अहिंसा की सीमाओ म रहेगा। उन्होंने कहा कि मानव स्वभाव जसा कुछ है उसे ध्यान म रखत हुए यह असम्भव कल्पना प्रतीत होती है।

इसके बाद वह बोले मिस्टर गाधी का आदर सम्मान इसलिए होता है कि वह सत पुरुष है पर जब सघष की नौबत आ जाएगी तो लोग उनकी एक नही सुनेंगे। जवाहरलाल गाधीवाद के आगे कभी सिर नही झुकायेंगे। मैंन दलील-पर दलील दी पर उनका समाधान कराने म असमथ रहा। अत म उन्होंने कहा कि मेरे कथन को अनुभव की कसौटी पर कसने के लिए ही उनका भारत यात्रा करना आवश्यक हो गया है।

इस डाक से मुझे बापू का हस्तलिखित पत्र और साथ ही तुम्हारा पत्र भी मिला। मुझे बापू का पत्र इतना पसद आया कि मैंन उसकी प्रतिलिपिया लाड हैलिफक्स और लाड लोदियन को भेज दी। एक प्रतिलिपि चर्चिल को भी भेजी है। मैंन मजदूरों के वेतन के विषय पर उनके लेख की नकलें यहा के सभी प्रमुख व्यक्तियो के पास भेज दी हैं।

मुझे सारी बातो की खबर देत रहिये। मैं यूरोप के देशो का भ्रमण आरम्भ करनेवाला हू क्योंकि ये लोग अगस्त के महीने म कुछ काम धाम नही करते। सितम्बर के पहले हफ्ते म हम लोग फिर इकट्ठे होंगे। कितनी कुत्सवाली बात है कि हम तब तक हाथ पर हाथ रख बठे रहेंगे पर क्या किया जाए लाचारी है।

हमें टाइम्स और डेली हेरल्ड म कदा कदा तार द्वारा भेजे गए भारत सबधी समाचार पढने को मिल जाते हैं। पर वसे हम बिलकुल अलग थलग होकर

रह गए हैं। मैंने देवदास को 'हिन्दुस्तान टाइम्स' नियमित रूप से भेजने को कह दिया है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

२०

मगनवाड़ी वर्धा (मध्य प्रांत)
१ अगस्त १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपके २० और २२ तारीख के पत्र मिल गये हैं। आखिर आपको मेरा ६ तारीख का खत मिल ही गया। मैं तो कार्यकारिणी की बैठक के बाद से आपको नियमित रूप से लिखता आ रहा हूं। मेरे पत्र केवल आपके लिए होते हैं, इसलिए मैं उनमें अपना हृदय उडेल देता हूं और जो मन में होता है कह डालता हूं। मुझे निर्णय से तो प्रसन्नता हुई पर जिन परिस्थितियों में वह निर्णय लिया गया, उससे प्रसन्नता नहीं हुई। अनुकूल निर्णय के लिए खूब दौड़ धूप हुई। काश मैं आपको देश के कोने-कोने से आये तारों और पत्रों के बण्डल दिखा पाता। बिलकुल गांधी इर्विन पैक्ट के बाद के इतिहास की पुनरावृत्ति हुई। यदि मैं निर्णय की पृष्ठभूमि में रही बापू की मानसिक स्थिति से आपको अवगत कराने से चूकता तो अपने आपको आपके प्रति दोषी ही पाता।

मैं यह तो निश्चित रूप से जानता हूं कि पदग्रहण करने के निर्णय का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। पर जब मैंने बापू को आपके पत्र का वह वाक्य सुनाया जिसमें आपने कहा है कि उनकी साख बहुत ऊंची उठ गई है तो वह अविश्वास पूर्वक खिलखिलाकर हंस पड़े। रुपये के बाजार की तरह राजनीति के बाजार में भी साख की दर में उतार-चढ़ाव अचानक आता है और उसमें सटोरिये ही बाजी मारते हैं। काश आपकी तरह मैं भी यह यकीन कर पाता कि यह सारा व्यापार बहुत दिनों तक टिकेगा। अभी उस दिन बापू ने एक मंत्री से कहा, 'अगर यह सब एक साल से अधिक टिक गया तो मैं या तो समझूंगा कि अंग्रेज लोग

देवदूत बन गए हैं या यह कि हमारे मंत्रिया ने गवनरा के आगे घुटने टेक दिए हैं।' पर मानव स्वभाव जसा कुछ है उसे ध्यान मे रखते हुए हम इस धारणा के साथ काम म लगे रहना चाहिए कि सब कुछ ठीक ही होगा। मद्रास म पहले ही दिन एक विचित्र स्थिति उत्पन्न हो गई। राजाजी मेहरअली की रिहाई का आदेश देना चाहते थे। गवनर ने आनाकानी की, कहा कि "वह अत्यन्त आपत्तिजनक स्पीचें भाड रहा था। गवनर की इस आपत्ति म सार था। मेहरअली न अपनी रिहाई क तुरत बाद वसी ही आपत्तिजनक एक और स्पीच दे डाली है। पर राजाजी अडे रहे। गवनर न कहा 'मैं केवल इस बात को लेकर बाधा उपस्थित नही करूगा। और मेहरअली को दूसरे दिन सुबह रिहा कर दिया गया। मैं आपको अन्य प्रान्ता के दृष्टान्त भी यह बतलाने के लिए दे सकता हू कि गवनरो तथा मंत्रियो न ठीक ढग म श्रीगणेश किया है। युक्त प्रान्त म पद ग्रहण करने के तुरत बाद पतजी ने विभागीय सेक्रेटरी के साथ घण्टा भर बात की। यह मानना पडेगा कि सेक्रेटरियो ने पतजी के उदगारा का अच्छे रूप म ग्रहण किया। हर जगह वन्देमातरम गान के साथ काम शुरू किया गया। गान के दौरान सभी सरकारी सदस्य—यूरोपियन और गाधीवादी लोग—खडे रहे। अकले बेचारे उडीसा म अधिकारियो न खडे होना अपनी शान के खिलाफ समझा। बौद्धिक क्षमता की दृष्टि स उडीसा के मंत्रिमडल को सुदृढ कहना गलत ही होगा पर हैं सब भले लोग तपे हुए और बात के सच्चे, और मैं नही समझता कि वे बेहतर बौद्धिक क्षमता का लोहा मान लेंगे अथवा कोई मूखता का काम कर बठेंगे। मद्रास का मंत्रिमडल सब दृष्टिया स भारत का सबसे अधिक मजबूत मंत्रिमडल है।

आपने बताया है कि सर राजर लमले बापू स मिलने को उत्सुक है और पूछा है कि यह किस तरह सम्भव है। शायद इस बाबत शर्तों का उसे आपसे अधिक पता होगा और इस पत्र के पहुचते पहुचते शायद ससार भर म यह खबर पहुच जाएगी कि बापू वाइसराय स मिल लिये है। चार दिन पहले हमे यह देखकर आश्चय हुआ और प्रसन्नता भी हुई कि महा सगाव का मजिस्ट्रेट बापू को कुछ जरूरी सरकारी कागज पत्र खुद देने आया है। वह सरकारी कागज पत्र वास्तव म लाड लिनलिथगो का बापू के नाम निमत्रण पत्र था। ऐसा लगता है कि वाइसराय ने वह पत्र गवनर के पास भेजा होगा और यह ताकीद कर दी होगी कि उसे व्यक्तिगत रूप से बापू को दिया जाए। बापू का मानस अहिंसा की भावना से कितना ओत प्रोत है इसका अदाजा इस साधारण-सी बात के प्रति उनकी प्रतिक्रिया स लगाया जा सकता है। वह बोले, यह जाहिर है कि किसी ने वाइसराय स कह रखा होगा कि मैं बगर बुलाये उनसे मिलने कदापि नही जाऊगा

और जब सब जगह यह खबर फैल जाएगी कि मुलाकात की याचना मैंने नहीं वाइसराय ने की थी तो बेचारा परेशानी में पड़ जाएगा। बापू के स्वभाव में अहिंसा की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है इसलिए उनका अंत करण वाइसराय की मान-मर्यादा को क्षति पहुंचाने की संभावना मात्र से पसीजने लगा। इसके बाद उन्होंने अपने हाथ से उत्तर लिखा। मैं दोनों की नकल भेज रहा हूं। वह अपने उत्तर में अपने मन की बात लिख सकते थे पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। वह बोले उनका क्या कर्तव्य है सो वह खुद जानते होंगे मैं उन्हें बताने का दुस्साहस क्या करूं ?' इस समय वाइसराय असम और बिहार के दौरे पर हैं और शायद बापू का उत्तर उनके दिल्ली लौटने पर ही उन तक पहुंच पाए। बापू ने सीमा प्रांत का प्रश्न अवश्य उठाया है पर शायद उसको लेकर कोई कठिनाई उपस्थित नहीं होगी। यदि इस मुलाकात का एकमात्र उद्देश्य सम्पर्क जोड़ने का श्रीगणेश करना हो तो वाइसराय ने अपने पत्र में जो-कुछ लिखा है उससे अधिक वह क्या लिख सकता था ? यह जाहिर है कि केवल मिस्टर गांधी से भेंट करने की प्रसन्नता प्राप्त करने के हेतु से यह मुलाकात नहीं हो रही है। दोनों केवल 'मिजाज शरीफ' कहकर एक-दूसरे से विदा नहीं लेंगे। पर यह स्पष्ट है कि भेंट एक घण्टे से अधिक समय लेगी पर मेरे लिए पहले से ही अटकल लगाना उचित नहीं होगा। अतएव आप सर रोजर लमले से कह सकते हैं कि उनके बापू को बुला भेजने भर की जरूरत है और वह 'उपस्थित हो जायेंगे। आपने उनके इस प्रश्न का कि यदि मंत्रियों को भोज-सहभोजों में आमंत्रित किया गया तो वे कैसा आचरण करेंगे जो उत्तर दिया उससे पता चलता है कि आपने बापू को कितना समझा है। गत सप्ताह वल्लभभाई यहां इस विषय की तथा अन्य बातों की चर्चा करने आए थे कि मंत्रियों के लिए कैसा तौर-तरीका बरतना ठीक रहेगा। आपको यह जानकर खेद होगा कि दोनों इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि मंत्रियों को भोज सहभोजों से कोई सरोकार नहीं रखना चाहिए। गवर्नर के निमंत्रण का स्वीकार करने का अर्थ यह होगा बदले में उनके प्रति वैसा ही शिष्टाचार दिखाना चाहिए। हमारे बेचारे मंत्री इस ढंग का सौजन्य शिष्टाचार बरतने की स्थिति में नहीं हैं। बात दरिद्रता के प्रश्न तक ही सीमित नहीं है बापू की धारणा है कि कम-से-कम कुछ वर्षों तक विशुद्ध औपचारिक नाता रखने में ही देश की भलाई है।

आपने चर्चिल के बारे में जो लिखा वड़ा दिलचस्प लगा। जिस समय उसने हिंसा की बात उठाई थी और भारतवासियों द्वारा अंग्रेजों की हत्या की आशंका व्यक्त की थी तो आपने उसके उस लेख की याद क्यों नहीं दिलाई जिसमें उसने यह धमकी दी थी कि यदि हमने पद-ग्रहण करने में इन्कार किया तो भयंकर

परिणाम होगा ? बापू के वक्तव्य को लेकर उसने जिन निमम श न्‍ा का प्रयोग किया वे मरे स्मृति-पटल पर अंकित हैं। आपको पता है उसने किन शब्दो का प्रयोग किया था ? उसन बापू के वक्तव्या को कटीले तारो मे लिपटी चापलूसी कहकर पुकारा था। पर यह सब चर्चिल के अनुरूप ही है। आयरलड-सम्बन्धी समझौते के अवसर पर उसने माइकल कोलिन्स को अपने यहा बुलाया। उसके साथ घुल मिलकर बातें की हसी मजाक किया और कहा कि ब्रिटिश सरकार न ता उस जीवित पकडने क लिए १००० पौण्ड क इनाम का वचन दिया था। खुद उसक (अर्थात चर्चिल के) ऊपर बोअरा ने मात्र १० पौण्ड के इनाम की घोषणा की थी। पर बापू के प्रति उसका अभिवादन हार्दिक है इसम मुझे सन्देह नही है। आप उसक पास बापू क धन्यवाद का सदेश अवश्य पहुचा दीजिए। १६३१ म उसने बापू स मिलने स इन्कार कर दिया था पर अब यदि वह भारत आता है तो शायद स्वय मुलाकात की याचना करेगा।

यह पत्र काफी लम्बा हो गया है। अब इस खत्म करूगा। दिल्ली म वापसी के तुरत बाद आपको फिर लिखूगा।

लूद स जान की आपकी अनिच्छा का कारण समझ गया। आपके पास समय का भी अभाव है। पर आग चलकर जब हम और सारी झझटा स छुटकारा पा जाएगे तो मैं आपके साथ लूद स अवश्य जाना चाहूगा। शायद जुगलकिशोरजी ने इस स्थान का नाम नही सुना है। सुना होता तो जसा उनका स्वभाव है वह यह स्थान देखने के लिए दौड पडते। आप लूद स अवश्य दख इसकी हठ मैं इसलिए कर रहा हू कि आपका स्वभाव उनक (जुगलकिशारजी क) स्वभाव के ठीक विपरीत है।

सप्रम,
महादेव

पुनश्च

दिल्ली म आपकी अनुपस्थिति हम सबको खलेगी। कृपा करके यह पत्र अगाथा को भी दिखा दीजिए।

२१

मगनवाडी
वर्धा (मध्य प्रांत)
३ ८ ३७

प्रिय घनश्यामदासजी

मुझे आशा है कि अब तक आपको मेरे सारे पत्र मिल चुके होंगे और जैसा कि आपने अपने एक पत्र में लिखा है आपको विश्वास हो जाएगा कि मैं कुम्भकर्ण में हाथ नहीं ले रहा हूं।

लक्ष्मीनिवास कहते हैं कि आप वहां और एक महीने तक रुकेंगे इसलिए आप वियना में अपना ऑपरेशन कराने की बात सोच रहे हैं। यह जानकर संतोष हुआ। आशा है कि इस ऑपरेशन के बाद व्याधि जड-मूल से नष्ट हो जाएगी।

बापू हर हफ्ते लेख लिखने की अपनी पुरानी टेव पर वापस आ गए हैं। साथ में उनका ताजा लेख भेजता हूं। पढ़ने के बाद अगाथा को दे दीजिए। राजाजी अपनी कार्यक्षमता में महारथियों-जैसा धैर्य और साहस का परिचय दे रहे हैं। उन्होंने मुझे जो पत्र लिखा है उसका एक वाक्य यहां उद्धृत करता हूं कोई भी बुद्धि विवेक और लगनवाला मंत्री तब तक अपनी नमकहलाली साबित नहीं कर सकेगा जब तक वह रोज १८ घंटे ठोस काम न करे। और वह सचमुच यही कर रहे हैं। आशा है इतने कठोर परिश्रम से उनके स्वास्थ्य पर खतरा नहीं आएगा। यदि अन्य प्रांतों में भी ऐसे ही मंत्री होते, तो क्या बात थी! मैं तो यह सरदार पटेल और राजेन्द्रबाबू की बहुत बडी गलती समझता हूं कि वे खुद आगे नहीं आए।

आपने कहा है कि और किसी चीज की जरूरत हो तो लिखो। हमारा मधुमक्खिका-पालन विभाग सुचारु रूप में एक अनुभवी आदमी की देख रेख में चल रहा है। यह सज्जन मधुमक्खिका-पालन पर बड़े रोचक लेख लिख रहे हैं। इन्हें ग्रामोद्योग संघ के पुस्तकालय के लिए मधुमक्खिका पालन पर कई-एक पुस्तकों की जरूरत है। सूची साथ भेजी जा रही है। इनमें से जितनी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हों क्या आप लाने की कृपा करेंगे?

और मेरे लिए कैबिनेट सरकार पर जेनिंग रचित पुस्तक लाइए। हरिजन में अब पहुंच रहे हैं न? यदि पहुंचते भी होंगे तो भी आपको उन पर नजर डालने का समय तो वहां मिलता होगा?

हम लोग दिल्ली से ६ तारीख को लौट रहे हैं। यदि मुलाकात के बारे में कोई लिखने लायक बात हुई तो ७ को लिखूंगा।

सप्रेम
महादेव

२२

वाइसराय लाज
४-८-'३७

प्रिय घनश्यामदासजी

मैंने भी लिखने के लिए अजीब जगह चुनी, क्या है न यही बात ? और आप देखेंगे कि मैं इस स्थान के नाम से परिचित नहीं हूं, क्योंकि शायद दिल्लीवाला प्रासाद वाइसराय भवन के नाम से जाना जाता है और शिमलावाले स्थान का नाम शायद वाइसराय लाज है। खैर, जो भी हो।

उधर बापू वाइसराय के साथ बातचीत में तल्लीन हैं, इधर मैं कुछ चिट्ठियां लिखकर अपनी उपयोगिता सिद्ध करने में लगा हुआ हूं। बापू ने यहां के लिए आते समय मुझे कुछेक पत्र लिखने का आदेश दिया था। आपके प्रिय ड्राइवर ने (मेरा मतलब उस खूबसूरत नौजवान ड्राइवर से है, जिसकी वर्दी मेरे कपड़ों से ज्यादा साफ सुथरी है) हमें यहां पहुंचाया और बापू महामहिम वाइसराय के साथ साढ़े ग्यारह बजे से बातचीत कर रहे हैं। मैं आपको बता ही चुका हूं कि यह मुलाकात गतिरोध का अंत करने मात्र के लिए हो रही है, किसी खास विषय की चर्चा के लिए नहीं, और बापू ने भी निश्चय कर लिया है कि सीमा प्रांत के अतिरिक्त और किसी विषय की चर्चा वह अपनी ओर से आरम्भ नहीं करेंगे। सीमा प्रांत का उल्लेख बापू ने वाइसराय के नाम अपने पत्र में पहले ही कर दिया था। मैंने अपने सारे खत पूरे कर डाले और अब १ बजने को है, किंतु बापू अभी तक बाहर नहीं आए हैं, इसका अर्थ यह है कि काम की बात हो रही है।

ऐसा लगता है कि आपका ताजा पत्र वर्धा में मेरी बाट जोह रहा होगा, क्योंकि कल देवदास को उसकी नकल मिल गई। मूल पत्र भी नकल के साथ ही रवाना हुआ होगा। मैं समझता हूं कि जब लार्ड जेटलैंड ने इस भेंट की बात कही थी तो वह जानते थे कि वह क्या कर रहे हैं।

पुनश्च

य मुलाकात के बाद की पक्तिया हैं। भेंट अच्छी खासी रही, सौहादपूण थी और बातचीत मे स्पष्टवादिता रही। बातचीत लगभग डेढ घण्टा चली। जहा तक बापू का सम्बन्ध है उनके लिए सीमा प्रात का द्वार खुल गया ह पर खान साहब के लिए नहीं। वाइसराय न कहा कि इस निमित्त खान साहब को उस प्रात के गवनर से लिखा पढी करनी चाहिए। बापू न महामहिम को विस्तार के साथ बताया कि खान साहब जिस धातु के बने हुए हैं वह अपनी बात को लेकर गवनर से फरियाद नही करेंगे। पर बापू की धारणा है कि माग खुल जाएगा, और अब जबकि सीमा प्रात के मत्रिमडल ने इस्तीफा दे दिया है तो सब कुछ ठीक ठाक हो जाएगा।

वाइसराय ने सीमा प्रात का प्रसग उठाए जाने पर कोई आपत्ति नही की और बापू को वहा का दौरा करने के विचार को लेकर कोई कठिनाई खडी नही हुई।

जिन अन्य विषयो की चर्चा हुई वे थे ग्रामोद्धार शोधन हाथ का बना कागज नरकुल की कलम आदि।

सप्रेम,
महादेव

२३

मगनवाडी,
वर्धा मध्य प्रात
६ ८ ३७

प्रिय घनश्यामदासजी

इस पत्र के साथ जो सामग्री जा रही है वह मुलाकात का सक्षिप्त विवरण है। यह केवल आपके लिए है और आपके २७ और २८ के पत्रो के उत्तर म है। गतिरोध का अत तो हुआ पर बापू इस मुलाकात को एक मैत्रीपूण विचार विनिमय से अधिक महत्त्व नही दे रहे हैं। चिरपरिचित साम्राज्यवाद अक्षुण्ण है और उसके आत्म-समपण मे अभी बहुत दिन लगेंगे। बापू आपको इन पारस्परिक

सम्पर्कों की उपादेयता के बारे में सतर्कता बरतने का संकेत देना चाहेंगे। लार्ड लोदियन को दिए गए निमंत्रण की पुनरावृत्ति वे नहीं करना चाहेंगे। चर्चिल व लार्ड बाल्डविन खुद आना चाहें, तो उनका स्वागत है पर बापू उनसे आने का अनुरोध नहीं करेंगे। इसके अलावा वह ऐसे निमंत्रण देने के लिए कांग्रेसी नेता की हैसियत भी नहीं रखते। लार्ड लोदियन की बात अलग थी। उन्होंने खाई को पाटने में काफी सरगर्मी से काम लिया था और बापू को भी वह कई बार लिख चुके थे। सुझाव कहिए निमंत्रण कहिए लार्ड लोथियन का आगमन इस घटना का पूरक मात्र है न कि अकस्मात् भावावेश का परिणाम। चर्चिल आदि लोग यहां आकर दुनिया भर की साम्राज्यवादी अनर्गल बातें कर सकते हैं, और उन्हें बुनाने का अर्थ कभी बात करने की छूट देने जैसा होगा। बापू इस पारस्परिक सम्पर्क के सारे मामले से अपने आपको अलग थलग रखना चाहेंगे।

रही आपके हिन्दी पत्र के उत्तरार्द्ध में कही गई बात, सो बापू वचन देते हैं कि आप जो कुछ भेजेंगे उस पर वह पूरी तरह से विचार करेंगे और जहां तक सम्भव होगा, अपनी सम्मति भी प्रदान करेंगे।

सीमा प्रांत की समस्या के बारे में वाइसराय ने वहां के गवर्नर से लिखा-पढ़ी करने के बाद बापू को पत्र लिखने का वचन दिया है। सम्भव है प्रतिबंध उठा लिया जाए।

आशा है आपका स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा। आपको मेरे सारे खत मिल गए न ? यह कमबख्त जगह ही ऐसी है कि अक्सर समय पर पत्र डालने के बाद भी हवाई डाक में जाने से वे रह जाते हैं।

एण्ड्रूज कल पहुंच रहे हैं। किसलिए इसका अंदाज मैं अभी तक नहीं लगा पाया हूं।

सप्रेम
महादेव

सलग्न

४-८-१९३७

बापू की वाइसराय से मुलाकात का ब्योरा

उस दिन मैंने आपको वाइसराय भवन से पत्र लिखा था और अपने पुनश्च में मुलाकात का त्वरित संक्षिप्त विवरण दिया था। वह सचमुच ऊपर ऊपर

था। क्योंकि उसमे वही सब कुछ था, जो गाडी मे बापू के साथ लौटते समय रास्ते मे उनसे बात करके ग्रहण किया था। हम वाइसराय भवन से सीधे अपने डेरे पर नहीं गए थे पहले आपके यहा जुगलकिशोरजी से मिलने जाना था। वहा बापू उन्हे अधिक समय नही दे सके इसलिए वह स्वय हमारे साथ हरिजन निवास आए।

अब मैं आपको बातचीत का पूरा ब्योरा देने की कोशिश करता हू। बापू को वाइसराय के पास ले जाने से पहले श्री लेथवट (हिज्जे ठीक हैं या गलत, नही जानता) ने उन्हे बताया कि महामहिम को उनके पत्र का उत्तर देने का समय नहीं मिला, पर वह उनके साथ उस विषय पर जिसका उल्लेख उन्होंने पत्र म किया था, बात कर सकते हैं।

वाइसराय ने भी बातचीत का आरभ इस आश्वासन के साथ किया कि बापू जिस किसी विषय पर चाहे, बात कर सकते हैं। बापू ने उत्तर म कहा कि वह तो उन्हीं दो प्रश्नो पर बात करके सतुष्ट हो जाएगे स्वय वे कोई प्रसग उठाना चाहें तो बात दूसरी है। बापू के सीमा प्रात का दौरा करने के बारे मे वाइसराय वहा के गवनर से पहले ही लिखा पढी कर रहे थे। उन्होने बापू को बताया कि उनके वहा जाने मे कोई कठिनाई नही है, हा वह यह अनुरोध अवश्य करेंगे कि बापू प्रात की सीमा को न लाघें। बापू ने यह स्पष्ट कर दिया कि उनका सीमा लाघन का कोई इरादा नही है हा यदि सरकार को यह भरोसा हो जाए कि वह वहा कबीलो स निपटने म समथ हैं तो बात दूसरी है। साथ ही सरकार को उनकी नेकनीयती पर भरोसा रहना चाहिए।

खान साहब क सीमात प्रवेश म रोक के सम्बध म वाइसराय ने जानना चाहा कि खान साहब अपने विरुद्ध आरोपो की सफाई म वहा के गवनर से लिखा पढी करें तो कसा हो? जो आरोप हैं उनम से एक यह है कि खान साहब कबीलो को उकसा रहे थे, और दूसरा यह कि वह खुदाई खिदमतगारो को एक सनिक सस्था का रूप देने म लगे हुए थ। बापू ने कहा कि खान साहब ने इन दोनो आरोपो का आमूल खण्डन किया है, और यह परिताप का विषय है कि उन्हें अपने-आपको निर्दोष सिद्ध करने के अवसर से वचित रखा जा रहा है। खान साहब को बहुत गलत समझा जा रहा है। उनम त्रुटिया हो सकती हैं, पर कुल मिलाकर यह मानना होगा कि वह धमभीरु आदमी हैं असत्य भाषण और हिंसा स परहेज करते हैं और धोखा देने की प्रवृत्ति तो उनम बिलकुल ही नही है। बापू ने उनसे निवेदन किया कि वह खान साहब का परिचय प्राप्त करें तो बाद में उन्हे पछताना नही पडेगा। रही सीमा प्रांत के गवनर से फरियाद करने की बात सो

खान साहब के लिए वसा करना सम्भव नही है। क्या खान साहब ने पजाब के गवनर स फरियाद की थी ? तब फिर जिस प्रकार उनक लिए पजाब का द्वार खुला रखा गया है, उसी प्रकार उन्हें अपने घर का द्वार भी खुला मिलना चाहिए। बापू ने कहा कि सरकार चाहे तो यह आशा यक्त कर सकती है कि खान साहब अपन प्रात म जाकर अमुक-अमुक काम नही करेंगे और बापू ने इसका जिम्मा लिया कि खान साहब सरकार की इस आशा को झुठलानेवाला कोई काम नही करेंगे। पर उन्ह अपने प्रात म जाने की अनुमति बिना शत मिलनी चाहिए।

वाइसराय के साथ जवाहरलाल के भेंट करने का प्रसग भी उठा। वाइसराय ने जानना चाहा कि जवाहरलाल किस कोटि के आदमी हैं और बापू ने उत्तर म क्या कहा होगा आप स्वय कल्पना कर सकते हैं। जवाहरलाल वसा निमत्रण स्वीकार करेंगे या नही इस बारे म बापू को थोडा-बहुत सशय था। (वाइसराय स भेंट करने के लिए जाने से पहले बापू को जवाहरलाल का एक सक्षिप्त सा पत्र मिला था जिसमे उन्होने कहा था आपने दिल्ली जाने म जिस आतुरता स काम लिया है मुझ अच्छा नही लगा पर शायद यह अनिवाय था। बापू ने अब जवाहरलाल को लिखा है कि सम्भव है वाइसराय उन्हें मिलने का निमत्रण दें। उन्होने वाइसराय स कह रखा है कि यदि उन्ह निमत्रण भेजा गया तो वह उस अस्वीकार नही करेंगे)। बापू ने वाइसराय को भरोसा दिलाया कि जवाहरलाल के सम्बन्ध मे उन्ह किसी तरह का शक शुबहा नही रखना चाहिए वह बहुत भद्र है और उनस भेंट करना व कदापि अस्वीकार नही करेंगे।

मत्रिमडला मे जिन जिन लोगो को लिया गया है उनके सबध म भी प्रसग वश चर्चा छिडी। बापू ने बताया कि अच्छे-से-अच्छे आदमियो को छाटा गया है। मुसलमानो और दलित वर्गों म से आदमी चुनने मे कुछ कठिनाई रही फिर भी लिया गया है। सम्भव है उनकी अपेक्षा अधिक योग्य आदमी भी मिल जाते। वाइसराय न कहा कि वह राजाजी को अच्छी तरह से जानते हैं और मद्रास म जिस ढग स काम चल रहा है उसस वह सतुष्ट हैं।

फिर ग्रामोद्धार हाथ के बने कागज और खादी आदि ग्रामोद्योग सबधी कार्यों की जनरल चर्चा छिडी। बापू न वाइसराय को जो चिट्ठी लिखी थी वह हाथ के बने कागज पर लिखी थी और वाइसराय क ध्यान म यह बात थी। बापू न कहा कि जो कागज काम म लाया गया था उसस भी अच्छा कागज तयार किया जा सकता है और किया जाता है पत्र लिखने म जिस कलम से काम लिया गया है वह गाव म उगे सरकडे स तयार की गई थी और जो स्याही बरती गई थी वह भी गाव

म ही तयार की गई थी। वाइसराय न कहा कि सरकडे की कलम लाहे की निब-वाली कलम म कहीं अच्छी है क्योंकि उससे लिखने मे हाथ पर जोर नही पडता।

महादेव

२४

होटल बाउअर आलाक
ज्यूरिख
८ अगस्त १९३७

पूज्य बापू,

आटावा पैक्ट की माटी रूपरेखा इस प्रकार है। हम ब्रिटिश बाजार म निम्न लिखित वस्तुओ पर आटावा पैक्ट क अतगत तरजीह मिलती है। कितना माल ब्रिटेन को निर्यात होता है इसके आकडे देता हू

	लाख रुपयो मे
चाय	१७ ००
सब भाति की खाले	७,००
मूगफली	१ ८०
वनस्पति तल	१ ५०
अलसी	३ ००
पटसन का प्रस्तुत माल	२,७०
खली	१,८०
कालीन व कम्बल	६५
तम्बाकू	६०
सूती वस्त्र मुख्यत हाथ-बुने	२०
फुटकर	१ ८०
	७,१५

इसके बदल म हम जिस ब्रिटिश माल को अपन बाजार म तरजीह देते हैं उसम बिजली का सामान मोटर गाडिया इमारत का सामान शामिल है। कुल

रकम २२ करोड के आसपास बठती है। इन भारी चीजो का न्यारा देने की जरूरत नही है। इनके अतिरिक्त ब्रिटिश कपडे और इस्पात के सामान को भी भारत के बाजार मे तरजीह मिलती है इस माल का मूल्य आटावा पक्ट के बाद १३ करोड कूता गया है। लेकिन अब इसम कमी हुई है। इस प्रकार भारतीय बाजार मे ३५ करोड के माल की खपत है।

हम अधिकाश ब्रिटिश माल पर ७॥ प्रतिशत से १० प्रतिशत तक भुगतते हैं। पर ब्रिटिश कपडे पर तो ३० प्रतिशत का भार उठाते हैं। इसके मुकाबले हमारे माल पर ब्रिटिश बाजार म १० प्रतिशत मिलता है। हा चाय मे यह प्रतिशत काफी अधिक है। सरकारी तौर पर देखन से लगता है कि पक्ट म याय से काम लिया गया है क्योकि दोनो ओर से जिन जिन वस्तुओ की बाबत प्राथमिकता दी गई है उनका व्यापार प्राय उतन ही मूल्य का है तथा तरजीह का परिणाम भी प्राय एकसमान है। इस प्रकार यह दलील पश की जा सकती है कि यह पक्ट समान आदान प्रदान के आधार पर हुआ। पर बात ऐसी नही है। वस्तुओ की मात्रा मे समानता हो सकती है पर उनकी गुणवत्ता के मामले म वसी समानता नही पाई जाती।

सबस पहली बात तो यह है कि हमारी जिन वस्तुआ को तरजीह मिली है उनमे से अधिकाश कच्चा माल है जिसकी ब्रिटेन को अपने ही हक मे जरूरत है। दूसरी बात यह है कि जिन वस्तुआ पर हम तरजीह मिली है उनका उत्पादन साम्राज्य के अन्य देश भी करते है और उन्हे भी वसी ही तरजीह मिली हुई है, या फिर ब्रिटन को जिन उत्पादनो की जरूरत होती है उनके ८० प्रतिशत स ६० प्रतिशत अश की पूर्ति हम करते है इसलिए अन्य देशो के माल के निर्यात पर चुगी लगाकर तथा हमारे माल को चुगी स मुक्त रखकर ब्रिटेन अपन हितो का कोई बलिदान नही कर रहा है।

उदाहरण के लिए हमे चाय के निर्यात म तरजीह है पर भारत तथा लका ब्रिटन की चाय की ६० प्रतिशत जरूरत की पूर्ति करते है। इस प्रकार चाय के मामले मे हम जो तरजीह है उसस हमे माल के बीमे म लिखित मूल्य के अतिरिक्त और किसी प्रकार का लाभ नही हुआ है न ब्रिटेन ने ही यह तरजीह दकर कोई एहसान किया है। कितनी ही अन्य वस्तुआ के बार म भी यही बात है। हा, मैं यह मानता हू कि माल के बीमे म लिखित मूल्य का भी मूल्य है।

इसके विपरीत हम जिन ब्रिटिश वस्तुआ पर तरजीह दिए हुए है उनके लिए अपने हितो की कुर्बानी करते है और उमसे ब्रिटेन को ठोस लाभ होता है। दूसरी ओर उसकी कई वस्तुए ऐसी हैं जिन्हे हम भी तयार कर रहे हैं। ब्रिटेन

की ये वस्तुएं हमारी वस्तुओं की प्रतिद्वंद्वी सिद्ध हो रही हैं। इस प्रकार यह पैक्ट न्यायपूर्ण नहीं था, क्योंकि इसमें वस्तुओं के घटिया-बढ़िया होने के प्रश्न की ओर ध्यान ही नहीं दिया गया।

एक अन्य तथ्य की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है। हम एक ऋणी देश हैं जबकि ब्रिटेन महाजन देश है इसलिए हम ऋण का ठीक-ठीक भुगतान करने में समर्थ रहने के लिए अपने ही हित में ब्रिटेन को मुख्यतः हमारा माल खरीदना चाहिए। एक और बात ध्यान देने योग्य है। हम ब्रिटेन की जिन तैयार वस्तुओं में तरजीह देते हैं उनमें से इस्पात और कपड़े को अलग रखा गया है और उन्हें अलग कोटि का माना गया है। कम-से-कम सिद्धान्त के रूप में इस्पात और सूती कपड़े पर ब्रिटेन को जो तरजीह मिली हुई है सो ओटावा पैक्ट की बदौलत नहीं बल्कि पक्षपातपूर्ण संरक्षण की नीति बरते जाने के कारण है। टैरिफ बोर्ड की सिफारिश थी कि भारत को ब्रिटिश माल की अपेक्षा जापानी माल के प्रति संरक्षण की अधिक जरूरत है। परिणाम यह है कि ब्रिटेन के माल को इस भेद भाव का लाभ मिला है।

इसलिए यदि ओटावा पैक्ट का अंत कर दिया जाए और उसके स्थान पर कोई नया पैक्ट न किया जाए, तो जहां हम एक ओर ब्रिटेन के इस्पात और कपड़े को तरजीह देते रहेंगे, हमें बदले में ब्रिटेन के बाजार में उन पदार्थों पर तरजीह मिलनी बन्द हो जायेगी, जो हम अब तक मिलती आ रही है। इसमें हमारा नुकसान है और फिलहाल इस समस्या का कोई हल नहीं है। इसलिए हमने नये पैक्ट की बात चलाने में दो मुद्दे सामने रखे।

एक मुद्दा यह है कि हम अब तक जिन वस्तुओं पर ब्रिटिश बाजार में तरजीह मिलती आ रही है वह वैसे ही मिलती रहे, जबकि हम बदले में ब्रिटिश इस्पात और कपड़े को छोड़ अन्य किसी वस्तु को अपने बाजार में तरजीह न दें। ओटावा पैक्ट के अंतर्गत ब्रिटेन ने हमें यह नैतिक वचन दिया था कि भविष्य में भारतीय रुई अधिक मात्रा में आयात की जायगी। ब्रिटेन ने इस वचन का थोड़ा बहुत पालन भी किया। पहले वह भारतीय रुई की दो लाख गांठें आयात करता था ओटावा पैक्ट के बाद से उसने लगभग साढ़े छह लाख गांठें मंगानी शुरू कर दी। अब ब्रिटेन को यह निश्चित वचन देना चाहिए कि वह प्रतिवर्ष कम-से-कम १० लाख गांठों का आयात करेगा।

एक मुद्दा और है। ब्रिटेन द्वारा आयात की गई अलसी पर लगाई गई चुंगी की वापसी का मुद्दा। इस समय भारत को यह चुंगी नहीं देनी पड़ती है। यहां यह बात साफ करना उचित होगा कि निर्यात पर लगाई गई चुंगी की वापसी

वास्तव म क्या चीज है। ब्रिटेन भारत और अर्जेन्टाइना, दोना देशा से अलसी का आयात करता है। भारत को अपने इस निर्यात माल पर चुगी नही देनी पडती, जबकि अर्जेन्टाइना को देनी पडती है। अब ब्रिटेन अलसी के जो पदार्थ तैयार करेगा—तेल, वार्निश वगैरह-वगैरह उनका निर्यात करते समय वह अलसी पर लगाई गई चुगी अर्जेन्टाइन को वापस लौटा देगा। इसी को 'चुगी की वापसी' के नाम से पुकारा जाता है।

अर्जेन्टाइना को उसकी चुगी वापस मिल जाती है, इसके कारण हम अपनी अलसी पर तरजीह वाले स्तर का लाभ नही मिलता। पर ब्रिटेन इस चुगी की वापसीवाली व्यवस्था का अन्त करने को राजी नही है साथ ही वह अपने कपडे पर और भी अधिक तरजीह चाहता है और चुगी म ६ प्रतिशत नयी छूट की माग भी कर रहा है। इसके अलावा उसकी यह माग भी है कि यहा पटसन के तैयार माल की सीमा तक कमाए हुए चमडे के निर्यात म कमी कर। उसका यह भी कहना है कि वह केवल कपडे और इस्पात पर तरजीह मान जाने से सतुष्ट नही है। उसका कहना है कि यह जो तरजीह दी जा रही है सो उसके तैयार करने वाला के लाभाथ नही बल्कि स्वय भारत म इन दोना चीजो की खपत करनेवाला के हित मे बरती जा रही है। अत वह अन्य कई पदार्थों पर भी तरजीह बरत जाने की माग कर रहा है। हमने उसकी माग को ठुकरा दिया है।

यहा यह बता देना भी आवश्यक है कि हम अपने कच्चे और तैयार माल पर जो तरजीह मिली उससे हमारे पटसन के तैयार माल कमाए हुए चमडे और गालीचा का सचमुच बडा लाभ पहुचा। इससे इन तीना वस्तुओ के ब्रिटिश निर्माताओ की जडें हिल गइ। इसीलिए वे चाहते है कि इन तीना चीजा के व्यापार को सीमित कर दिया जाय।

इन सारी बाता पर विचार करने के बाद मैंने अपने कुछ सहकर्मिया को यह सुझाव दिया है कि हम एक समझौते के निमित्त निम्नलिखित सीमा तक आगे बढ़ने के लिए तैयार हो जाना चाहिए

१ इस समय भारत की जिन जिन वस्तुओ पर तरजीह मिली हुई है, वह जारी रखी जाए। हम ब्रिटेन को इन चीजो का ३५ करोड रुपये का माल निर्यात करते हैं।

२ हम चुगी की वापसी की व्यवस्था का अत किए जाने की माग कर रहे थे लेकिन वह व्यवस्था ज्यो की-त्यो रहने दी जाय।

३ पटसन के तैयार माल कमाए चमडे और गालीचा के व्यापार को मर्यादित न किया जाए।

४ इसके बदले में हम लंकाशायर के कपड़े पर ८ प्रतिशत अधिक छूट देने को राजी हो जायें, पर हम वैसी तरजीह ब्रिटेन के अन्य किसी तैयार माल पर न दें। हां, उसका आयात थोड़ी मात्रा में होता हो तो बात दूसरी है। या ऐसी चीजों के व्यापार की मात्रा भी १॥ करोड़ से अधिक नहीं होनी चाहिए।

५ इन सारी बातों के अलावा ब्रिटेन हमें यह गारण्टी दे कि वह हमारी रुई का अधिकाधिक आयात करेगा और तीन वर्ष की अवधि के भीतर इस आयात की मात्रा १० लाख गांठों तक पहुंच जायेगी।

सरसरी तौर से देखने से लगता कि ऐसा समझौता हमारे लिए लाभप्रद है और ब्रिटेन के लिए हानिकारक है। पर जैसा कि मैं बता चुका हूं हमें जो तरजीह दी गई है, उसमें से अधिकांश का मूल्य केवल बीम में लिखित मूल्य तक ही सीमित है और व्यापार की मात्रा को ध्यान में रखा जाय, तो उसके द्वारा प्राप्त होनेवाला लाभ सीमित-सा ही है। दूसरी ओर हम लंकाशायर के कपड़े को मिली तरजीह की मात्रा में ५ प्रतिशत की वृद्धि केवल लंकाशायर को संतुष्ट रखने के हेतु कर रहे हैं क्योंकि चुंगी में ५ प्रतिशत की कमी करने और उसे घटाकर १५ प्रतिशत पर लाने के फलस्वरूप भारतीय मिलों के कपड़े के उत्पादन-व्यय में जो कमी हुई है उसमें मिलें फायदे में नहीं रहेंगी। १९३५ में भारतीय मिलों द्वारा तैयार कपड़े का व्यापार ४५ करोड़ गज का था, १९३६ में यह घटकर ३४ करोड़ गज रह गया, और १९३७ में चुंगी में ५ प्रतिशत कमी के बावजूद व्यापार २८ करोड़ गज तक सीमित रहता नजर आता है।

मेरी और कस्तूरभाई—दोनों की यह धारणा है कि लंकाशायर को ८ प्रतिशत की ताजा छूट देने से भारतीय मिलों को कोई क्षति नहीं होगी। लंकाशायर यह गारण्टी देने को तैयार है कि यदि उसका व्यापार ५० करोड़ गज की सीमा लांघ गया—इस समय ३० करोड़ गज तक सीमित है—तो हम तरजीह की मात्रा में २॥ प्रतिशत की कमी करें और अगर यह कारगर साबित न हो, तो और भी २॥ प्रतिशत की कमी कर दें, और जब तक कपड़ा ५० करोड़ गज तक न आ जाए यह सिलसिला जारी रखें। साथ ही लंकाशायर की यह भी मांग है कि यदि उसका व्यापार २५ करोड़ गज से भी नीचे गिरा तो ड्यूटी में और कमी करनी होगी।

सिद्धान्त के रूप में यह बुरी बात नहीं है यद्यपि मैं चाहूंगा कि भारत में लंकाशायर का कपड़ा अधिक से-अधिक ८० करोड़ गज और कम-से कम २० करोड़ गज खपे। पर मेरा विश्वास है कि वह समय आ रहा है, जब हम अपने बाजार में मैंचेस्टर से होड़ लेने में समर्थ होंगे। वैसी अवस्था में हमें संरक्षण की

जरूरत रहेगी। इसलिए मेरी समझ म मैंचेस्टर का ५ प्रतिशत और अधिक छूट देकर भारतीय उद्योग को कोई क्षति नही पहुचेगी, साथ ही पटसन के तयार माल, कमाए चमडे और कालीनो के व्यापार म विस्तार की काफी गुजाइश रहेगी। यदि हम ब्रिटिश बाजार म इन तीन चीजो के व्यापार की खुली छूट रहे तो हम इन चीजो के व्यापार को खूब बढा सकेंगे।

जिन अन्य चीजो पर हमे तरजीह का दर्जा मिला हुआ है उनका व्यापार उतना अधिक नही है जितना प्रतीत होता है। फलत जिन चीजो पर हम तरजीह मिलना बहुत जरूरी है वे य हैं

पटसन	२७० लाख
कालीन	६० लाख
कमाया हुआ चमडा	३० लाख
	योग ३६० लाख

इसके साथ ही यदि ब्रिटेन हमारी रुई की १० लाख गाठें खपा सके, जिनका मूल्य लगभग १० करोड रुपय होगा तो इससे ब्रिटेन को तो कोई असुविधा नही होगी पर हम काफी लाभ होगा। इसके अतिरिक्त अन्य अनक वस्तुओ पर तरजीह मिलती रहेगी। इनम कुछ का व्यापार सीमित सा है पर कई ऐसी वस्तुए हैं जिनके व्यापार की मात्रा प्रचुर है। कुल मिलाकर यह व्यापार ३० स ३२ करोड तक पहुचता है। इसके मुकाबले म मरा सुझाव है कि लकाशायर को ५ प्रतिशत की ताजी छूट दी जाए। फिलहाल लकाशायर का व्यापार ७ करोड के आसपास है। हम ब्रिटेन के इस्पात को भी तरजीह दनी चाहिए। इसका व्यापार २॥ करोड के आसपास है। अन्य कई वस्तुओ पर भी जिनका व्यापार कुल मिलाकर १॥ करोड के आसपास है हमें ब्रिटेन को तरजीह देते रहना चाहिए।

मरी सम्मति म दोनो ही पक्षो के लिए यह न्यायप्रद सिद्ध होगा, और इसस भारतीय हितो को भी आच नही आयेगी। कस्तूरभाई अहमदाबादवाला की राय लेने की तयारी मे हैं, पर मेरी सम्मति मे काग्रेस की राय का सर्वाधिक महत्त्व है क्योकि यदि समझौता भारत का हित साधन करता प्रतीत हुआ तो भी कपास उद्योग व्यापक दृष्टिकोण अपनाने मे समर्थ नही रहेगा और शायद लकाशायर के पक्ष म छूट देने को राजी नही होगा।

पर इधर मुझे यह आशका है कि मैंने समझौते की जो रूप रखा तयार की है उस कही ब्रिटेन नामजूर न कर दे। हो सकता है कि बातचीत सफल न हो पर मरी समझ मे हम यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि हम इस सीमा तक ही जाने का

तैयार हैं। यदि बातचीत भंग हो गई, तो वैसी स्थिति में हम ब्रिटेन का इस्पात और सूती कपड़े के मामले में तरजीह देते रहेंगे, और बदले में हम कोई लाभप्रद चीज हासिल नहीं होगी। ऐसा होगा तो लाचारी है। पर ब्रिटेन को भी यह जान लेना चाहिए कि बातचीत भंग न करने में ही उसकी भलाई है इसके अलावा स्वेच्छा से किए समझौते का राजनैतिक महत्त्व भी कुछ कम नहीं है।

यह दलील पेश की जा सकती है कि और अधिक वस्तुओं को तरजीह क्यों न दी जाए और कपड़े पर तरजीह एकदम समाप्त ही क्यों न कर दी जाए? इसके उत्तर में मेरा कहना है कि ब्रिटेन कपड़े को सर्वाधिक महत्त्व देता है, जबकि हम अकेले कपड़े के मामले में ही अपने-आपको नुकसान पहुंचाये बिना झुक सकते हैं।

वार्ता में व्यवधान का एक परिणाम यह होगा कि हमारे रुई के निर्यात-व्यापार को धक्का लगेगा और चूंकि मैंचेस्टर कच्ची रुई खपाता है इसलिए हमें उसे संतुष्ट रखना चाहिए। जब मैंने इसकी चर्चा सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास से की तो उन्हें विचार रुचा तो पर वह कपड़े के प्रश्न को छूने तक के लिए राजी नहीं हुए क्योंकि इस प्रश्न ने भारत में राजनैतिक महत्त्व प्राप्त कर रखा है। मैंने उनसे कह दिया कि आपकी सलाह लिये बगैर हमें कोई गम्भीर कदम नहीं उठाना चाहिए। फलतः यदि अच्छी तरह सोचने विचारने के बाद आपको मेरा सुझाव जंचे तो हम आपके आशीर्वाद की कामना करेंगे। यदि आपको सुझाव पसन्द न आया, तो हम इस आलोचना की बिलकुल परवाह नहीं करेंगे कि हम स्वयं मिल मालिक हैं इसलिए हमने कपास की खेती करनेवालों तथा अन्य कृषकों के हितों की ओर ध्यान नहीं दिया। यह विषय बड़े ही महत्त्व का है इसलिए आपके परामर्श के बिना हम कुछ नहीं कर सकते। यदि आपको और अधिक सूचना की जरूरत हो तो अवश्य पूछिए। पर हम हर हालत में आपकी अन्तिम सम्मति ७ सितम्बर से पहले-पहले मिल जाय तो अच्छा रहेगा।

प्रणामपूर्वक,

स्नेहभाजन
घनश्यामदास

पूज्य श्री महात्मा गांधीजी
वर्धा

२५

होटल बाउअर आलाक,
ज्यूरिख
८ अगस्त १९३५

प्रिय महादेवभाई

मैं अपने एक पत्र में लिख ही चुका हूं कि नये व्यापारिक समझौते के बारे में मुझे बापू की सलाह चाहिए। यह सलाह गोपनीय समझी जाएगी। मुझे जबतक यह पता नहीं लग जाएगा कि इस विषय में बापू का अर्थात कांग्रेस का, क्या रुख है तबतक मैं इस दिशा में निश्चित रूप से कुछ नहीं करूंगा। शायद बापू इस बारे में अपनी सम्मति देने से पहले वल्लभभाई अथवा किसी और से सलाह मशवरा करना चाहेंगे। ऐसा वह भले ही करें पर कम-से-कम यह कहकर कि यह मामला बापू के कार्य क्षेत्र में नहीं आता मुझे हताश मत कर देना क्योंकि उनकी सम्मति के बिना मेरे लिए इस संबंध में भारत के हित में होते हुए भी कुछ करना अत्यंत कठिन हो जाएगा। हम ऐसे किसी दस्तावेज पर अपनी सही नहीं करना चाहते, जिसे देश अंगीकार न करे। इसलिए कोई निश्चित कारवाई करने से पहले हम लोग बापू की सलाह लेना चाहते हैं। मुझे यकीन है कि जब बापू अन्य किसी से मशवरा करने लगें तो वह यह स्पष्ट कर देंगे कि मामले को गोपनीय रखना है। कोई चीज बाहर न फूट निकले।

सप्रेम,
घनश्यामदास

२६

होटल बाउअर आलाक
ज्यूरिख
९ अगस्त १९३५

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारे पत्र अत्यंत रोचक और सूचनात्मक सामग्री से भरे रहते हैं। तुमसे यह उम्मीद रखना कि ऐसे ही पत्र बराबर लिखते रहा करो तुम्हारे साथ ज्यादती

आपरेशन स्थान सुन करके किया गया था। प्रोफेसर ने मुह की तरफ से नासिका की दीवार मे छेद किया और झिल्ली निकाल डाली। इसके बाद उसने नाक की हड्डी म एक और छेद किया। बडी चतुराइ से काम किया गया था। मुझे बेहोश नही किया गया था इसलिए जब तक छेनी और हथौडी चलती रही मैं बराबर बेचैन रहा। सारा काम रोचक भी था और अजीब-सा भी था। मुझे भरोसा है कि यह आपरेशन मेरे लिए लाभप्रद होगा पर सारे आपरेशनो म जोखिम तो उठानी ही पडती है।

तुम्हारे दो पत्र बिना उत्तर दिये पडे हैं। कुम्भकर्ण से तुम क्या होड करोगे? तुमने तो मुझे बडे विस्तार के साथ सभी बातो की सूचना दे दी है धन्यवाद! 'हिन्दुस्तान टाइम्स' मेरे पास नही पहुच रहा है और जब स लन्दन छोडा है, हरिजन से भी नाता टूट रहा है। भारत के बारे म मुझे जो-कुछ जानकारी हासिल होती है वह या तो निजी पत्राचार के द्वारा अथवा ब्रिटेन के पत्रो के द्वारा। लदन टाइम्स ने अब तक बडी सहृदयता बरती है, और श्री इगलिश हमेशा शुभ समाचार भेजते हैं। मार्निंग न्यूज पहले विरोधी भावना रखता था, पर चर्चिल और लार्ड हैलिफैक्स के साथ बातचीत होने के बाद उसकी टिप्पणियो की कडवाहट म कुछ कमी हुई है। हो सकता है यह सयोग मात्र ही हो।

जसी खबरे आ रही हैं उन पर मुझे आश्चय नही हुआ। एक दिन यह पढने को मिलता है कि शिक्षा मत्री ने अमुक माग स्वीकार नही की थी इसलिए विद्यार्थियो न हडताल कर दी। दूसरे दिन यह समाचार आता है कि उद्योग मत्री न दियासलाइ के कारखाने म काम करनेवालो की माग मजूर नही की, इसलिए उन्होने काम बन्द कर दिया। कानपुर की बडी हडताल खत्म हो गई पर मैंने पत्रो म पढा कि एक बार तो हडतालियो न पतजी के निणय को मानने स इकार ही कर दिया था। अण्डमान की हडताल तो बदस्तूर चल रही है जो लोगो की बेचैनी का कारण बनी हुई है।

एसा मालूम पडता है कि काग्रेसी शासन म हर कोई सब-कुछ अपने ही ढग से करना चाहता है। मुझे यकीन है कि बापू आत्मसयम की आवश्यकता की तरफ जनता का ध्यान खीचने की पूरी कोशिश मे लगे होंगे। यदि किसी दिन लोग जुलूस बनाकर और झण्डे लेकर नारे लगाते हुए मत्रियो के डेरो पर पहुचें, तो मुझे आश्चय नही होगा। अब तक लोगो की भावनाओ को जिस प्रकार दबाये रखा गया था अब यह सब उसकी प्रतिक्रिया मात्र ही है। यदि लोगो के दिलो का गुबार निकल जाए तो कोई बुराई की बात नही है। पर लोगो को यह समझ रखना चाहिए कि स्वराज्य म सयम समझदारी और कानून पालन की आवश्यकता

अधिक रहेगी। मैं तो यही आशा लगाये बैठा हू कि धीरे धीरे लोगो की समझ म यह बात आ जाएगी। पर क्या तुम्हारा भी यह खयाल नही है कि इस दिशा मे जनता के शिक्षण का काय अविलम्ब आरम्भ हो जाना चाहिए ?

और, इधर जवाहरलालजी के भाषण जारी हैं, उनका अभिप्राय जो भी हो। मैं जानता हू कि वह जो कुछ कह रहे हैं वह बापू की आलोचना के रूप में नही कह रहे हैं पर अशिक्षित जनता तो यह समझेगी कि उन्हें वाइसराय के साथ बापू की भेंट अच्छी नही लगी। इसका कही भी अच्छा असर पडने से रहा।

बापू मेरे इस कथन पर, कि उनकी साख बहुत ऊची उठ गई है अविश्वास के साथ हस क्यो पडे यह मेरी समझ मे नही आया है। मैं यह तो मानता हू कि रुपये के बाजार म शेयरो की साख घटती बढती रहती है, पर एक व्यापारी के नाते मैं यह तो तुम्हें बता ही दू कि उनमे अचानक उतना उतार चढाव नही होता है जितना आम तौर से समझा जाता है। यदि किसी कम्पनी की आर्थिक स्थिति ठीक ठाक रहे, तो उसकी साख मे भी स्थायित्व बना रहता है। इसलिए मेरा यह कहना बेजा नही था कि इस शासन काय के बहुत दिनो तक चलते रहने की सभावना है। यदि हम स्वय ही इसे भग करने पर उतारू हो जाए, तब तो बात दूसरी है। पर हमारा वैसा कोई इरादा नही है इसलिए कोई बडी अडचन पडा होगी ऐसा मुझे नही लगता। न अग्रेज लोग ही देवता बनेंगे, न मत्री लोग ही उनके आगे घुटने टेकेंगे। पर शत यह है कि मत्री लोग शासन काय के सचालन मे इस भावना से काम करें कि शिथिलता को फटकने तक नही दिया जाएगा। मुझे तो यही दिखाई देता है कि दोनो पक्ष एक-दूसरे की त्रुटियो को समझेग और आदान प्रदान की भावना से काम लेने लगेंगे। जहा ऐसा हुआ कि दोनो को यह प्रतीत होने लगेगा कि विपक्षी म भी अच्छाइया है और ऐसी अच्छाइया हैं जिनकी अब तक उपेक्षा की जाती रही है। अग्रेज लोग हद दर्जे के कायकुशल होते है। जहा उन्होने उदार दृष्टिकोण अपनाया जसी कि मुझे आशा है, वे हमे अपनी लक्ष्य सिद्धि मे प्रचुर सहायता प्रदान करेंगे। फिर एक कायकुशल व्यक्ति के लिए उदार दृष्टिकोण अपनाना अस्वाभाविक कदापि नही है। अग्रेजो ने दक्षिण अफ्रीका और आयरलैंड म क्या रुख अपनाया था नही? तो फिर भारत के मामले म वे इतिहास की पुनरावृत्ति करने से क्यो कतराएगे ? मुझे इस बात म लेश-मात्र सशय नही है। तुम्हारे इस कथन से मुझे बडी खुशी हुई कि सभी प्रातो मे मत्री लोग और गवनर लोग मिल जुलकर काय सम्पादन कर रहे हैं।

गवनरो के सामाजिक निमत्रणो को मत्री लोग अगीकार करें या न करें इस बारे म बापू ने जो निणय लिया है उसका मैंने पहले ही अनुमान लगा लिया था

इसलिए मैंने सर रोजर लमले को बापू के दृष्टिकोण से अवगत कराने म भूल नही की। पर यदि प्रातो के मुख्य मत्रियो को ऐसे सामाजिक आयोजनो म भागलेने की छूट रहती तो शायद ज्यादा अच्छा रहता। गलतफहमी की कोई गुजाइश ही न रहती। मुख्य मत्रियो को ऐसी स्वतत्रता प्रदान करना वाछनीय है।

चर्चिल के बारे म तुमने जो कुछ कहा सो समझा पर तुमने मेरे इस सवाल का जवाब नही दिया कि बापू उसका भारत आना पसद करेंगे या नही। वह जो *कहता है उसकी ओर ध्यान मत दो। वह राजनीति का खिलाड़ी है बाहर कुछ* कहता है आपस म कुछ और ही। पर मैं यह कहे बिना नही रहूगा कि एक मानव की हैसियत से उसम सहृदयता कूट कूटकर भरी है। उसम मिथ्या गव नाम को भी नही है और उसमे शिशु सुलभ सरलता प्रचुर मात्रा म है। उसने मुझ पूरी इमानदारी के साथ यह बताया कि जब उसने भूतपूव राजा (एडवड अष्टम) का पक्ष लिया था तो उसे यह पता नही था कि लोकमत राजा के विरुद्ध है। मैंने उसके साथ इग्लैड के राजतत्र की भी चर्चा की और उसने मुझे यह बताया कि वह वतमान कबिनेट का सदस्य क्या नही है। मेरी धारणा है कि इग्लैड का शासन करनेवाले आधा दजन व्यक्तियो म एक वह भी है। आपसी बातचीत म उसने जिस स्पष्टवादिता का परिचय दिया उसका मेरे मन पर बहुत गहरा प्रभाव पडा। उसने *मुझसे साफ-साफ कह दिया कि उससे भारत के पक्ष मे लेखनी उठाने की अपेक्षा* करना व्यथ है। राजनीति क्या चीज है इसका स्मरण मुझे उसके साथ बातचीत करके ही हो गया।

तुम्हारे दिल्लीवाले पत्र म मुझे कोई खास बात मालूम नही हुई पर शायद तुम सतक रहना चाहते थ। तुमने कहा है कि तुमने मेरे पत्र की नकल देवदास के पास देखी थी। वास्तव म मैं तुम्हे जितने पत्र भेजता हू उनकी नकल देवदास के पास जरूर भज देता हू। अपने पत्रो की एक नकल राजाजी के पास भेजता हू और एक नकल अपने भाई रामेश्वरजी के पास। रामेश्वरजी इन्हे सरदार पटेल को दिखा देते है।

मुझे पहली बार तुम्हारे पत्र स ही मालूम हुआ कि सीमा प्रात के मत्रिमडल ने इस्तीफा दे *दिया है तो अब सात प्राता मे हमारे ही मत्रिमडल होगे।*

बापू के स्वास्थ्य के बारे मे तुम्हें तार देने का कारण यह था कि मैंने तुम्हारे पत्र के अलावा अखबारो म पढा था कि जब वह दिल्ली स्टेशन पर उतरे तो बड थके हुए दिखाई दिये। आशा है अब उनकी थकान दूर हो गई होगी। मैं बापू को इस बारे म कुछ नही लिख रहा क्योकि मैं जानता हू कि अपने स्वास्थ्य की देखभाल वह खुद जितनी कर सकते हैं दूसरा कोई नही कर सकता। मगर इतनी

ही है कि कभी कभी वह बूते से अधिक काम करने लगते हैं। इस विषय पर जब लौटूंगा तो बापू से बात करूंगा।

मैं तुम्हारे इस कथन से सोलह आने सहमत हूं कि सरदार पटेल और राजेन्द्र बाबू ने बाहर रहकर भारी भूल की। सम्भव है एक वर्ष के अबाध कार्य के बाद इस भूल का परिमार्जन हो जाए।

मैं मधुमक्खिका पालन और कैबिनेट सरकार पर पुस्तकें साथ लेता आऊंगा। तुमने अपने पत्र के साथ मधुमक्षिका पालन के विषय पर पुस्तकों की सूची भेजने की बात कही है, पर वह सूची मुझे नहीं मिली। पर इस विषय पर बहुत सी अच्छी-अच्छी पुस्तकें ढूंढ निकालने की कोशिश करूंगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

२८

गवर्नर का शिविर,
उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत,
एबटाबाद
१७ अगस्त १९३७

प्रिय मिस्टर गांधी,

मुझे महामहिम वाइसराय का एक पत्र मिला है जिसमें उन्होंने आपके साथ हुई अपनी ४ अगस्त की बातचीत का सारांश दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने आपसे कहा था कि यदि आप उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत में आना चाहें, तो वैसा करने में कोई कठिनाई नहीं है। मैंने इस विषय पर अपने मंत्रियों से विचार-विनिमय किया है और उनके मन्तव्य के आधार पर आपको सूचना दे रहा हूं कि इस प्रांत में आने के लिए आप पर कोई रोक नहीं है। वाइसराय ने आपसे यह अनुरोध करना आवश्यक समझा कि आप अपने सीमा प्रांत के प्रवास में कबीलों के मामले में हाथ नहीं लगायेंगे, और मुझे यह भी ज्ञात हुआ है कि आपने उनके

अनुरोध की रक्षा करने का वचन दिया है। मैं जानता हू कि आप अपने इस आश्वासन का अक्षरशः पालन करेंगे।

यदि मिलने का अवसर मिला, तो आपके साथ अपने पुराने परिचय का, जब मैं लार्ड हैलिफक्स के साथ था, ताजा करके मुझे प्रसन्नता होगी।

आपने वाइसराय से खान अब्दुल गफ्फार खा के विषय में भी बात की थी। इस विषय में दो एक दिन में निर्णय ले लिया जायेगा।

भवदीय
जी० कनिंघम

मिस्टर मो० क० गाधी
सेगाव वर्धा

२६

मगनवाडी,
वर्धा मध्य प्रात
१८ अगस्त, १६३७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके ३० जुलाई और ६ अगस्त के ज्यूरिख से लिखे पत्र मिल गये। रामेश्वरदासजी ने भी इस प्रस्तावित व्यापारिक समझौते के सबंध में पत्र भेजा था जिसे मैंने बापू तक पहुचाने में जरा भी देर नहीं की। मुझे उनका उत्तर भी मिल गया था जिसे मैंने एक सदेशवाहक के हाथ रामेश्वरदासजी के पास भेज दिया था, ताकि वे उसे आपके पास भिजवा सकें। आपको बापू का उत्तर कैसा लगेगा, सो तो मैं नहीं जानता पर बापू का जैसा मानस है उसे ध्यान में रखते हुए उनसे अन्य किसी प्रकार के उत्तर की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी। इस मामले से निपटने का आपका तौर तरीका बापू के तौर-तरीके से भिन्न है। आप चीज के अच्छे बुरे होने का निर्णय उसके गुण दोष के आधार पर करते हैं पर अंतिम निर्णय काग्रेस के हाथ में है क्योंकि जनता जनार्दन की एकमात्र वही प्रतिनिधि संस्था है। आपके लिए भी यही रुख अपनाना निरापद रहेगा कि जब तक काग्रेस की सहमति न हो जाय तब तक कोई भी समझौता अंतिम समझौता न समझा जाये। बापू के उत्तर की एक प्रति इस पत्र के साथ नत्थी कर रहा हू। आपने यह तो लिखा नहीं था कि

पत्र किस पते पर भेजूं इसलिए मैं लन्दन और ज्यूरिख दोनों जगह एक एक प्रतिलिपि भेज रहा हूं।

आपका ३० जुलाई का पत्र मुझे बहुत अच्छा लगा। आपने लार्ड लोदियन से जो-कुछ कहा ठीक ही था। पर जब तक हम इस शासन विधान को अमल में लाकर राष्ट्र निर्माण के कार्य में उसकी त्रुटियों को खुल्लमखुल्ला प्रमाणित न कर दें, तब तक हमारे लिए संसार से यह कहना कि इसका अन्त करके इसके स्थान पर राष्ट्र द्वारा रचित एक नए शासन विधान को प्रतिष्ठित किया जाये, कैसे युक्तिसंगत होगा? आपने जिस प्रतिनिधि मंडल का सुझाव दिया है हमारे उद्देश्य की सफलता उसके द्वारा होगी अथवा कोई अन्य साधन अपनाने से होगी सो मैं नहीं जानता। अधिकतर कांग्रेसी प्रतिनिधि मंडलवाले विचार के विपक्ष में जायेंगे ऐसी मुझे आशंका है। पर आगे चलकर क्या उचित होगा इस बारे में अभी से परेशान होने की क्या जरूरत है?

'व्यक्तिगत सम्पर्कों' के प्रति बापू का क्या रुख है सो मैं आपको अपने एक निजी पत्र में बता ही चुका हूं। वह निजी तौर से भी अन्य किसी को भारत आने का निमंत्रण देने के विचार मात्र के खिलाफ हैं।

यह खुशी की बात है कि आपने लार्ड लोदियन को बता दिया कि एक उदार दलीय नेता की हैसियत से उनके लिए हमारे अपने ढंग की सीधी कारवाई को समझ पाना सम्भव नहीं है, पर अन्त में तो उसे अमल में लाने से ही उसकी प्रभावोत्पादकता प्रमाणित हो सकती है, दलालों के द्वारा नहीं। यदि बापू हमारे मध्य कुछ दिन और बने रहे, तो हम दिखा देंगे कि अहिंसात्मक सीधी कारवाई कितनी कारगर है।

मंत्रिमंडल ठीक ही चल रहे हैं। सरकारी अमला काफी सहयोग दे रहा है। मुझे तो ऐसा लगता है कि अधिकारियों को लन्दन से आदेश मिला है कि ठीक ढंग से रहो और यह मानना पड़ेगा कि ये लोग हममें से अनेक लोगों की अपेक्षा अधिक अनुशासन का परिचय दे रहे हैं। जरा सोचिए तो कहां अहमदाबाद के कमिश्नर गरेट ने १९३० में मोरारजी देसाई को यह धमकी दी थी कि यदि उन्होंने इस्तीफा दिया तो उन पर बरी बीतेगी, और कहां अब वह मंत्री मोरारजी देसाई की अगवानी करने स्टेशन पर मौजूद था। वह तो कुछ दूर तक उनके साथ तीसरे दर्जे के डिब्बे में भी गया। बारडोली और खेड़ा की नीलाम पर चढ़ी जमीनों को लेकर जो विवाद उठ खड़ा हुआ था आपको मालूम ही है। अब गरेट कहता है कि जमीनें पुराने स्वत्वाधिकारियों को वापस लौटाने में कोई कठिनाई नहीं होगी। एक पुलिस दारोगा ज्यादतियों के लिए बदनाम था। मंत्री की हैसियत से मोरारजी के

बारडोली जाने के अवसर पर उसने खुद पर गोली चलाकर आत्महत्या कर ली। यह सब तो मैं प्रसगवश लिख गया। राजाजी को अधिकारियो से पूरा सहयोग मिल रहा है। उडीसा म कुछ कठिनाइया है, पर उनका भी शीघ्र ही निवारण हो जायेगा।

हम सचमुच की जिन कठिनाइया का सामना करना है वे तो वास्तव म हमने ही पदा की हैं। हम एक सयुक्त परिवार जसा आचरण बिलकुल नहीं कर रहे हैं। ऐसे भी दोस्त हैं जो नयी परिस्थितिया से लाभ उठा रहे हैं। जगह जगह हडतालें कराकर स्थिति से निपटने में मत्रियो की अयोग्यता साबित करने म ही उन्हें सुख मिलता है। राजाजी ने अपने प्रात म सभी राजबदियो को रिहा कर दिया— अहिंसावादी, हिंसावादी आदि सबको। अतिम मोपला बदी को भी उसी दिन रिहा किया था। यूसुफ मेहरअली को राजाजी के पद ग्रहण करने से पहले ही छह मास का कारावास दण्ड मिला था। उन्होंने जिस दिन पद ग्रहण किया, उसी दिन उसे रिहा कर दिया था। मैं आपको लिख ही चुका हू कि इस मामले को लेकर कुछ अडचनें पदा हो गई थी क्योंकि नतीजा तो अच्छा नही निकला। अपनी रिहाई के ४८ घटे के भीतर इस भले आदमी ने अगार उगलनेवाली स्पीचें झाडी। उसने खुल्लमखुल्ला लोगो को हिंसा के लिए उकसाया। बेचारे राजाजी किंकर्त्तव्यविमूढ रह गए। बम्बई म ऐसे आधा दजन आदमी अभी भी जेलो म हैं। उनकी रिहाई के प्रश्न पर कठिनाइया उठ खडी हुई है। मत्रियो ने उनकी रिहाई की हठ पकडी पर सब व्यर्थ। क्या वे इसी बात पर सरकार भग कर दें ? यदि अहिंसा के बारे मे हम लोगो म मतक्य होता, तो स्थिति से निपटा जा सकता था। पर अहिंसा की परिभाषा को लेकर जवाहरलाल और बापू के दृष्टिकोणो म आकाश पाताल का अन्तर है। मैंने जिन समस्याओ की ओर इगित किया है उन्हे लेकर कार्यकारिणी की अन्तिम बठक म काफी गमागर्मी रही पर अन्त म सब कुछ ठीक हो गया।

पता नही हरिजन आपके पास पहुच रहा है या नहीं। वस मैं सर्वाधिक महत्त्व के लेख तो आपके पास अलग से भेजता ही रहा हू। इस पत्र के साथ भी वसा ही एक लेख नत्थी कर रहा हू। यह आगामी अक म निकलेगा। बापू का आग्रह है कि आगामी तीन वर्षों म मादक द्रव्य निषेध पूर्णतया सफल हो जाय और इस मामले म उन्होंने कार्यकारिणी का सहयोग प्राप्त कर लिया है। बापू कहते हैं 'शिक्षा सबधी गुत्थी कसे सुलझाई जाय इस सबध म हम परेशान होने की जरूरत नही है। यदि हम शिक्षा की वदी पर मादक द्रव्य निषेध की बलि देते रहने से बचें तो शिक्षा अपनी देखभाल खुद कर लेगी।' हम लोग विकट समय म से गुजर रहे हैं। इस महान काय के लिए जितने साधनो की आवश्यकता है

उनका हमारे पास अभाव ह। पर भगवान उनकी रक्षा करता है, जो अपने आप को उसके हवाले कर देता है। बस, बापू की यही श्रद्धा ह।

और भी कठिनाइया है। मुझे लगता ह कि अत म विपदा लगभग पूणत समाप्त हो जायेगी। जवाहरलाल को लेकर जो कठिनाइया पदा हो जाती है, उनसे भी पार पाया जा सकता है। वह उबल पडते हैं बरस पडते हैं गुस्सा हो जाते है, पर फिर भी उनम खिलाडी की भावना है इसलिए जल्दी ही अपने ऊपर काबू पा जाते हैं, क्षमा माग लेते हैं और जब तक उन्हे यह यकीन नहीं हो जाता कि अब कोई कडवाहट बाकी नही रही है चन से नही बठते हैं।

पत्र लम्बा होता जा रहा है और काम की बात अभी तक नही लिख पाया। आपको याद होगा कि गत फरवरी मास म आपन माल ढोनेवाले जहाज म दो महिलाओ की नि शुल्क समुद्र यात्रा का प्रबंध किया था। ये महिलाए यहा भारत म हमारे काम म लगी हुई हैं। अब उन्होंने लन्दन म आपके एजेंट से यह जानने के लिए सपक स्थापित किया है कि क्या आपके जहाज म भारत वापस जाना सभव होगा? एक तीसरी महिला है जो एक जमन मित्र की भावी पत्नी है और यहा हमारा काम कर रही है। मालूम होता है कि इस महिला को जमनी से निकाल दिया गया था क्योकि वह शाति की उपासिका है। हसा कम्पनीवाले अपने जहाज म उसे कसे स्थान देंगे? क्या हसा कम्पनी के माल ढोनेवाले जहाजो के अलावा अन्य किसी मालवाहक जहाज मे इन तीनो महिलाओ की नि शुल्क समुद्र यात्रा का बन्दोबस्त हो सकता है? ये इग्लड के किसी बन्दरगाह से अथवा किसी इटालियन बन्दरगाह से जहाज म सवार हो सकती है।

अपने स्वास्थ्य के विषय म आप खामोश हैं। आपने आपरेशन करा डाला या अपना अवकाश ज्यूरिख म यो ही बिता रहे है? बापू यह जानने के लिए उत्सुक हैं। मैंने श्री रामेश्वरदासजी को भी चिट्ठी लिखी है कि हो सकता है आपने अपने स्वास्थ्य का ब्योरा उन्हें भी भेजा हो। आशा है, आपको बापू के बारे मे मेरा तार मिल गया होगा। उनके रक्तचाप मे विशेष वद्धि नही हुई है पर कायभार का प्रभाव पड रहा है और वह थकान महसूस कर रहे है। उन्होने यह देख लिया था कि सावधानी से काम नही लिया गया, तो खतरा पैदा हो सकता है। अत तुरत ही उन्होने अपने दनिक कायक्रम म काफी काट छाट कर डाली और अब पहले से अधिक विश्राम ले रहे हैं। सध्या की प्राथना के बाद वह नियमित रूप से मौन धारण कर लेते है। इससे उन्हे अगले दिन के प्रात चार बजे तक पूरा आराम

मिल जाता है। यकीन मानिये, चिंता की कोई बात नहीं है।

सप्रेम,
महादेव

३०

सेगांव
१८-८-३७

भाई घनश्यामदास

आपका पत्र मिला। मैं ध्यान से पढ़ गया हूं। मुझे प्रतीत होता है कि इस बारे में कांग्रेस की तरफ से या मेरी तरफ से कुछ भी नहीं कहा जा सकता है अर्थात मेरी पसंदगी अथवा नापसंदगी पर आप लोगों को कोई कदम नहीं उठाना चाहिये, क्योंकि आप लोगों की दृष्टि एक है मेरी दूसरी है। ऐसा कोई भी आर्थिक समझौता को मैं राज्य प्रकरण से भिन्न नहीं समझ सकता हूं। जैसे मैंने राउंड टेबल कान्फ्रेंस के समय लेंकशीयर में किया था। आप लोग पक्ट कमेटी में हैं, इसका अर्थ यह है कि राज्य प्रकरण का प्रश्न उठाने का आप लोगों को कुछ भी अधिकार नहीं रहा है, इसलिये आप इस चीज को पृथक समझकर गुण-दोष पर ही विचार करें। उस बारे में जो आपका ख्याल होगा वही शायद मेरा होगा। इसी तरह से करने का आप लोगों का धरम भी हो जाता है। यदि हो सकता है तो आप इतना आपके अभिप्राय में कहें कि अगरचे गुण दोष पर आपका अभिप्राय अमुक होते हुए भी उसकी ज्यादह कीमत न मानी जाय क्योंकि लोकप्रिय संस्था कांग्रेस ही है इसलिये जो-कुछ भी समझौता किया जाय उस पर कांग्रेस की मोहर होनी ही चाहिये और वही समझौता कायम माना जाय। इसमें आप लोगों की प्रामाणिकता और न्याय बुद्धि होगी।

यह पत्र प्रातःकाल की प्रार्थना के बाद लिखवा रहा हूं। ज्यूरिक में फायदा हुआ होगा।

बापु के आशीर्वाद

३१

प्रिय घनश्यामदासजी,

मुख्य समाचार इस पत्र म भेज रहा हू। शिमला मे गतिरोध का अत होने के बाद कोई नयी बात नहीं हुई। केवल इतना ही हुआ कि अब बापू का वाइसराय को पत्र लिखने म कोइ दुविधा नही है। उन्होंने वाइसराय को एक पत्र लिखा भी है जिसम उडीसा म बाढ की भयकर क्षति के निवारणाथ एक होशियार इजीनियर भेजने का आग्रह किया है। खान साहब इस आशा म कि सीमा प्रात म प्रवेश पर उन पर से प्रतिबध शीघ्र उठा लिया जायेगा सिध और पजाब के दौरे के लिए चल पडे हैं। मुझे कुछ न कुछ होने की आशा है क्योंकि वाइसराय जबान के पक्के हैं। अण्डमान मे कैदियों की भूख हडताल की बाबत मोहनलाल सक्सेना के पत्र का उन्होंने जो उत्तर दिया है बढिया है। उन्होंने जो दलीलें पेश की है, उनकी विवेक बुद्धि की परिचायक है, लहजा मत्रीपूण है और मित्र मिलाप की भावना प्रकट करता है। काश, हमारे अतिवादी बापू की सलाह मानते। तब उनके लिए सरकार से निपटन मे इतनी कठिनाइया उपस्थित नही रहती। अभी तो ऐसा लगता है, मानो सरकारवाले शिष्टता-सौजन्य के मामले मे हमस बाजी मार ले गय हैं। हो सकता है यह शिष्टता-सौजन्य हमारे पागलपन के कार्य करते ही सख्ती से काम लेने का पूर्वाभास मात्र हो। पर हम पहले से ही किसी नतीजे पर क्या पहुचें? हम तो उनसे सीखना चाहिए।

आपने सेगाव के 'लेथवर्क' का मजाक उडाया है। उडा भी सक्त है। बोलकर लिखवाये गये पत्र की टाइप की हुई नकल का नमूना देखिये। अब एक सुदक्ष बहन टाइप के काम मे हाथ बटा रही है पर हिज्जो की गलतिया तो रहेंगी ही, और पत्र-व्यवहार मे रद्दी किस्म के कागज का उपयाग हो रहा है। सारी समस्याओ स कैसे निपटा जाये? किसी दिन इन सारी चीजो का कायाकल्प करने मे मेरी सहायता करिये। आपने एटलस का आडर नहीं दिया हो तो अब मत दीजिये। मेरे पास जसा कुछ है उसी से काम चल जायेगा। मुझे फिलहाल सदभ ग्रथो की सख्त जरूरत है। स्टटसमन ईयर बुक की बात लिख ही चुका हू। और भी सदभ पुस्तकें मिलें ता ले लीजिये। आपके सक्रेटरी ने लिखा है कि रासायनिक प्रयोग म आनेवाले पत्रा के बक्स तथा मकानो का आडर सम्फिज को दे दिया गया है। मकानो तो खिलौने का बक्सा है। मैंने तो बढइ के औजारो के बक्स के लिए लिखा

था। आप उसे बढई के औजारों के बक्स का आर्डर देने को कह दीजिये। इस तरह प्रिय बच्चे को खिलौनों का बक्सा सेंत-मेंत में मिल जायगा।

सप्रेम,
महादेव

वर्धा,
१६ अगस्त, १६३७

३२

ज्यूरिख
२० अगस्त १६३७

प्रिय महादेवभाई

मैंने अपने पिछले पत्रों में जो जो बातें उठाई थीं, उनका तुमने उत्तर दे दिया है और अब मुझे व्यक्तिगत संपर्कों के बारे में बापू की अभिलाषा की भी जानकारी हो गई है, तो भविष्य में उसी के अनुसार चलूंगा।

तुम्हें मालूम ही है कि पिछले चार वर्षों में पारस्परिक संपर्क की उपादेयता के बारे में बापू मुझे इतना बढावा देते आये हैं कि अब यह मेरे लिए एक मानसिक रोग बनकर रह गया है। पर यदि यह मानसिक रोग है, तो कम से कम मुझे इस का ज्ञान नहीं है। इसलिए इसके द्वारा कोई क्षति होनेवाली नहीं है। मैं इसकी उपादेयता का अब भी कायल हूं। पर यदि बापू ने इतनी मंजिल तय होने के बाद इस सिलसिले को खत्म करने का आदेश दिया है, तो इसका भी कोई वध कारण रहा होगा। शायद बापू से जवाहरलालजी के रुख की उपेक्षा करते नहीं बनी होगी, और हो सकता है कि उनके दृष्टिकोण में जो परिवर्तन दिखाई पड रहा है उसका एक कारण यह रहा हो कि वह स्वयं भी जवाहरलालजी के दृष्टिकोण से प्रभावित हो गये हों।

मैंने परसों अस्पताल छोड दिया था, पर अभी हफ्ता दस दिन यात्रा करने लायक नहीं हो पाऊंगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

सगाव, वर्धा
२४ अगस्त, १६३७

प्रिय मित्र,

आपके १७ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद। यह स्पष्ट है कि महामहिम वाइसराय ने सीमा प्रात के बारे म जो बात कही, वह मैं ठीक स समझ नही पाया। मैंने यह समझा कि वे मुझे बाडर लाघने की अनुमति देने की बात सोच भी नही सकते। मैंने इसी को वाइसराय का निणय समझकर स्वीकार कर लिया पर साथ ही यह भी कह दिया था कि जब मेरी नेकनीयती और सामथ्य क बारे मे उनको समाधान हो जायेगा, तो शायद मुझे सीमा लाघने की अनुमति मिल जायेगी। पर उन सारी बाता का इस पत्र स कोई सम्ब ध नही है। मैं यह जानना चाहूगा कि आपके पत्र क इस वाक्य से कि 'अपनी सीमा प्रात की यात्रा के दौरान मैं कबीला से सम्बद्ध सारी बाता स कोई वास्ता नही रखूगा" आपका क्या अभिप्राय है। मैं यह तो कह ही दू कि सीमात के मामला मे दखल देने का मेरा कोई इरादा नही है। मेरा इरादा तो वही है जो लाड इविन (अर्थात वतमान म लाड हैलिफैक्स) के काल म था, जब मैंने उनसे इस विषय की चर्चा करते हुए बताया था कि मैं सीमा प्रदेश के पठान को उसके घर मे देखना चाहता खुदाई खिदमतगारो का समझना चाहता हू और खुद यह पता लगाना चाहता हू कि उनके अहिंसा व्रत का पालन करने के दावे म कितना सार है और पठानो के कल्याणाथ जो-कुछ मुझस हो सके करना चाहता हू क्याकि खान अब्दुल गफ्फार खा की भी यही कामना है। उन्हे मेरी न्यायबुद्धि पर और उनकी नेकदिली और सचाई पर भरोसा है। पर मेरी यात्रा के दौरान वहा के लोगा का मुझसे सीमात-सम्बन्धी बातो की चर्चा करना अनिवाय होगा। यदि व लोग मुझे कुछ बताने लगें और उस पर मेरी सम्मति जानना चाहे ता क्या मैं उनकी बाता को सुनने से इन्कार कर दू और यदि मैंने अपनी कोई राय कायम की तो क्या वह उन्हे बतान स पीछे हट जाऊ?

यदि मेरा सीमा प्रात जाना सम्भव हुआ तो जब आप दिल्ली म थे उस समय की पुरानी जान पहचान को ताजा अवश्य करना चाहूगा। आपसे भेंट किये बिना ही सीमा प्रात से लौटूगा तो मुझे दु ख होगा।

अब मैं खान साहब के प्रश्न पर आपके ताजे पत्र की प्रतीक्षा कर रहा हू।

भवदीय,
मो० क० गाधी

पुनश्च

मैंने अभी अभी पत्रो म पढ़ा कि प्रतिबध उठा लिया गया है। मैं आभारी हू।

महामहिम गवनर
सीमा प्रात

३४

मगनवाडी,
वर्धा (मध्य प्रात)
२६ अगस्त १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी

इस हफ्ते लिखने को कुछ विशेष नहा है। आपके आपरेशन की खबर रामेश्वरदासजी से मिल गयी थी। अब आपका सविस्तार पत्र भी आया है। आशा है आपने जो इतना कष्ट उठाया वह व्यथ नही जायेगा। मैं आपको बापू के स्वास्थ्य की सतोषजनक रिपोट नही दे पा रहा हू। अब से एक महीना पहले रक्तचाप के चाट ने अच्छी सूचना दी थी पर मेरा सशय बना रहा क्योकि मैं देख रहा था कि वह जल्दी ही थक जाते हैं और मामूली-सी बात पर जिसकी ओर वह साधारणतया ध्यान नही देते चिढ जाते हैं। इधर कायकारिणी की बठक मे जो कुछ गुजरा वह सवथा सुखद हो रहा हो ऐसी बात नही थी। वह अपना म तो चिडचिडापन दिखा देते हैं और कभी कभी कडवा भी बोल जाते हैं। पर कायकारिणी की बठक जसे अवसरो पर तो वह बिलकुल दूसरे ढग से पेश आते है। एसे अवसरो पर बहुधा ऐसी बातें हो जाती हैं जो उन्ह रुष्ट करने क लिए काफी हैं पर वह अपने आपको काबू म रखते हैं। यह अपने आपको काबू म रखने का प्रयत्न ही उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है। अपने लोगो मे वह अपनी चिडचिडाहट को प्रकट करके राहत तो पा जाते हैं। कई एक एसी अ म

न गुलजारीलाल नन्दा को अपना सेक्रेटरी चुनकर बडी अक्लमंदी का काम किया। नन्दा यत्र तत्र सर्वत्र दिखाई देते हैं। उन्होने एक हडताल का बडी ही कार्यकुशलता के साथ खातमा कर दिया। सब कुछ बात की बात मे हो गया और जो हुआ उसमे दोनो पक्षो को तसल्ली हुई। पर उनकी दक्षता की भी सीमा तो है ही।

बस, बहुत लिख डाला। मैं इस चिट्ठी की नकल ज्यूरिख नही भेज रहा हू। हरिजन के आगामी अक के लिए तयार किये गये एक लेख की नकल भेज रहा हू। पढने से पता चलेगा कि बापू मादक द्रव्य निषेध को लेकर कितने कृतसकल्प हैं और इसका जोरदार आदोलन उठाने के लिए किस प्रकार कमर कस रहे हैं।

आप वहा से कब रवाना हो रहे है ?

सप्रेम,
महादेव

३५

वर्धा
२७-८-३७

प्रिय घनश्यामदासजी,

साथ का खत तो रात मे लिखवाया था। बापू का स्वास्थ्य कुछ चिंता पैदा करता है। आप भी उनको कुछ लिखें और आप जल्दी आवें। मधुमक्खी पालन के बारे मे पुस्तकों की याद्दी तो भेजी थी शायद कहीं गुम हो गई होगी।

नारायण जो मेरी देखरेख मे पढता है और जो जानता है कि आप उसके लिए औजारो का पिटारा और दूसरी चीजें लानेवाले हैं मेरे पास आकर विनोद मे एक श्लोक सुनाता है

स्वयं महेशः श्वशुरो नगेशः सखा धनेशः तनयो गणेशः ।
तथापि भिक्षाटनमेव शंभोः बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ॥

(वह देवों का देव है उसके श्वसुर पहाडो के राजा हैं कुबेर से उसकी मित्रता है पुत्र गणेश है लेकिन तब भी वह तो फकीर ही है क्योंकि ईश्वर की इच्छा ही बलवती है।)

मेरा आदमी जोर इस बात पर देता है कि कुबेर से मित्रता है। उसके

म भी विनोद वृत्ति है—वह जानता है कि औजारो का पिटारा आदि चीजें उसी के लिए आ रही है।

स्टेटसमन इयर बुक के बारे म मैं लिख ही चुका हू। यदि मिल जाय तो 'लीग आफ नेशन्स की ईयर बुक' भी कृपया लाइए। हिंदुस्तान टाइम्स' म सीमा प्रात के मत्रिमडल के इस्तीफे की जो खबर थी वह अधकचरी ही बाहर आ गई। लेकिन यह बात होकर रहेगी, क्योंकि खान साहब उसी ओर अग्रसर हैं।

सप्रेम,
महादेव

२६

वर्धा
३० ८ ३७

प्रिय घनश्यामदासजी

पिछले सप्ताह एक महती घटना घटित हुई। अण्डमान के अधिकारियो तथा वाइसराय और बापू के बीच तारो का जो आदान प्रदान हुआ उनकी नकल भेज रहा हू। सारा मामला स्वय ही स्पष्ट हो जायगा। मार्के की बात यह है कि आतकवादियो ने भी उस अकेले व्यक्ति की बात मानने की तत्परता दिखाई, जो उनकी रिहाई सम्भव कर सकता है। अनशन स्थगित कर दिया गया है इसका अथ मैं यही लगाता हू कि वे लोग बापू के प्रस्ताव पर विचार कर रहे है। यदि वे बापू के प्रस्ताव पर विचार करने को तत्पर नही होते तो अनशन स्थगित नही करते। यहा यह भी कह दू कि जिन तारो की नकल भेजी जा रही है, उनमे 'अण्डमान' से आया वह तार नही है जो कल बापू के पास आया था और जिसमे यह कहा गया था कि कदी बापू के सदेश पर विचार कर रहे है और कुछ समय मागा गया था। (मैं उस तार की नकल भेजने म असमथ हू क्योंकि मूल तार बापू के पास है) इसके बाद आज सुबह अतिम तार आ पहुचा।

जवाहरलाल और उनके सगी साथियो को यह विचार बिलकुल अच्छा नही लगा कि किसी प्रकार का वचन लिया जाए—सावजनिक वचन नहीं क्योंकि बापू वसी कोई चीज नही चाहते—पर बापू जसे किसी व्यक्ति द्वारा इस बात के

आश्वासन की जरूरत थी कि आतंकवादियों ने शिकायतें रफा कराने के निमित्त हिंसा का मार्ग छोड़ दिया है। यह जाहिर है कि जिन लोगों का इस मामले से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है उनकी राय भिन्न है।

यदि बापू के हस्तक्षेप के फलस्वरूप ये बन्दी रिहा हुए तो अहिंसा की यह एक यशस्वी विजय होगी और स्वतन्त्रता के मार्ग पर एक कदम के चिह्न अंकित होंगे।

बापू विश्राम लेने के कारण अब पहले से कुछ अच्छे हैं, पर पूर्ण विश्राम का तो सवाल ही नहीं उठता। मन्त्री लोग अपनी अपनी कठिनाइयां लेकर आते रहते हैं और उन्हें टाला भी नहीं जा सकता। कल मुंशी (कन्हैयालाल मा० मुंशी) बम्बई के साम्यवादियों की समस्या लाये और जब लौटे तो बापू का एक ऐसा फार्मूला लेकर लौटे, जिससे वह भी चकित हुए और सरकार तो चकित होगी ही।

हम भगवान से यही विनती करते रहना चाहिए कि प्रकाश कुछ अधिक वर्षों तक जगमगाता रहे।

सप्रेम
महादेव

पुनश्च

साथ की सामग्री की और अधिक नकलें कराना संभव नहीं हुआ। अतएव यह सामग्री अगाथा को भी दिखा दीजिए। मेरा टाइप खर्च भी बचेगा। आत्मकथा इसी सप्ताह साधारण समुद्री डाक से भेज दी जायगी।

वाइसराय को भेजे गये तार की नकल

२७ अगस्त, १९३७

यदि अण्डमान के बन्दियों की भूख हड़ताल जारी हो, तो क्या आप यह संदेश उनके पास तार द्वारा पहुंचाने की कृपा करेंगे? 'गुरुदेव टैगोर तथा कार्यकारिणी के साथ ही-साथ मेरी भी अनशन समाप्त करने की सलाह है। राहत के लिए हमारे यथासम्भव प्रयत्नों पर भरोसा रखिये। समूचे राष्ट्र के इस अनुरोध की रक्षा में आपकी मर्यादा है। यदि मैं आश्वासन प्राप्त कर सकूं कि जो लोग हिंसावाद में आस्था रखते थे उनमें विचार परिवर्तन हुआ है और अब वे अहिंसा की उपादेयता में आस्था रखने लगे हैं तो इससे मेरे हाथ मजबूत होंगे। मैं यह अनुरोध इसलिए कर रहा हूं कि कुछ नेताओं का कहना है कि नजरबंदों ने हिंसा

माग त्याग दिया है पर साथ ही इसके विपरीत मत भी व्यक्त किए गय हैं।' तार द्वारा उत्तर पाने का आग्रह रहेगा।

—गांधी

अण्डमान से आये तार की नकल

पोर्टब्लेयर,
२६ अगस्त, १६३७

मा० क० गांधी
वर्धा

२२६/मी, मेरे २२५/सी अगस्त के तार के सदभ म। भारी बहुमत से गत रात अनशन समाप्त कर दिया गया। केवल सात लोगा का अनशन जारी है।

—अण्डमान

३७

तार

शिमला
२ सितम्बर

श्री मा० क० गांधी
वर्धा

बावत एफ ५ बन्दी गह।
अण्डमान के जिन सात बन्दिया ने भूख हडताल जारी रखी है व आपक पास यह सदश भज रहे हैं आतक्वाद क बार म आपक तार क लिए धन्यवाद। हम घाषणा करत हैं कि इसस दश का अपकार ही हागा उपकार नहीं। हम आपक माध्यम स जेलखाना और नजरबन्द शिविरा म बद राजनैतिक पीडिता स तथा सभी सस्थाआ म जा आतक्वाद क माध्यम से दश को स्वतत्र करन म विश्वास रखते हैं अपील करत हैं कि व यह माग त्याग दें। अनुराध है कि राहत स आपका क्या अभिप्राय है इस स्पष्ट कीजिय। प्रातीय स्वराज्य की प्राप्ति क बाद राहत

का एकमात्र अर्थ यही हो सकता है कि सारे राजबंदियों को नजरबंदों को तथा राजनैतिक अपराधों के लिए दण्डित कैदियों को रिहा कर दिया जाय, निर्वासितों पर से निषेधाज्ञा उठा ली जाये, और दमनकारी धाराओं को समाप्त कर दिया जायेगा। यदि हमें इस संबंध में आपका आश्वासन मिले, तो हम भूख हड़ताल स्थगित कर सकते हैं।" इस संदेश में आपके जिस तार का हवाला दिया गया है वह २७ अगस्तवाला तार है। तब तक आपका ३० अगस्तवाला तार उन्हें नहीं दिया गया था।

—गृह विभाग

३८

तार

वर्धा, ३ सितम्बर

गृह विभाग
शिमला

आपका तार कल २॥ बजे मध्याह्न चलकर आज प्रातःकाल ७ बजे के बाद यहां पहुंचा। धन्यवाद। कृपया उन सात बन्दियों को यह तार भेजिये, "संदेश अत्यन्त सराहनीय है। यह संदेश हम सभी के एकसमान उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त मेरे प्रयत्नों में बहुत सहायक होगा। आपने 'राहत' शब्द का जो अर्थ लगाया है उसे मैं व्यक्तिगत रूप से स्वीकार करता हूं और वचन देता हूं कि अपने बन्दी मित्रों के सहयोग से इसकी सिद्धि के लिए प्रयत्नशील रहूंगा। अतएव आप अनशन त्याग दीजिये और इस आनन्ददायी कदम की सूचना दीजिये।"

—गांधी

३९

तार

वर्धा ३० सितम्बर १९३७

अण्डमान
पोर्ट ब्लेयर

तार के लिए धन्यवाद। सात के अलावा सबने अनशन छोड़ दिया। क्या उन सात ने कारण बताया है ? मैं आग्रह नहीं अनुरोध कर रहा हूं कि शेष को राहत की मांग करने का मौका दिया जाए। क्या बन्दी लोग मेरे हिंसा सम्बन्धी प्रश्न का उत्तर नहीं देंगे ?

—गांधी

४०

पेरिस
३१ अगस्त

पूज्य बापू

सविनय अभिवादन। आपका पत्र मिला। पर इससे मुझे कोई मदद नहीं मिली। परिस्थिति यह है—असेम्बली ने ओटावा करार रद्द कर दिया और साथ ही यह आदेश भी दिया कि एक नया करार बने। इस आदेश में कांग्रेस भी शामिल है। उसी आदेश के फलस्वरूप हम लोगों की परामर्शदायिनी पंचायत बनी। अंतिम निर्णय तो सरकार ही करेगी। पर मैं यह मानता हूं कि वह हमारी सलाह से बाहर नहीं जायगी। खैर

अब जो कुछ परामर्श हम दें और सरकार उसपर अमल करे और बरतानिया को भी हमारा प्रस्ताव पसंद आये तो करार बन जाता है। पर वह करार स्वीकृति के लिए असेम्बली के सामने आयेगा। असेम्बली की मंजूरी या नामंजूरी पर करार मान्य या अमान्य होगा। असेम्बली के मानी हैं पहली कांग्रेस दूसरी जिन्ना

पार्टी। मैं यह कहने जाऊं कि करार पर कांग्रेस की मोहर लगे तो शायद मैं अकेला ही ऐसा कह सकूंगा। इस पर आपत्ति करनेवाले की दलीलों में भी तो कुछ होगा ही। कांग्रेस लोकप्रिय तो है पर हिंदुओं में ही, मुसलमानों में नहीं। हमारे मुसलमान साथी जो हमें सहायता देते हैं वे ऐसा नहीं मानते कि कांग्रेस में हिंदू मुसलमान दोनों का प्रतिबिंब है। इसलिए न्याययुक्त यह है कि हम सब सम्मति से यह कहें कि करार पर केवल असेम्बली की ही नहीं, पर लोकप्रिय प्रान्तीय सरकारों की भी छाप हो। इसमें कांग्रेस और मुसलमान दोनों आ जाते हैं और मेरा भरोसा है कि इस पर केन्द्रीय सरकार अमल भी कर सकती है, पर इससे भी मेरी गुत्थी नहीं सुलझती।

प्रान्तीय कांग्रेस सरकार और असेम्बली का कांग्रेसी दल हमारी राय के बाद अपनी सम्मति दे इसके बजाय क्या उसके नेता यह नहीं बता सकते कि हमारी राय अच्छी है या बुरी ? हमने कोई परामर्श दे दिया और वह कांग्रेस को पसंद नहीं आया, तब तो हमारी फजीहत ही होगी न ?

आपने लंकाशायर के प्रति जो रुख दर्शाया वह तो एक निराली बात है। वहां लंकाशायर को विशेष अधिकार देने का प्रश्न है, और यहां तो गुण दोष की भित्ति पर करार करने की बात है। कांग्रेस भी इस सिद्धान्त को मानती है कि ऐसा करार, जो आर्थिक दृष्टि से भारत के हित में हो, कर लिया जाय। अब उसी के आदेश से नव करार बनने का प्रयत्न हो रहा है तो हम लोग राय देने के पहले पूछना चाहते हैं कि हमारी अमुक राय आपको पसंद है या नापसंद। कांग्रेस बाद में तो राय देगी ही। पहले दे तो हम अपयश के संकट से मुक्त हो जायं। बस इतनी कहानी है। इस पर आपकी राय बदले तो रामेश्वरदास को लिख दें। वह टेलिफोन से मुझे बता देगा और यदि पहली राय ही कायम है तो सीधा मुझे ही लिख दें। उस हालत में सारी स्थिति अव्यवस्थित रहेगी यह तो जाहिर ही है। पर बुद्धि जैसा कहेगी वैसा करेंगे। आपने भी एक वाक्य आश्वासन का लिखा है कि 'जो आप लोगों का ख्याल बनेगा, वही शायद मेरा बनेगा।' पर इससे कोई रोशनी नहीं मिलती। यह तो आप जानते ही हैं कि सुब्बरायन भी हममें से एक पंच हैं, जो इस समय मद्रास में शायद अर्थ सचिव हैं। इस दृष्टि से कांग्रेस करार के सिद्धान्त के बाहर नहीं है। जो हो, मुझे भगवान जैसी बुद्धि देगा वैसा करूंगा। पर हो सके तो मुझे सहायता देने की कोशिश करें।

मेरे नाक के छेदन कर्म से क्या लाभ होगा सो तो पीछे पता लगेगा। पर आपकी दया से मैं शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से स्वस्थ हूं और भविष्य के लिए उत्साहित हूं यह तो मिलने पर बतलाऊंगा। आशीष भेजते रहें।

आपने विश्राम की कोई योजना की होगी।

विनीत
घनश्यामदास

पुनश्च

कल लदन जाने का विचार है।

४१

ग्रासवेनर हाउस,
पार्क लेन, लदन डब्ल्यू० १
४ सितम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाई

आपके पत्र केवल रोचक ही नही होते मैं तो रेगिस्तान मे फसे प्यासे को पानी मिल गया हो ऐसा अनुभव कर रहा हू। मेरे कहने पर भी देवदास ने अभी 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के अक भेजना शुरू नही किया है। इस प्रकार मैं भारत से एक प्रकार से अलग थलग पड गया हू। मेरा लडका कुछ कटिंग भजता रहता है और मैं हरिजन से भी सम्पर्क बनाये हुए हू। पर इन सबसे मुझे वह जानने को नही मिलता जो तुम्हारे पत्रो से मिलता है। मैं इस सामग्री को अतिशय रुचि के साथ देखता हू और जब बापू कुछ लिख भेजते हैं तब तो मैं स्वर्ग जैसा आनन्द अनुभव करता हू। कभी कभी मैं तुम्हारे पत्रो के उद्धरण लार्ड हैलिफक्स तथा अन्य मित्रो के पास भी भेज देता हू। पर इधर मैंने ऐसा करना बन्द कर दिया है क्योकि भारत मेरे लिए अतिशय रुचि का विषय हो सकता है इन लोगो के लिए नही। जबकि शघाई मे बम और गोली वर्षा हो रही है फ्रेको ब्रिटिश जहाजो को टारपीडो मारकर डुबा रहा है।

बापू ने अण्डमान के बदियो से भूख हडताल छुडवाकर कमाल का काम किया है। यहा सब उनकी भूरि भूरि प्रशसा कर रहे हैं। मुझे इसमे रचमात्र भी सदेह नही है कि जब यहा के और वहा के अधिकारियो ने बापू को इस विषय मे सफलतापूर्वक आगे बढ़ते देखा होगा तो उन्होने चितामुक्त होकर राहत महसूस की होगी। ऐसा लगता है कि बापू की वाइसराय से मैत्री उत्तरोत्तर घनिष्ठतर होती जा रही

है। पर सबसे अधिक महत्त्व की बात तो यह है कि वह इस प्रकार हमें सहयोग का मार्ग दिखा रहे हैं। उन्होंने अनेक बार कहा है कि वह सहयोग के लिए लालायित हैं तथा असहयोग भी सहयोग की दिशा में उठाया गया एक कदम है। अब अपने कार्य से वे यह प्रमाणित कर रहे हैं। मुझे इस बात का पक्का यकीन है कि यदि हम शक्ति का संचय कर पायें तो सहयोग प्रदान करने में कोई जोखिम नहीं है। जवाहरलालजी यह नहीं देख पाये यह खेद का विषय है। क्या वह बाल की खाल निकालने में विश्वास रखते हैं?

लक्ष्मीनिवास मुझे जो कटिंग भेजता रहा है उन पर निगाह दौड़ाने से पता लगता है कि अनियंत्रण की प्रवृत्ति जोर पकड़ रही है। बिहार में किसानों ने विधान-सभा पर धावा बोल दिया और सारी सीटों पर जमकर बैठ गये। मुख्य मंत्री के कहने का भी कोई असर नहीं हुआ। मुझे यह घटना बहुत अप्रिय लगी। तिस पर तुर्रा यह कि उनसे यह कहने के बजाय कि उन्होंने विधान सभा की सीटों पर आसन जमाकर और उन्हें खाली करने से इन्कार करके बेजा काम किया है, मुख्य मंत्री उनसे चिकनी चुपड़ी बातें करते हैं। राघवेन्द्रराव के खिलाफ हुए प्रदर्शन की बापू ने ठीक ठीक आलोचना की है। मुझे आशंका है कि यदि समय रहते कड़ी कारवाई न की गई, तो यह प्रवृत्ति और भी जोर पकड़ेगी। मैं तो यही आशा लगाये बैठा हूँ कि कांग्रेस के अधिकारी इस खतरे का सामना करने की आवश्यकता की ओर से सचेत हैं, और इस दिशा में उचित कारवाई करने से नहीं चूकेंगे। आम लोगों में कुछ ऐसी धारणा फैल गया लगता है कि स्वतंत्रता और निरंकुशता एक दूसरे के पर्यायवाची हैं।

रही उन महिलाओं की समुद्र यात्रा का बन्दोबस्त करने की बात, सो इस दिशा में नयी कठिनाइयाँ उठ खड़ी हुई हैं। हमारा प्रभाव केवल जर्मन जहाजों पर ही है क्योंकि हमारा अधिकतर माल ये जहाज ढोते हैं और मुझे पता लगा है कि हिटलर अथवा उनकी सरकार ने जहाजों के नाम यह आदेश जारी किया है कि निःशुल्क किसी को न लाओ न ले जाओ। अतएव इन जहाज कम्पनियों ने आनाकानी शुरू कर दी है तथा लाचारी जाहिर की है। फिर भी उन्होंने किसी तरह तीन सवारियों को लेने की रजामंदी दी थी। एक तो त्रिवेन्द्रम के श्री जी० रामचन्द्रन के भाई श्री रघुवेन्द्रन् के लिए है अब दो बची हैं। इन दो का हम जैसा चाहें उपयोग कर सकते हैं। यह स्थिति है।

यह जानकर खुशी हुई कि बापू अधिक विश्राम ले रहे हैं। बहुत बढ़िया।

रही तुम्हारे दफ्तर की बात, सो मुझे तुम्हारे इस कथन पर आश्चर्य हुआ कि एक दिन दफ्तर के काम में फेर-बदल करने में मेरी सहायता चाहोगे। क्या मैंने

कभी सहायता से मुह मोडा है ? यह बताओ कि तुमने मेरी सहायता कब मागी ? मैं तुम्हारे दफ्तर की बात को लेकर पिछले सात वर्षों मे न जाने कितनी बार लड झगड चुका हू। पर मेरा कहना सुनना सब व्यर्थ सिद्ध हुआ। बापू को सारी चिट्ठिया खुद लिखनी पडती है—कभी दायें हाथ से कभी बायें हाथ से। रहे तुम्हारे टाइपिस्ट लोग, सो उन्हें अजायबघर के नमूने कहना ठीक होगा। मैंने बापू से दफ्तरी दक्षता की बात की थी और जब वह सदन मे थे तो मेरी इस बात से सहमत हुए कि एक स्टेनो रखना चाहिए। मैंने इसका प्रबंध करने का जिम्मा लिया पर बापू ने इस काम के लिए पोलक की बहन को बुला भेजा। जो भी हो, महादेवभाई, मैं तयार हू।

मैंने अभी एटलस का आर्डर नहीं दिया है। रही हवाले की पुस्तकों की बात, सो मैं स्टेटसमैन इयर बुक के लिए आर्डर दे रहा हू। और जो जो पुस्तकें चाहिए लिख भेजो, मैं आर्डर दे दूगा। तुम्हारे सुपुत्र के लिए बन्दूक के औजारों का बक्स भी भेज रहा हू।

क्या यह किताब तुम्हारी नजर से गुजरी है ? मैंने इस व्यक्ति का नाम तो सुना है पर मैं इसकी बाबत कुछ नहीं जानता। इसने बापू के बारे मे जो कुछ लिखा है वह घोर अरुचिकर है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

४२

बापू का लेख

पद ग्रहण करने के बारे मे मेरा अभिप्राय
(४ सितम्बर, १९३७ के हरिजन मे प्रकाशित)

श्री शकरराव देव लिखते है

हरिजन के पिछले अक मे 'यह हिदायतनामा नही है' शीर्षक टिप्पणी मे आप

कहते हैं मेरे लिए पद ग्रहण काग्रेस की घोषणा और प्रस्तावों को ध्यान में रखते हुए भी एक विशेष महत्त्व रखता है। पद ग्रहण का मैं जो अर्थ लगाता हूँ यदि उसे मंत्रियों के सामने न रखूं, तो भूल ही करूंगा। मैंने आपके कथन का यही अभिप्राय समझा है कि आप पद-ग्रहण को जनता की सेवा का साधन और रचनात्मक कार्यों के द्वारा जनता में काग्रेस की जड़ मजबूत करने का साधन मानते हैं। पर मेरे विचार में आपको पद ग्रहण के विषय में अपने अभिप्राय का अधिक खुलासा करना चाहिए।"

१६२० से काग्रेस की विचारधारा से अनुप्राणित लाखों लोगों ने ब्रिटिश आधिपत्य को एक अभिशाप मान रखा है। इस आधिपत्य को कायम रखने में ब्रिटिश शस्त्रास्त्रों की तो सहायता ली ही जाती है साथ ही व्यवस्थापिका सभाओं, उपाधि वितरण, अदालतों, शिक्षण संस्थाओं, आर्थिक नीति आदि की भी सहायता ली जाती है। काग्रेस इस नतीजे पर पहुंची है कि तोपों का डर मानना बन्द कर देना चाहिए और संगठित हिंसा का जिसकी ब्रिटिश तोपें एक प्रतीक हैं जनता की संगठित अहिंसा से तथा व्यवस्थापिका सभाओं आदि के असहयोग से मुकाबला करना चाहिए। असहयोग की योजना का एक प्रभावोत्पादक अंग उसकी रचनात्मक कार्यविधि के रूप में व्यक्त हुआ। १६२० में जो प्रोग्राम निश्चित हुआ जनता की सफलता का मापदण्ड उसे कार्यान्वित करने का अनुपात रहा।

इस नीति में कभी कोई रद्दोबदल नहीं हुई है उसके विभिन्न अंग भी ज्यों के त्यों मौजूद हैं। १६२० से काग्रेस जो प्रस्ताव पास करती आ रही है उनसे इस नीति का खण्डन नहीं हुआ है उलटे उसकी पूर्ति हुई है। शर्त यही है कि उन प्रस्तावों के पीछे जो मनोवृत्ति काम कर रही है वह १६२० की मनोवृत्ति से भिन्न न हो।

१६२० की नीति की आधारशिला संगठित राष्ट्रव्यापी अहिंसा थी। ब्रिटिश शासन-व्यवस्था निर्जीव तथा दौरात्म्य की प्रतिमा थी पर उसकी पृष्ठभूमि में काम करनेवाले लोग न तो निर्जीव थे न दुरात्मा। हमारी अहिंसा का यही आशय था कि जो लोग उस व्यवस्था को अमल में ला रहे हैं उनका कायाकल्प किया जाए। यह कायाकल्प स्वेच्छया भी हो सकता है इच्छा के विपरीत भी। यदि अपनी इच्छा के विपरीत उन्होंने यह देखा कि उनकी तोपें और उनका वह सारा साज-सामान, जिसे उन्होंने अपना आधिपत्य अक्षुण्ण रखने के लिए इकट्ठा किया है हमारे उपयोग न करने के कारण निकम्मा साबित हो रहा है तो वे या तो यहां से रुखसत लेने को बाध्य हो जायेंगे या फिर वे हमारी शर्तों पर चलने को राजी हो जायेंगे। वे शर्तें क्या हैं ?—वे शर्तें यही थीं कि वे हमारे साथ मैत्री का व्यव

हार करेंगे, हमारे ऊपर प्रभुत्व रखने की प्रवृत्ति का परित्याग कर देंगे। यदि काग्रेसवादियो ने विधान सभाओ म प्रवेश करने और पद ग्रहण करने म इस मनोवृत्ति को अपनाए रखा है, और यदि ब्रिटिश शासक कांग्रेसी मत्रिमडलो का अस्तित्व अनिश्चित काल तक सहन करने को तत्पर है तो कांग्रेस वतमान शासन विधान की धज्जियां उडाने की दिशा म काफी आगे बढने और पूर्ण स्वतंत्रता के ध्येय को मूर्त रूप देने म सफल होगी। मैंने जिन शर्तों का ऊपर उल्लेख किया है यदि उनके पालन के फलस्वरूप कांग्रेस के मत्रिमडल अनिश्चित काल तक बने रहे, तो इसका अर्थ यह होगा कि कांग्रेस उत्तरोत्तर बलवती होती जायेगी, और अत म इतनी शक्ति प्राप्त कर चुकेगी कि वह अपनी इच्छा के अनुरूप ही शासन-काय सम्पन्न करने की स्थिति म पहुच जायेगी। इस उद्देश्य की सफलता के लिए सबसे पहली आवश्यकता इस बात की है कि सारी जनता अहिंसा का स्वेच्छा से पालन करे। इसका अर्थ यह हुआ कि जनता म साम्प्रदायिक सौहार्द और सहयोग की भावना व्याप्त रहे अस्पृश्यता का मूलोच्छेदन हो मादक द्रव्यो के व्यसनी स्वेच्छा पूर्वक वैसे द्रव्यो के व्यवहार से बचें स्त्रियो को समाज म पुरुषो के बराबर का दर्जा मिले गावो म बसनेवाले लाखो-करोडो प्राणियो की दशा सुधरे प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था हो—वतमान म जैसी नाम मात्र की है वैसी नही बल्कि वास्तविक—हानिकर प्रमाणित होनेवाले अंधविश्वासो का जनजागरण के द्वारा शनै शनै निवारण हो उच्चतर शिक्षा प्रणाली मे इतनी कायापलट हो कि मध्यम वग के इने गिने लोगो का हित-साधन करने के बजाय लाखो करोडो देशवासियो का हित साधन करने लगे, कानूनी ढाचे म आमूल परिवतन हो जिससे न्याय महगा भी न रहे और विशुद्ध भी हो, हमारे जलखाने दण्डगृह रहने के बजाय तथा कथित दण्डितो के मानसिक सुधार के शिविर बन जायें क्योकि उन्होने जो अपराध किये है वे क्षणिक मानसिक उन्माद के वशीभूत होकर किये हैं।

यह कोई लम्बी चौडी काय-योजना नही है जिसे मूर्त रूप देने म वर्षों की जरूरत होगी। हमारे इच्छा करने भर की देर है मैंने जो बातें सुझाई है उन्हें आज कार्यान्वित किया जा सकता है।

जिस समय मैंने पद ग्रहण सम्बन्धी परामर्श दिया था उस समय तक मैंने शासन विधान का अध्ययन नही किया था। इधर प्रोफेसर के० टी० शाह द्वारा लिखित प्रांतीय स्वराज्य शीर्षक पुस्तक का अवलोकन करता रहा हू। लेखक ने शासन विधान पर पुरातन दृष्टिकोण से विश्लेषण किया है और उसकी कडी और प्रभावशाली शैली म आलोचना की है। पर कांग्रेस ने इन तीन महीनो म जिस स्वार्थ-त्याग का परिचय दिया है उससे वातावरण म यथेष्ट परिवर्तन

हुआ है। मैंने जो कार्यक्रम सुझाया है उसकी पूर्ति में तो शासन विधान में कोई चीज बाधक दिखाई नहीं देती। विशेष अधिकारों तथा सरक्षणों के प्रयोग का प्रश्न तो उसी दशा में उठेगा, जब देश में हिंसा फैलगी अथवा अल्पसख्यक और तथाकथित बहुसख्यकों में सघर्ष होगा क्योंकि वह भी हिंसा का ही एक रूप है।

मुझे शासन विधान की सभी धाराओं में राष्ट्र द्वारा स्वय राज काज सभालने की क्षमता में घोर अविश्वास है और एकमात्र यही अभिलाषा दिखाई देती है कि किसी भी प्रकार ब्रिटिश शासन को आच न आए। पर साथ ही मुझे यह भी दिखाई देता है कि जनता का ब्रिटेन के पक्ष में करने की चेष्टा की गई है, और यदि वैसा असम्भव प्रतीत हो, तो जनता की इच्छा के आगे लाचारी का आचरण करने की तत्परता की व्यवस्था भी रखी गयी है। काग्रेस ने जनता में विचार परिवर्तन करने के उद्देश्य से पद ग्रहण किया है, और यदि काग्रेस अहिंसा, असहयोग और आत्मशुद्धि की भावना से इसी प्रकार अनुप्राणित रही तो उसे अपने मिशन में अवश्य सफलता मिलेगी।

४३

बापू का लेख

रिहा हुए कैदियों से अपील

(हरिजन में प्रकाशित)

काग्रेसी मत्रिमडल उन बदियों को रिहा कर रहे है, जिन्होंने राजनैतिक उद्देश्य सिद्ध करने के लिए हिंसापूर्ण कार्य किये थे और उन कार्यों के लिए उन्हें दण्ड दिया गया था। मैं उन्हें बधाई देता हू। साथ ही मैं इन बदियों को भी बधाई देता हू। साधारणतया मैं व्यक्तिगत उद्देश्य सिद्धि के लिए किये गये हिंसापूर्ण कृत्य और राजनैतिक हिंसा में भेद नहीं करता हू। जो लोग हिंसापूर्ण कार्यों के शिकार होते है उनके लिए दोनों प्रकार की हिंसा एक ही जैसी है हिंसा करने वाले किस भावना से प्रेरित होकर ऐसे कार्य करते हैं इससे उन्हें कोई सरोकार नहीं है। मैं ठहरा पक्का अहिंसावादी इसलिए ऐसी दण्ड प्रणाली की सार्थकता में मेरी आस्था नहीं है चाहे वह दण्ड व्यक्तिगत हिंसा के लिए दिया गया हो अथवा सार्वजनिक हित-साधन के उद्देश्य से प्रेरित होकर की गई हिंसा के लिए दिया गया

हा। अतएव मत्रिया ने जिस सिद्धात को सामन रखकर इन बन्दिया क
किया है मैं उसे अधिक व्यापक क्षत्र म लागू हात देखना चाहूगा, पर मैं ज
ि मत्रिया के अहिंसा सम्बधी दृष्टिकोण स मरी पराकाष्ठा की
का मल नही बठना। इसलिए उ होने हिंसापूण कार्यों के लिए दण्डित ■
को रिहा करने म जिस कारण का आश्रय लिया है उससे मैं सहमत न
उन्हाने इन बन्दिया की रिहाइ इस अभिलाषा से प्ररित होकर की है कि वस
से वे उन लोगा के साथ जो राजनतिक उद्देश्य सिद्धि म हिंसा की उपादे
आस्था रखत हैं सम्पक स्थापित करने म समथ हागे। यह भावना अपने
पर ठीक है और स्वाभाविक भी है। वे उन्हे हिंसा के माग स हटाकर
शक्ति सामथ्य का सदुपयोग काग्रेस की अहिंसा की प्रणाली म करने क
है। यदि मने काग्रेस की कायविधि को ठीक समझा है तो मैं यह अवश्य
कि काकोरी काण्ड के बन्दिया की रिहाइ पर जिस बहद प्रदशन का अ
किया वह राजनतिक दृष्टि से एक गलत काम था। इन बन्दिया ने जो हिं
कृत्य किये बताते हैं चाहे उनका उद्देश्य अच्छा ही रहा हा क्या उस प्रद
भाग लेनेवाले हजारा व्यक्तिया को उनके कृत्य पसन्द थे? यदि पस द
कहना पडेगा कि उन्होने काग्रेस की कायप्रणाली को बिलकुल नही समझा।
ही नही उन्हाने ऐसा करके अपने मत्रियो को परेशानी म डाल दिया और
प्राता के लोगा को अधिक से-अधिक स्वतत्रता प्रदान करने की उनकी जो
है उस अमल म लाना उनके लिए कठिन कर दिया। मत्री लोग जब ऐसा
कदम उठावें ता हम लोगा को उसे शात सयत मानस क साथ ग्रहण
चाहिए मानो वे कोई स्वाभाविक काम कर रहे हा। काकोरी क बन्दी मु
हैं, बुद्धिमान हैं व योग्य है और देशप्रेम की अटल भावना स आन प्रात है
व अपनी रिहाइ का सदुपयोग मत्रिया को अपना पूरा सहयोग देकर अपने-
सच्चे काग्रेसवादी प्रमाणित करेंगे तथा स्वाथरहित सेवा-काय स काग्रेस का
बनान म लगे रहेंगे ता वसा करके वे इसी प्रकार अ य बन्दिया की रिह
रास्ता साफ करेंगे। उन्हें समझ रखना चाहिए कि मत्री लोग यह सब क
केवल इसलिए सफल हो रहे हैं कि उन्हाने अपने प्राता क गवनरा का अपनी
कायक्षमता तथा बीच बीच म उत्पन्न हानेवाली स्थितिया स निपटने मे
सामथ्य का भरोसा दिया है जिससे पुलिस और सना स काम लने की नौ
जाय। जिस दिन उनकी यह साख नष्ट हुई और उन्हे भी कानून और व्यवस
तथाकथित सत्ता की सहायता पर निभर करना पडा, तो उनकी प्रतिष्ठा का
धक्का पहुचेगा और उनका दबदबा करीब करीब बिलकुल समाप्त हो जा

ऊपर से लादी गई शक्ति को पुलिस और सेना की सहायता पर निर्भर करने के सिवा और कोई चारा नहीं है, पर जो शक्ति अपने ही भीतर से उभरी हो, उसे इन साधनों की कोई जरूरत नहीं है।

४४

मगनवाड़ी,
६-६-३७

प्रिय घनश्यामदासजी,

गत बृहस्पतिवार को आपको पत्र लिखने का समय बिलकुल नहीं मिला। मैं सेगांव गया था और आप जानते ही हैं इस मौसम में वहां जाने और वहां से लौटने में चार घण्टे लग जाते हैं। इतना ही नहीं बापू ने वाइसराय और बंगाल के मुख्य मंत्री को तार भेजे कि अब जबकि कैदियों ने असंदिग्ध भाषा में हिंसा में आस्था न रखने की बात कबूली है उन्हें रिहा कर देना चाहिए। जो उत्तर मिले हैं नकारात्मक हैं (मैं तार की नकल भेजने में असमर्थ हूं क्योंकि मूल बापू के पास है)। बंगाल के मुख्य मंत्री का उत्तर अशिष्टतापूर्ण है। आपने स्थिति को जितना आशापूर्ण समझा है हम वैसा नहीं समझ रहे हैं। प्रांत में जैसी कुछ स्थिति है उसे देखते हुए कैदियों को रिहा करने की बात सोचने में भी हम असमर्थ हैं। पर वाइसराय का पत्र बढ़िया रहा। पत्र में युक्तिसंगत दलील से काम लिया गया है। वाइसराय ने बापू के साधु उद्देश्य की दो-तीन स्थान पर सराहना की है पर साथ ही यह आधारभूत प्रश्न उठाया है 'कैदियों ने आतंकवाद के तरीके का सशपथ त्याग देने की बात तो कही है, पर क्या उन्होंने हिंसा का परित्याग किया है? क्या वे भविष्य में किसी भी हिंसापूर्ण कार्य से कोई वास्ता नहीं रखेंगे?' इस बारे में वाइसराय ने अपना संशय व्यक्त किया है। आगे चलकर क्या होगा, कहना मुश्किल है। आप खुद ही देख पायेंगे कि स्थिति गंभीर हो उठी है। वाइसराय की चिट्ठी की नकल अगली हवाई डाक से भेज दूंगा यानी अगले बृहस्पतिवार को।

आप वहां लोकमत तैयार करने की भरसक चेष्टा करियेगा। बापू ने कैदियों को उनकी रिहाई के निमित्त प्रयत्न करने का वचन दे रखा है यह आप जानते ही हैं। उन्होंने वाइसराय से भी कह रखा है कि उनका जीवन शान्ति-स्थापना के

निमित्त अर्पित है। अतएव वे इस नकारात्मक को चुपचाप कैसे सहन कर सकते हैं? अभी उनसे इस विषय पर बात करने का मौका नहीं मिला है, क्योंकि वह बहुत कमजोर है, थके हुए है, और शय्या पर लेटे हैं। यह नया मामला एक ताजी झंझट पैदा करेगा। बापू अहिंसा पर कितना जोर देते हैं और उन्होंने उसकी क्या परिभाषा की है यह हरिजन के लिए लिखे गये एक सुन्दर लेख की साथ भेजी नकल में भली भांति स्पष्ट होगा। क्या अगाथा इस लेख की नकल मन्चेस्टर गार्जियन तथा अन्य पत्रों में निकलवा सकेंगी? आप यह भी देखेंगे कि उन्होंने काकोरी के बंदियों की आवभगत को धिक्कारा है। जवाहरलाल इसका जरूर बुरा मानेंगे पर मानें तो मानें। वह तो अंडमान के बंदियों के हिंसा मार्ग त्यागने की घोषणा के भी खिलाफ थे पर बंदियों ने वैसी घोषणा की। सुभाष और शरद ने बापू को कृतज्ञतापूर्ण धन्यवाद के तार भेजे हैं। इस समस्या से निपटने में बापू ने जो तरीका अपनाया है उसकी सराहना की है।

सीमा प्रांत के गवर्नर ने अपने पत्र में जो कुछ कहा है उससे कोई निश्चित रूप प्रकट नहीं होता है। उसने बापू के दौरे पर कोई रोक तो नहीं लगाई है, पर साथ ही यह भरोसा जाहिर किया है कि बापू कबीलों के जिर्गों से न तो खुल्लम खुल्ला मिलेंगे और न ऐसी कोई स्पीच ही देंगे जिससे वहां की शान्ति भंग हो। यों रास्ता साफ जैसा ही है।

पर इस समय सबसे अधिक महत्त्व का विषय बापू का स्वास्थ्य है। मैं चाहता हूं कि आप अगाथा तथा अन्य मित्र एक तार भेजकर बापू से पूर्ण विश्राम लेने और एक महीने के लिए वायु परिवर्तनार्थ कहीं अन्यत्र जाने का अनुरोध करें। केवल इसीसे उनका त्राण होगा अन्य किसी चीज से नहीं। मैं जानता हूं कि आप यह काम सुन्दर ढंग से कर सकेंगे।

यहां घरेलू झंझट भी हैं ही। छोटेलाल ने आत्महत्या कर ली है। मैंने उसके लिए ही मधुमक्खी पालन संबंधी पुस्तकें मंगवाई थीं। वहां कर्मठ कार्यकर्त्ता था। मगनलाल गांधी के बाद उसी का नम्बर था। हद दर्जे का तपस्वी था और काम से कभी नहीं ऊबता था। रात दिन जब किसी काम को कहा जाय करने को कमर कसकर तैयार हो जाता था। उसे मियादी बुखार हो गया था। एक रात नर्स की निगाह बचाकर मगनवाडी के कुएं में छलांग लगा दी। हरिजन-बंधु में बापू ने इस विषय पर जो-कुछ लिखा है उससे उनकी मनोव्यथा का अंदाज लगाया जा सकता है। हरिजन-बंधु की प्रति भेजता हूं। बस आज इतना ही। मेरा

स्टेनाग्राफर बीमार भी है, और उसके पास और काम भी पड़ा है। इसलिए आप पर हाथ से लिखे इस पत्र का पढ़ने का भार डाल रहा हूं।

सप्रेम
महादेव

पुनश्च

उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत के गैर-कांग्रेसी मंत्रिमंडल को धिक्कारा गया और डा० खान साहब को नया मंत्रिमंडल बनाने को कहा गया है।

४५

वर्धा
७.९.३७

प्रिय घनश्यामदासजी,

आज जल्दी जल्दी एक पंक्ति लिखकर ही संतोष कर लूंगा, क्योंकि बापू ने सीमा प्रांत के गवर्नर को तथा वाइसराय को जो उत्तर भेजे हैं उनकी नकल करने के अतिरिक्त अन्य कोई सामग्री तैयार नहीं है। इन नकलों से आपको पता चल जाएगा कि बापू कितने धैर्य और सब्र से काम ले रहे हैं। उन्होंने बापू को जो-कुछ लिखा है उसकी नकल नहीं भेज सकूंगा, क्योंकि बापू का कहना है कि वह इस लायक नहीं हैं। पर मैंने सारांश तो भेज ही दिया है।

अगली कठिनाई बापू के स्वास्थ्य की है। जरा सा दिमागी काम करते ही बापू की तबीयत खराब हो जाती है। कुछ मिनट बात करने के बाद ही वह अपने हाथों से सिर दबाने लग जाते हैं और थकावट की शिकायत करते हैं। बात-बात में उत्तेजित हो जाते हैं और चिड़चिड़ापन दिखाने लगते हैं। पर स्वयं उनका यह कहना है कि चिन्ता की कोई बात नहीं। "मैं सीमा का उल्लंघन करूंगा तो चारपाई पकड़ लूंगा।" पर प्रश्न यह है कि सीमा कहां है?

आपका
महादेव

४६

बापू का लेख

अव्यवहार्य कदापि नहीं

सरदार जोगेन्द्रसिंह एक महान समाज सुधारक हैं, विद्वान है और राजनीतिज्ञ तो हैं ही। इसलिए वह जो कुछ लिखेंगे, लोग बाग उसे ध्यान से पढ़ेंगे। उन्होंने टाइम्स आफ इण्डिया में पूर्ण मादक द्रव्य निषेध पर एक लेख लिखा है। उनकी लेखनी के प्रसाद का आस्वादन करना मेरा कर्त्तव्य था, पर जब मैं लेख पढ़ चुका, तो एक लम्बी सांस ली। उनके जैसे समाज सुधारक ने हथियार डाल दिये और सो भी ऐसे कारणों से, जो दलील की कसौटी पर खरे नहीं उतरते, यह मेरी समझ में नहीं आता। उनका एकमात्र तर्क यही है कि अवैध रूप से ताड़ी तैयार की जाने और पी जाने लगेगी। इसलिए मादक द्रव्य निषेध लागू करने से बचना होगा। पंजाब में एक विकल्प मौजूद था, पर किसी ने उसका उपयोग नहीं किया। इसलिए उनका कहना है कि मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि बलात मादक द्रव्य निषेध लागू किया जायगा तो असफल होगा। इसके साथ ही, प्रांतों को उस आय से वंचित होना पड़ेगा, जिसकी ग्राम पुनर्गठन के कार्य में जरूरत है। सरदार साहब ने मादक द्रव्य निषेध को आय के साथ नत्थी करके अपने मुद्दे को खुद ही गवां दिया और अपनी दलील का खुद ही खंडन कर डाला। अपने लेख के चौथे पैरे में वे कहते हैं, मैंने खासतौर से कह दिया था कि शराब खोरी को काबू में रखने के मामले में मैं करों से मिलनेवाली आमदनी की परवाह नहीं करूंगा। ईश्वर का लाख लाख शुक्र कि कांग्रेसी मंत्रिमण्डलों ने आबकारी कर से प्राप्त होनेवाली आय का उपयोग न करके इस आयवाले जंजाल से छुटकारा पा लिया। छोटा सा छिद्र मिलते ही आबकारी कर से होनेवाली अनैतिक आय के उपयोग का लोभ संवरण करना कठिन हो जाता है, क्योंकि शराबियों से उनकी आदत एक दिन में छुड़ा पाना जितना कठिन है, यह सभी जानते हैं। मैंने पुराने मंत्रियों से इस बाबत बात की और उन्होंने मादक द्रव्य निषेध को अव्यवहार्य कदापि नहीं माना। उनकी तो एकमात्र यही दलील थी कि उस साधन से आय प्रचुर मात्रा में होती है। उन्हें इस आय की शिक्षा विभाग के लिए आवश्यकता थी। क्या शिक्षा के खर्च के लिए ऐसे अनैतिक साधनों से प्राप्त आय उचित है?

क्या ऐसी शिक्षा वाछनीय है ? क्या उसका अपना कोई मूल्य है ? भारत के स्कूल और कॉलेज जिस ढंग की शिक्षा देते हैं उनसे लाभ उठानेवाले व्यक्तियों ने अपने पर हुए खर्च के बदले उतने मूल्य की सेवाएं समाज को लौटायी हैं ?

चोरी करना भी प्रलयकाल तक चलता रहेगा। पर क्या इसीलिए उसे कानूनी मान्यता देनी चाहिए ? क्या बुद्धिहरण सम्पत्ति-हरण से किसी भी रूप में कम गंभीर अपराध है ? अवैध रूप से शराब बनाने का काम तो किसी-न-किसी हद तक जारी ही रहेगा। निषेधाज्ञा' लागू होने पर अवैध रूप से तैयार की गई शराब की मात्रा कितनी घटती-बढ़ती है, यह सरकार की कार्य दक्षता पर निर्भर करेगा। सरकार की कार्य-दक्षता और साथ ही शराब और अफीम के व्यसनियों के प्रति जागरूक जनता की सहानुभूति पर निर्भर करेगी। नैतिक उत्थान के लिए भी उतनी ही कीमत चुकानी पड़ती है जितनी भौतिक अथवा शारीरिक उत्थान के लिए चुकानी पड़ती है। पर मेरा निवेदन तो यही है कि यह रचनात्मक प्रयत्न तब तक असफल रहेगा, जब तक शत प्रतिशत मादक द्रव्य निषेधाज्ञा लागू न कर दी जायगी। जब तक सरकार व्यसनी को अपने व्यसन की तृप्ति की अनुमति देती रहेगी और उस तृप्ति के साधन जुटाती रहेगी तब तक समाज-सुधारक अपने प्रयत्नों में असफल रहेगा। जिप्सी स्मिथ बड़ा ओजस्वी उपदेशक था। उसकी वाणी में कुछ ऐसा जादू था कि जब वह बोलता या गाता था तो अनेक लोग उसके आगे शपथ लेते कि भविष्य में वे शराब को हाथ नहीं लगायेंगे। पर मैं दक्षिण अफ्रीका के अपने व्यक्तिगत अनुभव से कह सकता हूं कि इन बेचारे व्यसनियों में से अधिकांश तड़क भड़कवाले शराबखानों में जाने से अपने-आपको रोकने में असमर्थ हो जाते थे। ऐसे शराबखाने वे जिस मार्ग से गुजरते शहर में या शहर के बाहर उनका मन लुभाने के लिए मौजूद ही रहते। मादक द्रव्य निषेधाज्ञा राज्य लागू मात्र कर सकता है इतना ही नहीं इस प्रकार के सुधार के लिए यह निषेधाज्ञा अनिवार्य तथा आवश्यक होनी चाहिए।

स्थानिक विकल्प के बारे में जितना कम कहा जाय उतना ही ठीक होगा। क्या इस दुर्व्यसन के संपूर्ण निषेध के खिलाफ किसी ने आवाज उठाई है ? विकल्प का प्रश्न तो तभी उठ सकता है, जब समूची आबादी को मादक द्रव्यों के सेवन का व्यसन हो।

ईश्वर ने चाहा तो यह मादक द्रव्य निषेध बराबर कायम रहेगा। इस सम्बन्ध में कांग्रेस कितना भी अधिक या कम योगदान करे या न करे इतिहास में यह बात स्वर्णाक्षरों में लिखी जायेगी कि १९२० में कांग्रेस ने मादक द्रव्य निषेध सम्बन्धी शपथ ली थी, और प्रथम अवसर मिलते ही उसने अर्थहानि की परवाह

किये बिना उस शपथ को कार्यान्वित किया था। मुझे इसमें तनिक भी स न्देह नहीं कि अ य प्रांत भी काग्रेसी प्रांतों का अनुकरण करेंगे। मैं सरदार जोगेंदरसिंह स अनुरोध करूगा कि मादक द्रव्य निषेध के खिलाफ काग्रेस को चेतावनी देने के बजाय वे अपने प्रांत म और अपनी वीर सिख जाति मे उसे कार्यान्वित करने म पूरी शक्ति झोक दें।

४७

ग्रासवेनर हाउस,
पार्क लेन लदन, डब्ल्यू० १
८ सितम्बर, १६३७

प्रिय महादेवभाई

तुमने अपने २७ तारीख के पत्र म बापू के स्वास्थ्य के सम्ब ■ म जो-कुछ लिखा है उससे मुझे चिन्ता हो रही है। मैंने तुम्हें तार भेजा पर उसका उत्तर न पाने पर मेरी चिन्ता बढ गई। गनीमत यही है कि उनके स्वास्थ्य के बारे मे समाचार पत्रो म कुछ नही निकल रहा है इससे मुझे लगता है कि अब वह पहले से अच्छे होंगे। जो भी हो उनके विश्राम करने की बात अन्तिम रूप से तय हो जानी चाहिए। तुमने अपने अंतिम पत्र म यह बताया है कि बापू इस ओर स सचेत हैं और अब अधिक विश्राम ले रहे है। जब ऐसी बात है तब तो उनके स्वास्थ्य म गिरावट नही आनी चाहिए।

तुमने अपने पत्र म लिखा था कि मुझे जल्दी ही लौटना चाहिए। मैंने तुम्हे तार भेजा है कि बस मैंने ७ अक्तूबर को यहा से चलने का प्रबंध किया है पर यदि तुम चाहो कि मैं और भी जल्दी करू तो मुझे तार दो मैं सब-कुछ छोड छाडकर भारत के लिए रवाना हो जाऊगा।

मैं तुम्हारे पत्रों का तथा तुमने जो लेख भेजे हैं उनका फिलहाल कोई उपयोग नही कर रहा हू क्योंकि यहा भूमध्य सागर तथा सुदूर पूर्व की राजनैतिक स्थिति को लेकर काफी बेचैनी फैली हुई है। सब कोई बेतरह कार्यव्यस्त दिखाई पडते हैं और मुझे भी आशका है कि स्थिति और भी गभीर होती जायगी। जब १६३५ म इटली ने अबीसीनिया पर आक्रमण किया तो ब्रिटेन कडवा घूट पीकर रह गया था पर अब वह पहले की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हो गया है और एक साल बाद

उसकी शक्ति म और भी वद्धि होगी। भूमध्य सागर और सुदूर पूव म उसे जिस प्रकार उत्तेजित किया जा रहा है, उसके प्रति उसने पहले से अधिक कठोर रख अपनाया है। एक साल बाद वह इन उत्तेजनाओ को चुपचाप नही सहेगा क्योकि तब तक वह और अधिक शक्तिशाली बन जायेगा। दूसरी ओर यह प्रतीत होता है कि जापान लडाई मोल लेने पर उतारू है और हिटलर अपने पुराने उपनिवेश वापस चाहता है। इधर इटली भी तलवार म्यान से बाहर कर रहा है। इन देशो ने ब्रिटेन की शक्ति सामथ्य का ठीक ठीक कूता है इस बारे म मुझे सन्देह है। यदि इन्हें लगा कि एक साल बाद ब्रिटेन की शक्ति बहुत बढ जायेगी, तो शायद वे उससे जल्दी निपटना चाहेंगे एक साल तक रुकना पसन्द नही करेंगे। इस प्रकार तुम स्वय ही देखते होगे कि स्थिति बडी विकट है। साथ ही वस्तुस्थिति यह भी है कि ब्रिटेन मैदान मे आने को आतुर नही है। यदि युद्ध छिडा भी तब भी शायद वह उसकी चपेट मे बचने की भरसक कोशिश करेगा। पर एक ओर फासिस्ट देशो और बोल्शेविक रूस के बीच तथा दूसरी ओर जापान और ब्रिटेन के बीच सम्बन्ध बहुत तने हुए हैं।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

४८

सेगाव वर्धा
८ सितम्बर, १९३७

प्रिय मित्र

मेरे अनुनय भरे तार के उत्तर म आपने जो स्पष्टवादिता दिखलाई और जिस प्रकार सम्पूर्ण रूप से विषय की चर्चा की उसके लिए मैं अनुगहीत हू। आपने जो रुख अपनाया है उसके सबध मे मुझे और अधिक कुछ नही कहना है, क्योंकि मैं स्थिति को समझ गया हू।

आपने अपने पत्र म बन्निया के अपूर्ण उत्तर की चर्चा की है उस पर मेरा

भी ध्यान गया है पर आतकवाद के तरीके के सबध म उन्होने जो स्पष्ट और असदिग्ध बात कही उससे मुझे सतोष हुआ है। अडमान के कदी देश भक्ता के जिस वग का प्रतिनिधित्व करते हैं उनके साथ स्थायी और सम्मानपूण समझौते के निमित्त अपने प्रयत्नो मे आपका सहयोग प्राप्त करने की मुझ अब भी आशा है।

भवदीय,
मो० क० गाधी

महामहिम वाइसराय

४६

सगाव वर्धा
८ सितम्बर, १६३७

प्रिय मित्र

आपके पत्र के लिए आभारी हू। आप मुझसे क्या अपेक्षा करते है सो मैं समझ गया। मुझे आशा है कि मै आपको निराश नही करूगा क्योकि शासक-वग मे इस समय मेरी जितनी साख है उसमे मैं वद्धि करना चाहता हू जिससे अधिक अनुकूल शर्तों के साथ उस साख का उपयोग हो सके।

इस समय डाक्टरो के परामश से मैं विश्राम लेने की चेष्टा कर रहा हू और मैंने अपने मित्र खान साहब स कहा है कि मुझे अपने यहा बुलाने म वह जल्दबाजी न करें।

आपका
मो० क० गाधी

महामहिम गवनर
उत्तर पश्चिम सीमा प्रात

५०

ग्रासवनर हाउस,
पार्क लेन, लंदन, डब्ल्यू० १
१४ सितम्बर १९३७

प्रिय भूलाभाई

आज सुबह के समाचार पत्रों में पढ़ा कि दोनों सदनों के सम्मुख दिये गये वाइसराय के भाषण के अवसर पर कांग्रेसी दल तथा राष्ट्रवादी दल दोनों ही अनुपस्थित थे। भूतकाल में कांग्रेस के लिए यह रुख अपनाना औचित्यपूर्ण अवश्य था पर भूलाभाई अब जब कि गांधीजी और वाइसराय की मुलाकात हो चुकी है और वाइसराय अन्य नेताओं से भी मिल भेंट चुके हैं तथा वाइसराय और जवाहरलाल के बीच मुलाकात होनेवाली है क्या कांग्रेस का यह रवैया समयोचित है?

मेरी अपनी धारणा तो यह है कि हमारे इस रवैये का केवल एक ही अर्थ निकाला जा सकता है और वह यह कि समझौते की सम्भावना मौजूद होने पर भी हम एक दूसरे को समझने की दिशा में अपनी ओर से कोई कदम उठाने को राजी नहीं हैं। मैं जवाहरलाल का रवैया तो समझ सकता हूं क्योंकि वह किसी भी परिस्थिति में ब्रिटेन के साथ कोई सरोकार नहीं रखना चाहते हैं पर मुझे पूरा यकीन है कि यह न तो आपका रवैया है न वल्लभभाई का ही है। गांधीजी का तो यह रवैया कदापि नहीं है। इसलिए जब मैंने पढ़ा कि वाइसराय ने मैत्री का जो हाथ बढ़ाया उसे कांग्रेसी दल ने पकड़ने से इन्कार कर दिया तो मुझे कुछ निराशा-सी हुई। मैं नहीं समझता कि इस रास्ते से हम कुछ लाभ होनेवाला है।

मैं इस बात का निर्णय नहीं कर पा रहा हूं कि मेरा आपको यह लिखना कहां तक युक्तियुक्त है क्योंकि कांग्रेस में मेरी कोई स्थिति नहीं है पर एक मित्र के नाते तो आपको लिख ही सकता हूं। इसलिए आप इसे अन्यथा न लें।

आपका,
घनश्यामदास बिड़ला

श्री भूलाभाई देसाई

५१

मगनवाडी
वर्धा (मध्य प्रात)
१६ सितम्बर १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी

अडमान के कदियो के सबध म ताजा पत्र व्यवहार नत्थी कर रहा हू। ये सात कदी परले सिरे के जिद्दी निकले। हो सकता है और ऐसा अक्सर होता भी है कि उनकी उत्तेजना का कोई कारण उपस्थित रहा हो। जो भी हो उन्ह समझाना बुझाना फिलहाल बापू के बूते के बाहर सिद्ध हुआ। मुझे तो ऐसा लगता है कि इन ७ कदियो को बलात खिलाया जा रहा है अन्यथा उनके लिए इतने दिनो तक चलना और समझौते की बात चलाना सम्भव नही होता। कितने दुर्भाग्य की बात है। बापू को उन २२६ कदियो से जो आश्वासन का वचन मिला था उसका सहारा लेकर वह वाइसराय द्वारा उठाई गई बात का ध्यान म रखते हुए उनसे कुछ अधिक प्राप्त करने की आशा कर रहे थे। बापू ने वाइसराय को जो पत्र लिखा है उसम आपने देखा ही होगा कि बापू वाइसराय की दलील के कायल हैं। पर क्या इन लोगो से अहिंसा का कौल-करार लेने की हठ करना और उनसे यह कहलाना कि उन्होने हिंसा का माग त्याग दिया है औचित्यपूर्ण है? या समाजवादी पार्टी का ही क्या रुख है? कांग्रेसियो मे भी जो लोग विशुद्ध राजनतिक दृष्टिकोण अपनाये हुए हैं उनका भी क्या हाल है? उनके लिए अहिंसा कोई धर्म नही है एक नीति मात्र है।

पर यह सब तक इस पत्र मे आपको लिखने से क्या लाभ है? मैं जानता हू कि समझौतावादी दल के लोग भी अडमान को समाप्त करने की माग पर चुप्पी साध लेते हैं। आपको समय मिले तो उन लोगो मे विशेषकर काल हीथ से इस विषय पर बात करके उनके मन की बात जानने की कोशिश करिये। जब आतकवादियो ने आतकवाद और हिंसा का परित्याग करने का वचन दे दिया तो बापू द्वारा उनकी रिहाई की माग करने म असाधारण लगनेवाली क्या बात है? इस समय सम्पूर्ण कांग्रेस की विशेषकर उन लोगो की जिन्होंने रिहाई की माग की है मान मर्यादा का प्रश्न उठ खडा हुआ है। बापू का वचन है ही और वह यह वचन जितनी बार जरूरी हो दुहरा सकते हैं कि वह रिहा हुए कदियो के ठीक आचरण या या कम-से-कम उनके साथ दिल खोलकर बात करने की स्वतत्रता

का जिम्मा लेते हैं। इस दृष्टि से उनकी भारत-वापसी, जो लगता है शीघ्र ही आरंभ हो जायगी एक अच्छी बात होगी। अब बापू उनके साथ दिल खोलकर निःसकोच बात करने की अनुमति चाहेंगे।

मैंने आपके पास पिछले हफ्ते या एक पखवाड़े पहले हरिजन का वह लेख भेजा था, जिसमें बापू ने काकोरी-काड के बंदियों में स्वागत की चर्चा उठाई थी। युक्त प्रांत के कुछ गर्म मिजाजवाले लोगों को वह लेख बहुत खला है पर मुझे यह सूचना देते प्रसन्नता हो रही है कि जवाहरलाल को वह बेहद पसंद आया। वस्तुतः उन्होंने यहां कुछ दिन के लिए आकर बापू से खुद कहा कि उन्होंने न तो प्रदर्शन में भाग लिया न कैदियों के उपलक्ष में किये गये स्वागत-समारोह में ही वह शरीक हुए। उन्होंने बताया कि समाचार पत्रों में छपी इस रिपोर्ट में तथ्य नहीं है कि यह स्वागत-समारोह स्वयं उनके निवास-स्थान पर हुआ था। उन्होंने कहा कि उन्होंने उनमें कुछ एक को केवल बातचीत के लिए बुलाया था बस। उनके साथ कुछ बिगड़ेदिल लोग भी आ पहुंचे इसलिए इस वार्ता को स्वागत समारोह का रूप दे दिया गया। उन्होंने यह भी कहा कि इस तथाकथित स्वागत-समारोह में वह स्वयं उपस्थित नहीं थे।

युक्त प्रांत का मजदूर-आंदोलन संबंधी स्थिति चिंता का कारण बनी हुई है। पंच फैसले के लिए नियुक्त समिति का सभापतित्व करने के लिए गोविंदवल्लभ पंत ने राजेंद्र बाबू को बुला भेजा है। मजदूरों की मांग है कि या तो शंकरलाल आवें, या गुलजारीलाल नंदा। पर ये दोनों हर जगह तो मौजूद रह नहीं सकते। गुलजारीलाल नंदा खर के लिए बेहद उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

जापान ज्यादती पर उतारू है। हजारों निर्दोष प्राणियों को जान से हाथ धोना पड़ा है। शंघाई से आये एक जर्मन यहूदी ने बताया है कि उत्तर में तथा शंघाई में जो युद्ध हो रहा है, वह अकारण ही छिड़ गया था। जापान धिनौने झूठ का सहारा ले रहा है। जापानी उसी किश्ती में सवार हैं, जिसमें जर्मनी और इटली हैं। अंतर केवल इतना ही है कि अधिकांश जापानी जननेताओं को या तो घोर अंधकार में रखा जा रहा है या मुलम्मा चढ़ा झूठ उन्हें बतलाया जा रहा है। यदि रिपोर्टों की ओर ध्यान दिया जाय तो ऐसा लगता है कि वहां देशव्यापी क्रांति के लक्षण प्रस्फुटित हो रहे हैं।

अब एक आह्लादकारी खबर भी दे दूं। बापू का स्वास्थ्य ठीक हो रहा है। खूब आराम कर रहे हैं मुलाकात करने से यथासम्भव बचते हैं और इस तरह अपना रक्तचाप लगभग साधारण स्थिति में ले आये हैं। पर आप तो उनकी शारीरिक स्थिति से परिचित ही हैं पता नहीं कब तबीयत फिर खराब हो जाय।

कुछ एसी बातें या चीज हुइ हैं जिह लेकर उनका रक्तचाप फिर बढ सक्ता ह। अनेक बार मैंने उह यह कहत सुना है कि जहा सीमा का उल्लघन हुआ कि उह चारपाई की शरण लेनी पडेगी।

आपने यह ठीक ही कहा है कि आपका सैयद हुसन का बापू के साथ किसी भी रूप में सपक असह्य है। मैंन अभी वह पुस्तक नही देखी है। मुझे तो एसा लगता है कि इस आदमी को पसे का अभाव है और वह उस महादेश म अपने प्रशसको की आखो म धूल झोकने की कोशिश कर रहा है। वहा तो कोई भी पाखण्डी चेल चाटे इकट्ठे कर सकता है और तिस पर भी यह आदमी अमेरिका मे अहिंसावादी गाधी-आदालन का नेता और मिस्टर गाधी का व्यक्तिगत मित्र समझा जा रहा है। भगवान हम ऐस मित्रा स बचायें।

सप्रेम,
महादेव

५२

ग्रासवनर हाउस,
पाक लन
लन्दन डब्ल्यू० १
२२ सितम्बर १९३७

प्रिय महादवभाई

आज सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट स मिला था। भारत-सचिव स भी जल्दी ही मिलूगा। लाड लोदियन यहा नहा हैं। लाड हैलिफक्स हैं। बहुत जरूरी हुआ तो उन्हें कष्ट दूगा। अन्तर्राष्ट्रीय राजनतिक स्थिति को लेकर वह आजकल बेतरह व्यस्त हैं।

नजरबन्दो के बारे म मेरी धारणा है कि वाइसराय क नाम बापू के पत्र स बडी सहायता मिलेगी। मैंने सर फाइण्डलेटर को वाइसराय को लिख बापू के पत्र की नकल दिखाई। कनिंघम को लिखे पत्र की नकल भी दिखाई। इन लोगा न बापू के मानस का समझा है और मुझे इस बारे म सदेह नही है कि य लाग उनका समुचित आदर करत हैं।

५३

वर्धा
२२ सितम्बर १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी

सर डेनियल हैमिल्टन ने भी मादक द्रव्य निषेध संबंधी 'स्काटसमैन' की कटिंग भेजी है।

अगर रक्तचाप मशीन का यकीन किया जाय तो बापू का स्वास्थ्य अच्छा खासा मानना चाहिए क्योंकि रक्तचाप लगभग स्वाभाविक दिखाई पड़ता है। पर स्वयं बापू को इसका भरोसा नहीं है। आज सवेरे कहने लगे, रक्तचाप नीचे आ गया है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि मैं दवाइयां ले रहा हूं साथ ही मशीन तो मशीन ही है। अभी रक्तचाप नीचे आया लगता है वह फिर ऊपर जा सकता है क्योंकि दवाइयां तो लगातार खाने से रहा। अभी तो मैं ये दवाइयां केवल यह देखने के लिए ले रहा हूं कि इनका इस व्याधि पर क्या प्रभाव पड़ता है, जिससे इस रोग से पीड़ित और लोगों को भी फायदा पहुंच सके। जहां तक मेरा संबंध है मेरे लिए तो आराम ही सबसे अच्छी औषधि है।

उनके इस कथन का ध्यान में रखता [illegible] तो आपका तथा अगाथा और हीथ का तार बहुत ही सामयिक लगता है। आपके तार ने कुछ काम किया अवश्य है, आगे भी करता रहेगा। इस दफा जो विशेष विचारणीय बात रही वह यह है कि जहां पहले रक्तचाप के ऊंचे जाने पर बापू उसकी उपेक्षा करते थे, इस बार उन्होंने उसकी उपेक्षा नहीं की और वह समझ गये हैं कि थोड़े से समय के लिए राहत पाने से काम नहीं चलेगा। पर हम सबके लिए तो यह थोड़े-से समय की राहत भी चिंतामुक्त होने के लिए काफी है।

हर जगह से जो समाचार आ रहे हैं संतोषप्रद हैं। उन सात जिद्दी बन्दियों ने भी अनशन त्याग दिया है। उन्होंने यह दया इस शर्त के साथ दिखाई कि भारत वापसी के तुरत बाद यदि उन्हें राहत न दी गई तो वे फिर भूख हड़ताल शुरू कर देंगे। यह बात भारत सरकार ने बापू के कानों तक गुप्त रूप से पहुंचा दी है। *यदि बापू का उनसे मिलना हो जाय तो बहुत-कुछ काम सध जाय। पर मुझे इसमें* कठिनाइयां दिखाई पड़ती हैं। उधर सरकार कैदियों को चुन चुनकर भारत भेज रही है। ऐसा क्यों ?

मैं तो यही आशा लगाये बैठा हूं कि बापू कैदियों से और अधिक पत्राचार

करेंगे और उन्हें रास्ते पर ले आयेंगे। भारत सरकार की तारीफ में इतना जरूर कहूंगा कि उसने बापू के हस्तक्षेप को ठीक रूप में ग्रहण किया और बापू ने अन्सार को जो भी संदेश भेजना चाहा उसे वहां पहुंचाने में तत्परता दिखाई और अब भी दिखा रही है। (प्रसंगवश इतना और कह दूं कि जब भूलाभाई ने वाइसराय से उनके निमंत्रण पर मुलाकात की तो उन्होंने बापू के स्वास्थ्य के बारे में पूछा और कहा कि महज शिष्टाचार के नाते नहीं पूछ रहा बल्कि इसलिए उनके स्वास्थ्य की चिंता है कि बापू सत्य की खोज में अपना सब-कुछ न्योछावर कर देने को सदैव तत्पर रहते हैं'।

वाइसराय के साथ भूलाभाई और सत्यमूर्ति की मुलाकातें स्पष्टोक्ति और मित्रता के वातावरण में हुई। दोनों का यही कहना है। वार्ता विभिन्न प्रसंगों पर हुई जैसे संघ शासन-व्यवस्था प्रांतों को केन्द्र से मिलनेवाली आर्थिक सहायता, प्रजातंत्रीय शासन प्रणाली आदि। सत्यमूर्ति ने वाइसराय से बापू से मिलने का जोरदार समर्थन किया और उन्हें इसकी उपादेयता का विश्वास दिलाया।

साम्यवादियों तथा हिंसावादियों का सवाल बंबई में जो मसला उठ खड़ा हुआ था, उसका संतोषजनक ढंग से निपटारा हो गया है। इस मामले में भी बापू का अचूक मार्गदर्शन काम आया। मुंशी बापू के पास बड़ी परेशानी की हालत में आये थे, वह यह तय नहीं कर पा रहे थे कि क्या करें। बापू ने उन्हें एक सत्याग्रही नुस्खा दिया जो अचूक साबित हुआ। गांगुली ने एलान कर दिया कि उसने हिंसा के मार्ग का परित्याग कर दिया है। उसने रिहाई के बाद बापू को जो पत्र लिखा उसमें भी उसने यही कहा है और बापू ने उससे यह वचन ले लिया है कि अहिंसा में उसकी आस्था अटूट रहेगी। उसने यह भी कहा है कि वह अपने लिए किसी प्रकार के प्रदर्शन अथवा स्वागत-आयोजन को प्रोत्साहन नहीं देगा। पूना में वह मुंशी के यहां अतिथि के रूप में ठहरा और अब कृतज्ञतापूर्वक घर लौटा है।

काकोरी-काण्ड के जिन बंदियों की रिहाई हुई है, उनमें से एक या दो अगले हफ्ते बापू के पास आ रहे हैं, अपने भावी कार्य के बारे में उनका मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए।

जवाहरलाल ने अहमदाबाद में सार्वजनिक रूप से यह घोषणा की है कि इन बन्दियों के लिए कोई प्रदर्शन करने तथा उनका स्वागत-समारोह करने से कोई फायदा नहीं है। उन्होंने यह सब नापसंद किया है।

आप स्वयं ही देखेंगे कि सार्वजनिक जीवन का उत्कर्ष हो रहा है, जनता उत्तरोत्तर अधिकाधिक शक्तिशाली होती जा रही है बारडोली और खेड़ा के किसानों को उनकी जमीनें वापस मिल रही हैं और स्थायी मूल्य की चीजें अस्तित्व

म आ रही हैं। यदि इन सबके साथ मादक द्रव्य निषेध भी लागू हो जाय तब बापू का जीवन सार्थक हो जायगा।

अब यह पत्र समाप्त करूगा—कुछ ही मिनटो म धूलिया की गाडी पकडनी है। जिस काम को हाथ म लेकर जा रहा हू वह कोई बहुत आह्लादकारी नही है।

कृपा करके पुरोहित से—आपके सक्रेटरी का यही नाम है न—कह दीजिए कि मुझे उसका पत्र मिल गया। धन्यवाद ! अब उसे मधुमक्खिका पालन विषय पर पुस्तको का सग्रह करने की जरूरत नही है क्याकि वे पुस्तकें जिस व्यक्ति के काम आती उसन एक पखवाडे पहल आत्महत्या कर ली। मुझे आशा है कि पुरोहित कैबिनट सरकार पर जनिग की पुस्तक जो अभी हाल मे प्रकाशित हुई है और हचिन्सन की नवाबो का भारत पुस्तक लेते आयेंगे।

सप्रम,

महादेव

दुहराया नहा गया है।

५४

ग्रासवनर हाउस

पाक लेन

लन्दन डब्ल्यू० १

२८ सितम्बर १६३७

प्रिय महादेवभाई

इस डाक स जो पत्र आय हैं उनम सबस अधिक आनद प्रदान करनेवाला तुम्हारा वह पत्र है जिसम तुमने बापू के स्वास्थ्य क बारे म खबर दी है।

अब रही नजरब दो की बात। मैं यहा अनक लागो स बात करके इस नतीज पर पहुचा हू कि एकदम हताश हाने का कोई कारण नही है। पर फिलहाल यही बहतर होगा कि बदियो की भारत-वापसी पर जोर दिया जाय। जब व लौट आयें तो उनके साथ बापू साक्षात्कार करें। इस सारे मामले मे जिन जिनमे निपटना है उनम बगाल के गवनर मुख्य हैं। यह तभी हा सकता है जब बापू की तबीयत ठीक रह।

कल काल होय मिलने आ रहा है। उसका कहना है कि इस वात म कोई तथ्य नहीं है कि वह अडमान का अत किये जाने के सुझाव का समथन करने को तयार नहीं है। शीघ्र ही भारत सचिव स भी मिलूगा और यह प्रसग उठाऊगा। नतीजा अच्छा ही होगा पर धैय की जरूरत है। कुछ समय लगेगा।

मुझे इसमे सदेह नही है कि बापू नजरब दा के भावी आचरण की जिम्मेदारी लेने मे समथ है, पर क्या तुम्हारा यह खयाल नही है कि ऐसा उत्तरदायित्व स्वीकार करने मे सतकता से काम लेना ठीक होगा ? भारत के समाचार पत्रा म मुझे जो-कुछ पढन को मिला है यदि वह ठीक है ता उससे ता यही लगता है कि काकोरी काण्ड क बदियो को लेकर जो प्रदशन किये गये उनके खिलाफ बापू की आवाज सुनी-अनसुनी कर दी गयी। उनकी स्थान स्थान पर अगवानी हो रही है, उन्हे दावतें दी जा रही हैं। ब्रजमोहन ने भारत के बारे म जो खबरें भेजी हैं, उनस ता मन बहुत उदास हो गया है। उसका कहना है कि युक्त प्रात म गुण्डागर्दी का बोलबाला है। यदि कोई अनहोनी बात हो जाय, ता आश्चय नही। हर कोई यही समझ बठा है कि वही सरकार है। ब्रजमोहन का कहना है कि पतजी को हर घडी मतवालो की भीड परेशान करती रहती है। वह अपने-आप का हरदम घिरा हुआ पाते हैं। कोई अमुक अफसर का बर्खास्त करने की माग करता है किसी की कुछ और फर्माइश होती है। पुलिस डरी हुई है। जुलूस निकाले जाते है जिनमे 'भगत सिंह जिंदाबाद' और 'क्रांति चिरजीवी हो' के नारे बुलद किये जाते हैं। ब्रजमोहन कहता है कि जब पतजी का सारा समय शिकायतें सुनने मे ही बीत जाता है, ता अधिक महत्त्व के काम की बात सोचने का उन्हें अवसर ही कहा मिलता होगा ? तिस पर तुर्रा यह कि जो शिकायतें आती है वे या तो बेसिर पैर की होती हैं, या बना-बढाकर की गई होती है।

बापू अपने एक लेख म कहते हैं कि हम आतकवाद का मुकाबला जवाबी आतकवाद स नही करेंगे। उनका कहना है कि पुलिस और फौज का निकम्मा साबित करना है। यह एक ऐसा आदश है जिसको दुनिया के सभी राष्ट्रा को अपनाना चाहिए। किसी हद तक इग्लैंड के बारे म यह बात सार्थक है। वह इस लक्ष्य-स्थान के काफी निकट जा पहुचा है। अन्य राष्ट्रा के बारे म यह नही कहा जा सकता। पर हम स्वय इस लक्ष्य सिद्धि के लिए क्या कर रहे हैं ? जब तक हम इस लक्ष्य तक न पहुच जायें तब तक क्या हम पुलिस और फौज की उपेक्षा कर सकेंगे ? ब्रजमोहन जो-कुछ कहता है यदि वह सही है तो मुझे तो ऐसा लगता है कि किसी दिन स्थिति अत्यत गम्भीर रूप धारण कर लेगी। कानपुर म जो वातावरण व्याप्त है उससे राजेन्द्र बाबू ऊब गये हैं। पता नहीं, इसका दोष किसके मत्थे

मानना चाहिए। पर मुझे इसमे लेशमात्र भी सदेह नही है कि हमारे मंत्रियो का पहला काम अनुशासन लाना है। आशा है जवाहरलालजी इस दिशा मे युक्त प्रात के मत्रियो की किसी न किसी रूप मे सहायता कर रहे है। यदि हम अनुशासन रख सकें तो अग्रेजो पर अधिक अनुकूल प्रभाव पडेगा—केवल राज-काज चलाने की क्षमता का ही नही बल्कि नजरबदो की रिहाई के बाद उनके आचरण को काबू मे रखने की क्षमता का भी। काकोरी काण्ड के बदियो को लेकर जो प्रदर्शन हुए, वे जवाहरलालजी को अच्छे नही लगे। यह खुशी की बात है। मै यही आशा लगाये बैठा हू कि समय रहते और स्थिति के बिगडने से पहले ही अनुशासन पर जोर दिया जायेगा।

बाल की बाबत मेरा यह कहना है कि इस आदमी ने बापू के दस्तखतो से एक जाली चिट्ठी बनाकर पिताजी से १००) ऐंठ लिये। जब पिताजी ने मुझे वह चिट्ठी दिखाई तो उस पर निगाह डालते ही मैंने उन्हें बता दिया कि वह ठगाई मे आ गये। पर उन्होने कहा इसका जिक्र बापू से मत करना मामूली सी बात है। पर जब मैंने तुम्हारा लेख पढा तो मुझे लगा कि तुम्हें लिखू।

मैं अपनी समुद्र-यात्रा ७ तारीख से आरम्भ करनेवाला हू। १६ को बबई-तट पर उतरूगा। मैं बबई से सीधे वर्धा जा सकता हू पर वैसी हालत मे तीन चार दिन से अधिक नही ठहर पाऊगा। पर यदि मैं पहले अपने माता पिता के दर्शनो के लिए गया तो कलकत्ते होकर वर्धा जाऊगा और अधिक समय तक ठहर सकूगा। मेरे बबई के पते पर पत्र भेजकर बताओ, बापू को मेरा कौन सा प्रोग्राम अधिक जचेगा।

सप्रेम,
घनश्याम महादेवाय

५५

कलकत्ता
१८ नवम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाई

बगाली पत्रकारिता का एक नमूना भेजता हू। तुम खुद ही देखोगे कि लेख

कितना विषाक्त है।

बापू के विदा होने के तुरत बाद मैंने नलिनी को फोन किया और उन्होंने कहा था कि सरकार द्वारा वक्तव्य जारी किये जाने से पहले वह मुझे दिखा देंगे। आज सवेरे उन्होंने वक्तव्य का मसौदा मेरे पास भेजा जो मुझे नहीं रुचा। पर वह मसौदा मेरे पास भेजने के बाद इसकी चर्चा कैबिनेट की बैठक में कर रहे हैं। जब कैबिनेट की बैठक हो चुकेगी, तो मैं संशोधित मसौदा देखूंगा और मुझे जो-कुछ कहना होगा, कहूंगा। पर नलिनी से यह भी कह दूंगा कि जब तक बापू मसौदा पसंद न करें उसे प्रकाशित न किया जाय। इसके लिए मैं नलिनी से कहूंगा कि वह ऐसी व्यवस्था करें कि फोन पर तुमसे निर्विघ्न बात हो सके।

यह मैं सुबह के ११ बजकर ४५ मिनट पर लिख रहा हूं। आगे जैसा कुछ होगा तुम्हें बताऊंगा।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

५६

रायटर्स बिल्डिंग
कलकत्ता
२४ नवम्बर १९३७

प्रिय श्री गांधी

आपके खत के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। आपकी तबीयत ठीक नहीं है यह जानकर चिंता हुई। उम्मीद है, आप जल्दी ही सेहत हासिल करेंगे।

हम लोगों की राय में आपका बयान निहायत मुनासिब है और उसके लिए हम आपके शुक्रगुजार हैं। सरकार ने चार महीने की मियाद रखने की बात जिन लफ्जों में बयान की है वे शायद उतने अच्छे नहीं हैं जितने होने चाहिए थे। बयान से सरकार का यह इरादा तो जाहिर होता है कि चार महीने की मुद्दत के बाद और अधिक नजरबन्दों की रिहाई के सवाल पर गौर किया जायगा। मगर

उनके अवाम में यह गलतफहमी फैलने का भी डर है कि उस मुद्दत के बाद ही आप इस मसले को हाथ लगायेंगे। लेकिन बयान में ऐसी कोई बात नहीं कही गई है जिससे यह जाहिर होता हो कि इस मियाद के दौरान आपके यहां आकर इन लोगों से मुलाकात करने पर कोई बंदिश रहेगी।

आपने अपने खत में दरख्वास्त की है कि आपकी गैर मौजूदगी में मिस्टर शरत बोस को नजरबंदों से मिलने और बात करने की आजादी रहे। मैं यह बात साफ तौर से बता देना चाहता हूं कि इस बाबत मेरा ऐतराज किसी जाती सबब से नहीं बल्कि उसूलन है। सरकार मुल्क के बाकी सारे सियासी लीडरों को वह रुतबा नहीं देती है जो आपको देती है। इसलिए अगर किसी और शख्स को इन नजरबंदों से मुलाकात करने की इजाजत दी जायगी तो उससे न आपका ही मकसद पूरा होगा न सरकार का ही। आपके हिजली के दौरे के बाद सरकार ने डा० विधानचन्द्र राय और श्रीमती सरोजिनी नायडू को सियासी कैदियों से मुलाकात करने की इजाजत दी मगर डॉ० राय को यह इजाजत इसलिए दी गई थी कि वह तबीब हैं और मुलाकात नायडू के साथ खास सलूक किया गया, मगर जहां तक मेरा ताल्लुक है इन सियासी कैदियों से मिलने की और किसी लीडर को इजाजत देना मुमकिन नहीं है।

मेरा यह ख्याल था कि आपने और सियासी कैदियों तथा नजरबंदों के बाहम जाती ताल्लुकात कायम करना उन्हें समझा-बुझाकर तशद्दुद के रास्ते से हटाकर अदमतशद्दुद के रास्ते पर लाने के मकसद के लिए जरूरी है, ताकि उनके नजरिये में इन्किलाब पैदा किया जा सके। इस मकसद को उसूलन अच्छा समझा गया उनके इस किस्म के इन्किलाब से जाती या सियासी फायदा क्या होता है इससे सरकार का कोई सरोकार नहीं है। इस चीज का सौदेबाजी का मजमून बनाने का कोई सवाल नहीं था। आपके लिए उन्हें अदमतशद्दुद के रास्ते पर लाने के लिए उन्हें समझाना-बुझाना जरूरी था। पर जहां तक इन कैदियों का ताल्लुक है अगर इस समझाने-बुझाने से उनके नजरिये में इन्किलाब हुआ है या नहीं हुआ है तो उसके लिए यह संकेत भर काफी है। इस पहलू से इन लोगों के साथ खत किताबत या मुलाकात करने के सवाल का भी ताल्लुक है। अगर आप इन सियासी कैदियों या नजरबंदों से बंद लिफाफे में खत किताबत करें तो सरकार को कोई ऐतराज नहीं होगा। मगर शर्त यह है कि इन लोगों के पास से जो खत आपके पास आयें वे किसी गैर आदमी को न दिखाये जायें।

जब तक घरेलू मामलात का वजीर मैं हूं आप खातिर जमा रखिये कि सरकारी बयान के अल्फाज चाहे जैसे हों, जिन जिन बातों पर हम दोनों के बीच

कौल-करार हुआ है इन्शा अल्लाह उन पर पूरे तौर से अमल किया जायेगा। हां इस दरम्यान कोई नयी सूरत पैदा हो जाय, तो बात दूसरी है।

तोड़ फोड़ की कारवाई वाले अल्फाज के आपने जो माने लगाये हैं या जो तशरीह की है मैं उनसे, कतई मुत्तफिक हूं। लेकिन खत के सिर्फ उस हिस्से का लेकर इत्तफाक राय नहीं है, जिसमें सजायाफ्ता सियासी कैदियों का जिक्र है। आपको मालूम ही है कि इन सजायाफ्ता सियासी कैदियों की बाबत कुछ खास कदम उठाने का हम दोनों के दरम्यान करार हो चुका है। मैंने उस करार को इस पर काम करने की हिदायत जारी कर दी है मगर सरकार उससे आगे कुछ करने को तैयार नहीं है।

आपने खत के आखीर में जो-कुछ जोड़ा है उससे मेरा इत्तफाक है।

आपको बताये मुताबिक कैदियों का वापस लाना शुरू कर दिया जायगा।

आपका,
ख्वाजा नाजिमुद्दीन

मिस्टर मो० क० गांधी
सेगांव वर्धा

५७

रजनी
२३७ लोअर सर्कुलर रोड,
कलकत्ता
२७ नवम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाई,

अपने अल्पकालीन दौरे के बाद कलकत्ता लौटने पर मुझे आपका कृपा पत्र अभी-अभी मिला। मुझे यह जानकर बड़ी चिंता हुई कि महात्माजी का स्वास्थ्य काफी गिर गया है। पता मैं निकला है कि अब वह पहले से कुछ अच्छे हैं। भगवान् से प्रार्थना है कि वह शीघ्र ही पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ करें। उनके बंगाल के दौरे और नजरबंदों के सम्बन्ध में उनके प्रयत्नों तथा तत्सम्बन्धी चिंता ने उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाला होगा। पर इस बात का मुझसे अधिक कोई नहीं जानता है कि नजरबन्दों के लिए हम जो-कुछ कर सके हैं वह उनके प्रयत्नों और चुम्बक-जैसे

आकर्षक व्यक्तित्व के बगैर असम्भव होता। इस समझौते में मेरे योगदान के लिए आपने मुझे धन्यवाद देने की कृपा की है। मैंने उजरबन्दों के हित-साधन के निमित्त जो कुछ मुझसे बन पड़ा किया और करता रहूंगा, पर महात्माजी के मार्गदर्शन के बिना मेरे प्रयत्न निष्फल सिद्ध होते।

मैंने समाचार पत्रों को जो वक्तव्य दिया है उसके बारे में आपके कथन की मैं सराहना करता हूं। आपका यह कहना ठीक ही है कि यदि मैं वह वक्तव्य न देता तो ज्यादा अच्छा रहता। पर बंगाल की राजनीति जैसी कुछ है, आप जानते ही हैं। शरत बाबू ने मेरे सार्वजनिक जीवन पर कीचड़ उछालने की जो अच्छी-बुरी कोशिश की है और अब भी कर रहे हैं, सो बंगाल का बच्चा-बच्चा जानता है, और शायद आप भी जानते होंगे। मेरा यह हार्दिक विश्वास है कि यदि शरत बाबू वर्तमान मंत्रिमंडल को मुख्यतया इस कारण बदनाम करने के प्रयत्न में रत न रहते कि मैं उसमें हूं और इस प्रकार प्रांत के विषाक्त वातावरण का सृजन न करते, तो हमारी अनेक समस्याओं का संतोषजनक हल निकल आता। यह धारणा अकेले मेरी ही नहीं है, अन्य अनेक लोगों की भी है, और उनमें कांग्रेसी-जन भी शामिल हैं। मैं यह स्वीकार करता हूं कि शरत बाबू जिस नीति का अनुसरण कर रहे हैं उससे मुझे घोर व्यथा हुई है और अतिशय रोष हुआ है। अतएव जब रिपोर्टरों ने इस सम्बन्ध में मेरे विचार जानने की हठ की, तो मैंने अपने मन की बात कह डाली। पर मैं आपके इस कथन से सहमत हूं कि उत्तेजना के कारण मौजूद रहते हुए भी मुझे अपने-आप को काबू में रखना चाहिए था। मैं वचन देता हूं कि भविष्य में मैं अपने भावों को काबू में रखने की भरसक कोशिश करूंगा।

मैंने यह पत्र लिखने में स्पष्टवादिता से इसलिए भी काम लिया है कि मैं महात्माजी से या आपसे कोई बात छिपाना नहीं चाहता। महात्माजी जब तक यहां रहे, मैंने उन्हें अपनी व्यक्तिगत झंझट से व्यस्त करना उचित नहीं समझा और उन्हें यह नहीं बताया कि शरत बाबू और आनन्द बाजार की टोली किस प्रकार मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ी हुई है, क्योंकि महात्माजी एक जटिल समस्या का हल तलाश करने में दत्तचित्त थे। पर आप फिर कलकत्ता आयेंगे और अवकाश रहेगा तो मैं महात्माजी और आपके सामने वस्तुस्थिति रखूंगा। आपने यह ठीक ही कहा है कि बंगाल में शांति स्थापना संबंधी प्रयत्न एक भगीरथ प्रयत्न है। पर मेरा विश्वास है कि यहां सचमुच की शांति लाने की कोशिश करने से पहले यहां की स्थिति के चित्र के दोनों पहलुओं की जानकारी हासिल करना आवश्यक है। इतना सब कुछ होते हुए भी मैं आपको आश्वासन देता हूं कि मैं न केवल कोई डरानेवाली बात कहने से ही बाज आऊंगा, बल्कि ऐसा वातावरण उत्पन्न करने

में लगा रहूँगा, जिससे शांति स्थापना के काम में सहायता मिले।

कुछ मामलों में मैं आपको विस्तार के साथ लिखूँगा।

यदि महात्माजी को ऐसा लगे कि मुझे अमुक काम करना चाहिए तो मुझे जरूर बताइए मैं यथाशक्ति अपने जिम्मे दिया गया काम पूरा करूँगा।

आशा है आप सानंद हैं और महात्माजी की तबीयत अब पहले से अच्छी है।

सदभावनाओं के साथ

आपका
नलिनीरंजन सरकार

५८

मगनवाड़ी
वर्धा (मध्य प्रांत)
२८ ११ १९३७

प्रिय सर नाजिमुद्दीन

आपके २४ तारीख के विस्तृत और कृपापूर्ण पत्र के लिए धन्यवाद।

मैं अभी बिस्तर पर ही हूँ। यह उत्तर पेंसिल से लिख रहा हूँ जिसकी महादेव देसाई नकल करेंगे और वह नकल आपके पास भेजी जायगी।

आपने मुझ पर इतना भरोसा किया इससे मुझे सुख मिला पर यदि आपने इस प्रकार की भावना से उन लोगों को वंचित रखा एकमात्र जिनके माध्यम से मैं सफलतापूर्वक काम संपादन कर सकता हूँ तो जिस काम में आप और मैं दोनों ही सचेष्ट हैं वह ठप्प होकर रह जायेगा। नजरबन्दों पर अथवा बंगाल की राजनीति पर यदि मेरा कोई प्रभाव समझा जाय तो वह केवल उसके विश्वस्त नेताओं के माध्यम से ही सक्रिय हो सकता है। उसका कोई पृथक अस्तित्व नहीं है। मैं नजरबन्दों पर अथवा बंगाल की जनता पर कोई चीज नहीं लाद सकता। मेरी एकमात्र कार्यप्रणाली समझाने-बुझाने की प्रणाली है। इस मामले में मैं बराबर पत्र व्यवहार करता रहता हूँ। इन दोनों बन्धुओं के सहयोग के बिना मेरे लिए बंगाल में कुछ भी करना सम्भव नहीं था। आपने डॉ० विधानचन्द्र राय और सरोजिनी

दवी को हिजली के मित्रा से भेंट करने की अनुमति देकर ठीक ही किया। यह भेंट सफल होगी।

मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहता [illegible] कि मैं जो भी सुझाव दूंगा जहां तक बंगाल की सरकार का सम्बन्ध है वे सुझाव अपने ही उत्तरदायित्व पर दूंगा। अतएव मुझे आशा है कि आप अपने निर्णय पर नये सिरे से विचार करेंगे और फिलहाल श्री शरत बोस को मेरे प्रतिनिधि के रूप में हिजली के बंदियों से भेंट करने की अनुमति प्रदान करेंगे।

आपका ही
मो० क० गांधी

ख्वाजा सर नाजिमुद्दीन
गृह मंत्री
राइटर्स बिल्डिंग
कलकत्ता

५६

१ वुडबर्न पार्क
कलकत्ता
२८ नवम्बर १६४७

प्रिय महादेवभाई

मैंने आपको कल जो पत्र लिखा था उसे बी० एन० आर० बम्बई मेल के लेटरबाक्स में डाला था। अब इस पत्र के साथ अमृत बाजार पत्रिका की एक कटिंग नत्थी करता हूं। यह कटिंग सरकारी वक्तव्य के कुछ ही समय बाद मौलवी फजलुल हक द्वारा दिये गये वक्तव्य की है। इस वक्तव्य को पढ़ने के बाद बापू को विश्वास हो जायगा कि मैंने अपने कलवाले पत्र में जो सम्मति प्रकट की थी वह ठीक प्रमाणित हुई। इस मामले पर और अधिक विचार करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि वर्धा में जो मंत्रणा होनेवाली है उसमें नलिनी बाबू के अतिरिक्त मौलवी फजलुल हक तथा ख्वाजा सर नाजिमुद्दीन को भी बुलाया जाय। आपको यह याद दिलाना आवश्यक है कि जब गत १७ तारीख को सर नाजिमुद्दीन,

जिनी बाबू और सर विजयप्रसाद सिंह राय अपना मसौदा लेकर बापू के पास आये थे तो मौलवी फजलुल हक साथ में नहीं थे। यदि मौलवी फजलुल हक भी साथ में होते, और मसौदे के प्रति अपनी सहमति व्यक्त करते तो उसे सरकारी वक्तव्य में अवश्य स्थान मिलता। यदि प्रस्तावित बैठक वर्धा में हुई तो किसी एक मंत्री के लिए यह सम्भव नहीं होगा कि वह आकर अपने सहयोगियों से मशवरा करे और फिर वर्धा जाकर बापू को अपने सहयोगियों की सम्मति से अवगत करें। इसलिए इन तीनों का एक स्थान पर एकत्र होना अत्यावश्यक है। यदि यह तीनों किसी एक बात पर संयुक्त रूप से राजी हो जायेंगे तो बाकी मंत्रिमंडल भी उनके साथ हो लेगा ऐसी अपेक्षा की जा सकती है।

आज प्रातःकाल एक मित्र ने बताया कि मंत्रियों के बीच यह चर्चा चली कि मैंने बापू से अनुरोध किया है कि वह सरकार को लिखें कि मुझे हिजली में बंदियों से मिलने की अनुमति दे दी जाय। मेरे लिए यह कहना अनावश्यक है कि बापू जो भी काम मेरे सुपुर्द करेंगे मैं उसे खुशी खुशी करूंगा। क्योंकि इससे बापू का कार्यभार हल्का होगा। पर मेरी समझ में यह बात नहीं आ रही है कि सर नाजिमुद्दीन के नाम बापू के गोपनीय पत्र की सामग्री इस रूप में फैलाने में इन लोगों का क्या अभिप्राय है। इसी मित्र ने मुझे यह भी बताया कि उसे यह भी ज्ञात हुआ है कि मुझे ऐसी अनुमति नहीं दी जायगी।

मुझे यकीन है कि बापू का स्वास्थ्य सुधर रहा है। बापू से मेरा प्रणाम कहियेगा।

आप सबको मेरा स्नेह

सप्रेम,
शरतचन्द्र बोस

६०

४.१२.१९३७

प्रिय महादेवभाई

आज मैंने वाइसराय से भेंट की। कोई ४० मिनट तक लम्बी बातचीत चली। उन्होंने बापू के स्वास्थ्य के बारे में पूछा और मैंने उन्हें बताया कि वैसे तो कोई डरनेवाली बात नहीं है पर उनकी तबीयत ठीक होने में देर लग रही है। ३

महीने के निर्विघ्न विश्राम स उनका स्वास्थ्य पूरी तरह सुधर सकता है। पर मैंने उन्हे वताया कि वह लगातार कठोर परिश्रम कर सकेंगे इस बार में मुझे सदेह है। उन्ह यह सब जानकर दु ख हुआ। बापू का स्वास्थ्य भग होने के कारणो का मैंने क्रमबद्ध इतिहास दिया। अन्त म मैंने कहा कि हम लोगा ने उन्हे कैदियो से निपटने की परेशानी से बचाने की भरसक कोशिश की इसीलिए यह आवश्यक समझा गया कि शरत बाबू कदियो से मिलकर काय प्रारम्भ करें।

मैंने वाइसराय को बताया कि किस प्रकार बापू ने सबद्ध मत्री को इस बारे म लिखा और उक्त मत्री न क्या उत्तर दिया। मैंने यह भी बताया कि बापू ने दुबारा लिखा है। अन्त म मैंने कहा कि मैं खुद नाजिमुद्दीन से और ग्रेवान से भी बात करने का इरादा कर रहा था पर अन्त म आपको सारी बात बताने का निश्चय किया जिससे यदि आप ठीक समझें तो इस मामले म सहायता करे। वाइसराय सब-कुछ नोट करते गये। मैंने उन्ह सारी दास्ता कह सुनाई इसके लिए उन्होने मुझे धन्यवाद दिया। उन्होने सहायता देने के बारे म कहा तो कुछ नही पर मुझे लगता है कि वह कुछ-न कुछ अवश्य करेंगे। खामोश रहना उनकी आदत है।

इसके बाद सघ व्यवस्था की चर्चा चली। इस विषय को लेकर वामपथी और दक्षिणपथी दोनो ही आपत्ति कर रहे है। उनकी आपत्ति खोखली नही गम्भीर है। यदि स्थिति से कुशलतापूर्वक और सहानुभूति के साथ नही निपटा गया तो वार्ता एक बार फिर ठप्प हो सकती है। मैंने पूछा, आप क्या करना चाहते है? उन्होंने उत्तर दिया कि उन्हें खुद सघ व्यवस्था सतोषप्रद नही लगी है। उन्होंने आलोचको के दृष्टिकोण को सराहा पर बताया कि वे व्यवस्था स लाख असतुष्ट रहें कानून तो कानून ही है। वे हमारी आलोचना के इस पहलू को नही समझ सकते कि हम लोग कोई रचनात्मक विकल्प पाने म समथ रह हैं। मैंने कहा कि समय आने पर बापू वसा विकल्प प्रस्तुत करेंगे। साथ ही मैंने यह भी कहा कि आपको अभी से यह सोचने म लग जाना चाहिए कि आप समस्या का समाधान किस रूप मे चाहेंगे। स्वय मेरे दृष्टिकोण मे व्यवस्था मे दो आपत्तिजनक बातें हैं। पहली आपत्तिजनक बात तो यही है कि नरेशो क प्रतिनिधि निर्वाचित होकर नही आयेंगे दूसरी बात यह है कि विधान के रचयिताओ को यह साबित करना है कि उसम स्वत वृद्धि विकास के तत्त्व विद्यमान है जसा कि अग्रेजो का दावा है। यदि सेना और विदेश विभाग लोकमत द्वारा निर्वाचित मत्रियो के अधीन नही रहेंग तो हम औपनिवेशिक स्वराज्य के लक्ष्य तक कैसे पहुच पायेंगे? विधान म जो कुछ कहा गया है वह कोरा जबानी जमा खच न होकर वास्तविकता पर आधारित है। इस बाबत भारतीय जनता का समाधान करना वाइसराय का काम है। वह एसा किस

रूप म करें यह भी वाइसराय ही तय करेंगे। वाइसराय ने उत्तर म कहा कि जो कुछ भी कहा गया है, वह जबानी जमा खच कदापि नही है। उन्होन कहा कि वह अपनी कबिनेट को विदेश विभाग तथा सेना के मामले मे उत्तरदायित्व स शून्य कदापि नही मानते। यह सत्य है कि वधानिक दष्टि स कबिनेट की इन मामलो म कोई स्थिति नही है। पर वसी परिपाटी स्थापित की जा सकती है। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि यह उनकी 'व्यक्तिगत' राय है। पर उन्होने कहा कि फिलहाल इस विषय को यही रहने दिया जाय जिसस समय आने पर वह इस विषय पर स्वतन्त्र बुद्धि स सोच सकें। मैंने बताया कि संघ-व्यवस्था का अस्तित्व म लाने से पहले उन्हें गाधीजी के साथ विचार विनिमय अवश्य कर लेना चाहिए। मैंने यह भी कहा कि यदि वह जवाहरलालजी स जान पहचान बढा सकें, तो गाधीजी का काय भार बहुत हलका हो जायगा। उन्होन जिज्ञासा की कि क्या जवाहरलाल कलकत्ता आ रहे हैं। जब मैंने उत्तर म कहा कि शायद वह = तारीख तक पहुचें, तो वह बोले 'ओह इतनी जल्दी। तुम्हें शायद पता होगा कि वाइसराय कलकत्ता १३ या १४ को पहुच रहे हैं।

बातचीत के दौरान वाइसराय न कानून और व्यवस्था बनाये रखने की आवश्यकता पर जोर दिया और कहा कि यदि वसा नही किया गया तो दुनिया के लोग यह समझेंगे कि यह काम मत्रियो के बूते के बाहर है अब कानून और व्यवस्था कस कायम रखी जा सकेगी ? यह कवल अग्रेज लोग ही जानते थे। उन्हें युक्त प्रात के विषय को लकर विशेष चिंता है। उन्होंने मुझसे सम्बद्ध क्षेत्रो म उनका यह सन्देश पहुचाने के लिए कहा कि यदि गवनर को कानून और व्यवस्था कायम रखने के लिए अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करने को बाध्य होना पडा तो यह मत्रियो के हक म बहुत बुरा साबित होगा। वह यह तो नही चाहते कि पतजी लोगो पर अधाधुध मुकदमे चलायें, पर युक्त प्रात की स्थिति इतनी गम्भीर है कि पतजी को अराजकता पनपने का अवसर नही देना चाहिए। मैंने वाइसराय को बताया कि पतजी अपने उत्तरदायित्व के प्रति काफी सचेत हैं और यह भी कहा कि हाल ही ■ गाधी सेवा-सघ ने हिंसा के खिलाफ महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास किया है और सघ के सार-के-सारे चोटी के नेता हिंसा की प्रवृत्ति स लोहा लेने म लगे हुए हैं। उन्हें यह जानकर बडी खुशी हुई। वाइसराय के साथ मेरी बातचीत का यही सारांश है। मेरा ख्याल है कि वह जवाहरलालजी स भेंट करने के अवसर की खोज करेंगे।

समाचारो के अवलोकन स ऐसा लगता है कि इस समय चारो ओर तूफान के बादल घिरते आ रहे हैं और अगले कुछ महीनो म मत्रियो के लिए सजग रहकर

पूर्ण न्याय यह रहेगा कि वे हिंसा को प्रोत्साहन देनेवाले तत्त्वों का डटकर सामना करें। यह मुकदमे चलाकर भी करना होगा और लोगों की शिकायतों को दूर करके भी। इन सारे उपद्रवों की जड़ में लोगों की नवजाग्रत आशाएं व अपेक्षाएं हैं और जब तक कांग्रेस ग्रामीणों से स्पष्ट रूप से यह नहीं कहेगी कि उनकी स्थिति में सुधार केवल उनके ही बल-बूते पर होगा जादू के जोर से नहीं तब तक असंतोष की भावना शान्त नहीं होगी। इस समय स्थिति यह है कि यदि समूची संचित निधि को समाजवादी रूप दे दिया जाय और जमींदारी प्रथा का मूलोच्छेदन कर दिया जाय तो भी जनता की वर्तमान आय में नहीं के बराबर वृद्धि होगी। उनकी आय में वृद्धि का एकमात्र साधन रचनात्मक कार्य को बढ़ाना है। उत्पादन में वृद्धि की जरूरत है। प्रस्तुत पदार्थों की गुणवत्ता में सुधार की जरूरत है। इसके लिए कई वर्षों तक सतत और केंद्रित परिश्रम करना होगा। इस समय रिहा किये गये बन्दियों में जो उत्साह और उन्माद दिखाई दे रहा है वह कुछ दिनों बाद गायब हो जायगा। लोग अधिक रोटियों की मांग करेंगे और रोटियां जमींदारी के मूलोच्छेदन-मात्र से नसीब होने से रहीं। अतएव हमारे मंत्रियों को इसी क्षण से यह सोचने में लग जाना है कि जनता की आर्थिक स्थिति कैसे सुधारी जाय। यदि वे यह धारणा बनाये बैठे हों कि सम्पत्ति जब्त करने मात्र से लोगों की आर्थिक स्थिति सुधर जायगी तो मैं कहूंगा कि वे अपने-आपको धोखा दे रहे हैं। फिलहाल यह असंतोष की भावना आर्थिक कारणों से पैदा हुई है। यदि लोगों को स्पष्ट रूप से यह बताने में देर की गई कि इतना कुछ सम्भव है और बाकी असम्भव है तो यह तूफान इतना भयंकर रूप धारण कर लेगा कि मंत्रियों के लिए स्थिति पर नियंत्रण रखना असंभव हो जायगा। जैसा कि बापू एक से अधिक बार कह चुके हैं सेना को दावत देने का अर्थ होगा प्रांतीय सरकारों को दफन करना। कहना पड़ता है कि युक्त प्रांत और बिहार ने यह अभी तक नहीं समझा है कि अहिंसा के लिए जो खतरा पैदा हो गया है उसके कितने गम्भीर परिणाम हो सकते हैं।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

६१

४ १२ ३७

प्रिय महादेवभाई

मैंने नलिनी बाबू और शरत बाबू दोनों के पत्र पढ़े और मुझे घोर वेदना हुई। पत्रों में जो-कुछ कहा गया है वह बंगाल में व्याप्त गंदे वातावरण का प्रतिबिम्ब मात्र है। जब तक हम मूल कारण का निवारण नहीं करेंगे यह स्थिति ऐसी ही बनी रहेगी। इसमें संदेह नहीं कि यह अफवाह फैलाने में कि बापू ने मंत्रिमंडल से शरत को नजरबन्दों से मिलने की अनुमति देने का अनुरोध किया है नलिनी का हाथ है और इसमें भी शक की गुंजाइश नहीं है कि दूसरी ओर से नलिनी के बारे में गलत अफवाहें फैलाई जा रही हैं। इन आरोपों प्रत्यारोपों का सिलसिला इस वातावरण में जारी रहेगा।

शरत बाबू ने हक की जिस मुलाकात का उल्लेख किया है सो तो मैं नहीं जानता पर मैं तुमसे, साथ भेजी इन दो कतरनों पर निगाह डालने को कहूंगा। इनसे तुम्हें पता लगेगा कि वातावरण में कितनी कटुता व्याप्त है। यदि समय रहते कुछ न किया गया तो एक-न-एक दिन अवांछनीय घटनाएं घटित होंगी हो सकता है कि साम्प्रदायिक दंगे भी हो जायें।

जो कतरनें भेज रहा हूं उनमें से एक में त्रिलोक का उल्लेख किया गया है और उनमें से एक चिन हद दर्जे की प्रतिक्रियावादी है। यह बिल म्यूनिसिपल ऐक्ट का संशोधन करनेवाला बिल है। बंगाल का तभी उद्धार हो सकता है जब शांतिप्रिय लोग संगठित रूप से एक-दूसरे पर कीचड़ उछालने की इस प्रवृत्ति का विरोध करें। मैं यह सोच रहा हूं कि नलिनी और शरत के बीच इस तिक्तता के शांत होने के बाद कवीन्द्र रवीन्द्र और समाज के अन्य अग्रगण्य नेता एक संयुक्त विज्ञप्ति जारी करके एक-दूसरे पर कीचड़ उछालने की इस प्रवृत्ति को धिक्कारें। यह प्रवृत्ति समाचार-पत्रों में विशेष रूप से दिखाई देती है। कतिपय राजनैतिक दलों में भी इस प्रवृत्ति का समावेश है।

तुम्हें लिखने के बाद मुझे एक अन्य अधिकारी ने बताया कि युक्त प्रांत की स्थिति भी संतोषजनक नहीं है। देहातों में किसानों के उपद्रवों की आशंका है। यह समाचार पाने के बाद मुझे मालूम हुआ कि वल्लभभाई लखनऊ गये हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि फिलहाल हमारे मंत्रिमंडल सरकारी अफसरों की दया पर निर्भर हैं विशेषकर उनसे के अग्रज सदस्यों की दया पर। सारा-का-सारा अमला

सहानुभूति रहित हो ऐसी बात नहीं है पर यदि कानून और व्यवस्था कायम नहीं रखी जा सकी, तो मंत्रिमंडल की प्रतिष्ठा को गहरी ठेस पहुंचेगी। इसका मुख्य दोष कांग्रेस के वामपंथी दल पर होगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

६२

जुहू
१३-१२-३७

प्रिय घनश्यामदासजी

यह पत्र आपको यह खुशखबरी देने के लिए लिख रहा हूं कि बापू अब पहले से अच्छे हैं। आज सुबह रक्तचाप नीचे गिरकर १७०/१०० पर पहुंच गया जो कि बिलकुल अस्वाभाविक है। यहां की सुंदर जलवायु ही इसका एकमात्र कारण हो सकती है। पहले तो जी में आया कि तार दूं पर फिर रह गया। हर्ष व्यक्त करने से पहले दो एक दिन ठहरकर देखना ठीक रहेगा।

और हां आगा खां ने टेलिफोन करके पूछा कि क्या वे बापू की तबीयत का हाल जानने के लिए आ सकते हैं? वे कल तीसरे पहर ४ बजे आ रहे हैं।

सप्रेम,
महादेव

६३

१३ दिसम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाई

कल शरत से मिला। काफी बातचीत हुई। बड़ा खरा और बड़ा शिष्ट आदमी है। मैंने पुरानी अदावत भुलाने के पक्ष में सारी दलीलें पेश कर दीं और

उससे कहा कि मेरे सुझाव को बापू का आशीर्वाद प्राप्त है, अब वह बताये कि उसका क्या विचार है। उसने कहा कि यह तो ठीक ही है कि बंगाल में शान्ति वापस आनी चाहिए, पर जब तक वर्तमान मन्त्रिमंडल जैसा है वैसा ही बना रहेगा आन्तरिक शान्ति सम्भव नहीं है। वर्तमान मन्त्रिमंडल निपट गैरकांग्रेसी ही नहीं है वह कांग्रेस विरोधी भी है और जब तक यह परिस्थिति है, तो वर्तमान मन्त्रिमंडल का विधान-सभा में विरोध करते रहना प्रत्येक कांग्रेसी सदस्य का कर्त्तव्य हो जाता है। इससे पारस्परिक सबंध भी बिगड़ते हैं और समाचार पत्रों को प्रचार की सामग्री भी मिलती है। उसके नलिनी से हाथ मिलाने मात्र से यह समस्या कैसे हल हो जायगी? मैंने कहा कि वर्तमान मन्त्रिमंडल का अंत करने के लिए भी कांग्रेसियों का आपस में मिल-जुलकर रहना आवश्यक है और मैंने नलिनी की भी कांग्रेसियों में ही गणना की। मैंने बताया कि कुछ भी कहा जाय विधान-सभा में कांग्रेसवादियों की संख्या केवल ८० है, इसलिए वर्तमान मन्त्रिमंडल का अन्त करने के लिए इससे कहीं बड़ी संख्या की जरूरत होगी, और नलिनी का सहयोग प्राप्त किये बिना यह सम्भव नहीं है। शरत ने उत्तर में कहा कि प्रश्न वर्तमान मन्त्रिमंडल को गिराने का नहीं उसके स्थान पर एक ऐसी मिली-जुली सरकार को प्रतिष्ठित करने का है जिसमें कांग्रेसी और गैर कांग्रेसी दोनों ही हों।

इसके बाद मैंने यह सुझाव पेश किया कि एक महत्त्वाकांक्षी कार्य योजना बनाई जाय। और ऐसी योजना से ही श्रीगणेश किया जाय। मैंने सुझाया कि गांधीजी ने जिस चीज को अपना लक्ष्य मान रखा है उसे कार्यान्वित करने के लिए भी तो शरत और नलिनी को कदम मिलाकर चलना होगा। और मैंने बताया कि फिलहाल गांधीजी का एकमात्र लक्ष्य कैदियों की रिहाई है। इस निमित्त दोनों को एक दूसरे के साथ सम्पर्क स्थापित करना चाहिए। वे ऐसा करेंगे तो पुरानी अदावत भी भुला दी जायेगी। उसके बाद यदि सम्भव हो तो बड़ी-बड़ी बातें भी सोची जायं। शरत ने उत्तर दिया कि नलिनी बड़ा चालाक आदमी है वह तब तक कोई प्रोपोजीशन स्वीकार नहीं करेगा, जब तक उसे यह यकीन न हो जाय कि भावी मन्त्रिमण्डल में उसके लिए भी स्थान है। मैंने पूछा, "आप भावी मन्त्रिमंडल में नलिनी के शामिल होने के खिलाफ क्या हैं?" उसने उत्तर दिया, "भावी मन्त्रिमंडल में नलिनी के शामिल होने के खिलाफ होने का सवाल नहीं है बात यह है कि वह निश्चित आश्वासन मांगेगा।" शरत ने कहा कि उसे नलिनी पर बिलकुल भरोसा नहीं है। मैंने उसे याद दिलाया कि वे दोनों कभी मिल जुलकर काम करते थे। उसने यह बात स्वीकार की। पर कहा कि दोनों कभी मिलकर काम तो करते थे पर दोनों एक-दूसरे पर तब भी भरोसा नहीं

रखते थे और दोना म पारस्परिक अविश्वास की भावना काम करती रहती थी। मैंन बताया कि अन्य देशा म भी मत्रिमडला म विभिन्न मनोवत्तिया के लोगोका समावेश रहता है पर वे मिल जुलकर काम करते है। नलिनी म कुछ सदगुण भी है। उसका सबस बडा दुगुण यही है कि वह महत्वाकाक्षी ह। उसके साथ व्यवहार कुशलता क्या न बरती जाय? और यदि नलिनी की पीठ पर समथन ह, तो उसकी उपेक्षा क्या की जाय? पर मैंने कहा कि प्रारभ नलिनी स क्या किया जाय डा० राय स क्या न किया जाय? डा० राय को किसी प्रकार की राजनतिक महत्वाकाक्षा नहीं ह। और वह एसा आदमी ह जिसपर भरोसा किया जा सकता ह। शरत राजी हुआ और बोला वह डा० राय स बात करगा। कल वह मरे यहा डा० राय स मिलेगा।

इस भेंट न मरे भीतर आशा का सचार नहीं किया। मैं बगाल के वतमान वातावरण का विश्लेषण करता हू तो इस नतीजे पर पहुचता हू कि यदि हिदुओ और चद मुसलमाना में उद्देश्य को लेकर ऐक्य की भावना का सृजन नहीं हुआ तो बगाल को दुर्दिनो का सामना करना पडेगा। फजलुल हक तो विक्षिप्तो जसा आचरण कर रहा है और मुझे मालूम हुआ है कि वह किसी को पसद नहीं है यूरोपियना को भी नहा। पर इस मत्रिमडल का स्थान कोई और मत्रिमडल नहीं ले सकता।

शरत स मेरी मुलाकात के बाद नलिनी खद ही मुझस मिलने आ पहुचा। उसने विश्वविद्यालय बिल और कलकत्ता कार्पोरेशन बिल की चर्चा उठाई। उसने मुझे बताया कि मत्रिमडल म फूट पड गई है और बढ रही है। नलिनी इन सभी प्रतिक्रियावादी बिला क खिलाफ मोर्चा सभाल लेगा। मैंने पूछा कि इस विपत्ति का निराकरण क्योकर किया जाय? उसन कहा कि इस व्याधि की एक मात्र औषधि यही है कि सारे हिंदू विवेकशील मुसलमान और सारे-के सारे अग्रज मिलकर वतमान मत्रिमडल को गिरा दें। मैंने पूछा यदि ऐसा सम्भव नहीं हुआ और हक इन नये प्रतिक्रियावादी बिलो पर अडा रहा तो क्या आप इस्तीफा दे देंगे? या वसी अवस्था म भी गद्दी से चिपटे रहेंगे? नलिनी ने निश्चय की भावना क साथ कहा कि वह इस्तीफा द देगा।

इसक बाद मैंने शरत क कन्यिा म भेंट करने की बात उठाई। नलिनी इसके कतई खिलाफ है। उसका मुख्य कारण व्यक्तिगत है यद्यपि उसन यह कहा नहीं। वह केवल इतना ही कहकर रह गया कि ऐसी भेंट की कोई जरूरत नहीं। शरत कदिया को प्रिय नहा है। मैंन नलिनी को याद दिलाया कि गाधीजी को इतन सारे बदिया, नजरबदा से भेंट करने के कष्ट स बचाना कितना आवश्यक है इसलिए

प्रारम्भिक काम किसी अन्य व्यक्ति के सुपुर्द क्यों न किया जाय ? नलिनी ने कहा कि नजरबंद लोग गांधीजी को कष्ट नहीं देना चाहते गांधीजी अपना फार्मूला दे दें, बस। बदले में उन्हें नजरबन्दों का आश्वासन उपलब्ध हो जायेगा। चौथे महीने के अंत में सबको रिहा कर दिया जायगा। मैंने पूछा 'पर आप जितनों को रिहा कर सकते हैं उन्हें रिहा क्यों नहीं कर देते?' उसने उत्तर दिया हां यह हो सकता है। मैंने पूछा, 'आप गांधीजी के हस्तक्षेप के बगैर भी उनमें से कुछ को रिहा कर देंगे न ?' उसने कहा कि गांधीजी के हस्तक्षेप के बिना ही अधिकांश को रिहा कर दिया जायगा। मैंने उससे कहा कि अपने सहयोगियों के साथ सलाह मशवरा करके निश्चित रूप से बताये। वह मुझ से फिर मिलनेवाला है। उसकी धारणा है कि सरकार इन ४०० बन्दियों व नजरबन्दों की रिहाई का काम केवल इस कारण हाथ में लेने से रुकी हुई है कि वह जनता को जताना चाहती है कि उनकी रिहाई गांधीजी के प्रयत्नों के फलस्वरूप हुई है। पर यदि गांधीजी चाहेंगे कि उनमें से जितने अधिक उनके हस्तक्षेप के बगैर रिहा किये जा सकते हैं रिहा कर दिये जाएं तो मंत्री लोग इस काम को खुशी खुशी हाथ में ले लेंगे। जो भी हो मैंने नलिनी से निश्चित रूप से यह बताने का आग्रह किया कि वे लोग गांधीजी के हस्तक्षेप के बगैर कितने कैदियों को रिहा कर देंगे। वह दो एक दिन में निश्चित रूप से बतायगा।

इसके बाद मैंने जानना चाहा कि रचनात्मक कार्यक्रम के संबंध में कैसा वातावरण है। न कोई नेता है न कोई नयी विचारधारा। कानन को छोड़कर शरत एकदम कोरा है। नलिनी बीती बातों को भुलाने को तैयार प्रतीत हुआ पर बोला कि शरत बद्धमूल धारणाओंवाला आदमी है। वह इस गली में काफी दूर तक बोलता रहा।

आज सुबह विधान आया था। मैंने उसे अपने यहां शरत से मिलने को बुलाया है। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि विधान को भी मेल मुलाकात के प्रयत्नों की सफलता के बारे में संशय है। उसने कहा कि शरत पिछले तीन वर्षों से लोगों को यह बताता फिर रहा है कि बंगाल की राजनीति में गांधीजी के लिए कोई स्थान नहीं है। क्या वह अपनी बात से मुकर गया है अथवा क्या वह गांधीजी की आंखों में धूल झोंक रहा है ? शरत ने साम्प्रदायिक निर्णय को लेकर कांग्रेस के खिलाफ मोर्चा संभाला तिस पर भी उसे कांग्रेस हाई कमांड में रखा गया है। विधान को ईमानदारी की भावना नहीं मिली है और उसका विश्वास है कि जब तक बुनियादी मतभेद दूर नहीं होंगे ऐक्य स्थापित होने से रहा। यदि गांधीजी तथा साम्प्रदायिक निर्णय के प्रति शरत के रुख में परिवर्तन हुआ है तो वह इसकी

खुल्लमखुल्ला घोषणा क्या नही कर देता ? मैंने कहा कि शरत ने अपने आचरण के द्वारा अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी है। पर विधान का समाधान नही हुआ कि इस ढाग के पीछे नेकनीयती छिपी हुई है। वह दोटूक बात करने के लिए तयार है और साथ ही साथ यह भी स्वीकार करता है कि यदि ऐक्य स्थापित नही हुआ, तो बगाल को दुर्दिन देखने होगे।

यही बगाल की राजनीति है। गवनर से मैं परसो मिल रहा हू।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाइ
बम्बई

६४

कलकत्ता
१५ दिसम्बर, १९३७

प्रिय महादेवभाइ,

तुमने जो शुभ समाचार भेजा है वह मुझे रामेश्वरजी ने तुम्हारे पत्र के आने से बहुत पहले दे दिया था। हम दोनो टेलिफोन पर रोज बात करते हैं। जिन विषयो की चर्चा होती है उनमे बापू का स्वास्थ्य भी है।

कल शरत और विधान मेरे यहा मिले। मैं नही समझता कि भेंट कुछ अधिक सफल रही। वे लोग फिर मिल रहे हैं। इसलिए मैं यह भी नही कहूगा कि बातचीत असफल रही। प्रारभ काफी अप्रियता के साथ हुआ। ऐसा लगता है कि विधान में गम गुस्सा भरा हुआ है, और इसके उचित कारण भी हैं। विधान ने बातचीत का श्रीगणेश इस प्रकार किया मुझे बीती बातो की कोई चिंता नही है मैंने वह सब भुला दिया है। पर यदि मुझे आपके साथ मिलकर काम करना है तो मैं सबसे पहले यह जानना चाहूगा कि भविष्य मे आपका क्या रवैया रहेगा ? यदि मैं यह मालूम किये बिना कि हम दोनो मे किस प्रकार का विचार सामजस्य है आपके साथ मिलकर काम शुरू करू तो जो खाई पडी हुई है उसे और चौडी ही करूगा। फिलहाल मैं अपने पेशे मे लगा हुआ हू और अपने-आपको राजनीति

म दूर रखता हू। पर यदि मुझे सब-कुछ भुलाकर पुन प्रकट होना है तो मैं यह जानना चाहूगा कि हम दोनो की स्थिति क्या है। आपने अपना राजनैतिक मच चार बातो पर खडा किया है। इनमे से एक था साम्प्रदायिक निणय इस बाबत अपने पुराने विचारो के सदभ मे आपकी वतमान स्थिति क्या है? यदि आपकी अभिलाषा वतमान मन्त्रिमडल का सुधार करने की हो, तो इसके लिए आपको मुसलमानो के वाजिब सहयोग की जरूरत होगी। यदि आपका विचार वही पहले जसा है तो आपको मुसलमानो का सहयोग मिलने से रहा। क्या अब आप काग्रेस के साथ हैं या उसी पुराने दृष्टिकोण को अपनाये हुए हैं? दूसरी बात आपका पुराना नारा यह भी था कि 'बगाल से गाधीवाद को खदेड देना चाहिए। क्या आपके इस विचार म परिवतन हुआ है? तीसरी बात आप उद्योगो के राष्ट्रीय करण की माग करते थे और साम्यवादियो को भडकाते थे क्या इस दिशा म भी आपम परिवतन हुआ है? चौथी बात आप नलिनीरजन सरकार को सावजनिक जीवन स खदेडना चाहते थे। अब आपका क्या विचार है? हमन इन चार बातो को लेकर एक-दूसर से विदा ली थी, और यदि अब आपके विचारो म परिवतन हुआ है, तो मुझे भविष्य म आपके साथ कधे से-कधा मिलाकर काम करने म कोई आपत्ति नही है। पर यदि आपके विचार पहले जैसे ही हैं तो बीती बातो म ताल मेल बठाने से क्या लाभ? भविष्य म भी मतभद का रास्ता तो स्पष्ट ही है।'

शरत का चेहरा लाल सुख हो गया, मैंने मामला रफा दफा करने की चेष्टा की पर विधान ने शरत की ओर से कफियत देन की मुझे मनाही कर दी। जो कुछ कहना होगा, शरत कहेगा। शरत की तारीफ म इतना कहना पडेगा कि उसन अपने-आपको काबू म रखा। अत म दोनो ने पुन भेंट करने का निश्चय किया।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

६५

कलकत्ता
१६ दिसम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाई

मैं कल संध्या समय गवर्नर से मिला। बातचीत एक घंटे से अधिक देर तक चली। उन्होंने बापू के स्वास्थ्य के संबंध में पूछा। मैंने बताया कि उनका रक्त चाप लगभग स्वाभाविक है। उन्होंने कहा हम इस धोखे में नहीं आना चाहिए। देखना यह है कि काम-काज शुरू करने पर भी वह स्वाभाविक स्तर पर रहता है या नहीं। यह निहायत जरूरी है कि वह बराबर विश्राम लेते रहें। मैंने कहा मैं इसीके लिए आपके पास आया हूं। गांधीजी ने यहां आकर घोर परिश्रम किया और वर्धा लौटने पर उन्हें चारपाई पकड़नी पड़ी और इतने पर भी बंगाल का मामला उनके दिमाग में चक्कर काट रहा है। वह जब तक यहां आकर अधूरे काम को हाथ नहीं लगायेंगे उन्हें चैन नहीं मिलेगा। ११०० नजरबंदों को रिहा कर दिया गया है। गांधीजी को बंगाल सरकार के इस काम से बड़ी खुशी हुई है। पर ४०० आदमियों को रिहा करना बाकी है। अण्डमान के कैदियों के बारे में कुछ नहीं किया गया है। यह सारा काम उन्हीं को पूरा करना है और उनका स्वास्थ्य इस समय बहुत गिरा हुआ है। क्या उनके शुभचिन्तकों के लिए उन्हें इस कठिन परिश्रम से बचाये रखना सम्भव नहीं है? जो काम दूसरे कर सकते हों वह क्या न कर लिया जाय? उनके लिए तो केवल उतना ही काम छोड़ा जाय, जितना वह कर सकते हैं। उन्होंने इसी बात को ध्यान में रखकर शरत को बंदियों से मिलने देने के लिए लिखा है। अंतिम उत्तरदायित्व तो उन्हीं का रहेगा पर प्रारंभिक काम शरत के ऊपर छोड़ने का विचार था। नाजिमुद्दीन ने इन्कार कर दिया पर गांधीजी ने नाजिमुद्दीन को दुबारा लिखा है। क्या आप इस दिशा में कुछ सहायता कर सकते हैं? वह बोले कि उनकी भी यही राय है कि गांधीजी को कुछ महीनों के लिए पूरा आराम लेने दिया जाय उन्हें बिलकुल व्यस्त न किया जाय। ऐसी जल्दी क्या है? गांधीजी कब आ रहे हैं?" मैंने कहा शायद हरिपुरा कांग्रेस के बाद जो फरवरी के अंत में होनेवाली है। वह बोले तो फिर तब तक रुके रहने में क्या हानि है? गांधीजी की जो पोजीशन है वह शरत की नहीं है सरकार को गांधीजी की सहायता की जरूरत है वह उनके माध्यम से जानना चाहती है कि हिंसा के बारे में बंदियों के क्या विचार हैं। यह काम शरत के बूते के बाहर है केवल गांधीजी ही इस बात को साध सकते हैं। मैंने बताया कि

गांधीजी से मिलने से पहले शरत मिल लेंगे तो उनका बोझ हलका हो जायेगा। इसके अलावा यदि कोई बंगाल का आदमी गांधीजी के साथ लगा रहेगा तो गांधीजी को वातावरण में सुधार करने में सहायता मिलेगी। अंत में तो बंगाली ही बंगाल में काम-काज चलायेंगे। इसलिए शरत को साथ लेने से कई प्रकार की सहायता मिलेगी।" गवर्नर ने पूछा, "पर क्या इस कार्य प्रणाली से बंगाल का वातावरण सुधरेगा? समाचार पत्र हिंसा की भावना से ओतप्रोत हैं। किसी भी दिन साम्प्रदायिक दंगा हो सकता है। क्या शरत इस दिशा में गांधीजी की सहायता कर सकता है?" मैंने उत्तर दिया "अवश्य, और शरत के लिए अनुमति प्राप्त करने के प्रयत्न में गांधीजी ने सम्भवतः यही उद्देश्य अपने सामने रखा होगा। मुझे तो ऐसा लगता है कि शरत को जो अनुमति नहीं दी जा रही है उसके व्यक्तिगत कारण हैं। यदि कोई और होता तो शायद सरकार को आपत्ति न होती।" वह बोले "आप शायद ठीक ही कह रहे हैं। शरत के हिजली जाने से बंगाल की राजनीति में एक नया दृष्टिकोण आयगा। शरत बंगाल का एकमात्र नेता नहीं है अन्य नेताओं की भांति वह भी एक नेता है। बंगाल के मंत्रिमंडल का वह सबसे बड़ा विरोधी है। इसलिए मंत्री लोग उसे प्रसिद्धि देने की बात कैसे सोच सकते हैं?" (गवर्नर से मिलने के लिए आने से पहले मैं नलिनी से बात कर चुका था। उसने स्वीकार किया था कि शरत को बंदियों से न मिलने देने के पीछे व्यक्तिगत द्वेष भावना काम कर रही है। नलिनी ने कहा था "हां हां, यह सब कुछ व्यक्तिगत है और क्या न हो? यह आदमी आये दिन हमें अपशब्द कहता रहा है। हम उसे किसी काम का श्रेय क्या दें?") गवर्नर ने पूछा "क्या यह गैर मुनासिब है?" मैंने असहमति व्यक्त करते हुए एक विकल्प पेश किया। मैंने कहा "सरकार गांधीजी के हस्तक्षेप के बगैर खुद ही ज्यादा से ज्यादा कैदियों को रिहा क्यों न कर दे? ऐसा करने से सबमें भरोसे की भावना उत्पन्न हो जायगी। कैदियों की बेचैनी खत्म हो जायगी और जिन कैदियों को किसी कारण से रिहा नहीं किया जा सकेगा उनके साथ अंत में गांधीजी निपट लेंगे।" गवर्नर ने पूछा कि क्या ऐसा करने से स्थिति में कोई सुधार होगा, क्या वातावरण में सुधार होने से पहले इतने सारे बंदियों को रिहा करना खतरनाक नहीं होगा? मैंने उत्तर में कहा "रिहाई और वातावरण में सुधार वास्तव में एक-दूसरे के पूरक हैं। बंदियों की रिहाई से वातावरण सुधरेगा और वातावरण सुधरने से बंदियों की रिहाई में सहायता मिलेगी। पर यदि रिहाई न हुई तो वातावरण और बिगड़ेगा।" उन्होंने कहा "आपकी बात में सार है पर क्या आपका यह विचार नहीं है कि गांधीजी के माध्यम से रिहाई करने से बंगाल के वातावरण में सुधार करने के काम में

गाधीजी के हाथ मजबूत होगे ? गाधीजी बगाल क्या आ रहे हैं ? केवल बन्दियो को रिहाई कराने के लिए ही नही बल्कि बगाल के वातावरण म सुधार करने के लिए भी। मैं यह सरकार के एक सर्वोच्च व्यक्ति के नाते नही कह रहा हू, व्यक्तिगत रूप से कह रहा हू। यदि गाधीजी के आगमन के बाद रिहाई होगी तो गाधीजी के हाथ बेहद मजबूत होग।' मैंने कहा 'नलिनी न भी यही सुझाव दिया था। (गवनर ने कहा कि उन्होने नलिनी स कभी सम्पक नही रखा) पर मैं उनके इस सुझाव स अधिक प्रभावित नही हुआ। पर मैं यह सुझाव गाधीजी के सामने रखूगा और उनस जानना चाहूगा कि उनके हस्तक्षेप के बगर कदियो की रिहाई स उनके हाथ मजबूत होगे या कमजोर होग। गाधीजी की जो राय होगी मेरी भी वही राय होगी क्योकि मनोविज्ञान का उनस बढकर कोई और विद्यार्थी नही है। उन्होने कहा नि सदेह मैं जानता हू कि गाधीजी अव्वल दर्जे के कायकुशल व्यक्ति हैं इसलिए अमुक काय का जनता क मानस पर कसा प्रभाव पडेगा यह वह अच्छी तरह जानते है। मैंन कहा इस विषय को अब यही छोडा जाये पर गाधीजी का उत्तर आन पर मैं आपसे फिर मिलने आऊगा। हो सकता है गाधीजी खुद ही आपको लिख।' उन्होने कहा जब चाहे आ जाइये।'

इसके बाद हम दोना न समाचार पत्रो के विष वमन की चर्चा की। उन्होने पूछा आप इस दिशा म कुछ कर सकते हैं क्या ?' मैंने उत्तर दिया 'मेरी तो यही धारणा है कि जबतक विभिन्न वर्गों मे भेद भाव रहेगा तबतक समाचार पत्र जसे हैं वसे ही बने रहेगे।' गवनर ने बताया कि हिदुस्तान स्टैंडड और कुछ अन्य पत्र जसा जहर उगल रहे है उसे देखते हुए आश्चय नही कि किसी दिन साम्प्रदायिक दगा हो जाय। मैंने उत्तर दिया कि इस समय जो साम्प्रदायिक तनाव बना हुआ है उसके लिए खुद फजलुल हक जिम्मेवार हैं। वह सहमत हुए पर उन्होने कहा किन्तु हक को समाचार पत्रो ने उत्तेजित कर दिया है। मैंने कहा, 'समाचार पत्र तो हिन्दू मत्रियो को भी शासन मे गये हुए हैं। मैंने यह स्वीकार किया कि हक को आनन्द बाजार पत्रिका और हिदुस्तान स्टण्डड' जस पत्रो ने उत्तेजित कर रखा है। इसका सबसे बढ़िया इलाज यही है कि अच्छे लोग समाचार पत्रो की इस प्रवृत्ति का खुल्लमखुल्ला धिक्कारें। गवनर ने आशा व्यक्त की कि एसा कुछ अवश्य होगा।

मुलाकात के अत म गवनर ने यह बात दुहराई कि यह सरकार की नही, खुद उनकी राय है कि यदि रिहाई गाधीजी की वकालत के फलस्वरूप हुई तो इससे बगाल का वातावरण सुधारने के काम मे उनके हाथ मजबूत होंगे। पर यदि बगाल के चित्त म गाधीजी का कोई स्थान नही रहगा, तो सरकार को क्या करना

है सो वह जानती है। सरकार ने थोड़े थोड़े बंदियो को रिहा करने की नीति अपनाई है। वह इस नीति का अनुसरण करेगी पर अभी सरकार इस मामले में जल्दबाजी से काम लेने को तयार नही है। पहले गाधीजी का प्रोग्राम तय हो।

नलिनी और शरत का मनमुटाव दूर होने के बारे म गवनर को सदेह है। मर कुछ व्यक्तिगत है इसलिए पुराने घाव भरना और भी कठिन है। मैंने उनकी यह बात स्वीकार नही की और कहा कि राजनीति मे लोग राग समझ के तकाजे के अनुसार मतभेद उत्पन्न भी करते हैं, दूर भी करते हैं।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
जानकी कुटीर
जुहू, बम्बई

६६

१७ दिसम्बर, १६३७

प्रिय महादेवभाई

सरकारी हलको म नजरबदो की रिहाई के बारे म जो धारणा बनी हुई है उसका वणन मैंने अपने कलवाले पत्र म कर ही दिया था। जसा कि तुम्हें मेरे पत्र से लगा होगा, गवनर ने मुझे प्राय वही बात बताइ, जिसकी खबर नलिनी मुझे पहले ही दे चुका था। मेरी सारी कोशिशें बापू को बन्दियो की रिहाई स सबधित कष्ट से बचाने मे लगी हुई थी। बातचीत के बाद मुझे पता लगा कि अधिकारी लोग यहा बापू की मौजूदगी बदियो की रिहाई के लिए उतनी नहीं, जितनी वातावरण म सुधार करने के उद्देश्य स चाहते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि ये लोग रिहाई का उपयोग वातावरण के सुधार म करना चाहते हैं। वास्तव म इन लोगो ने बदियो को रिहा करने का निणय ले लिया है। ये लोग रिहाई का सेहरा बापू के सिर पर बाधने के इच्छुक हैं जिससे इस रिहाई की कीमत वातावरण के सुधार के रूप मे वसूली जा सके। सक्षेप म, वस्तुस्थिति यह है कि बापू को जो कष्ट उठाना पड़ेगा सो रिहाई हासिल करने म नहीं, बल्कि वाता

वरण म सुधार करने म उठाना पड़ेगा। अतएव यदि उन्हे इस कष्ट से बचाना है, तो हम बगाल के वातावरण म सुधार करने के काम म दत्तचित्त हो जाना चाहिए, जिससे यह सुधार इस सीमा तक पहुच जाय कि बापू के लिए आशीर्वाद देना भर बाकी रहे। आशा है मैं अपने भाव यथेष्ट रूप स व्यक्त करने म सफल हुआ हू।

रही अडमान के बदियो की बात सो यह मामला बिलकुल दूसरी ही कोटि का है। इसम सरकार क दया भाव स काम लने की आवश्यकता है और इस निमित्त बापू को गवनर से मिलना है। मुझे जब मालूम हुआ कि अडमान के कदी नये सिरे से भूख हडताल करने की बात सोच रहे हैं तो मैं घबरा गया और जसा कि तुम्हें इसके साथ भेजी कटिंग से ज्ञात होगा मैंने शरत से तुरत यह वक्तव्य दिलवाया। शरत का खबर मिली है कि भूख हडताल की कोई आशका नही है। इसलिए बापू को इस बाबत किसी तरह की चिन्ता नही करनी चाहिए। और जिस प्रकार वह अब पूरा आराम ले रहे है उसम किसी प्रकार का विघ्न नही पडना चाहिए। बापू को इस बात के लिए मन बनाना चाहिए कि बगाल म उनका मुख्य काय बदियो की रिहाई हासिल करने का नही वरिक वातावरण म सुधार करने का अधिक है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
जुहू

६७

जुहू
१८ १२ ३७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका लम्बा पत्र मिला। बापूजी के आग्रह से इस हिन्दी म लिख रहा हू। वह पत्र इतना महत्त्व का था कि मैंने उसे बापूजी को दिखाया। उनको आपने जो कुछ किया बहुत ही पसद आया और विस्तार से लिखा सो भी। परतु वे डाक्टर

विधान का कहना नही मानते हैं। व तो कहते हैं कि शरत के एक एक कृत्य देखने से मालूम होता है कि उसके विचार बदल गये हैं और वे बापू से वफादारी से काम ले रहे है। जिसने काला कोट छोडकर सफेद पहन लिया है वह यह थोडे कहता फिरेगा कि मैंने सफेद पहना है वह तो सफेद पहना हुआ ही हरेक जगह जाता रहेगा। हा एक बात सही ह, विधान का विश्वास ही हो कि शरत का मन बदल नही हुआ ह तो उनका धम ह कि वे आपके घर पर आपके ही सामने उसे यह स्पष्ट शब्दो मे कह दें। सच्ची एकता (यूनिटी) इस स्पष्टता पर ही निभर ह।

नाट साहेब मे क्या क्या बातें हुइ ? शायद आज कल मे आपका पत्र आवे।

बापू का स्वास्थ्य अच्छा तो हो रहा ह परतु धीरे धीरे और जब यह ठीक हो रहा है तब ही स ब सेगाव की बातें करने लगे है और वहा के लोगा का लिख रहे हैं कि हम इस महीने की आखिर तक सेगाव पहुच जायेंगे।' जमनालालजी ने इसका बडा विरोध किया तो सही और यह भी कह दिया कि आपको दो महीना यहा रहना ही पडेगा। परन्तु देखें क्या होता ह ? ब्लड प्रेशर १७६/१०६ सुबह रहता ह परतु कल शाम को तो १८० से ऊपर था और नीचे म ११७ था। इसका सबब मुझे भी स्पष्ट मालूम होता ह। अडमान, यू० पी० का मामला और ऐसी चीजा क बारे म विचार चल रहे है। उसका यह परिणाम हो सकता ह। कल ही फेडरल स्कीम के बारे म भी कुछ सोचते थे। क्योंकि आज सवेरे ही उन्हाने तत्सबधी सामग्री की माग की थी।

आपका,
महादेव

६८

जानकी कुटीर
जुहू
१८ दिसम्बर १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका सक्षिप्त पत्र मिला जिसम आपने मुझसे यह कहा है कि मैं बापू के यहीं ट्हरे रहने का हठ करू। मैंने आपसे अपने पिछले पत्र म ही कह दिया था

कि खतरा दूर होने से पहले ही हर्षोल्लास ठीक नहीं है। पिछले दो दिनों में बापू के स्वास्थ्य में गिरावट आई है। कोई प्रत्यक्ष कारण दिखाई नहीं पड़ता डाक्टर लोग तरह-तरह की अटकलें लगा रहे हैं। एक मित्र एक यूरोपियन डाक्टर को लाये जो भारतीय विधान परिषद के यूरोपियन प्रतिनिधि मंडल के सदस्य हैं। संयोगवश वह रक्तचाप के विशेषज्ञ हैं। उन्होंने बताया कि रक्तचाप ऊंचा तो है पर हृदय की गति खासी अच्छी है। उनका कहना है कि बापू की पाचन क्रिया ठीक नहीं है, इसके लिए उनके भोजन का पर्याप्त आक्सीजनेशन होना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि बापू का जो दूध दिया जाय उसमें भी आक्सीजनेशन बढ़ाया जाय। आज वह कलकत्ते के लिए रवाना हो रहे हैं पर जाने से पहले वह डाक्टर गिल्डर से आवश्यक बातचीत कर लेंगे।

क्या बापू ने आपसे अखिल भारतीय चरखा संघ के लिए किसी बैंक से ऋण लेने की बात की थी ? इस रुपये की खादी-उत्पादन कार्य में आवश्यकता है। क्या इसका बन्दोबस्त हो सकता है और यदि हो सकता है तो किन शर्तों पर ?

सप्रेम
महादेव

पुनश्च

उसके बाद आपसे टेलिफोन पर बातें हो गई। अधिक क्या कहूं ? युक्त प्रांत में तो काफी गड़बड़ हो गई। पहले फजूल की धमकियां दी और फिर झुककर चाटना पड़ा सो अलग। सरकार को भी हमारी शक्ति का पता लग गया होगा। पंडित जवाहरलालजी इसमें कोई सीधा नेतृत्व नहीं कर सके शायद उनको भी गलती तो मालूम हुई होगी परंतु वे उसका कोई उपाय न बता सके। आपने उनका वक्तव्य तो अखबारों में देखा होगा। लगता है कुछ ठण्डे तो हुए हैं।

महादेव

६६

१६ दिसम्बर १९३७

प्रिय लार्ड लोदियन

आशा है आपने कलकत्ते के लिए कार्यक्रम बना लिया होगा। मैं कई एक प्रमुख व्यक्तियों को दोपहर के भोजन पर आपसे मिलने के लिए आमंत्रित करने

की इस बात पर है कि [illegible] ही इनके [illegible] के कार्य में [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] मैं [illegible] विचार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किसी [illegible] उन्हें [illegible] की [illegible] दे सकूं।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विचारें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आवश्यक [illegible] कर सकूं।

भवदीय
घनश्यामदास बिड़ला

माननीय [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
इलाहाबाद

७०

१० सितम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाई,

आपका पत्र मिला और पढ़कर आश्वस्त हुआ। वातावरण बहुत ही अच्छा रहा। विधान [illegible] [illegible] की भावना [illegible] काम [illegible] की बात कही और [illegible] में भी मिलकर काम [illegible] की अभिलाषा प्रकट की।

साम्प्रदायिक निर्णय के बारे में [illegible] से अपनी लड़ाई में [illegible] [illegible] [illegible] मामले में इस प्रकार है। यह ठीक है कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] पार्टी [illegible] [illegible] [illegible] उस पार्टी [illegible] [illegible] भी [illegible] [illegible] [illegible] कांग्रेसियों ने मेरा सुझाव स्वीकार किया और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया। अब मेरा भी यही [illegible] है। मैं [illegible] के साथ हूं।

विधान से कहा, 'यह बढ़िया बात है पर आपको विश्वासी मुसलमानों के सहयोग की आवश्यकता रहेगी। इसलिए आपके लिए यह आवश्यक है कि आप अपने रुख [illegible] सार्वजनिक रूप से बता दें। इसके लिए आपको कोई असाधारण काम नहीं करना होगा बस इतना ही काफी होगा कि जब आपको अवसर मिले

आप अपनी स्थिति स्पष्ट करते जायें जिससे आपके मुसलमान साथी आप पर भरोसा कर सकें। शरत राजी हो गया।

रही गांधीवाद को बंगाल से खदेड़ने की बात सो शरत ने स्वीकार किया कि उसकी विचारधारा इसी प्रकार की थी पर उसने यह बात खुल्लमखुल्ला कभी नहीं कही जो-कुछ कहा आपस की अंतरंग वार्ता के दौरान। उन दिनों वह बहुत खीया हुआ था पर अब उसके विचारों में सम्पूर्ण परिवर्तन हुआ है। इस अवसर पर विधान ने उसे टोका और कहा कि शरत को अनुकूल अवसर पाकर यह बात खुल्लमखुल्ला कह देनी चाहिए क्योंकि साधारण कोटि के कांग्रेसी अब भी उसकी पुरानी सलाह के अनुसार आचरण कर रहे हैं। इसलिए स्थिति को स्पष्ट करना अत्यावश्यक है। शरत राजी तो हुआ पर बोला कि वैसा करने की कोई जरूरत तो है नहीं।

पर सबसे विकट प्रश्न नलिनी का था। मैंने और विधान ने, दोनों ने ही यह स्वीकार किया कि नलिनी में कुछ कमजोरियां हैं। वह महत्त्वाकांक्षी अवश्य है पर क्या बंगाल में ऐसे आदमियों का अभाव है जो अपने आप को कांग्रेसवादी कहते नहीं अघाते पर जिनमें नलिनी के जैसी महत्त्वाकांक्षा घर किये हुए है? जो भी हो शरत को नलिनी पर एक निश्चित सीमा तक भरोसा करके संतोष कर लेना चाहिए उसके बहिष्कार के आयोजन करने की क्या जरूरत है? क्या कांग्रेसियों को छोड़ और किसी के साथ सहयोग करना सम्भव नहीं है? क्या नलिनी बहुतों की अपेक्षा अधिक योग्य और सक्रिय आदमी नहीं है? हमने शरत को बताया कि हम यह मानने को तैयार नहीं हैं कि नलिनी पर भरोसा नहीं किया जा सकता। यदि नलिनी के साथ ठीक ढंग का व्यवहार किया जाये तो वह अवश्य विश्वासपात्र सिद्ध होगा और देश के मंगल में उसका सदुपयोग करना सम्भव होगा। मैंने नलिनी को कांग्रेसी विचारधारावाला व्यक्ति बताया। शरत प्रभावित हुआ पर बोला कि अभी तुरंत उसके लिए कोई उत्तर देना सम्भव नहीं है। उसने जानना चाहा कि नलिनी का सहयोग प्राप्त करने के लिए उसे कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी, क्या उसके लिए भावी मंत्रिमंडल में स्थान रखना होगा? मैंने कहा कि यह बेतुका प्रश्न है। जिस चीज की जरूरत है वह यह है कि शरत को भावी मंत्रिमंडल में नलिनी के लिये जाने की कल्पना मात्र से नहीं बिदकना चाहिए। नलिनी भावी मंत्रिमंडल में स्थान पाने की अवश्य अपेक्षा करेगा और यदि उसमें मंत्री का पद सम्भालने की योग्यता पाई जाय तो उसे मंत्रिमंडल में क्यों न लिया जाय? शरत ने कहा कि इस मामले में वह पहले बापू के साथ मशवरा करना चाहेगा। मैंने उससे कहा कि जहां तक हो सके हमें बापू को इस झमेले से

अलग रखना चाहिए। उनकी शक्ति का अपव्यय करना वाछनीय नहीं है। इसके अलावा, क्या बापू हमारा पथ प्रदर्शन हमेशा करते रहेंगे? हमें अपने मामलों का निर्णय खुद ही करना चाहिए। पर भरत ने यह बात दुहराई कि वह बापू से बात किये बगैर हां या ना में जवाब नहीं दे सकता। बम्बई जाने से पहले वह एक बार हमसे फिर बात करना चाहता। मैंने उसे बापू के स्वास्थ्य फिर से बिगड़ने की बात बताई और वह व्याकुल हुआ। वह बापू के पथ में रहकर चलने का आतुर है और मुझे तो ऐसा लगता है कि बापू जैसा कहेंगे वह वैसा ही करेगा। यह शुभ लक्षण है। इस बीच वह सुभाष से भी सलाह-मशवरा करना चाहेगा। इसलिए मुझे स्थिति काफी आशाजनक प्रतीत होती है।

तुम्हारा १७ तारीख का हिन्दी का पत्र अभी-अभी मिला है। इस पत्र का उत्तर भरत के साथ हुई बातचीत के इस विवरण में आ ही गया है।

लार्ड ब्रेबार्न से मेरी बातचीत हुई उसका विवरण भी तुम्हें अब तक मिल चुका होगा। अब अपनी राय लिखना।

विधान का कहना है कि बापू के स्वास्थ्य में गिरावट आने का यह भी कारण हो सकता है कि वह बहुत चलते हैं।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

७१

मगनवाडी
वर्धा (मध्य प्रांत)
२१-१२-३७

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपके दोनों लम्बे और सुन्दर पत्र मैंने बापू को दिखा दिये। बंगाल की सरकार बापू के आश्वासन और सलाह के फलस्वरूप बंदियों को रिहा करने को तत्पर प्रतीत हो रही है। इस तत्परता के पीछे वह जिस मनोवृत्ति से चल रही है इसे बापू ने देखा तथा समझा और सराहा भी। वास्तव में यदि उनके लिए

शक्य होता तो वह बगाल के लिए निकल पडते और वहा जमकर बठ जाते तथा अपनी सारी शक्ति बगाल की समस्या का हल तलाश करने मे लगा देते और अ य सारे कामो को तिलाजलि दे देते। पर फिलहाल यह सम्भव नही है। हा, यदि वह डाक्टरो की अवहलना करने की ठान लें, ता बात अलग है। रक्तचाप घटता है बढता है उसम स्थिरता नही है। सपगधा के सेवन से सध्या हाते होते १५०/६५ तक नीचे आ जाता है पर सुबह होते होते पारा एक बार फिर चढकर १६५/११० तक पहुच जाता है। डाक्टर लोग चकित हैं और उन्होने यह स्वीकार किया है कि वे यह स्थिर नही कर पा रहे हैं कि क्या करें। यह कितने खेद की बात है कि हमारे डाक्टर आयुर्वेदिक औषधियो को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं और सपगधा जसी प्रभावोत्पादिनी जडी बूटियो के कायल नही हुए हैं। सपगधा के सेवन की एक कल्याणकारी प्रतिक्रिया यह है कि इसे थोडी मात्रा मे लें तो जी नही बठता। कलकत्त और वर्धा म इसका सेवन बडी मात्रा मे किया गया था, जिससे तबीयत म गिरावट और अवसाद पदा हो जाता था। अत उन्होंने इसका सेवन करते रहने का निश्चय किया है।

अब रही बगाल सरकार की नीति की बात। बापू तो यह चाहते है कि सार बदियो नजरब दो को सरकार अपनी ही सूझ बूझ और जिम्मेवारी पर रिहा कर द। उन्होने एण्ड्रूज क हाथो जो लिखित सदेश भेजा है उसमे यह बात स्पष्ट रूप स कह दी गयी है। एण्ड्रूज ने वह सदेश आपको दिखाया ही होगा। मेरे पास उसकी नकल नही है नही तो नत्थी कर देता। उस सदेश म बापू न बगाल सरकार स नजरब दो के प्रति दया भाव दिखान की अपील की है। उन्होन सरकार से उन्हें रिहा करन के लिए इसलिए भी कहा है कि उन्ह खुद पता नही है कि उनका बगाल जाना कब सम्भव हो और वह यह नही चाहते कि इन अभागो का भाग्य बापू के स्वास्थ्य के साथ त्रिशकु की तरह लटका रह। आशा है मैंन बापू का दृष्टिकोण स्पष्ट कर दिया है।

अब रहा युक्त प्रात। मैं नही समझता कि इस बाबत यहा स कुछ हो सकेगा। इसमे सदेह नही कि जो मामला उठ खडा हुआ था वह ऐसा था कि जिस लकर मत्रियो और गवनर म मतभेद उत्पन्न हो सकता था और मत्रिमडल भग करने की नौबत आ जाती। दोनो ही पक्ष शाति का वातावरण चाहत है और मत्रियो न यह स्वीकार कर लिया है कि यदि लोगो न हिंसा को उभारा है तो यह कहन म क्या तुक थी कि उन पर मामला चलाया जाये ? गवनर न कहा मैंन इस बार म फसला कर लिया है। पतजी न भी बतुका जवाब दिया कि 'मत्रियो ने भी फसला कर लिया है। और यदि उन्होने वास्तव म यह कहा तो इस्तीफे क सिवा

और कोई चारा नही रह जाता है। पर उन लोगो ने इस्तीफा न देने का निर्णय लिया है। यह निर्णय किस कारण से लिया गया यह समझ मे नही आ रहा है। पण्डित जवाहरलाल का दृष्टिकोण समझ पाना मेरे लिए सम्भव नही है। उनका कहना है कि इस मामले को विधान सभा मे ले जाया जाय और वहा से वोट हासिल करने के बाद उसे ताज बनाम पार्लियामेंट का रूप देकर देश के समक्ष रखा जाय। जो हो, अभी यह कहना कठिन है कि वहा कुछ किया जाना सम्भव है अथवा असम्भव। पतजी ने अब वल्लभभाई को लिखा है कि विपत्ति टल गई है चिन्ता की कोई बात नही है।

आपकी समझ मे यह सारा मामला आ गया होगा ऐसा मानना मेरे लिए कठिन प्रतीत हो रहा है और यदि आपकी समझ मे नही आया हो तो इसका दोष मेरे अज्ञान को या इस गूढ विषय की तह मे पठने की मेरी अक्षमता को या वस्तु स्थिति का यथावत वर्णन करने मे समर्थ भाषा की अनभिज्ञता का—जिसे देना हो दीजिए। जल्दी मे,

आपका,
महादेव

७२

२५ दिसम्बर, १९३७

प्रिय महादेवभाई

ज्यो ही मुझे दिल्ली मे वाइसराय से पता चला कि युक्त प्रात मे स्थिति ठीक नही है मैंने पतजी को चिट्ठी लिखी और देवदास को लखनऊ भेजा। वल्लभभाई वहा पहले से ही मौजूद थे। देवदास ने तो अभी मुझे कुछ नही लिखा है पर पतजी के पास से चिट्ठी आई है जिसमे उन्होने मुझे आश्वासन दिया है कि चिन्ता की कोई बात नही है और उनका हाथ नब्ज पर है। मैंने इस आश्वासन की सूचना वाइसराय के पास भेजी और वह बहुत खुश हुए। पर गवर्नर और मत्रियो के मत-भेद के बारे मे मेरा अज्ञान ज्यो का त्यो रहा। नेशनल काल मे कुछ निकला था उसे देखते ही मुझे शक हुआ कि कुछ गडबड है। बाद मे टेलिफोन पर तुम्हारे सदेश ने मुझे और भी सतर्क कर दिया। तब से मुझे विभिन्न क्षेत्रो से मालूम हो रहा है कि स्थिति शातिपूर्ण नही है पर मुझे अभी तक यह पता नहीं लग सका कि

वास्तव म बात क्या थी । आज आथर मूर स बात हुई तो उसने कहा कि यदि गवनर और मन्त्रियो का मनमुटाव दूर हो जाय तो हम सबकी चिता का निवारण हो । मूर ने पूछा कि क्या हेग्स मेरा परिचय है । मैंन हा की । उसने कहा आप का क्या खयाल है वह भला आदमी तो है न ?' मैंने कहा ' पतजी भी बुर नही हैं ।' आज सुबह वाइसराय की स्पीच निकली उससे लगता है कि उनके दिमाग म भी किसी प्रकार की चिंता काम कर रही है । पर मुझे अभी तक यह मालूम नही हो सका है कि यह चिंता किस बात को लेकर है । मैं यह पत्र तुमसे यह जानने का लिख रहा हू कि इस विषय पर यदि तुम अधिक प्रकाश डाल सको, तो डालो। वाइसराय यही हैं । और मूर भी भरसक सहायता करेगा । अगर मर मूर के या उसके जस किसी आदमी क किय कुछ हो सके तो हम सब अवश्य काम आन को तयार हैं । पर वास्तव म बात क्या है पहले मैं यह जानना चाहूगा और तब तक मैं कोई कदम नही उठाऊगा । यदि तुम्हे लग कि तुम कुछ बता सकोगे, तो बताओ और अपना पत्र मेरे भाइ को दे दो । मैं भी यह पत्र अपने आफिस के मारफत भेज रहा हू ।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बम्बई

७३

जुहू,
बम्बई
२२ दिसम्बर, १६३७

प्रिय घनश्यामदासजी

कानपुर के हमन का ध्यान अब काकोरी-काण्ड क रिहा हुए कदियो म स एक पर मुकदमा चलाय जान क बाद विवाद न ले लिया है । अब तक इस मामले को गुप्त रखा गया था । इन बन्दियो न अपनी रिहाई के तुरत बाद स ही मन्त्रिमडल तथा काग्रेस को व्यस्त कर रखा था । जुलूस और प्रदशन एक आम बात हो गई थी । बापू की सामयिक भत्सना के बावजूद प्रमुख काग्रेसियो न अपन-अपन जिलो

के इन प्रदर्शनों में सम्मिलित होना शुरू कर दिया था। कई स्थानों पर प्रमुख कांग्रेसियों ने ऐसी सभाओं का सभापतित्व भी किया जिनमें इन कैदियों ने अंगार उगलनेवाले व्याख्यान दिये। जब मंत्रिमंडल को इसका पता चला तो उसने जिलाधीशों को गश्ती पत्र भेजकर आदेश दिया कि ऐसी सभाओं में रिपोर्टर भेजे जायें। यह आदेश गवर्नर के कहने पर दिया गया अथवा स्वतः ही यह तो मैं नहीं जानता पर जब परमानंद के देहरादूनवाले व्याख्यान की ओर गवर्नर का ध्यान गया, तो उसने तुरंत इस मामले को मंत्रियों के सामने उठाया और इस बात का हठ की कि उस पर ताजीरात हिंद की धारा १२४-अ के अंतर्गत मामला चलाया जाय। मंत्रियों ने गवर्नर को यह बताया कि यह आदमी २० वर्ष तक जेल में रहा है इसलिए उसके उद्गारों में तिक्तता अनिवार्य थी और इस कारण इस व्याख्यान को इतना तूल नहीं देना चाहिए। वे लोग इस बात के पक्ष में थे कि उसे मात्र चेतावनी दे दी जाय फिलहाल उसके खिलाफ कोई कानूनी कारवाई न की जाय। पर गवर्नर अपनी बात पर अड़ा रहा। ऐसा कहा जाता है कि उसे दिल्ली से निर्देश मिला था। पंतजी ने गवर्नर से कई बार दरतक बातचीत की। इस कशमकश में ७ दिन लग गये, पर इस दौरान मंत्रियों ने पंडित जवाहरलाल अथवा किसी और से कोई सलाह मशवरा भी नहीं किया। कैबिनेट की एक औपचारिक बैठक के दौरान गवर्नर ने यह स्पष्ट कर दिया कि यदि मंत्रिमंडल मामला चलाने में झिझके तो उसे जो विशेषाधिकार प्राप्त हैं उनके अंतर्गत वह इस विषय में स्वयं आदेश जारी करेगा। मंत्रिमंडल अपने पुराने निर्णय पर अटल रहा। जो वारण्ट जारी किया गया, वह गवर्नर के आदेश से और उसकी तामील दिल्ली में हुई जहां इसी व्यक्ति पर एक और मामला चल रहा था। जब यहां तक नौबत आई तो पंतजी ने प० जवाहरलाल को तार देकर युक्त प्रांत बुलाया। उस समय प० जवाहरलाल आसाम के दौरे पर थे। उन्होंने वहां से यह सुझाव भेजा कि वल्लभभाई को बुला लिया जाय वह खुद अपना दौरा पूरा किये बगैर लौटना नहीं चाहेंगे। तब सरदार पटेल को बुलाया गया। सरदार पटेल और कृपलानी दोनों ने यही कहा कि जब उस आदमी के उद्गार इतने उत्तेजनावर्द्धक थे, तो मंत्रिमंडल को उस पर मामला चलाने में आनाकानी नहीं करनी चाहिए थी। वास्तव में परमानंद की स्पीच की तुलना में बाल्लीवाला की स्पीच राज भक्ति से परिपूर्ण लगती थी (मैंने उस स्पीच की सी० आई० डी० की रिपोर्ट देखी है और मेरा भी यही मत है)। पंतजी जानना चाहते थे कि अब क्या किया जाय, पर इस बार में वल्लभभाई ने कोई निश्चित मत नहीं दिया और कहा कि जवाहरलालजी से मशवरा किया जाय। जवाहरलालजी भी एक दो दिन में लखनऊ पहुंचनेवाले थे।

वल्लभभाई ने यह अवश्य कहा कि जब मामला यहा तक बढ गया है ता गवनर क आगे चुपचाप घुटने टेकना कठिन है। पतजी की धारणा थी कि यदि उस आदमी का दिल्लीवाले मामले मे दण्ड मिला ता गवनर का मामला वापस लेने का राजी करना सम्भव होगा। पर ऐसा लगा कि वसी स्थिति म भी गवनर नही मानगा (क्योकि उसके हाथ यह अच्छा मौका लगा है)। वह मामला वापस लेगा भी ता कुछ शर्तों क साथ ही वापस लेगा। उनम से एक शत शायद यह हागी कि मामला चलाने के निणय के प्रति मत्रिमडल सहमति व्यक्त करे। इस बाबत वल्लभभाई ने कोई निश्चित मत प्रकट नही किया और मामले का निणय जवाहरलालजी पर ही छोडना उचित समझा गया। क्योकि युक्त प्रात स्वय उनका प्रात है और वह अपने प्रात क विषय म मशवरा जरूर देना चाहेगे।

इस मामले स मत्रिमडल की कुछ अजीब-सी भीतरी काय पद्धति जुडी हुई है। यह तूफान खडा हाने के कोई २० दिन पहले मत्रिमडल ने यह निणय लिया था कि काकोरी काण्ड क रिहा हुए कदियो को चेतावनी दी जाय कि भविष्य म वे जो करें, सोच विचारकर करें। इस निणय पर अमल नही किया गया। पतजी का कहना है कि इस निणय पर अमल करने का काम चीफ सेक्रेटरी के जिम्मे था, पर उसने अमल नही किया। पर वल्लभभाई को लगा कि इतना महत्त्वपूण निणय चीफ सेक्रेटरी पर छाडना ठीक नही था।

आज सवेरे पतजी को फोन किया। भाग्य अच्छे थे, वह मिल गय। उन्हाने स्थिति पर प्रकाश डाला और कहा कि अब पहले-जसी बात नहा है दो-तीन दिन म सारी बात जनता क सामने आ जायेगी (इसका मैंने यह मम ग्रहण किया कि उस आदमी पर स मामला उठा लिया जायगा)। जब मैंने उनसे पूछा कि वह निश्चित रूप स बतायें कि यह बला टलेगी या नही, तो उन्होने कहा 'हा अवश्य' पर उनक लहजे म मुझे कुछ झिझक लगी। मैंने भी और अधिक कुरेदने का आग्रह नही किया विशेषकर इस कारण कि उन्होने कहा कि थोडा-बहुत आदान प्रदान जरूरी था। मुझे लगा कि मुख्य मत्री से इतनी ही बातचीत काफी है। इसलिए मैंने उनसे यह कहने के बाद कि ३० तारीख को प्रातीय कान्फरेंस क अवसर पर भेंट होगी टेलिफान रख दिया।

कानपुर के बारे म यह बात बिलकुल सही है कि उपद्रवियो के खिलाफ समुचित कारवाई के लिए गवनर ने अपनी आर स कई कदम उठाये है और इसस भी अप्रियता उत्पन्न हुई है। पर इस मामले का लकर कोई गम्भीर मतभेद नही हुआ है अत फिलहाल कानपुर शाति के दौर स गुजर रहा है।

बिहार के बारे म बताने योग्य एकमात्र बात यही है कि जब हम वहा पहुचे,

ता स्थिति म निश्चित सुधार हो चुका था। राजेन्द्र बाबू काश्तकारी सबधी ऐसे सुझाव तयार करने मे सफल हुए है जो जमीदारो और किसानो के समझदार प्रतिनिधियो को समान रूप से मान्य रहे है। वह बड़े आशावान हैं और अनुग्रह बाबू मे आत्मविश्वास कूट कूटकर भरा है। इस मुख्य मत्री ने कहा है कि यदि कार्य-कारिणी ने पग पग पर उनकी आलोचना करने के बजाय उनका समथन किया, तो वे बिहार का काम सुचारु रूप से चला लेंगे।

सप्रेम
महादेव

पुनश्च

आज इस आदमी को दिल्लीवाले मामले म ६ सप्ताह का कारावास दण्ड मिला है।

७४

२३ सितम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारा २१ तारीख का लम्बा पत्र मिला। उसम तुमने जो कुछ कहा सो समझा। एण्ड्रूज ने तुम्हारे हाथ का लिखा पुर्जा दिखाया पर उसम केवल अडमान के कदियो की ही बात है क्योकि दूसरा शब्द का प्रयोग किया गया है। मुझे यकीन है कि गवनर ने भी यही भाव ग्रहण किया होगा। इसका उद्देश्य चाहे जो रहा हो इसम सदेह करने की गुजाइश नही है कि पर्चे म केवल दण्डित कदियो का ही हवाला है नजरबन्दो का नही। मैं नही समझता कि फिलहाल गवनर के साथ दुबारा बात करने से कोई अर्थ निकलेगा। हा बापू चाहें तो बात दूसरी है। शायद सबसे उत्तम काय यही होगा कि अभी हम यह देखें कि बापू के स्वास्थ्य म कितना सुधार हो रहा है। गवनर के पास दुबारा कुछ समय बाद जाना ठीक रहेगा।

युक्त प्रात के बारे म तुमने जो कहा सो समझा। मेरी पतजी के साथ जरा भी सम्वेदना नही है। मैं स्थिति को अच्छी तरह समझ गया हू। इसलिए तुम्हार

लिए अपने अज्ञान अथवा विचार व्यक्त करने के लिए आवश्यक शब्दों की दरिद्रता को दोष देना अनावश्यक है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
जानकी कुटीर
जुहू

७५

२५ दिसम्बर, १९३७

प्रिय महादेवभाई

मैं कवीन्द्र रवीन्द्र से अपील जारी कराने में सफल हुआ हूं। अब जैसा तुमने वचन दिया था इस अपील के अनुरूप सामग्री 'हरिजन' में भी दो। यदि जवाहरलालजी को कुछ कहने के लिए राजी किया जा सके तो उनके कथन का अतिशय प्रभाव पड़ेगा। जब वह बम्बई पहुंचें तो क्या उनसे तुम मेरी ओर से यह अनुरोध करोगे? मैं समझता हूं उन्हें यह तो मालूम होगा ही कि इस समय बंगाल के पत्रों में कैसा जहर उगला जा रहा है। आनंद बाजार पत्रिका, 'हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड' तथा 'स्टार आफ इंडिया' ने तो भद्रता छोड़ ही दी है। अमृत बाजार पत्रिका फिर भी उतना बुरा नहीं है पर एक भी ऐसा पत्र ढूंढे न मिलेगा जिसके बारे में कुछ अच्छी बात कही जा सके। यदि इस मामले को तुम और जवाहरलालजी हाथ में लो तो इसका बड़ा प्रभाव पड़ेगा। इसके अतिरिक्त यदि तुम शरत बाबू का भी कुछ कहने को राजी कर सको, तो बड़ी बात हो। मैंने उनसे बात करके देखा उन्हें विचार तो अच्छा लगा पर वह कुछ हिचकिचा गये।

अखिल भारतीय चरखा संघ के लिए ऋण के विषय में तुम्हें लिखना भूल गया था। मैंने बापू से कहा था कि सारे सम्बद्ध कागज पत्र एकत्र किये जायें, संघ की जंगम संपत्ति का अनुमान तैयार करायें और जो लोग गारंटी दें, उनके नाम भेजें। मैं इम्पीरियल बैंक के डाइरेक्टरों से बात चला सकता हूं पर जमनालालजी तो वहां हैं ही वह बैंक के डाइरेक्टरों और सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास से बात चला

सकते हैं। जहा तक मैं समझ सका हू जमनालालजी और बापू गारटी देना चाहेंगे, तभी अवस्था मे कोई कठिनाई नही होनी चाहिए।

सप्रेम
घनश्यामदास

७६

२८ दिसम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाई

कुछ कटिंग साथ भेजता हू। उनमे से दो स्टेटसमैन और 'हिन्दुस्तान स्टण्डर्ड' की हैं। यह कवीन्द्र रवीन्द्र की अपील पर टिप्पणिया है। हिन्दुस्तान स्टण्डर्ड की टिप्पणी से तुम अन्दाज लगा सकोगे कि किस प्रकार चोर की दाढी मे तिनका वाली कहावत चरितार्थ हुई है। हक की स्पीच कुछ बेचैनी पदा करती है। मुसलमानो को आये दिन यही बताया जाता है कि बगाल मे हिन्दू लोग इस्लाम के विरुद्ध षडयन्त्र रच रहे है। ऐसी स्पीचें आगे चलकर सकट की स्थिति उत्पन्न करेंगी। मैं तो यही कहूगा कि जवाहरलालजी को बगाल का दौरा करना चाहिए। इससे स्थिति मे सुधार अवश्य होगा। मुझे यह भी आवश्यक प्रतीत होता है कि बगाल के पत्रो मे जो गाली गलौज चल रही है उसके बाबत जवाहरलालजी कुछ कहें और 'हरिजन' मे भी लिखा जाये। इसका प्रभाव पडेगा।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

७७

३० दिसम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाई

कवीन्द्र रवीन्द्र की अपील का जरा भी असर नहीं हुआ। वातावरण में जो थोड़ा-बहुत सुधार होता उसकी सम्भावना को फजलुल हक के विस्फोट ने बिलकुल नष्ट कर दिया। मैंने गवर्नर से कहा था कि वह अपने प्रभाव को काम में लेकर हक को अपनी जबान पर काबू रखने को कहें। उनके सेक्रेटरी ने मुझे बुलाकर बताया कि दोनों ओर से जो कीचड़ उछाली जा रही है उससे गवर्नर कितने क्षुब्ध हैं। गवर्नर बहुत चाहते हैं कि कुछ खुल्लमखुल्ला कहें, पर उन्हें आशंका है कि यदि वह कुछ कहेंगे तो उसका यही अर्थ लगाया जायेगा कि वह अपने मुख्य मंत्री के खिलाफ बोल रहे हैं। हो सकता है वह थोड़े दिनों बाद कुछ कहें। इस बीच मैं कवीन्द्र रवीन्द्र की अपील के बारे में तुम्हारी टिप्पणी की प्रतीक्षा कर रहा हूं। यह भी जानना चाहता हूं कि अब मुझे क्या करना चाहिए। शरत के बम्बई रवाना होने से पहले मैं उससे मिला था और उसे भी यह सुझाव अच्छा लगा कि कलकत्ते के कोई आधा दर्जन प्रमुख व्यक्ति एक सार्वजनिक अपील जारी करें। इस समय जिस बात की सबसे अधिक आवश्यकता है वह यह है कि यह दोनों ओर से चल रहा वाक्प्रहार बन्द हो। दुर्भाग्य की बात यह है कि जो लोग वर्तमान सरकार के खिलाफ हैं और उसके स्थान पर किसी नयी सरकार को प्रतिष्ठित करना चाहते हैं वे वर्तमान सरकार के कार्य की आलोचना करने के बजाय झूठ मूठ की अफवाहें फैलाने में व्यस्त हैं। व्यक्तियों और सिद्धान्तों में भेद नहीं किया जा रहा है। इसका एकमात्र परिणाम यह हुआ है कि हक को ऐसा लगने लगा है कि हिन्दू उसकी सरकार के खिलाफ साजिश कर रहे हैं, इसलिए वह जनता से अपील करने में साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से काम ले रहा है। इस जटिल स्थिति में धीरज के साथ विवेक-बुद्धि से काम लेने की जरूरत है। मैंने आशा तो नहीं छोड़ी है, पर सारी कठिनाई इस बात की है कि सब इस समस्या का निदान अपने अपने विचार के अनुरूप स्थिर करने में लगे हुए हैं। यदि शरत, विधान और अन्य लोग हिन्दू पत्रों की इस मनोवृत्ति के खिलाफ मोर्चा संचालन की ठान लें तो मेरी धारणा

है कि हम भी ऊल जलूल बातें करना बन्द कर देंगे। मैं तुम्हारी सलाह की बाट जोह रहा हू।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बम्बई

७८

३१ दिसम्बर, १९३७

प्रिय महादेवभाई

कल लथवेट मुझसे मिलने आया था। कोई दो घण्टे तक विस्तार से बात होती रही। नजरबन्दो, दण्डित बंदियो और सम व्यवस्था आदि विषयो पर मुख्य रूप से चर्चा हुई। जो बातचीत हुई, उसका निचोड वह वाइसराय को बताएगा और उन्होंने जरूरत समझी तो मुझे बुला भेजेंगे। नजरबन्दो और दण्डित बन्दियो की बाबत मैंने उससेवही सब-कुछ कहा जो मैं और एण्ड्रूज गवर्नर को बता चुके थे। इधर तुम्हारा पत्र भी लेथवेट को पढ सुनाया। कहा कि बापू के बगाल आने के पहले ही रिहाई का सिलसिला शुरू होना और जारी रहना चाहिए। यदि ऐसी नीति नही अपनाई गई तो जनता और बन्दियो में बेचैनी फैल जायगी और यदि कही बन्दियो ने नए सिर से भूख हडताल शुरू कर दी तो सबके लिए परेशानी पैदा हो जाएगी और उसका बापू के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पडे बिना नही रहेगा, जबकि उनका स्वास्थ्य बहुत ज्यादा राजनैतिक महत्त्व रखता है। लथवेट मेरी दलील से कायल हुआ। उसने यह बात स्वीकार कर ली कि बापू का स्वास्थ्य राजनैतिक महत्त्व रखता है। उसने पूछा कि क्या मैं यह चाहता हू कि इक्का दुक्का करके कैदियो को रिहा करना शुरू कर दिया जाय जिससे लोगो को इस धारणा को बल न मिले कि इस मामले को खटाई में डाल दिया गया है। मैंने कहा हा यही बात है। उसने बताया कि जहा तक अडमान के कैदियो का ताल्लुक है, उन्हे भारत वापस लाया जा रहा है। बापू ने अनशन के अवसर पर वाइसराय को जो तार भेजा था लेथवेट ने उसका जिक्र करते हुए बताया कि बापू को इस बात की खबर दे दी गई है कि बन्दियों की भारत वापसी का निर्णय ले लिया गया

है। वे चार से छह सप्ताह के बीच यहा वापस आ जायेंगे उसके बाद उनकी रिहाई के प्रश्न पर विचार किया जायेगा। मैंने उसे बताया कि नजरबन्दी की रिहाई का प्रश्न भी मेरे दिमाग मे घर किये हुए है, उनकी रिहाई अविलम्ब हो जानी चाहिए। उसने वाइसराय को यह बताने का वचन दिया। मेरी धारणा है कि वाइसराय इस दिशा मे सहायक सिद्ध होंगे। वाइसराय से मिलने के बाद मैं गवनर से फिर मिलूगा।

संघ व्यवस्था की चर्चा चली तो मैंने कहा कि बापू की तबीयत ठीक होते ही वाइसराय को उनसे इस बारे मे बातचीत आरम्भ कर देनी चाहिए। यदि समझौते बिना व्यवस्था लाद दी गई तो उसका परिणाम घातक होगा। मैंने कहा कि मैं यह नही चाहता कि इस मामले मे देर की जाय, साथ ही मैंने यह आशा भी व्यक्त की कि बापू कोई हल अवश्य तलाश कर लेंगे। लेथवेट ने कहा कि वाइसराय से वह यह बात कहेगा।

इसके बाद हम लोगों ने युक्त प्रांत की स्थिति की चर्चा की। मैंने कहा कि जब कांग्रेस इस प्रांत मे शांति और अहिंसा के लिए काम कर रही है तो गवनर को बीच मे टाग अड़ाने की क्या जरूरत थी? गवनर ने बेजा काम किया। लेथवेट का कहना था कि अकेले इस मामले को छोड़ अन्य किसी प्रांत मे गवनर ने हस्तक्षेप नही किया पर परमानंद हिंसा को बढ़ावा दे रहा था और देहरादून-जैसे सैनिक केंद्र पर इसका बुरा प्रभाव पड़ रहा था। पतसे बार बार कहा गया पर पता नही वे क्यो टालमटोल करते रहे। क्या मंत्रियों को इतनी छूट देना वांछनीय होता कि जिससे स्थिति इतनी बिगड़ जाय कि कानून और व्यवस्था बनाये रखने के लिए सेना की सहायता लेनी पड़ जाय? लेथवेट ने कहा कि किदवई की स्पीच उसे अच्छी नही लगी जिसमे उन्होंने कहा था कि यदि जनता ने अहिंसा का आचरण नही किया तो मंत्रियों को इस्तीफा देने को बाध्य होना पड़ेगा। यदि मंत्री लोग ऐसा रुख अपनाये रहेंगे तो गवनरों को उनकी शांति बनाये रखने की सामर्थ्य के बारे मे शक होने लगेगा। क्या स्थिति को एकदम बिगाड़कर मंत्रियों का इस्तीफा देना गवनर के प्रति न्यायपूर्ण आचरण होगा? ऐसी परिस्थिति मे क्या गवनर का यह कर्तव्य नही है कि वह चौकन्ना रहे और स्थिति को बिगड़ने से रोके? मैंने किदवई की स्पीच का अपेक्षाकृत अधिक अच्छा अर्थ बताया। मंत्रियों को जो शक्ति सामर्थ्य प्राप्त है निर्वाचकों की बदौलत और यदि सारी जनता विद्रोह कर बैठे तो मंत्रियों के लिए केवल यही करना बाकी रह जाता है कि वे लोगों से कह दें अब आप लोगों का हम पर विश्वास नही रहा है तो हम इस्तीफा देते हैं पर ऐसा हम इसलिए नही कर रहे हैं कि हमें गवनर के खिलाफ कोई शिकायत है।

बल्कि इसलिए कि आपके आचरण में अनुशासन का अभाव है। मैंने लेथवेट को बताया कि मैं ब्रिम्बर्ड की स्पीच का मंत्रियों की हैसियत का सोलह आना ठीक वर्णन मानता हूं उस स्पीच का गलत अर्थ लगाना उनके साथ अन्याय है। उसने मेरी बात स्वीकार की। पर साथ ही यह भी कहा कि यदि मंत्री लोग निर्वाचकों से भयभीत होकर कानून और व्यवस्था बनाये रखने के मामले में अपना कर्त्तव्य-पालन करने में कोताही करने लगें तो एक स्थिति ऐसी अवश्य आएगी जब गवर्नर दखल देने को बाध्य हो जाएगा। लेथवेट ने यह तो नहीं माना कि सं० प्रा० का गवर्नर हद से बाहर चला गया पर साथ ही उसने यह स्वीकार किया कि मंत्रियों को गलती करने की भी स्वतंत्रता रहनी चाहिए। अकेले सं० प्रा० में ही हिंसात्मक तत्त्वों के साथ ढिलाई बरती जा रही है। अन्य प्रांतों की वह भूरि भूरि प्रशंसा करता रहा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बम्बई

७६

तार

मो० क० गाधी
वर्धा

१२०-जी आपके सदेश के लिए धन्यवाद। सदेश अनशन करनेवालो को भेज रहा हू और तार द्वारा उत्तर देने का आग्रह कर रहा हू।

—वाइसराय

८०

अण्डमान के बदियो से सम्बन्धित तारो का आदान प्रदान

स्मरण रहे कि जब गाधीजी को गृह विभाग का ३१ अगस्त का यह तार मिला कि अण्डमान के बदियो ने अनशन स्थगित कर दिया तो उसमे उन सात बदियो का उल्लेख नही था जिन्होने अण्डमान से आये तार के अनुसार अनशन स्थगित नही किया था। गाधीजी ने इस मामले को आगे बढाया। उन्हे गृह विभाग का तार द्वारा उत्तर मिला जिसमे गाधीजी के नाम उन सात बदियो का सदेश दर्ज था। इसके बाद उन सात बदियो का एक और तार मिला जिसमे उन्होने अनशन तोडने से इन्कार किया था। इस निर्णय से गाधीजी को बडी व्यथा हुई है। उन्होने समाचार पत्रो को समूचा तार विनिमय प्रकाशित करने की अनुमति देते हुए यह वक्तव्य दिया है "मैने इन तारो का प्रकाशन अब तक इस आशा से रोके रखा था कि मैं यह आनन्ददायक समाचार देने मे समर्थ होऊगा कि उन सात बदियो ने राहत शब्द की मेरी परिभाषा को स्वीकार करके अनशन तोड दिया है। मुझे इसका दु ख है कि मैं अपने प्रयत्न मे असफल रहा। मुझे अब तो यही आशा है कि उन सात बदियो के खास मित्र उन्हें समझा-बुझाकर अनशन तोडने को राजी कर लेंगे क्योकि केवल इसी के द्वारा जनता अपने उन प्रयत्नो को सामूहिक रूप देने मे समर्थ होगी जो उनमे राहत प्राप्त करने के लिए जारी रखे हैं

तथा जिनके लिए इन कैदियों ने अपने प्राण सकट म डाल रखे हैं। मैं सम्बद्ध अधि कारियो स भी दया भाव दिखाकर इन कदियो को उनके अनशन जारी रखने पर भी रिहा करने की अपील करता हू जिसम वे अपनी देखभाल खुद कर सकें। १९३३ मे जब मैंने अपने उपवास का अन्त करने से इन्कार कर दिया था, तो मुझे भी अपनी देखभाल खुद करने के निमित्त रिहा कर दिया गया था।

गत २ सितम्बर को गृह विभाग के सक्रेटरी का शिमला से गाधीजी को जो तार मिला वह यहा उद्धृत किया जाता है नम्बर एफ-५ जेलें। —अण्डमान के जिन सात कैदियो ने अनशन जारी रखा है उन्होंने आपके लिए निम्नलिखित सदेश भेजा है "आतकवाद के बारे म आपके तार के लिए धन्यवाद। हम घोषणा करते हैं कि इसस देश का अपकार ही होगा उपकार नही। हम आपके माध्यम से जेलखानो और नजरबन्द शिविरो मे पडे राजनैतिक पीडितो स तथा एसी सभी सस्थाओ स, जिनका अब भी अस्तित्व हो जो देश को आतकवाद के द्वारा स्वतत्र करन म विश्वास रखते हैं अपील करते हैं कि व यह माग त्याग देंगे। हमारा आपसे अनुरोध है कि राहत शब्द से आपका क्या अभिप्राय है सो स्पष्ट कीजिए। अब प्रान्तीय स्वराज्य की प्राप्ति के बाद राहत का एकमात्र अथ यही हो सकता है कि सारे राजबन्दियो को तथा राजनैतिक अपराधो के लिए दण्डित कदियो को रिहा कर दिया जायेगा निर्वासितो पर से देश म प्रवश करने की निषधाज्ञा उठा ली जायगी और सारी दमनकारी धाराओ को रद्द कर दिया जायगा। यदि हमें इस बारे म आपका आश्वासन मिल तो हम भूख हडताल स्थगित कर सकते हैं।' इस सदेश म आपके जिस तार का हवाला दिया गया है, वह २७ अगस्तवाला तार है। तब तक आपका ३० अगस्तवाला तार उन्हें नही दिया गया था।—गृह विभाग।

गाधीजी ने ३ सितम्बर को शिमला स्थित गृह विभाग के सक्रेटरी को यह तार भेजा 'आपका तार कल मध्याह्न के समय चलकर आज प्रात काल ७ बजे के बाद यहा पहुचा। धन्यवाद! कृपया उन सात बन्दियो को यह तार भेजिए सदेश अत्यत सराहनीय है। यह सदेश हम सभी के एकसमान उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त मेरे प्रयत्नो म बहुत सहायक होगा। आपने 'राहत शब्द का जो अथ लगाया है उस मैं व्यक्तिगत रूप स स्वीकार करता हू और वचन देता हू कि मैं अपने बन्दियो के सहयोग स उसकी सफलता के लिए सचेष्ट रहूगा। अतएव आप अनशन त्याग दीजिए और इस आह्लादकारी वृत्त की सूचना दीजिए।—गाधी।

गाधीजी ने ८ सितम्बरको पोर्ट ब्लेयर अण्डमान को निम्नलिखित तार भेजा 'उन सात बन्दियो के नाम अपने सदेश के उनके उत्तर की उत्सुकतापूवक प्रतीक्षा कर रहा हू। क्या अनशन अभी जारी है? यदि जारी हो, तो उनसे कह दीजिए

कि जब तक वे अनशन समाप्त नहीं करेंगे, मेरी कोशिश बेकार रहेगी।—गांधी।'

१० सितम्बर को अण्डमान से यह तार आया "६११८। आपका तार कैदियों को कल दे दिया गया था। राहत शब्द की उनकी परिभाषा को आपने स्वीकार किया इसकी वे सराहना करते हैं, पर अनशन स्थगित करने से इन्कार करते हैं। —अण्डमान।' गांधीजी ने ११ सितम्बर को पोर्ट ब्लेयर अण्डमान को यह तार भेजा, तार के लिए धन्यवाद। कृपा करके बन्दियों से कहिए अनशन स्थगित करने से इन्कार करके आपने मुझे मर्मान्तक वेदना पहुंचाई है। आपके तार से मैंने समझा था कि यदि मैं राहत शब्द की आपकी परिभाषा स्वीकार कर लूं तो आप अनशन स्थगित कर देंगे। कृपया अनशन स्थगित करके राष्ट्रव्यापी चिन्ता का निवारण कीजिए और मेरे जैसे कार्यकर्त्ताओं को 'राहत' हासिल करने का अवसर दीजिए।—गांधी।

१४ सितम्बर को अण्डमान से यह उत्तर आया ६२१४। आपका ११ सितम्बर का तार १२ को पहुंचा, और भूख-हड़तालियों को १३ को दिया गया। सूचित करते दुःख होता है कि उन्होंने अनशन स्थगित करने की आपकी सलाह को मानने से इन्कार कर दिया है।—अण्डमान।

१९३८ के पत्र

१

३ जनवरी, १९३८

प्रिय महादेवभाई,

संघ व्यवस्था के बारे में जवाहरलालजी ने लार्ड लोदियन को यह बताया है कि इसे लेकर कांग्रेस में ऊपर से नीचे तक फूट पड़ जायगी। वह पूरी तरह कांस्टिट्यूएंट असेम्बली बुलाये जाने के पक्ष में है और फिलहाल इस मामले में कोई रिआयत बरतने को तैयार नहीं है। यह केवल बापू की सूचनार्थ है।

जो एक और महत्त्वपूर्ण बात मेरे कानों तक पहुंची वह यह है कि यद्यपि भारत शासन विधान में सेना को मंत्री के अधिकारों की परिधि के बाहर रखा गया है, परिपाटी के द्वारा कोई ऐसी व्यवस्था की जा सकती है जिसके अंतर्गत मंत्री को एक प्रकार का उत्तरदायित्व सौंपा जाना सम्भव हो। ऐसी आशा की जा रही है कि ब्रिटिश जनमत इसे स्वीकार करने को राजी हो जायेगा क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय स्थिति बिगड़ रही है और विशेषकर चीन में जापान की आक्रामक कारवाई के परिणामस्वरूप ब्रिटिश साम्राज्य को खतरे की स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। परन्तु यह वांछनीय नहीं समझा जा रहा है कि भारत की रक्षा के मामले में मंत्री को उत्तरदायित्व से पूर्णतया वंचित रखा जाये। पता नहीं बापू को इस वस्तुस्थिति की जानकारी है या नहीं कि संघ-व्यवस्था विषयक आर्डिनेंस अभी पार्लियामेंट द्वारा पारित नहीं हुआ है इसलिए यदि समझौता हुआ तो शासन विधान की यह कमी आर्डिनेंस द्वारा पूरी की जा सकती है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बम्बई

२

मगनवाडी,
वर्धा (मध्य प्रांत)
६ जनवरी, १९३८

प्रिय घनश्यामदासजी

मेरे पास आपके कई पत्र उत्तर देने को रखे हुए हैं पर मैं बापूजी से बात करने से पहले आपको लिखना नहीं चाहता था। यह आज सन्ध्या समय यहां पहुंचने पर ही सम्भव हुआ। जुहू में अंतिम दो दिन बहुत चहल पहल रही। एक ओर तो कार्यकारिणी के सदस्यों के साथ बातचीत का सिलसिला जारी था और दूसरी ओर मुलाकातियों का तांता बंधा रहा क्योंकि हमने अचानक ही वहां से चलने का निश्चय किया था। इसलिए मैंने बापू को और अधिक व्यस्त करना उचित नहीं समझा।

सबसे पहले मैं गैर जिम्मेदार समाचार पत्रों द्वारा विषाक्त किये गये गंदे वातावरण के परिष्कार का प्रश्न उठाता हूं। जिस समय मैंने कवीन्द्र रवीन्द्र की समाचार पत्रों से अपील पढ़ी थी उस समय मेरे सामने मंत्रियों का अनर्गल प्रलाप नहीं था अन्यथा मैं एक लेख के द्वारा समाचार पत्रों और मंत्रियों दोनों को ही लताड़ता। बापू को आपका यह सुझाव पसंद आया कि कुछ हिन्दू व मुसलमान नेता मिलकर एक विज्ञप्ति जारी करें। यदि कोई और मुसलमान न मिले, तो मौलाना (अबुल कलाम) आजाद के हस्ताक्षर काफी होंगे। शायद विज्ञप्ति जारी करने से भी अच्छा यह रहेगा कि आप मौलाना आजाद से मिलें और कहें कि वे फजलुल हक से मिलकर उन्होंने जो कुछ कहा है, उसे वापस लेने तथा खेद प्रकाश करने का आग्रह करें। हो सकता है विधान बाबू भी इस दिशा में सहायक हों।

लार्ड ब्रेबार्न के लिए प्रकाश में तो कुछ कहना सम्भव नहीं है पर वह फजलुल हक को बुलाकर उनसे जवाब तलब कर सकते हैं। यह काम जरूरी है। लार्ड ब्रेबार्न फजलुल हक को बता सकते हैं कि सरकार अपराधी समाचार पत्रों पर तो मामला चला सकती है पर अपराधी मंत्री के खिलाफ कारवाई करना उसके लिए उचित नहीं होगा। लार्ड ब्रेबार्न को उन्हें यह साफ बता देना चाहिए कि यदि जिम्मेदार मंत्री गैर जिम्मेदारी का आचरण करता रहेगा, तो एक गवर्नर की हैसियत से विशेषाधिकारों का प्रयोग करने को वे विवश होंगे। क्योंकि शासन विधान के अंतर्गत किसी भी आदमी को वर्गों में संघर्ष कराने और साम्प्रदायिक

दिए फरमान से रोकना एक गवनर का कत्तव्य हो जाता है।

गवनर एक और काम कर सकता है। या वह सावजनिक रूप से न तो समाचार पत्रों के लेखों की ही आलोचना कर सकता है न मन्त्रियों के आचरण की ही पर वह जनप्रिय नेताओं से वातावरण को सुधारने की अपील इस आधार पर कर ही सकता है कि चूंकि कानून और व्यवस्था कायम रखने की जिम्मेदारी मन्त्रियों की है इसलिए स्वयं उसके लिए समाचार पत्रों की आलोचना करना उचित नहीं होगा। गवनर सम्पादकों को बुलाकर उनसे कीचड़ उछालने से बचे रहने को नहीं कह सकता पर वह शरत बोस-जैसे सावजनिक नेताओं से वातावरण को सुधारने की बात तो कह ही सकता है। गवनर आम तौर से यह भी कह सकता है कि स्वस्थ जनमत के गठन के लिए क्या कुछ करने की जरूरत है।

बापू ने शरत बाबू से दो बार देर तक सतोषजनक ढंग से बात की। आशा है शरत बाबू ने आपको बताया होगा कि क्या क्या बातें हुई। बापू का कहना है कि इस वार्तालाप का ब्यौरा मैं लिख भेजू। इससे कहीं अच्छा यह होगा कि आप शरत बाबू के मुंह से सुनें कि बापू ने उनसे क्या-क्या कहा और बापू की बात उनके मन में कितनी उतरी। शरत बाबू से हुई बातचीत का बापू पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है और उनकी धारणा है कि वह शान्ति स्थापना काय में पूरा योगदान करेंगे। यदि आप उनके साथ घनिष्ठ सम्पक स्थापित करें, जिसमें उनका सहयोग पूण मात्रा में उपलब्ध हो सके तो उन्हें अच्छा लगेगा। बापू विधान राय अथवा नलिनी बाबू को यहां बुलाये जाने से पहले यह चाहेंगे कि आप यहां आ जायें। १८ और २२ के बीच का समय सबसे अधिक उपयुक्त रहेगा। लार्ड लोदियन १५ को पहुंच रहे हैं और बापू तब तक पूरा आराम लेना चाहते हैं जिससे उनके साथ खुलकर बातें कर सकें। उनके साथ बातचीत में दो दिन से अधिक लगने की सभावना नहीं है। लार्ड लोदियन के साथ बातचीत के बाद बापू दो एक दिन की विश्रान्ति चाहेंगे और तब आपका आना पसन्द करेंगे। इससे अधिक निश्चित रूप से कुछ कहना मेरे लिए सम्भव नहीं है।

डाक्टर लोग बहुत चाहते थे कि बापू इस महीने के अंत तक जुहू में ही आराम करते रहें, पर बापू की वेदना बढ़ने लगी। उनका कहना था कि वह लार्ड लोदियन से मिलेंगे तो यहीं के स्वाभाविक वातावरण में मिलेंगे अन्यत्र नहीं। इसका कोई माकूल जवाब नहीं था हो ही नहीं सकता था।

आपने लथवेट के साथ अपनी बातचीत के दौरान किदवई की शिकायत की, सो ठीक ही किया और किदवई के भाषण का आपने जो अथ लगाया वह भी ठीक था। लथवेट ने जो कहा वह भी गलत नहीं था। एक जिम्मेदार व्यक्ति को अपने

उत्तरदायित्व स इस प्रकार नही भागना चाहिए। मत्री का इस्तीफा देने का पूरा अधिकार है पर एसा करने स पहल उसे यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि वह जो इस्तीफा दे रहा है सो गवनर के कारण नही, बल्कि अपने निर्वाचको के कारण क्योकि बजाय इसके कि वह निर्वाचको का नेतृत्व कर, उलटे निर्वाचक उसका नेतृत्व करने की कुचेष्टा कर रहे है। ऐसी परिस्थिति म उसके लिए उनके काम आना सम्भव नही है।

आपन आर्डिनेन्स के बारे म जो कहा वह बडा रोचक है पर बापू का आशका है कि अभी समझौते के कोई लक्षण प्रतीत नही हो रह हैं। बापू अपना अधिकाश समय बिस्तर पर पडे रहकर भल ही बितायें उनका दिमाग बराबर काम करता रहता है। वह अच्छी तरह से जानते हैं कि लाड लोदियन से क्या बात करनी है। इस सघ व्यवस्थावाले आर्डिनन्स क बारे म बापू का अभी तक व्यस्त नही किया गया है और लाड लोदियन के साथ बातचीत हो चुकन से पहले करूगा भी नही।

सपगधा लाजवाब आपधि है उससे फायदा ही हुआ है। पर बापू का मिजाज इतना नाजुक बन गया है कि जहा थोडी सी भी दिमागी परशानी हुई कि रक्तचाप पर असर होने लगता है भल ही वह सपगधा का सेवन करते रह हा। इस दफा कायकारिणी के सदस्यो ने उन्हे यथासभव बख्शा। वास्तव म मौलाना (अबुल कलाम आजाद) का छोडकर अन्य किसी ने उनके साथ गभीर वार्ता नही की। हा, मौलाना आजाद ने हिन्दू मुस्लिम एकता के बारे मे काफी देर तक बाते की। एक दिन सदस्यगण एक घण्टे तक बठ बठे इधर उधर की बातें व हसी मजाक करके ही सतुष्ट हो गये। बापू ने बातचीत म हिस्सा नही लिया पर वह सुन तो रहे ही थ और एकमात्र इस प्रयास के कारण उनका रक्तचाप ३० तक जा चढा। बापू को सोचने विचारने म अधिक प्रयास नही करना पडता पर वह बात करन और सुनने का बोझ भी नही बरदाश्त कर पाते।

बम्बई स वर्धा तक का सफर निर्विघ्न रहा। वर्धा उतरने के कुछ ही पहल रक्तचाप लिया गया तो १८६/१०६ निकला। बापू काई ४ घटे साये हागे जिसस तीसरे पहर रक्तचाप घटकर १५०/९० पर आ गया था जो ठीक ही था।

सप्रेम,
महादेव

३

११ जनवरी १९३८

प्रिय महादेवभाई

आखिर तुम्हारा पत्र मिल ही गया। तुमने पार्टीवालो की बात इतनी खुलासा लिखी कि मन प्रसन्न हो गया।

यहा लक्षण अच्छे प्रतीत नही हो रहे हैं। आजकल समाचार-पत्र कुछ ठण्डे हैं। मन्त्रिगण भी चुप्पी साधे हुए हैं। पर मन्त्रियो की खामोशी का कारण यह नही है कि उन्होने जबान पर काबू रखना सीख लिया है बल्कि इस कारण कि ऊपर से दबाव पड़ा है। तुमने सुझाव दिया था कि गवर्नर फजलुल हक से बात करें। ऐसा किया जा चुका है। मुझे खबर लगी है कि वाइसराय और गवर्नर दोनो ने ही उनसे बात की थी और उनका कहना व्यर्थ नहीं गया है। यह बाहरी स्थिति लगती है पर समाचार पत्रो के बारे मे मैं आशावान नही हू। मैंने एक बार कहा था कि यदि नेता लोग अपने प्रभाव से काम ले तो दलबदी तथा समाचार पत्रो का विष-वमन होना ही बन्द हो सकते हैं। पर इधर मैंने स्थिति का अधिक बारीकी से अध्ययन किया है और मुझे स्वीकार करना पड़ता है कि व्याधि गम्भीर है। बापू अपने प्रयत्न मे सफल हो भी सकते हैं नही भी हो सकते पर अन्य किसी के वश की तो यह बात है नहीं। शरत बाबू के बम्बई के लिए रवाना होने से पहले बापू ने उन्हें समाचार-पत्रो मे प्रकाशित हो रही सामग्री की बात लिखी थी। मुझे पता चला है कि जब समाचार पत्रो के मालिको को यह बात मालूम हुई तो वे बापू पर बहुत बिगड़े, और उसके बाद ही आर्ट कवीन्द्र रवीन्द्र की अपील। वह अपील जारी करने को रवीन्द्र बाबू से मैंने कहा था। इस बात को लेकर उन क्षेत्रो मे काफी रोषपूर्ण चर्चा हुई यहा तक कहा गया कि मैंने कवीन्द्र रवीन्द्र को मोटी-सी रकम देकर यह अपील जारी कराई है। तुम खुद ही सोच सकते हो कि ऐसे गन्दे वातावरण में क्या-कुछ नही हो सकता। तुमने अपने पत्र मे लिखा है कि यदि हिन्दू और मुसलमान दोनो मिलकर एक सयुक्त अपील जारी करें तो अत्युत्तम हो। शरत बाबू को यह सुझाव कैसा लगेगा सो मैं नही जानता। बम्बई के लिए रवाना होने से पहले मैंने उनसे ठीक यही बात कही थी पर उन्होने मेरा सुझाव विशेष नही रुचा। उन्होंने सीधे समाचार-पत्रवालो से बात करना अधिक अच्छा समझा। अगले शनिवार को वह एक प्रेस-कान्फ्रेंस बुला रहे हैं। कह नही सकता कि इसका क्या परिणाम निकलेगा पर हम अच्छे परिणाम की ही आशा

इस प्रकार नही भागना चाहिए। मत्री को इस्तीफा देने का
: पर एसा करन स पहले उसे यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि वह
हा है सो गवनर के कारण नही, वलि अपने निर्वाचकों के कारण,
सके कि वह निर्वाचको का नेतृत्व कर उलटे निर्वाचक उसका
कुचेष्टा कर रहे हैं। ऐसी परिस्थिति म उसके लिए उनक काम
ही है।

टिनेन्स के बारे म जो कहा वह बड़ा रोचक है पर बापू का आशरा
प्रीत के कोई लक्षण प्रतीत नही हो रह है। बापू अपना अधिकाश
र पड़े रहकर भले ही बितायें उनका दिमाग बराबर काम करता
च्छी तरह से जानते हैं कि लाड लोदियन से क्या वात करनी है।
वाने आर्डिनेन्स के बारे म बापू का अभी तक व्यस्त नही किया
ड लादियन के साथ बातचीत हो चुकने से पहले करूगा भी नही।
ाजवाब आपधि है उसस फायदा ही हुआ है। पर बापू का मिजाज
न गया है कि जहा थोडी सी भी दिमागी परेशानी हुई कि रक्तचाप
गता है भले ही वह सर्पगधा का सेवन करत रहे हो। इस दफा
सन्स्यो न उन्हे यथासभव बख्शा। वास्तव म मौलाना (अबुल
का छोडकर अन्य किसी ने उनके साथ गभीर वार्ता नही की।
जाद ने हिन्दू मुस्लिम एकता के बार म काफी देर तक बातें की।
गण एक घण्टे तक वठे वठे इधर उधर की बातें व हसी मजाक
हो गये। बापू ने बातचीत म हिस्सा नही लिया पर वह सुन तो
एकमात्र इस प्रयास के कारण उनका रक्तचाप ३० तक जा चढा।
विचारने मे अधिक प्रयास नही करना पडता पर वह बात करने
ोझ भी नही बरदाश्त कर पाते।

ार्धा तक का सफर निर्विघ्न रहा। वर्धा उतरन के कुछ ही पहल
गया, तो १८६/१०६ निकला। बापू कोई ४ घटे साथ होग, जिसम
ाचाप घटकर १८०/६० पर आ गया था जा ठीक ही था।

सप्रेम,
महादेव

३

११ जनवरी, १९३८

प्रिय महादेवभाई

आखिर तुम्हारा पत्र मिल ही गया। तुमने पार्टीवाला की बात इतनी खुलासा लिखी कि मन प्रसन्न हो गया।

यहां लक्षण अच्छे प्रतीत नहीं हो रहे हैं। आजकल समाचार-पत्र कुछ ठण्डे हैं। मंत्रिगण भी चुप्पी साधे हुए हैं। पर मंत्रियों की खामोशी का कारण यह नहीं है कि उन्होंने जबान पर काबू रखना सीख लिया है बल्कि इस कारण कि ऊपर से दबाव पड़ा है। तुमने सुझाव दिया था कि गवर्नर फजलुल हक से बात करें। ऐसा किया जा चुका है। मुझे खबर लगी है कि वाइसराय और गवर्नर दोनों ने ही उनसे बात की थी और उनका कहना व्यर्थ नहीं गया है। यह काफी दिलचस्प खबर है, पर समाचार-पत्रों के बारे में मैं आशावान् नहीं हूं। मैंने एक बार कहा था कि यदि नेता लोग अपने प्रभाव से काम लें, तो दलबन्दी तथा समाचार पत्रों का विष-वमन दोनों ही बन्द हो सकते हैं। पर इधर मैंने स्थिति का अधिक बारीकी से अध्ययन किया है, और मुझे स्वीकार करना पड़ता है कि व्याधि गम्भीर है। बापू अपने प्रयत्न में सफल हो भी सकते हैं नहीं भी हो सकते, पर अन्य किसी के वश की तो यह बात है नहीं। शरत बाबू के बम्बई के लिए रवाना होने से पहले बापू ने उन्हें समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो रही सामग्री की बात लिखी थी। मुझे पता चला है कि जब समाचार पत्रों के मालिकों को यह बात मालूम हुई तो वे बापू पर बहुत बिगड़े और उसके बाद ही आई कवीन्द्र रवीन्द्र की अपील। वह अपील जारी करने को रवीन्द्र बाबू से मैंने कहा था। इस बात को लेकर उन लोगों में काफी गरमागरम चर्चा हुई, यहां तक कहा गया कि मैंने कवीन्द्र रवीन्द्र को मोटी-सी रकम देकर यह अपील जारी कराई है। तुम खुद भी सोच सकते हो कि ऐसे गन्दे वातावरण में क्या-कुछ नहीं हो सकता। तुमने अपने पत्र में लिखा है कि यदि हिन्दू और मुसलमान नेता मिलकर एक संयुक्त अपील जारी करें तो अत्युत्तम हो। शरत बाबू को यह सुझाव कैसा लगेगा सो मैं नहीं जानता। बम्बई के लिए रवाना होने से पहले मैंने उनसे ठीक यही बात कही थी, पर उन्होंने मेरा सुझाव स्वीकार नहीं किया। उन्होंने सीधे समाचार-पत्रवालों से बात करना अधिक अच्छा समझा। अगले शनिवार को वह एक प्रेस-कान्फ्रेंस बुला रहे हैं। कह नहीं सकता कि इसका क्या परिणाम निकलेगा, पर हम अच्छे परिणाम की ही आशा

करनी चाहिए। प्रेसवाला को कोई खफा नही करना चाहता, इसीलिए यह स्थिति ज्या की त्या बनी हुइ है। पर मैं वसी अपील जारी किय जाने के विचार का हृदय स समथन करता हू। शरत बाबू स बात करके देखूगा मान जायें तो अच्छा ही है।

शरत बाबू पिछले चार पाच दिन स यहा है। उनसे सपक स्थापित करन की कोशिश कर रहा हू पर अभी तक सफल नही हुआ हू। ऐसा लगता है कि वह मुझे पत्र द्वारा सूचना देंगे कि हम दोनो का मिलना कब हो सकता है। वह जब चाहगे मैं अपने आपको उनके सुपुद कर दूगा। तुमने यह नही बताया कि जुहू म उनकी बापू से क्या क्या बातें हुइ। शायद वह खुद ही बताए। उसके बाद हम दोना अगले कदम के बारे म बात करेंगे।

मेरे वर्धा आने के बारे म तुमने जो कुछ कहा मैं समझा। अभी तो मेरा यही इरादा है कि २२ के बाद और इस महीने क अत तक किसी भी दिन रवाना हो सकता हू। नलिनी आर्थिक परिषद को लेकर २२ तारीख तक दिल्ली म उलझे रहेंगे। उसके बाद वह भी आ सकते हैं। मेरा सुझाव है कि हमारा एक एक करके आना ठीक नही रहेगा हम एकसाथ ही आवें तो अच्छा रहेगा। पहले मैं बात करूगा उसके बाद डाक्टर राय और नलिनी भी बातचीत मे शरीक हो जायेंगे। पर यदि मैं पहले से यह न बता दू कि स्थिति को देखते हुए मुझे कितनी उम्मीद है तो मैं गलती करूगा। मेरे कानो तक यह बात पहुची है कि लोगो म इस बात को लेकर गम और गुस्सा भरा हुआ है कि मैं उनके घरेलू मामले मे टाग अडा रहा हू। इससे तो यही साबित होता है कि हम सबने वातावरण को जितना बुरा समझा था वह उससे कही अधिक विषाक्त हो चुका है। जो हो, पर मुझे आशा है कि हम लोग जिन तारीखो को आने का विचार कर रहे हैं वे तुम्हें सुविधाजनक रहेंगी। यदि तुम चाहो कि इस प्रोग्राम म थोडा बहुत हेर फेर हो तो मुझे लिख देना।

अपने पत्र क एक परे मे तुमने सघ-व्यवस्था के बारे म लिखा है कि बापू को एसा नही लगता कि इस मामले को लेकर अभी कोई समझौता हो पायेगा। मैं नही जानता कि बापू की एसी धारणा क्या है। अतर्राष्ट्रीय स्थिति दिनो दिन इतनी जटिल होती जा रही है और इतनी तेजी से बदल रही है कि मुझे लगता है कि यदि समझौते का कोई सबसे अच्छा अवसर है तो वह यही है। पर सबसे बडी कठिनाइ हिन्दू मुस्लिम समस्या को लेकर है। वास्तव म यह समस्या उत्तरोत्तर अधिक विकट होती जा रही है। मेरी राय मे जवाहरलालजी की प्रेस मुलाकात का जिन्ना ने जो उत्तर दिया है वह कटुता से ओत प्रोत है। शायद सबसे अच्छा यही

रहेगा कि खामोशी अख्तियार की जाए और कुछ न किया जाए। दो सघ क्यो न हो ? एक हिन्दुओ का दूसरा मुसलमानो का ? मुस्लिम सघ मे वे प्रात और अचल रहे, जहा मुसलमान आबादी दो तिहाई से अधिक हो। इसमे कश्मीर-जसी रियासतें भी शामिल रहें जहा मुसलमानो की बहुतायत है। अवशिष्ट भाग म हिन्दू सघ रहे जिसम रियासतें भी शामिल रहे। ऐसा करन स हम कम-स कम गह युद्ध से तो बच जायेंगे। हमारे रास्ते मे जो सबस बडी रुकावट है वह हिन्दू मुस्लिम-समस्या ही है। हमारी प्रगति म अग्रेज बाधा नही डाल रहे हैं हमारी आपस की कलह ही बाधक बन रही है।

शरत बाबू से बात करने के बाद तुम्हे एक और पत्र लिखूगा।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
जुहू

४

कलकत्ता
१२ जनवरी १६३८

प्रिय महादेवभाई

शरत बाबू मुझस मिलने आए थ। उनसे अच्छी खासी बातचीत हुई पर मैं यह पता नही लगा सका कि बापू ने उनस क्या क्या कहा। उन्होने बताया कि बापू उनकी इस बात पर राजी नही हुए कि नलिनी को किसी तरह की शर्तों म बाधा जाय। जो भी हो, उनस काग्रेस मे वापस आन को कहा जाय और यदि वह आने को तयार न हो, तो अपने-आपको गलत स्थिति मे ले जाएगे। इतना कह चुकने के बाद उन्होने मुझसे सलाह मागी कि क्या वह इस तरीके से बातचीत शुरू करें ? मैंने कहा कि डा० राय और नलिनी बाबू दोनो ही बापू से मिलने वाले हैं। इसलिए बापू इस ढग की बात करना उचित समझगे तो करेंगे ही। यह

बात शरत बाबू को भी पसन्द आई। अब सब-कुछ बापू के व्यक्तिगत विचार विमर्श पर निर्भर है।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
मा० महात्मा गांधी
जानकी कुटीर
जुहू बम्बई

५

मगनवाड़ी
वर्धा (मध्य प्रांत)

केवल लार्ड लोदियन और अग्रगण्य राजनेताओं के लिए

मेरी आकांक्षा है कि कांग्रेस को ही एकमात्र ऐसी संस्था माना जाये जो सरकार का सफलतापूर्वक प्रतिरोध कर सकती है और अपने उद्देश्य को सिद्ध कर सकती है। एकमात्र यही एक ऐसी संस्था है जिसने आरम्भ से ही अल्पसंख्यक जातियों और वर्गों का प्रतिनिधित्व किया है।

यदि ब्रिटिश सरकार कांग्रेस की इस अद्वितीय स्थिति को मान ले तो वह जब तक संघ व्यवस्था के बारे में कांग्रेस का समाधान नहीं करती तब तक इस विषय को स्थगित रखे। यदि ब्रिटिश सरकार भारतीय नरेशों को संघ में सम्मिलित करने से पहले उनकी रियासतों की जनता का निर्वाचन के द्वारा प्रतिनिधित्व देने के सिद्धांत को मान ले तो कांग्रेस का समाधान करना उनके लिए कठिन नहीं होगा। यदि संघ व्यवस्था को बलात् लादा गया तो मेरी समझ में हद दर्जे की विकट स्थिति के पैदा होने की आशंका है।

यदि इसको मानकर वर्तमान कठिनाई का निवारण कर दिया गया तो भी विधान का प्रतिरोध बना रहेगा। सच्ची शांति तभी स्थापित हो सकती है जब वर्तमान विधान का स्थान विधान-सभा द्वारा रचित नये शासन विधान को दिया

जाय। इस हालत में यदि कांग्रेस के वास्तविक दर्जे को पूरी तरह स्वीकार कर लिया जाएगा तो बाकी सारे काम आसान हो जाएंगे।

मेरी यह अपनी सम्मति है जिसकी चर्चा मैंने अपने किसी भी सहयोगी के साथ नहीं की है।

मो० क० गांधी

सेगांव
२० १ ३८

६

२६ जनवरी, १९३८

प्रिय महादेवभाई

नलिनी की बंधा यात्रा के विषय में हिंदुस्तान स्टैंडर्ड ने जो कहा है वह भेजता [illegible]। आज सन्ध्या-समय सुभाष और शरत से मिल रहा हूं कल फिर पत्र लिखूंगा।

कांग्रेस मन्त्रिमण्डलों की स्थिति के संदर्भ में मैं बापू का ध्यान एक बात की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं। यद्यपि मंत्रियों ने तो यह नहीं कहा है तथापि कांग्रेसियों ने अनेक स्थानों पर अपने वक्तव्यों में इस बात का खास तौर से जिक्र किया है कि कांग्रेसी मंत्रियों को कैदियों की रिहाई के मामले में पूरी स्वतंत्रता नहीं है। डा० गोपीचंद भार्गव से पंजाब के मुख्य मंत्री ने यह कहा कि कांग्रेसी मंत्रियों तक ने यह बात स्वीकार की है कि कैदियों की रिहाई के मामले में उन्हें पूरी आजादी नहीं है तो डा० गोपीचंद ने उत्तर में कहा कि पंजाब के मुख्य मंत्री ने अपनी बेबसी की बात स्वीकार नहीं की है इसलिए उन्हें कैदियों को रिहा करने में कोई अड़चन नहीं होनी चाहिए। इस दलील के खोखलेपन की बात छोड़ भी दी जाय तो भी ऐसी स्वीकारोक्ति के द्वारा हम स्वयं अपनी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाते हैं और लोग-बाग समझते हैं कि हम लोग गवर्नर के हाथों में कठपुतली मात्र हैं और स्वयं कुछ अधिक करने में असमर्थ हैं क्योंकि हम क्षमा करने का अधिकार नहीं है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठता है कि यदि हम अधिक कुछ नहीं कर सकते तो कुर्सी से क्यों चिपके हुए हैं? अभी तक मंत्रियों ने यह बात

स्वीकार नही की। पर यदि हम कठपुतली होने की बात बार-बार दोहरायेंगे तो कठपुतलीपन की परम्परा बन जाएगी। मेरे विचार म हमारी प्रतिष्ठा के लिए इससे अधिक साघातिक और कोई बात नही हो सकती। जब राजाजी ने दिल्ली म कहा कि गवनर हस्तक्षेप नही कर रहा है और सरकारी अमला पूरा सहयोग दे रहा है तो उन्होंने मर्यादा का परिचय दिया। हम एकमात्र ऐसे ही रुख के द्वारा इच्छित परिपाटी को जन्म दे सकते हैं।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
मारफत महात्मा गाधी
सेगाव वर्धा (मध्य प्रात)

७

कलकत्ता
२८ जनवरी १६३८

प्रिय महादेवभाई

हम लोगो ने कई बार बातें की। पहली बार जो बातचीत हुई उसम शरत बाबू सुभाष बाबू नलिनी बाबू डा० राय और मैं खुद शरीक थे। दोनो ओर से काफी गरमा गरमी रही। सुभाष बाबू न जो-कुछ कहा उसका निचोड यह है नलिनी के साथ सहयोग सम्भव नही है। उन्होने काग्रेस के साथ विश्वासघात किया है। मैं अपनी बात भल ही भुला दू पर जब तक वह मत्रिमडल म रहग मेरा उनका कोई सामाजिक सरोकार नही रहेगा। नलिनी बाबू न भी धमकी दी। इसके बाद बठक स्थगित कर दी गई और यह तय हुआ कि सबस पहले नलिनी बाबू सुभाष बाबू से शातिपूवक बातचीत करें और उसके बाद नलिनी बाबू अकेले मे कवल सुभाष बाबू से बात करें। इस बीच मैंने कई एक मित्रो को सुभाष बाबू म अकेले म बात करन को राजी कर लिया। परिणामस्वरूप तनाव म शिथिलता आ गई और मन का मल धुनने लगा। आज प्रात काल सुभाष बाबू से बात करके मैंने देखा कि स्थिति बदल गई है। सुभाष बाबू बोले ' जब नलिनी

बापू अंत में कांग्रेस में आने को तैयार हैं तो मैं पुरानी बातें भुला दूंगा। उन्हें एक मौका दूंगा उनके साथ अच्छे संबंध स्थापित करने की चेष्टा करूंगा और उनके मंत्रित्व काल में भरसक सहायता करूंगा।' तुम्हें इससे अधिक की आशा नहीं करनी चाहिए। अब तुम्हारे पास पत्रों का तांता लग जाएगा। इस बारे में सब कोई लिखेंगे—क्या नलिनी बाबू, क्या डा० राय और क्या सुभाष बाबू। सुभाष बाबू शायद तार भेजकर ही रह जायेंगे। पर जो-कुछ हुआ, बड़ा आनंददायी रहा। या इससे कलहप्रिय लोगों में खलबली मच गई है। यहां कई एक ऐसे लोगों का दल है, जिसे लड़ाई झगड़े का अंत होना प्रिय नहीं है। पर मुझे यकीन है कि ये लोग अपनी कुचेष्टा में सफल नहीं होंगे और जब बापू यहां आयेंगे और इस मेल मिलाप की नवजाग्रत भावना का मूर्तरूप देंगे तो अगले कदम की बात सोचना सम्भव होगा। वह अगला कदम यही है कि हिंदू मुस्लिम एकता कैसे हो, इस दिशा में भी मैंने आशा नहीं छोड़ी है।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
मा० महात्मा गांधी
सेगांव वर्धा

८

७ फरवरी १९३८

प्रिय महादेवभाई

आशा है कार्यकारिणी की चहल पहल का बापू के स्वास्थ्य पर कोई हानिकर प्रभाव नहीं पड़ा होगा।

आज सुबह वाइसराय से मिला था। उन्हें लार्ड लोदियन ने संघ-व्यवस्था पर बापू का फार्मूला दे दिया था। वाइसराय को फार्मूले के उद्देश्य के प्रति पूर्ण सहानुभूति है पर वह यह नहीं समझ पा रहे हैं कि वह नरेशों को निर्वाचन प्रणाली अपनाने के लिए कौन से अधिकार से काम लेकर राजी कर सकते हैं। विधान में केवल नामजदगी की व्यवस्था है और नरेशों को निर्वाचन प्रणाली अपनाने के लिए राजी करनेवाली कोई चीज नहीं है। मैंने वाइसराय का ध्यान सर मा० पी०

रामास्वामी अय्यर के उस भाषण की ओर आकर्षित किया जिसमें उन्होंने सारा उत्तरदायित्व सर्वोपरि सत्ता के ऊपर रखा है। वाइसराय उनके इस कथन से सहमत नहीं हुए। ब्रिटिश अधिकारी देशी रियासतों में प्रजातन्त्रीय व्यवस्था लागू किये जाने के विपक्ष में यद्यपि नहीं हैं, पर सर्वोपरि सत्ता नरेशों को कोई प्रगतिशील कदम उठाने को बाध्य नहीं कर सकती। भारतीय नरेश न तो संघ-व्यवस्था में शरीक होने में अभी से ही ना-हवाला शुरू कर दिया है। वाइसराय ने अभी इस विषय पर नरेशों से बातचीत नहीं की है, क्योंकि वैसा करने का यह अर्थ लगाया जा सकता है कि उन पर दबाव डाला जा रहा है। पर यदि उन्होंने नरेशों से निर्वाचनों के माध्यम से प्रतिनिधित्व की बात चलाई, तो उनमें यह धारणा बन जायगी कि वाइसराय अनुचित प्रभाव डाल रहे हैं। फलतः उन्हें बापू के सुझाव से असमंजस हुआ। उन्होंने कहा कि वैसे भी संघ व्यवस्था को मूर्त रूप देना दुःसाध्य हो रहा है। यदि उसमें केवल प्रजातन्त्रीय ढांचे को स्वीकार करनेवाली देशी रियासतों को ही लेने का निर्णय हुआ, तो उसके लिए अधिक नहीं तो कम-से-कम २० वर्ष तक रुकना पड़ेगा। केवल त्रावणकोर, मैसूर और बड़ौदा पर ही दृष्टि जमाये रखने से काम नहीं चलेगा। पिछड़ी हुई रियासतों की बहुतायत है। क्या वे प्रजातन्त्रीय व्यवस्था लागू किये जाने पर सहमत होंगी? वाइसराय को लग रहा है कि इस समस्या का हल तलाश करना उनके बूते के बाहर है। बस, अभी तो यही प्रतिक्रिया है।

तुम्हारा
घनश्यामदास

महादेवभाई देसाई
सेगांव, वर्धा

६

गोपनीय

२० फरवरी १९३८

पूज्य बापू,

जब मैंने वाइसराय से संघ व्यवस्था के बारे में बात की, तो साथ ही-साथ राजनैतिक बन्दियों का भी प्रश्न उठाया। वास्तव में दिल्ली के लिए रवाना होकर मैं लखनऊ में उतर पड़ा था, जहां मैंने पंतजी से विस्तारपूर्वक बातचीत की।

दिल्ली पहुंचकर वाइसराय से भेंट करते ही मैंने उनके सामने इस विषय पर पंतजी का दृष्टिकोण रखा। पंतजी ने अपने वक्तव्य में जो दलीलें पेश की थीं मैंने वे वाइसराय के सम्मुख पेश कीं। मैंने उन्हें बताया कि पंतजी जानते हैं कि वाइसराय का हस्तक्षेप किस रूप में आयेगा। पंतजी मौके पर मौजूद आदमी के साथ बहस कर सकते हैं पर इतनी दूर बैठे वाइसराय को विश्वास दिलाना क्योंकर सम्भव होगा? मैंने अपनी ओर से यह भी कहा कि उन्हें सी० आई० डी० तथा सैनिक सूत्रों से जो अतिशयोक्तिपूर्ण खबरें मिलती हैं उनकी ओर ध्यान देकर हस्तक्षेप पर उतारू होने के बजाय पंतजी की सहायता करना श्रेयस्कर होगा। पंतजी ने मुझसे जो बातचीत की उसके दौरान उन्होंने इस ओर भी संकेत किया था। वाइसराय सारी बातें नोट करते गये, और यद्यपि उन्होंने सब व्यवस्था तथा अन्य प्रसंगों पर दिल खोलकर और सौहार्द के साथ बात की, तथापि राजनैतिक बंदियों के बारे में उनका कहना सिर्फ इतना ही था आपने पंतजी का दृष्टिकोण मुझे पूरे तौर से और ज्यों-का-त्यों बता दिया। अब आप पंतजी को लिख दीजिए कि वह यह मामला मुझ पर छोड़ दें। यह जाहिर था कि वह इस विषय की चर्चा करना नहीं चाहते थे इसलिए मैंने भी बात आगे नहीं बढ़ाई। उनका विचार सहायक है या विपरीत है यह कहना कठिन है। उस दिन उन्हें जुकाम था। उसके बाद मैं पिलानी के लिए रवाना हो गया। जब मैंने सुना कि दोनों सरकारों ने इस्तीफा दे दिया है मैंने तुरंत दिल्ली लौटकर लैथवेट से बात की।

मैंने लैथवेट को बड़ा उदास पाया। सारे वाइसराय भवन पर उदासी के बादल छाये हुए थे। उसने आश्वासन दिया कि वाइसराय की संकट पैदा करने की रंच मात्र भी इच्छा नहीं है। विरोध की भावना का सर्वथा अभाव है। वाइसराय केवल इतना ही चाहते हैं कि प्रत्येक कैदी के मामले पर उसके गुण अवगुण के आधार पर गौर किया जाय वह एकसाथ सबकी रिहाई के खिलाफ हैं। पंतजी ने इस मुद्दे का अपने वक्तव्य में समुचित उत्तर दे दिया है पर वाइसराय के रुख में परिवर्तन नहीं हुआ है। मैं स्पष्ट देख रहा था कि गलती हुई है मैं यह भी देख रहा था कि इस संकट का न तो किसी ने न्योता दिया है न उसकी इन लोगों को आशंका ही थी। हमने इस प्रसंग की चर्चा के दौरान इस गतिरोध का अंत ढूंढ निकालने का प्रयत्न किया जो फार्मूला ग्राह्य लगा वह इस प्रकार था

१) रिहाई प्रत्येक मामले के गुण दोष का निर्णय करने के बाद की जाय।

२) बदला लेने की भावना से काम न लिया जाय बल्कि हरएक मामले पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जाय।

३) कैदियों का अतीत चाहे जो रहा हो, उनकी रिहाई के बारे में निर्णय

१०

२७ फरवरी १९३८

पूज्य बापू

जब मुझे पिलानी म आपका तार मिला कि तुरत दिल्ली लौट आऊ तो मैं चिंता मे पड गया। मुझे लगा कि समझौते की बातचीत के सदभ म मैं जो-कुछ करता आ रहा हू उसमे म कोई विशेष बात शायद आपकी रुचि के अनुकूल नही हुई होगी।

देवदास गाडी नही पकड सके थे व परसो के बजाय कल पहुचे। तब तक मैं आपके सदेशे के बारे मे बिलकुल अधकार मे रहा। इसलिए मैंने ऐसी परिस्थिति म स्वतत्र रूप से जो-कुछ करना ठीक समझा सो किया। अब मैं कुछ विस्तार के साथ बताता हू कि मैंने क्या-क्या किया।

दिल्ली आते समय माग म हिंदुस्तान टाइम्स की एक प्रति खरीदी और तब कही मुझे पहली बार पता लगा कि वाइसराय का वक्तव्य प्रकाशित हो चुका है। मैं वक्तव्य दो बार पढ गया। पढकर मुझे बडी निराशा हुई। मैं उससे कहा अधिक अच्छी चीज की आशा लगाये बैठा था पर मैं वाइसराय के स्वभाव स परिचित हू। इसलिए मुझे लगा कि वक्तव्य म जो कुछ कहने स रह गया है वह जान-बूझकर नही छोडा गया है। वक्तव्य की मुझ पर क्या प्रतिक्रिया हुई, सो मैंने तुरत लेखनीबद्ध कर डाला और उसे वाइसराय के पास भेज दिया। उसकी नकल आपके पास भेज रहा हू। यह सब मैंने आपका सदेश मिलने तथा आपकी प्रेस मुलाकात का ब्योरा जानने के पहले ही किया था। इससे आपको जाहिर हो जायगा कि मैंने अपने विचार अपने ही ढग से प्रस्तुत किये। कैदियो की व्यक्तिगत जाच-पडताल के बारे म मेरे विचारो को लेकर आपकी आशका गलतफहमी से उत्पन्न हुई दीखती है।

कल सुबह पतजी का टेलिफोन भी आया। उन्होने वाइसराय के वक्तव्य पर मेरी ही तरह निराशा व्यक्त की। पर मैंने उनसे कहा कि स्थिति से निपटने के लिए सबसे अच्छा तरीका यही है कि वह स्वय अपने गवनर के साथ बातचीत करें। वाइसराय का वक्तव्य अच्छा रहा या बुरा रहा अब वह वस्तुस्थिति बन चुका है इसलिए उसम जो कमी रह गई है उसे पूरा करना गवनर के हाथ म है। मैंने उन्हे यह भी वचन दिया कि मैं वाइसराय से गवनर को सहायतापूर्ण निर्देश भिजवा दूगा। पतजी ने कल दोपहर के बारह बजे गवनर से भेंट की और १ ८८

यह कहते प्रसन्नता होती है कि यह आशंका करने का कोई कारण नहीं है कि मंत्रियों के उत्तरदायित्वपूर्ण वैध कार्य में हस्तक्षेप किया जायगा। वास्तव में हम दोनों ही स्वस्थ परिपाटी चलाना चाहते हैं और हम दोनों को ही आशा है कि दोनों पक्षों की सदभावना से हम इस लक्ष्य सिद्धि में सफल होंगे।

मैंने आज सुबह फोन पर लेथवेट को यह मसौदा पढ़ सुनाया। उसे वह ठीक जचा और मेरे सुझाव पर उसने इसे गवनर के पास भेज दिया। उसने मुझे यह भी बताया कि गवनर का रुख सहानुभूतिपूर्ण रहेगा वहाँ कि कल रात ही उसकी गवनर से फोन पर बात हुई थी।

आज प्रातःकाल ११।। बजे पंतजी ने गवनर से भेंट की और १२ बजे वापस आकर मुझे फिर फोन किया। उन्होंने मुझे बताया कि बंदियों को लेकर अथवा उनकी व्यक्तिगत जाँच-पड़ताल को लेकर कोई कठिनाई उपस्थित नहीं होगी। साथ ही पंतजी ने गवनर से यह आश्वासन मांगा कि भविष्य में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं होगा। इसका हेग ने यह उत्तर दिया कि ऐसा करने से पद-ग्रहण से पहले की स्थिति हो जायगी। पंतजी ने निश्चित आश्वासन तलब किया कि विशेषाधिकारों का कभी भी प्रयोग नहीं किया जायगा। पंतजी ने मुझे फोन पर बताया कि उनकी यह निजी धारणा है कि इस समय जो मामला सामने मौजूद है उसे लेकर कोई कठिनाई उपस्थित नहीं होगी पर शासन विधान-सम्बन्धी मामले पर वह गवनर से कोई आश्वासन प्राप्त नहीं कर पाये। पंतजी ने मेरी सलाह मांगी। मैंने उनसे कहा कि उन्होंने बापू का वक्तव्य जिस रूप में ग्रहण किया है उस रूप में मैंने नहीं किया। कांग्रेस ने यह अच्छी तरह जानते हुए पद ग्रहण किया था कि विशेषाधिकार मूतरूप में विद्यमान है। पर कांग्रेस को गवनर जनरल तथा भारत सचिव दोनों ने ही ऐसे आश्वासन दिये थे कि दैनिक शासन प्रबंध को लेकर किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जायगा। मैंने पंतजी को बताया कि मेरी राय में वाइसराय अथवा गवनर अपने वचनों से कदापि पीछे नहीं हटेंगे। मैंने पंतजी से कहा कि वह गवनर से दोटूक बात करें, पूछें कि क्या वह दिये गये वचन से मुकरने का विचार कर रहे हैं। साथ ही मैंने पंतजी से यह भी कह दिया कि यदि वह ऐसा कोई आश्वासन प्राप्त करने की हठ पकड़ेंगे, तो वैसा आश्वासन उन्हें मिलेगा नहीं। तब संकट की नौबत आ जायगी और उसका दोष हमारे माथे मढ़ा जायेगा। यह कहा जाने लगेगा कि कांग्रेस संकट पैदा करने पर तुली हुई है। वास्तव में कुछ क्षेत्रों में तो यह अभी से कहा जा रहा है कि वर्तमान संकट कांग्रेस के नये सभापति ने पैदा किया है, कैदियों की रिहाई की बात तो एक बहाना मात्र है। मैंने उन्हें यह भी बताया कि इसके विपरीत यदि

पतजी मेरे मसौदे के आधार पर गवर्नर की सहमति सहित एक वक्तव्य जारी कर दें और यदि उसके तत्काल बाद बंदी लोग रिहा कर दिये जाएं तो कांग्रेस की स्थिति मजबूत हो जायेगी। यह संकट बंदियों की रिहाई के प्रश्न को लेकर आया और बंदियों की व्यक्तिगत जांच पड़ताल को लेकर मंत्रियों के परामर्श को गवर्नर द्वारा मान्यता देने के कारण टला ऐसा सबको लगेगा। हमारे पक्ष में एक स्वस्थ परिपाटी की स्थापना होगी। पर यह बात असंदिग्ध है कि यदि फिर कभी मंत्रियों के वैधानिक कार्य में हस्तक्षेप हुआ तो मंत्रियों का त्यागपत्र देने का वैधानिक अधिकार रहेगा। यह बात कि यह वक्तव्य गवर्नर की सहमति से दिया जा रहा है बेजा हस्तक्षेप के खिलाफ एक प्रकार का समझौता बन जायगा। पंतजी बोले कि वह मेरे कथन से सहमत हैं पर यह नहीं जानते कि यदि उन्होंने वैसा वक्तव्य दे डाला, तो बापू को उनका यह कार्य कैसा लगेगा। मैंने कहा कि जहां तक मैं समझता हूं उनका यह कार्य बापू को नापसन्द नहीं होगा पर साथ ही मैंने यह भी कह दिया कि उन्हें इसका स्वयं ही निर्णय करना चाहिए। यदि उन्हें ऐसा करना ठीक जचे, तो वह तदनुसार कार्य करें। मैंने पंतजी को यह भी सुझाया कि यदि उन्हें किसी तरह की शंका हो तो महादेवभाई को फोन करके उनसे बातचीत कर लें। पंतजी बोले कि बात और तूल पकड़ेगी और वह इस मार मामले से ऊबने लगे हैं। फलतः मैंने पंतजी को अपनी जिम्मेदारी पर यह सलाह दी कि वह मेरे मसौदे को समझौते का आधार बनाकर गवर्नर की सहमति से वक्तव्य जारी कर दें। मेरी समझ में यह यथेष्ट लगा और देवदास ने भी सहमति जाहिर की। इसके बाद मैं लेथवेट से मिला। उन्हें भी हेग का सन्देशा मिल चुका था। हेग का यह देखकर आश्चर्य हुआ कि पंतजी उन्हीं प्रश्नों पर उनके साथ बात कर रहे हैं जो पद ग्रहण करने का निर्णय लेने से पहले निपटाये जा चुके थे। लेथवेट ने कहा कि मैंने उसे जो मसौदा दिया था उस बातचीत को आधार बनाकर गवर्नर तथा उनके मंत्री उसमें इंगित तर्कों पर एक संयुक्त वक्तव्य जारी कर दें।

घर लौटकर मैंने पंतजी को फिर फोन किया और उनसे कहा कि गवर्नर से मिलकर पहले उनसे नपा-तुला आश्वासन तलब करें कि क्या वह मंत्रियों को उनके कार्य में भरसक स्वतंत्रता देने को प्रस्तुत हैं और उसके बाद उनके सामने वह मसौदा रखें। उन्होंने वैसा ही करने का वादा किया।

मुझे मालूम हुआ है कि इसके बाद पंतजी ने वल्लभभाई से बात की। उन्हें भी यह बात जची। परिणामस्वरूप मुझे संध्या के ५ बजे पंतजी का संदेश मिला कि सारा मामला तय हो गया है और वह वक्तव्य जारी करने जा रहे हैं। इसके बाद

वक्तव्य प्रकाशित हुआ जो आप देख ही चुके हैं। मेरे विचार में मैंने इस मामले में जो कुछ किया उसकी ठीक ठीक जानकारी इस पत्र के द्वारा मिल जायगी।

अब आपके पत्र के बारे में। दो बातों को लेकर आपका मुझसे मतभेद है। पहली बात व्यक्तिगत जाच पडताल की है। मुझे कहना पडता है कि आपको भ्रम हो गया। मैंने वाइसराय को जो नोट भेजा तथा बाद में जो जो कदम उठाये गये उनसे स्पष्ट हो जायेगा कि मैं बराबर यही कहता आ रहा हूं कि स्वयं मंत्री ही मामला की जाच पडताल करेगा। रही दूसरी बात, अर्थात कोई अड़चन पैदा होने की स्थिति में सारा मामला आपके ऊपर छोड़ने की बात, सो अब तो इस प्रश्न का निपटारा हो ही चुका है क्योंकि सभी बंदियों को रिहा कर दिया जायेगा। पर जब मैंने यह सुझाव दिया था तो मुझे लगा था कि मैं एक स्वस्थ परिपाटी को जन्म दे रहा हू। यदि युक्त प्रांत और बिहार के दण्डित कैदियों का मामला आप पर छोड़ा जा सकता था, तो बंगाल और पंजाब के कैदियों का मामला भी आप पर छोड़ा जा सकता था। पर अब यह प्रश्न असम्बद्ध बनकर रह गया है। महादेवभाई के पत्र का उत्तर मैं पिलानी पहुचकर दूगा।

इस पत्र के साथ भेजी एक कटिंग की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हू। यदि सुभाष बाबू अपेक्षाकृत अधिक संयम से काम नहीं लेंगे तो वह बंगाल में आपका कार्य दूभर कर देंगे।

स्नेहभाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मा० क० गाधी
वर्धा

११

वर्धा
१४ ३ ३८

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका लम्बा पत्र यथासमय मिल गया था पर आपने उसमें कहा था कि आप मेरे पत्र का जवाब देनेवाले हैं इसलिए मैं आपको लिखने से पहले आपके पत्र का

इंतजार कर रहा था। आपका पत्र बहुत सुंदर रहा उसमें आपने अपनी स्थिति अच्छी तरह स्पष्ट कर दी। पर उससे पहले के आपके पत्र ने बापू की धारणा को उचित सिद्ध कर दिया था, इसलिए उन्होंने तुरत आपका ध्यान आकर्षित करना अपना कर्त्तव्य समझा। वह तार मैंने नहीं भेजा था वह तो खुद आपके संदेश-वाहक की सूझ थी। उसने मुझसे पूछा, "क्या तार भेजूं?" मैंने जवाब दिया, "यही कि आप बापू का जरूरी पत्र लेकर दिल्ली जा रहे हैं।" वह मेरी बात गलत कैसे समझा, सो मेरी समझ में नहीं आ रहा है। पर आपको अपनी और बापू की सम्मति में जो अंतर प्रतीत होता है, उससे आपको व्यस्त नहीं होना चाहिए। ऐसा अन्तर तो रहेगा ही (वास्तव में वाइसराय के वक्तव्य से आपके रुख के बारे में बापू की धारणा की पुष्टि हुई)। पर अन्त भला सो सब भला।

पता नहीं बापू कलकत्ते में आपकी उपस्थिति चाहेंगे या नहीं। यदि चाहेंगे तो मैं आपको कल तार भेज दूंगा। आज बापू से नहीं मिल रहा हूं।

जमनालालजी के तार और आपके पत्र ने मनोविनोद की सामग्री जुटाई। मैंने आपका पत्र बापू को पढ़कर सुनाया तो वह खिलखिलाकर हंस पड़े। ब्याह शादी तो उत्सव का अवसर प्रस्तुत करता है और जमनालालजी ने आपके लिए कौतुक का साधन जुटाया इसके लिए आपको उनका कृतज्ञ होना चाहिए। पर इसकी बजाय आपने बेचारे की भर्त्सना की और उसे कांग्रेस कैबिनेट में स्थान पाने के अयोग्य ठहराया। अगले वर्ष वह कांग्रेस का सभापति होगा और आपको खबर भी न होगी। तब ऐसी नौबत भी आ सकती है जब आप प्रतिनिधि मंडल लेकर सभापति महोदय की हाजरी बजायें।

दामोदर का कहना है कि सेठजी ने वह तार भेजने को कहा था (मैं उसे दुल्हन के नाम से पुकारना ही पसंद करता हूं)। इस महान सेक्रेटरी ने अपनी ड्यूटी अपने मातहत को सौंप दी और इस मातहत को यह तक पता नहीं था कि 'दुल्हन' दुल्हे में कुछ अन्तर है। मैंने तार और आपकी चिट्ठी संभालकर रख छोड़ी है। जब सेगांव में जमनालालजी से भेंट होगी तो उन्हें दिखाऊंगा। संयोग की बात है कि जिस समय मैंने आपकी चिट्ठी बापू को दिखाई उस समय दामोदर अपनी पत्नी के साथ सेगांव में ही था। बापू ने मुझसे पता लगाने को कहा कि यह सब कैसे हुआ। मैंने कहा दामोदर अपने दुल्हे के साथ यहीं मौजूद है। उनसे सारी बात मालूम हो जायगी।

सप्रेम,
महादेव

१२

१७ मार्च, १९३८

प्रिय महादेवभाई

पत्रों में प्रकाशित इस संवाद से कि यात्रा के परिणामस्वरूप बापू का रक्तचाप ऊंचा हो गया है मुझे कुछ बेचैनी अवश्य हुई है पर मुझे आशा है कि यह जल्दी ही ठीक हो जायगा।

मैं तुम्हें बहुत-कुछ लिखना चाहता था पर फिर मैंने यह तय किया कि इन मामलों में व्यक्तिगत रूप से विचार विमर्श की जरूरत है। अगर तुम मुझे यह बता दो कि बापू का क्या कार्यक्रम है तो मैं तय करूंगा कि उनसे मिलना किस तरह सम्भव होगा। हरिजन-सेवक संघ की वार्षिक बैठक के अवसर पर बहुत सारी बातों की चर्चा हुई थी और जो निर्णय किये गए थे उन पर बापू की स्वीकृति जरूरी है।

आशा है बापू अपने मिशन में प्रगति कर रहे हैं। पर मुझे लगता है कि इस बार उनकी यात्रा इतनी सफल नहीं होगी जितनी पहले हुई थी। वातावरण अधिक अच्छा नहीं है और जो कुछ हो रहा है उसके लिए मैं मित्रों को ही अधिक दोषी मानता हूं। कांग्रेसी नेताओं ने बंगाल का वातावरण सुधारने के निमित्त कुछ नहीं किया।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

१३

कलकत्ता
२० अप्रैल १९३८

पूज्य बापू

सर सिकन्दर हयात खां आज यहां मुझसे मिलने आये थे। शायद वह कभी आपसे भी मिलें। शहीदगंज के मामले को लेकर उन्हें बड़ी चिंता है वह

साम्प्रदायिक समझौते के लिए भी आतुर हैं, पर वह खुद कुछ कर सकेंगे ऐसा मुझे नहीं लगता।

उन्हें जिन्ना की स्पीच अच्छी नहीं लगी। स्वयं मेरी धारणा है कि जिन्ना ने वसी स्पीच अपने अनुयायियों पर और भी अधिक प्रभाव डालने के लिए दी थी। उसे आपसे मिलना है इसलिए वह और भी शान गाठ रहा है। मेरी अपनी राय तो यह है कि उससे भेंट करके स्थिति में कोई सुधार होनेवाला नहीं है। कुछ भी कहिए मुझे यह आदमी कभी पसंद नहीं आया। वह मिथ्या गर्व से भरा हुआ है और कूटनीति में तो वह माहिर है। मेरी यह भी धारणा है कि अब उसका प्रभाव घटने लगा है। मुसलमानों में संगठन का अभाव है पर हमारी भी तो यही कमजोरी है। यदि मुसलमान एकमत होते, तो आपका उनसे बात करना कुछ फलप्रद भी होता, पर इस समय तो जिन्ना के लिए भी कुछ करना कठिन प्रतीत होता है।

मैं आपको यह इसलिए लिख रहा हूं कि आपसे वह मिलनेवाला है।

स्नेहभाजन
घनश्यामदास

पूज्य महात्माजी
सेगाव

१४

भाई घनश्यामदास

तुम्हारी बात समझा हूं। ठीक भी। सिर्फ आर्थिक दृष्टि को ही देखते हुए अवश्य अपनी सम्मति दो। मैंने तो इस दृष्टि से कहा कि यदि बाद में कांग्रेस की सम्मति की आशा की जाय तो वह नहीं मिल सकती है। अन्त में तो आर्थिक और राज्यप्रकरण में विरोध होना ही नहीं चाहिये। दोनों में अभेद है। राज्यकर्त्ता ने हमको यह नीति का पाठ दिया है। ग्राम शिक्षण के बारे में मुझे ५००० की दरकार होगी। शायद इतने ही उद्योग संघ के लिये। हरिजन सेवक संघ का तो है ही। इस बारे में और बातें करना होगा। बृजमोहन अच्छे होंगे। कृष्ण की खबर भी अच्छी होगी।

बापु के आशीर्वाद

२५.४.३८

१५

बापू का गश्ती पत्र

आत्म निरीक्षण

पिछली ७ अप्रल से मैं बहुत व्यथित हू। उस रात मुझे एक गन्दा स्वप्न आया था। स्राव होने से पहले ही मैं जगकर उठ तो गया परन्तु उससे मैं बहुत शर्मिन्दा हुआ। बस अनुभव के बाद उस रात नीद तो शायद ही आई हो। अशात अवश्य हुआ। छत पर जाकर टहलने के बाद कुछ शांति मिली। मन मे लगा कि सुशीला और प्रभावती जो मेरी खाट के पास ही सो रही थी उनसे सेवा कराने लायक मैं नहीं हू। अत प्रार्थना के बाद या पहले दोनो को आपबीती बताकर उनसे अपनी सेवा बन्द करने के लिए भी कहा। परन्तु सेवा बन्द करने की बात सुनकर दोनो को अच्छा नहीं लगा और बारह घटे बीतने से पहले ही मैंने अपना विचार बदल लिया और सेवा लेना चालू रखा। लेकिन मेरी व्यथा का अन्त नहीं हुआ। चादनी रात मे लज्जित करनेवाला एक अन्य प्रकार का अनुभव भी मुझे हुआ, जिसमे मेरी व्यथा और भी बढ गई। अपने आचरण मे कोई बाह्य परिवर्तन तो मैंने नहीं किया पर मन अपनी तैयारी मानो अब भी कर ही रहा था।

जिस समय मेरा मन इस भवर मे पडा हुआ था मुझे श्री जिन्ना से मिलना था। अत इस प्रसग को लेकर कुछ लिखना मुझे आवश्यक प्रतीत हुआ, और मैंने जो कुछ लिखा उसमे भारी शर्मिन्दगी का इजहार किया। मैं आत्म विश्वास खो बैठा था। मेरा ब्रह्मचर्य लज्जित हुआ।

बहुत मथन के बाद कल इस निश्चय पर पहुचा हू कि फिलहाल जब तक दूसरा के ऐसे स्पर्श बर्दाश्त करने को तयार न होऊ तब तक मेरे लिए ऐसे स्पर्श की आवश्यकता पडे ऐसी सेवा अनिवार्य हुए बिना लेना ठीक नहीं। जाहिर है कि विनोद या स्नेह मे तो स्पर्श नहीं ही करना चाहिए। यह परिवर्तन मेरे लिए बहुत महत्त्व का है क्योकि मेरे जीवन निर्माण का दारमदार इसी मान्यता पर है कि निर्दोष स्पर्श मे कोई पाप है ही नहीं। मैंने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया उससे पहले से और उसके बाद भी अनेक स्त्रियो का स्पर्श विनोद या स्नेह मे किया है। उसका कोई बुरा असर हुआ हो ऐसा मैंने अनुभव नहीं किया, न किसी स्त्री को उससे विकारवश होते ही देखा।

परन्तु ७ अप्रल के अनुभव के बाद एक शका पैदा हो गई—ब्रह्मचर्य पालन

का सतत प्रयत्न करते हुए भी मैं निर्विकार क्यो नही हुआ ? मेरी विचार शुद्धि और मन शुद्धि उत्तरोत्तर क्यो नही बढी ? दक्षिण अफ्रीका म जितनी निर्विकारता का अनुभव करता था, मैं कह सकता हू, उतनी निर्विकारता भारत म अनुभव नही कर सका। इसका जवाब कौन दे ?

फिर कल मुझे दीये की तरह स्पष्ट प्रतीत हुआ कि जो छूट मैंने ली उसका अपने साथियो के लिए निषेध करना भी दोषपूर्ण था। इतने वर्षों तक ऐसा मैंने किस तरह किया, यह मैं अभी समझ नही पाया हू। मुझे लगता है कि इस निषेध म मेरा अभिमान या द्वेष था। यदि मेरा प्रयोग अत्यन्त भयानक था तो मुझे उसको नही करना चाहिए था, और यदि वह करने योग्य था तो उन्ही शर्तों पर सभी साधको को वैसा करने का मुझे प्रोत्साहन देना चाहिए था। मेरा प्रयोग वस्तुत ब्रह्मचर्य के लिए लगाई गई वदिशो का उल्लघन ही था। ऐसे उल्लघन का अधिकार तो शुकदेव-जैसे मन वचन-कर्म से निर्विकार मुनियो को ही हो सकता है। ऐसी विचारधारा ने ही कल उपयुक्त निर्णय के लिए प्रेरित किया।

नाह्याभाई आदि के जो कटु अनुभव साबरमती (आश्रम) म हुए उनके मूल म मेरा प्रयोग ही था ऐसी मेरी मा यता है। ऐसे कितने अनाचारो के लिए मेरा यवहार जिम्मेदार होगा यह कौन कह सकता है ?

अहिंसा का पाठ पूर्णरूप से वही सीख सकता है जो ब्रह्मचर्य का पूरी तरह पालन कर सके। मैं अहिंसा का स्वय निर्मित सेनापति, अगर ऊपर बताई कसौटी पर खरा न उतरू तो फिर अहिंसा पगु चाल चले तो उसम नयी बात क्या है ? मगर मेरे अपूर्ण ब्रह्मचर्य ने भी अहिंसा को ठीक आधार प्रदान किया है। जब तक मैं ऐसा मानता हू तब तक अहिंसा का प्रयोग तो जारी रखूगा ही। अन्य आचरण या व्यवहार भी फिलहाल तो जैसा चल रहा है वैसा ही जारी रखूगा। भविष्य मुझे कहा ले जाएगा यह कौन कह सकता है ? मेरी प्रबल इच्छा तो ईश्वर के हाथ म सूत के कच्चे धागे की तरह रहने की ही है कि वह जैसे चाहे मोड दे।

साथियो का यह सब स्पष्ट कर देना मेरा धर्म था। किसी भी साथी को इस पर कुछ कहना हो उसे इसमे कोई विचार दोष प्रतीत हो, तो वह मुझे अवश्य बतायगा ऐसा मैं मान लेता हू।

(गुजराती मे)

१६

[illegible] मई १९३८

प्रिय महात्माजी

जब मैंने अमृत की चिट्ठी खोली और उसमें आपकी चिर परिचित लिखावट की पाती मिली तो आप स्वयं सोच सकते हैं कि मैंने उसे कितनी आतुरता के साथ पढ़ना आरम्भ कर दिया होगा क्योंकि आपकी लिखावट में संदेश मिले कोई सात महीने गुजर गये थे और आपके छोटे छोटे पुर्जों का दर्शन करने को आंख तरस रही थी। अतः जब मैंने विषय वस्तु पर दृष्टि डाली तो मुझे कितना मनस्ताप हुआ होगा इसकी आप ही कल्पना कीजिए (मेरी मनोदशा जैसी थी उसका वर्णन इस शब्द के द्वारा करना शक्य नहीं है)। मैंने उससे कुछ ही देर पहले टाइम्स में देखा था कि आप सीमा प्रांत की यात्रा पर हैं। इधर भारत से जो समाचार पत्र आए थे उनमें आपके बंगाल के दौरे का विस्तृत वर्णन था, साथ ही वाइसराय के साथ आपकी भेंट का ब्योरा भी था। दूर रहने पर भी मैं आपकी गति विधि का अध्ययन करती रहती हूं इसलिए मेरे लिए आप जो भार वहन कर रहे हैं उसका बोझ पड़ना स्वाभाविक है। और तिस पर आपको मेरे निजी पचड़े को लेकर माथा पच्ची करनी पड़ी। दिल बैठ रहा है।

मैं आपके पत्र का उत्तर देने की चेष्टा करूंगी। यदि वह कुछ लम्बा हो जाय तो क्षमा करियेगा क्योंकि मुझे लगता है कि विस्तार के साथ लिखना जरूरी है।

मैं जिस ढंग के काम में लगी हुई हूं उसका अनूठापन मेरे मित्रों की गहरी रुचि का विषय रहा है। इनमें से अधिकांश आराम के काम के अभ्यस्त हैं। इसका अर्थ यही है कि वे निश्चित वेतन पर अपने काम को स्थायी रूप देने में विश्वास रखते हैं इधर वे बूढ़े होने लगते हैं उधर उनके शुल्क में भी वृद्धि होती रहती है जिसके फलस्वरूप वे कुछ पैसा बचा सकते हैं कि जरूरत के वक्त काम आयेगा भविष्य के बारे में चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी। शाही श्रम कमीशन के साथ भारत जाने से पहले तक मैं भी इस ढंग के काम काज की अभ्यस्त थी और ऐसी ही विचारधारा अपनाए हुए थी। तब श्री एण्ड्रूज के सम्पर्क में आई और उसके बाद जब आप लंदन पधारे तो आपके साथ साक्षात्कार हुआ। तभी से मेरी मूल्यांकन की प्रणाली बदल गई है। आपको याद होगा कि जब आप लन्दन से विदा होने लगे थे तो आपने कहा था कि 'यहां किसी ऐसे व्यक्ति के मौजूद रहने की जरूरत है जो दोनों देशों के बीच सौहार्द का सम्बन्ध स्थापित करने के

निरन्तर काम करता रहे।' पिछले ६ वर्षों से मैं यही करती आ रही हूँ। मैं समझती हूँ कि यदि मैं यह कहूँ कि अन्य किसी पुरुष या स्त्री को इस किस्म का काम करने का अवसर नहीं मिला होगा तो यह वस्तुस्थिति का वर्णन होगा। जब मैं लोगों को बताने लगती हूँ कि यह काम मेरे जिम्मे कितने सहज भाव से आया तो वे विमोहित और चकित हो जाते हैं। बहुधा मुझसे इस प्रकार के प्रश्न किए जाते हैं 'आप किस संस्था के प्रति उत्तरदायी हैं?' मैं उत्तर देती हूँ, 'किसी भी संस्था के प्रति नहीं। मैं तो एकमात्र मिस्टर गांधी के प्रति उत्तरदायी हूँ।' फिर यह सवाल पूछा जाता है 'इस काम का व्यय भार किस रूप में वहन किया जाता है?' 'मैं उन्हें बताती हूँ कि आपको जब कभी काम कराना होता है तो आप अपने मित्रों से खर्च उठाने को कह देते हैं मेरे बारे में भी यही बात है।' फिर यह जिज्ञासा होती है 'आपको यह कैसे मालूम है कि इस काम का सिलसिला जारी रहेगा? फर्ज करिए यदि आप कोई ऐसा काम कर बैठीं, जिसमें भारत की सहमति न हुई तब फिर क्या होगा?' यह प्रश्न भी किया जाता है 'आपकी आयु दिन पर दिन बढ़ती जा रही है काम का भार आपके स्वास्थ्य पर प्रभाव डाल रहा है। भविष्य के बारे में कुछ सोचा है?' आदि।

मुझसे जब कभी इस तरह की बातें की जाती हैं और इन कई वर्षों में अनेक बार की गई हैं तो मैं अपना व्यावहारिक दृष्टिकोण पेश करती हूँ जो उम्र के साथ साथ दृढ़तर होता जा रहा है। पहली बात तो यह है कि यह स्थिति जितनी कठिन लगती है उतनी व्यवहार में कभी नहीं रही। वास्तव में, जिस किसी को आपके साथ काम करने का सुयोग मिलेगा, वही इस कथन की पुष्टि करेगा। मुझे आपने एकमात्र यही हिदायत दी थी "भगवान तुम्हारा पथ प्रदर्शन करेगा" और यद्यपि मैं अनेक समितियों के साथ मिल जुलकर काम करती हूँ मैं स्वतंत्र हूँ और केवल आप ही के प्रति उत्तरदायी हूँ। रही रुपये पैसे की बात सो मैं इन लोगों से कहती रहती हूँ कि मैं उतना ही लेती हूँ जितने की मुझे जरूरत है अथवा जितना काम काज जारी रखने के लिए जरूरी है। भारत एक दरिद्र देश है उसके अधिकांश लोग दुर्भिक्ष के शिकार हैं मैं इस देश से इससे अधिक लेने की बात सोच भी नहीं सकती। रही मेरे भविष्य की बात सो उसे लेकर मुझे कोई चिंता नहीं है। आपको जब कभी ऐसा लगे कि इस काम की जरूरत नहीं है तो फौरन बता दीजिए और मैं अपना सेवा-कार्य जारी रखने के लिए कोई और क्षेत्र ढूँढ लूँगी।

मैं इन लोगों को बताती [redacted] कि मैं जिस ढंग के काम में लगी हुई हूँ वह मुझे इस विषय में परेशान होने का समय तक नहीं देता।

आप स्वयं ही देखेंगे कि मेरा यह रुख मेरे प्रश्नकर्ताओं के रुख से कितना

भिन्न है। मेरा खयाल है कि मेरे इष्ट मित्र मेरे इस रुख को देखकर मुझे इस स्थिति से त्राण दिलाने की बात सोच रहे हैं। मेरी तो भगवान से यही प्रार्थना है 'हे भगवन! मेरे हितैषियों से मेरी रक्षा करो।' आप कहते हैं कि मुझे उनकी भ्रांत कार्यशैली का बुरा नहीं मानना चाहिए। पर अभी तो मैं सचमुच बुरा मान रही हूं। आपने यह भी कहा है कि मुझे 'अटकल' लगाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए कि आपको मेरे बारे में किसने क्या लिख मारा है। मैं पता लगाना तो जरूर चाहती हूं पर आपका आदेश सिर माथे। यह सारा विषय घोर अरुचिकर और गलत है भले ही यह सब सदाशय से प्रेरित होकर किया गया हो। मैंने आपसे सदैव सीधा सम्पर्क बनाये रखा है यदि मैं किसी विपत्ति में पड़ूंगी तो आपको साफ-साफ लिख भेजूंगी। मेरा विश्वास है कि आप यह बात जानते हैं।

× × ×

आपने मेरी आर्थिक स्थिति का ठीक ठीक विवरण जानना चाहा है। मेरी माताजी का १९३१ में देहान्त हुआ था। वह मेरे लिए जितना छोड़ गई हैं उसका वार्षिक ब्याज २० पौंड होता है कभी कभी घटकर १८ पौंड या १७ पौंड भी रह जाता है यह ब्याज की दर पर निर्भर करता है। बस, इस रकम को छोड़कर बाकी के लिए मुझे स्वयं परिश्रम करना पड़ता है। आपने १९३१ में मुझसे पूछा था कि मुझे जीवन निर्वाह के लिए कितने की जरूरत होगी। मैंने उत्तर दिया था ५ पौंड प्रति सप्ताह की। आपको यह रकम अधिक लगी होगी पर जिसे लन्दन जैसे नगर में रहना और भांति भांति के प्रभावशाली क्षेत्रों में घूमना पड़ता है उसके लिए यह रकम अधिक नहीं है। आपने कहा था कि इतनी रकम मेरे लिए बैंक में पहुंचती रहेगी। ऐसा ही होता रहा है।

जब मैंने आपसे बात की थी उस समय मुझे इस बात का बिलकुल अनुमान नहीं था कि काम-काज किस रूप में विकसित होगा अथवा उसके सम्पादन के लिए कितने खर्च की जरूरत होगी। एक वर्ष काम करने के बाद मुझे पता लगा कि कितने की जरूरत पड़ती है क्योंकि मुझे खर्च निभाने के लिए १०० पौंड लेने पड़े थे। १९३२ में जो-कुछ हुआ, आप जानते ही हैं। ढेर-की-ढेर सामग्री जो अन्य किसी के पास नहीं आती थी मेरे पास आकर जमा होती थी और उसका लोगों और संस्थाओं में वितरण करना आवश्यक होता था। समुद्री तारों का तांता लगा हुआ था टेलिफोन की घंटी बजती रहती थी डाक-खर्च उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था। सभा-सोसाइटियों में जाना वहां से लौटना भेंट मुलाकात करना—इन सबमें काफी खर्च हो रहा था। समाचार पत्रों का साप्ताहिक बिल भी बढ़ गया था। कोई ऐसा स्थान सुरक्षित रखना भी आवश्यक था जहां सामग्री और

चिट्ठी-पत्री फाइल की जा सके तथा जहां आकर लोग मुझसे मिल जुल सकें। मुझे एक सक्रेटरी की बहुत जरूरत थी। मुझे इस बात की विशेष रूप से चिन्ता थी कि कोई संस्था खड़ी न हो जाय। दुनिया संस्थाओं के भार से दबी हुई [redacted]। मैंने जो संस्थाएं विद्यमान थीं उन्हीं के माध्यम से काम चलाने का संकल्प किया और अपने-आपको ही सूचना और सम्पर्क का स्रोत बनाए रखना ठीक समझा। मैंने अपने आपको यथासम्भव स्वतन्त्र रखने की चेष्टा की आवश्यकता से काम लिया और जरूरत पड़ने पर मौके पर मौजूद रहने की ओर बराबर ध्यान दिया। एक सक्रेटरी रखने के बजाय मैंने अपनी बहन रूथ को अपना साथ देने के लिए बुलाना श्रेयस्कर समझा। मां के देहान्त के बाद रूथ खाली हो गई थी और मैं जानती थी कि मैं जिस ढंग के काम में लगी हुई हूं उसमें उसकी दिलचस्पी होगी। साथ ही वह घर का काम-काज संभालने में जितनी किफायतशारी बरतती उतना मेरी जान-पहचान की किसी अन्य लड़की के लिए सम्भव नहीं होगा। साथ ही वह मेरे सेक्रेटरी के रूप में भी उपयोगी होगी। पर यदि वह यह सब करेगी तो उसके लिए और कोई काम करना सम्भव नहीं होगा।

आप जेल में थे। उन्हीं दिनों हेनरी पोलक भारत आनेवाले थे। वह मेरी असहायावस्था से परिचित थे। उन्होंने कहा कि यदि मैं अपने सारे खर्च का तखमीना तैयार करके उन्हें दे दूं तो वह भारत पहुंचकर इस सम्बन्ध में कुछ करेंगे। मैंने कहा, १० पौंड यथेष्ट होंगे। मुझे बाद में पता चला कि यह रकम प्रति मास मेरे बैंक में मेरे खाते में जमा होती रहेगी। मैंने जो १०० पौंड निकाल रखे थे वे मुझे अदा कर दिए गए। जो-कुछ खर्च हुआ है उसका पाई-पाई का हिसाब सुरक्षित है और मैं स्वयं अपने सन्तोष के लिए हेनरी पोलक से इस हिसाब-किताब पर बीच-बीच में निगाह दौड़ाने के लिए कहती रहती हूं।

सारा खर्च कुछ कुछ इस प्रकार किया जाता है:

मैंने जो कमरा अपने काम के लिए ले रखा है, उसका वार्षिक भाड़ा २५ पौंड होता है। अपनी बहन को मैं १ पौंड प्रति सप्ताह देती हूं। (यदि कोई सक्रेटरी रखती तो इसका तिगुना देना पड़ता।) साहित्य, जिन संस्थाओं के माध्यम से मैं काम करती हूं उनका वार्षिक चन्दा, डाक खर्च, टेलिफोन, समुद्री तार आदि में बाकी रकम खप जाती है। कभी-कभी इन सबमें अधिक खर्च हो जाता है पर मैं काम चला लेती हूं। उदाहरण के लिए, जब मेरी एक सहेली को आस्ट्रेलिया में मेरी आर्थिक स्थिति का पता चला तो उसने मेरे छुट्टी जाने के लिए कुछ रकम भेजी। छुट्टी कैसे मनाई जाती है, इस बारे में मेरे विचार मेरी इस सहेली के विचारों से भिन्न हैं। इसलिए छुट्टी मनाने के बाद जो रकम बची वह मैंने काम

म ली। इसक अलावा म जब कभी किसी काम का आरम्भ करती हू मरी यह कोशिश रहती है कि वह किसी न किसी सस्था क माध्यम स हो। मैं वसी सस्थाओ को भारत के प्रति उनके उत्तरदायित्व की याद दिलाती हू। यह काय शुरू म चल रहा है, तफ्सील म जाने की जरूरत है क्या ?

आपका पता ही है कि मैं भारत मत्री गोष्ठी की जनरल सक्रेटरी हू। इस प्रकार क काम का सारा खच यह गोष्ठी उठाती है। इस गोष्ठी क द्वारा जो काय होता है उसम डाक-व्यय तथा टलिफान वार्ता का एक एक पनी का हिसाब अलग से रखा जाता है। यह गोष्ठी जो पुस्तकें प्रचार-काय क लिए छपवाती है उसक लिए अलेक्जेडर विल्सन अलग स निधि एकत्र करत हैं। रकम उन्ही स आती है जो इस तरह के काय म आस्था रखत हैं वे इसम सक्रिय रूप स भाग भी लते हैं। यह धन अधिकतर क्वेकरो स आता है। इस प्रकार मुझे इस कोटि क लोगो के सहयोग स भी लाभ उठाने की सुविधा रहती है। पर मेरा काय इस सस्था की सेक्रेटरी की हैसियत स नही एक व्यक्ति की हैसियत स होता है। अपन दीघकालीन अनुभव के फलस्वरूप मरे लिए इस हैसियत स काम करना आसान हो गया है।

सर्वेटस आफ इण्डियावालो न हिलवाद के लिए ल दन स्थित सवाददाता की हैसियत से मुझस लख लिखन का आग्रह किया था और इसक लिए १० पौंड वार्षिक दन का वचन भी दिया था। इस तरह क लखो की सामग्री एकत्र करन क लिए भिन्न भिन्न प्रकार के काय क्षेत्रो की जानकारी हासिल करन की जरूरत होती है इसलिए मैं इस काय का हिसाब भी बिलकुल अलग रखती हू।

बस महात्माजी आपन मेरे कार्यो और हिसाब किताब का जो ब्योरा चाहा था वह मैंने सौ प्रतिशत दे दिया है। मैं इतना ही कह सकती हू कि मुझे जो-कुछ मिलता है उस मैं थाती के रूप म ग्रहण कर एक एक पनी समझ बूझकर खच करती हू। मैं जो डायरी रखती हू उसे पढकर तथा टेलिफोन पर जो-जो बातें करती हू उस सुनकर और मेरा पत्राचार देखकर मर काय का सही चित्र उभर आता है कि मै यहा क्या कुछ कर रही हू।

आप पूछते है कि मैं आपसे क्या अपक्षा रखती हू। मरे बार मे आपस क्या कहा गया है इसका मुझे बिलकुल ज्ञान नही है इसलिए मैं स्वय नही जानती कि इस प्रश्न का क्या उत्तर दू ! मैंने अपने इस पत्र के द्वारा जो बात आप तक पहुचाने की कोशिश की है उसस आपको पता लगेगा कि अपेक्षा नाम की कोई चीज मेरे दिमाग म नही है। मुझे यदि किसी बात की अपेक्षा है तो वह यही है कि निकट भविष्य मे मुझे आपसे बात करने का अवसर मिले। इधर कई महीनो से यह

विचार मन में आता रहा है। जब मिस्टर रिडना यहां आये थे तो मैंने उन्हें बताया था कि मैं भारत आने के लिए बहुत उत्सुक हूं और उनसे पूछा था कि क्या उनके लिए मेरी समुद्र यात्रा का प्रबन्ध करना सम्भव होगा। उन्होंने कहा था कि जब भी मेरा भारत आने का इरादा हो उन्हें सूचना दे दूं। इधर कुछ महीनों में स्थिति बहुत-कुछ बदल गई है। मैं चाहती हूं कि आपके साथ बैठकर सारी बातों का विश्लेषण करूं ताकि यह पता लग सके कि इस काम को जारी रखने के बारे में आपका क्या विचार है। उसे जारी रखना चाहिए या खत्म कर देना चाहिए। भारत जिस तेजी से बदल रहा है उसे ध्यान में रखते हुए सम्भव है आपने जो छूट दे रखी है और मुझ पर जितना भरोसा कर रखा है उसे चुनौती मिले। और अन्य किसी परिस्थिति में यह काम जारी रखना सम्भव भी नहीं होगा।

पत्रों का माध्यम तो जड़ माध्यम है। मैं आपसे साक्षात्कार करके बातचीत करने की इच्छा रखती हूं। मैं जानती हूं बातचीत से आपको थकान हो जाती है पर यदि मैं वहां पहुंच सकूं तो मैं सेवाग्राम आकर आपके कुछ मिनट लेने का प्रयास करूंगी, जिससे आपके मन की बात जानी जा सके। मैं यह चाहती हूं कि मेरा वहां जल्दी ही आना सम्भव हो, जिससे आपके साथ बात करने का शीघ्र अवसर मिले। उसके बाद मैं कुछ स्थानों का भ्रमण करना चाहूंगी जिससे अपनी आंखों से देख सकूं कि क्या क्या परिवर्तन हो रहे हैं। आगामी दिसम्बर में अखिल भारतीय महिला-परिषद का अधिवेशन है। मैं उसमें भी भाग लेना चाहूंगी। उसके बाद यहां लौट आऊंगी।

बस मेरे दिमाग में यही चीज काम कर रही है—वह नहीं कि जिसकी आपने पत्र में चर्चा की है और जिसका जिम्मा मेरे मित्रों ने उठा लिया है। क्या मैं अपना अभिप्राय स्पष्ट करने में सफल हुई हूं? मेरे लिए यह घोर चिंता का विषय है कि अन्य सबको छोड़ आपको मेरे विषय में इस प्रकार अनावश्यक रूप से व्यस्त होना पड़ा।

मैं अपना प्रेम भाव भेजती हूं और आपके उत्तर की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रही हूं कि मेरे वहां थोड़े समय के लिए आने के बारे में आपका क्या अभिप्राय है?

स्नेहभाजन
अगाथा हैरिसन

नत्थी

१७

मगनवाडी,
वर्धा (मध्य प्रात)
४ जून १९३८

प्रिय घनश्यामदासजी

इधर कुछ दिनो से आपको लिखना समव नही हुआ। व्यापार सबधी वार्ता भग हो गई इसका मुझे बिलकुल दुख नही है। हम एक स्वतत्र राष्ट्र के नाते ही सम्मानपूर्ण समझौते की बात चला सकते हैं। मालूम पडता है कि शिवराव ने लकाशायर प्रतिनिधि मडल के प्रधान से लम्बी मुलाकात की, और उसके दौरान उसे सुझाया कि ऐसे समझौते की बात तभी सफल हो सकती है जब बापू जैसी हैसियतवाला कोई व्यक्ति उसमे शरीक हो। उसने यह भी कहा कि वैसी हैसियत वाले व्यक्ति को ब्रिटिश कैबिनेट बुलाये। मेरा खयाल है कि शिवराव ने यही बात कोई आधा दजन लोगो से कही थी। बापू की इग्लैड यात्रा की मनगन्त खबर की जड मे यही बात रही होगी। अगाथा ने व्यर्थ ही यह पूछने के लिए समुद्री तार भेजने मे पैसा बरबाद किया कि बापू के शीघ्र ही इग्लैड आने की सभावना है क्या?

आप मेरे पास नियमित रूप से कटिंग भिजवा रहे हैं तदर्थ धन्यवाद। रही बापू की हस्तलिखित सामग्री की बात सो हरिजन के लिए तैयार सामग्री 'हरिजन' कार्यालय मे सुरक्षित है और मैं उसे बाहर निकालना कदापि नही चाहूगा। आजकल बापू स्याही से बहुत कम लिखते हैं। हा व्यक्तिगत पत्रो की बात दूसरी है। पर मै इस पत्र के साथ एक तार भेज रहा हूँ जिसका उत्तर बापू ने उसकी पीठ पर स्याही से लिखा है। आप चाहे तो उसे अपने लदन के मित्रो के पास भेज दें।

बापू देखने मे तो ठीक ही लगते हैं। इस समय वह अतर्दृष्टि के लम्बे दौर से गुजर रहे है और गहरे आत्मचिंतन मे है। इस आत्मनिरीक्षण का किस रूप मे अत होनेवाला है इसका कुछ आभास उनके पेंसिल से लिखे नोटस और अनेक मित्रो को भेजे जा रहे गश्ती पत्रो से लगेगा। हो सकता है देवदास ने आपको यह पहले से ही बताया हो। यदि नही बताया है तो अब देख लीजिए और आपके मानस पर इसकी क्या प्रतिक्रिया हुई सो लिखिए।

सप्रेम,
महादेव

१८

१० जून, १९३८

प्रिय महादेवभाई

फादर एल्विन ने अपने आश्रम के लिए सहायता मांगी है। मुझे याद पड़ता है कि उनमें और बापू में किसी बात को लेकर थोडी गलतफहमी हो गयी थी। उनके बारे में बापू की पहले जसी ही अच्छी धारणा है या उसमें कुछ परिवर्तन हुआ है यह मैं नहीं जानता। मैंने अभी उनके पत्र का उत्तर नहीं दिया है और जब तक तुम्हारा पत्र न आये उत्तर नहीं भेजूंगा। बापू उनके बारे में क्या विचार रखते हैं सो लिखो।

मेरे कई पत्रों के जवाब में तुम्हारा एक पत्र आज मिला। तुमने यह नहीं बताया कि मैंने मित्र को जो छोटा सा लेख भेजा था उसे देखने का बापू को समय मिला या नहीं। यदि बापू बहुत कार्यव्यस्त हों, तो इस बात को लेकर उन्हें परेशान करने की जरूरत नहीं। मैं बापू के विचार स्वयं अपने पथ प्रदर्शन के लिए चाहता था और मुझे लगा था कि ऐसे मामलों में मेरे लिए अपने विचार व्यक्त करना जरूरी है इसलिए मैंने इस चीज को इतना महत्त्व दिया। भले ही मैं उन्हें खालिस अपने विचार कहकर व्यक्त करूं, लेकिन बापू का थोडा बहुत महत्त्व तो है ही।

बापू की गुजराती गश्ती चिट्ठी के सम्बन्ध में मैं बापू को अलग से एक पत्र हिन्दी में लिख रहा हूं।

भारत ब्रिटेन व्यापार समझौते की जो बातचीत चल रही थी उसके भंग होने की बात को लेकर बापू कुछ कहना चाहेंगे या नहीं, यह मैं जानना चाहूंगा। उनका दृष्टिकोण उन कतिपय लोगों के लिए सतर्कता का प्रतीक सिद्ध होगा जो अब भी दोनों देशों के बीच समझौते की बात चलाने में लगे हुए हैं।

हम लोग जितना कुछ कर सकते थे, किया और समझौता करने के लिए जितनी दूर जा सकते थे गए, फिर भी हमें समुचित उत्तर नहीं मिला। यों एक प्रकार से मुझे चिन्ता से छुटकारा मिला क्योंकि यदि समझौता हो जाता तो उसका औचित्य सिद्ध करने की जिम्मेदारी मेरे ऊपर आ जाती। लकाशायर के प्रतिनिधि मंडल ने मेरी दलील को मुनासिब तो समझा, और उन्होंने मेरी स्पष्टता की दाद भी दी पर उन्होंने बदले में कुछ भी देने की तत्परता नहीं दिखाई।

मैंने शिमला में शिवराव से कई बार बातें कीं। मुझे मालूम था कि वह लोगों

से कहता फिर रहा है कि लदन से अनेक लोगो को बापू को बुलावा आया है। उसने कोजियर को भी लिखा था। उसका सुझाव बुरा नही था, पर उसे स्वीकार किया जायगा ऐसा मुझे कभी नही लगा। अंग्रेज मानस हद दर्जे का रूढ़िवादी होता है और मथर गति से चलता है। उन लोगो के लिए वाछनीय सुझाव भी अग्राह्य हो जाता है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१९

मगनवाडी
वर्धा
१७ जून, १९३८

प्रिय घनश्यामदासजी

चरखा सघ के लिए ऋण के बारे म आपका पत्र मिला। मुझे कहना पडता है कि इम्पीरियल बक के साथ जो बातचीत चल रही थी वह निष्प्रयोजन सिद्ध हुई। अब इसका बदोबस्त करने के लिए स्वय आपको प्रयत्नशील होना पडेगा। इम्पीरियल बक ने जो शर्तें लगाई है उन्हे स्वीकार करना सभव नही है। वे लोग खादी के स्टाक पर मिल के मूल्याकन का ७५ प्रतिशत तो देने के लिए तैयार नही हैं बल्कि इसके विपरीत इडियन बक ने हमारी यह शर्त मान ली है कि हमारे पास खादी का जितना स्टाक हो उस पर जितनी लागत आई हो, उसका ५० प्रतिशत रुपया हम निकालने को स्वतंत्र रहेगे। इस पत्र के साथ अखिल भारतीय चरखा सघ का पूरा तलपट भेज रहा हू। इसके आधार पर आप अन्य बको से बातचीत चला सकते हैं। हम कुल मिलाकर ६ लाख की जरूरत है। हमे बक आफ इन्डिया से १॥ लाख मिल चुका है। अब हम ४॥ लाख और चाहिए।

बापू के गश्ती (गुजराती) पत्र के बारे म आपका पत्र मुझे अच्छा नही लगा। हो सकता है कि आप इसका ठीक-ठीक अभिप्राय नही समझ पाए हो। आशा है आप यह बात हृदयगम करेंगे कि बापू ने स्त्रियो के सस्पर्श पर पूरी पाबदी लगाने

की बात कही है—यह निषेधाज्ञा अमल में लाई जा रही है—चाहे वह स्पर्श सेवा शुश्रूषा के संबंध में हो अथवा साधारण दैनिक कार्य के निमित्त हो। या वे इस सीमा तक मुक्त थे कि स्नान करते समय भी स्त्रियां मौजूद रह सकती थीं। अब वह इसके विपरीत सिरे पर पहुंचे हैं। पता नहीं आपको यह दूसरी कैद ग्राह्य है या नहीं। मुझे तो इस पर घोर आपत्ति है और उनके अपने इस अद्भुत प्रयोग को 'हरिजन' में प्रकाशित करने पर उससे भी बढ़कर आपत्ति है। 'छत पर चढ़ कर सत्य के प्रयोगों की घोषणा करने की भी कोई हद होती है'—फ्रेंच भाषा में एक मुहावरा है। पर यह हमारे जैसे साधारण कोटि के व्यक्तियों पर ही लागू होता है, बापू जैसे असाधारण मानवों पर नहीं।

सप्रेम,
महादेव

२०

मगनवाड़ी
वर्धा
२४-६-३८

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके दोनों कृपा पत्र मिले—एक पत्र कटिंगों के साथ और दूसरा निजी। बड़ा अनुगृहीत हुआ।

बंगाल के हरिजन-सेवक संघ के अध्यक्ष के सम्बन्ध में बापू सतीश बाबू से लिखा-पढ़ी कर रहे हैं। उनका उत्तर आते ही आपको लिखेंगे।

आपको मेरी दशा पर तरस आता है सो ठीक ही है। आप जानते ही हैं कि मेरे दफ्तर का कार्यभार केवल एक आदमी संभालता है—मैं खुद। चौदहवें लु का दावा था कि वही राज्य है। उससे किसी ने पूछा कि राज्य का क्या अर्थ है उसने उत्तर दिया 'राज्य? मैं ही तो राज्य हूं।' मैं भी यह मानता हूं कि दफ्तर मैं ही तो दफ्तर हूं। हां मेरे इस कथन में न गर्वोक्ति है न शक्ति-सामर्थ्य। दा का ही सर्वथा अभाव है। पर अपने साधारण काम-काज के बाद भी ... मैं द समय जिस दौर से गुजर रहा हूं उसके नैतिक और भावुक प्रभाव के भार का म

सूस करता हू। मारी कहानी सुनाकर आप म ऊब पदा करना नहीं चाहता। अपना दुखडा अपन ही पास रखो बहुत सुदर नीति है पर मैं इस पर अमल करने म कभी कभी चूक जाता हू।

अब आपके निजी पत्र पर आता हू। आपने जो-कुछ कहा है वह मरे जस साधारण कोटि क आदमी क विषय म अवश्य लागू होता है। पर स्त्री पुरुष अस्पृश्यता को हम लोगो न हद तक पहुचा दिया है। हम लोगो ने इस दिशा म जितने कठोर प्रतिबंध लगा रखे हैं उनके फलस्वरूप न हमारा नैतिक स्तर कुछ अधिक ऊचा उठा है न पाश्चात्य देशो की इस मामल म अपेक्षाकृत छूट उनक नतिक ह्रास का ही कारण सिद्ध हुई है। समझदारी का तकाजा यही है कि बीच का माग अपनाया जाय। मेरा तो विचार है कि मरे जैसे साधारण कोटि के लोगो को भी स्त्री मात्र क सहज और कभी-कभी आवश्यक खुल्लमखुल्ला सपक क विचार मात्र स भिदकना नही चाहिए। हा लुक छिपकर सपक स्थापित करने पर निश्चित रूप स प्रतिबध होना चाहिए इस मामले म मेरी आपके साथ पूण सहमति है। पर स्त्री को अस्पृश्य और अजनबी हम न समझें। क्या आपको पता है कि पुरान समय म स्पार्टा म लिकारगस ने यह नियम बना दिया था कि तरुण तरुणी एक-दूसरे क सपक म—कभी-कभी पूण नग्नावस्था म आयें, जिसस एक दूसरे क प्रति गोपनीयता और अज्ञान की भावना को पूरी तरह मिटाया जा सक। क्योकि गोपनीयता बरतन स ही कुरुचि को प्रोत्साहन मिलता है। पर इन सारी बातो के बावजूद मैं इस बारे म आपसे सहमत हू कि आध्यात्मिक उद्देश्य की पूर्ति क लिए क्या आवश्यक है इसका निणय एकमात्र बापू पर ही नही छोड देना चाहिए। मैं तो यहा तक कहूगा कि यदि इसके लिए उनका वन म जाकर रहना आवश्यक हो तो उनके उस काय का समथन करने म मैं सकोच नही करूगा। हा, यह भी सभव है कि दूसरे ही क्षण मैं अपने निश्चय पर स्वय ही पछतावा करन लगू क्योकि ऐसा करने स बापू के महात्माओ-जसे आचरण की महत्ता मे कमी आ जायेगी। वह जन समुदाय क बीच और आधुनिक जीवनचर्या के मध्य शांति और सयम का हाथ से नही जाने देते हैं यही उनकी विशेषता है। वास्तव मे, उनका यह गुण ससार के लिए एक महान् देन है। मैंने जिस सकल्प की कल्पना की है यदि उस कार्यान्वित किया जाय तो उनकी इस देन का मूल्य बहुत घट जायगा। वतमान प्रश्न के सदभ म भी यही बात लागू होती है। पर इस मामले पर हम दोनो अपनी असहमति अक्षुण्ण रखने को सहमत हो गये हैं।

बापू का रक्तचाप पुन ऊचा हो गया है और मुझे लगने लगा है कि हो सकता

है वह हमारे मध्य अधिक काल तक न रह पायें। ईश्वरेच्छा बलीयसी। बंदियो की समस्या, सभव है, उन्हे पुन बगाल खीच ले जाय।

सप्रेम
महादेव

२१

२, ऋानवान कोट
एल्बट ब्रिज कोट
एम० डब्ल्यू० ११
३ जुलाई १९३८

प्रिय महात्माजी

आपका २६ जून का पत्र जिसमे आपने भूलाभाई के साथ अपनी बातचीत की चर्चा की है अभी मिला है। इस बाबत आप जो कहते हैं उसका जिक्र एक अलग पत्र म करूगी। आपके पत्र के अतिम वाक्य से चिन्ता उत्पन्न हुई है मैंने तुम्हें जो निजी चिट्ठी लिखी थी उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हू।' वह चिट्ठी मुझे २ मई को मिली थी और मैंने उसका उत्तर तुरत दे दिया था। उसे मैंने निजी शब्द स चिह्नित कर दिया था, ठीक जिस प्रकार आपने मेरे नाम लिखे पत्र को चिह्नित किया है। मुझे तो बराबर यही आश्चर्य रहा कि उस चिट्ठी की कथा के विषय मे मुझे आपकी ओर से अभी तक कोई सदेशा क्यो नही मिला। मैंने उस पत्र म जो-कुछ कहा था उसकी नकल साथ भेजती हू। यद्यपि उसम कही गई बात दो महीने पुरानी हो गई है तथापि मैं उसम किसी प्रकार का हेर फेर करना नही चाहूगी। यह मैं इसलिए कह रही हू कि कही कोई अप्रिय घटना न घट जाय।

समाचार आ रहे हैं कि आपका स्वास्थ्य ठीक नही रहता है। ऐसी स्थिति म आपको इतने लम्बे पत्र को पढने का कष्ट उठाना पडेगा इस बात का विचार मात्र मुझे अरुचिकर लग रहा है।

स्नेहभाजन
अगाथा हैरिसन

पुनश्च

मैं इसकी नकल लार्ड लाथियन के पास तुरत भेज रही हूं। जवाहरलाल को, जो इस समय कैंटरबरी के डीन के साथ हैं उन्हें तथा वाल्ड्रीय को भी लिख दूंगी। इस सारे विषय के बारे में आपको तुरत ही फिर लिखूंगी।

अगाथा

२२

मगनवाड़ी
वर्धा (मध्य प्रांत)
११ जुलाई १६३८

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके ६ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद। उर्मिलादेवी के पुत्र के लिए जो इतना सब करने की बात आपने कही है उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। औरों के लिए आप उतना ही करेंगे जितना वैसी स्थिति के व्यक्तियों के लिए करना सम्भव है।

खजूर और सूखे मेवे को भोजन के रूप में काम में लेने के बारे में मेरा कहना यह है कि थोड़ा बहुत हेर फेर करना आवश्यक हो गया था। बापू दुबले हो रहे थे और उनका वजन घट रहा था। इसलिए उन्होंने अपने भोजन में मोसम्बी को भी शामिल कर लिया है।

बापू को जो अप्रिय अनुभव हुआ था वह उनके दिमाग में अभी तक घर किये हुए है और वह जब तक उसकी बात 'हरिजन' में नहीं लिखेंगे चैन से नहीं बैठेंगे। हमारी सारी दलीलों का एकमात्र परिणाम यह हुआ कि उनका रुख और भी कठोर हो गया और अब मैंने उनसे उसकी चर्चा करना ही बंद कर दिया है। आज 'हरिजन' का दिन है। मैं यह पत्र बोलकर लिखवा रहा हूं उधर बापू शायद 'हरिजन' के लिए उस विषय पर लिखने में तल्लीन हैं। मैंने उनसे आपके अगस्त

म आन की बात की थी। आपके साथ बात करने म उन्हें कोई असुविधा नहीं होगी इसलिए आप जब चाहें आ जाए।

सप्रेम
महादेव

श्री घनश्यामदास बिड़ला,
८, रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता

२३

वर्धा
१६ ७ ३८

प्रिय घनश्यामदासजी

इस पत्र के साथ अगाथा की चिट्ठी और बापू का उत्तर भेजता हू। पत्र अपनी कहानी खुद कहेंगे। कृपा करके अगाथा को आश्वस्त कीजिए कि उन आने जाने के खर्च के लिए चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। वह अच्छा काम कर रही है और अपना सारा समय भारत के काम म ही लगा रही है।

बापू के दिमाग पर जो भार आ पड़ा है, उसे देखते हुए उनका स्वास्थ्य अच्छा ही है। 'हरिजन' के लिए लेख तैयार है अगले सोमवार को निकलेगा। बापू ने अनिश्चित काल तक के लिए मौन-व्रत धारण कर लिया है। कम से कम तब तक के लिए जब तक १४ अप्रैलवाले दुखदायी अनुभव के कारणों की खोज न हो जाए और उनके रोग का निवारण न हो जाए।

सप्रेम
महादेव

२४

कलकत्ता
२० जुलाई १६३८

प्रिय महादेवभाई

अगाथा का पत्र और बापू का उत्तर दोनों प्राप्त हुए। तुमने अपने पत्र म कहा है कि ये अपनी कहानी आप कहेंगे। मुझे आशंका है कि जब तक मुझे माग

पृष्ठ भूमि की जानकारी न हो ये पत्र पूरी दास्तान नही बताते। पर तुम्हें परेशान होने की जरूरत नही। मैं पत्रा से मम ग्रहण कर लूगा। तुम खुलासा करने मे लगोगे तो तुम्हारे दफ्तर का काय भार और बढ जायेगा।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि बापू न अनिश्चित काल तक के लिए मौन धारण कर लिया है। यह उनके स्वास्थ्य के लिए कल्याणकारी होगा।

मैं अगस्त मे वर्धा आने की सोच रहा हू पर अभी तिथि निश्चित नही की है। जफरुल्ला की वापसी पर अगस्त म ही शिमला जाना भी सभव है और शिमला की तारीखो का पता लगत ही मैं वर्धा की तारीखें भी निश्चित कर लूगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

२५

मगनवाडी
वर्धा (मध्य प्रात)
२२ जुलाई १९३८

प्रिय मित्र

बापू को इस पत्र के साथ सलग्न पत्र एक प्रमुख काग्रेसी से मिला है। क्या आप कृपा करके अपनी प्रतिक्रिया विस्तारपूवक सूचित करेंगे ?

भवदीय,
महादेव

पुनश्च

आपका पत्र अभी अभी मिला। बापू का स्वास्थ्य मौन के प्रभाव से अच्छा है। अभी तो मौन चालू रहेगा।

महादेव

मेरी धारणा है कि यदि मुद्रा विनिमय की दर का प्रश्न कायकारिणी की अगली बठक म पेश हो तो जाच पडताल किये बगर मुद्रा की दर पर अथवा

उसकी वर्तमान दर म तत्काल हेर फेर करने की आवश्यकता पर कोई निश्चित मत कार्यकारिणी का व्यक्त नही करना चाहिए। यहा मैं अपने मित्रो के साथ इस विषय पर विचार विमर्श कर रहा हू। उनकी राय है कि जब रुपये की दर १८ पसे निश्चित करते समय उसके गुणो अवगुणो को सामने रखा गया था अब उसकी दर १६ पसे रखने म हमारे निर्यात की मात्रा म विशेषकर प्रतिद्वंद्विता वाले माल के निर्यात म वृद्धि नही होगी और साथ ही अन्य देश भी वसा ही ढग अपनायेंगे। हमारे देश के घरेलू मूल्यो के स्तर मे विशेषकर धान गेहू तथा तेल हन के मूल्य स्तर म विशेष वृद्धि नही हुई है। हमारे आयात किये माल के मूल्य स्तर म विशेषकर औद्योगिक मशीनरी के मूल्य स्तर म वृद्धि होगी। इस समय वसी मशीनरी अधिकाश मात्रा म आयात की जा रही है। आयात मशीनरी के मूल्यो म वृद्धि के परिणामस्वरूप भारत म तयार माल के विशेषकर कपडे के मूल्य म वृद्धि अनिवाय हो जायगी। जब तक जनता के पहनावे की पूर्ति खादी के द्वारा करना सभव न हो तब तक के लिए मिलो द्वारा तयार कपडे के मूल्य स्तर म वृद्धि करने से जनता की कोई सेवा नही होगी। विनिमय की दर म कमी होने से केवल मुट्ठी भर समृद्ध व्यक्ति ही मुनाफा बटोर पायेंगे देश की साधारण आर्थिक स्थिति ज्यो-की त्यो रहेगी।

'इसका यह अथ कदापि नही है कि इस मामले का सूक्ष्म अध्ययन न किया जाय। वास्तव म मैंने व्यवस्थापिका सभा मे इस मामले की जाच-पडताल के लिए एक स्थगन प्रस्ताव पेश कर रखा है। इसलिए मेरा सुझाव है कि या तो काय कारिणी सरकार के द्वारा निष्पक्ष विशेषज्ञो स जाच कराने की व्यवस्था करे और जाच रिपोट को जनमत क लिए प्रकाशित करने का जिम्मा उठाये ताकि यह पता लग सके कि कौन-सी दर ठीक रहेगी अथवा स्वय ही ऐसे विशेषज्ञो की समिति बनाये जो अपनी रिपोट कायकारिणी क समक्ष रखे। कायकारिणी इस तरह की रिपोट जनमत जानने के लिए प्रकाशित करे, और उसके बाद उस रिपोट को तथा उस पर प्राप्त आलोचना को सामने रखकर अगले कदम के बारे म निणय करे।

२६

कलकत्ता
२४ जुलाई १६३८

प्रिय महादेवभाई,

तुमने जो मुद्रा विनिमय की दरवाला पत्र अपने पत्र के साथ भेजा है उससे ऐसा लगता है कि तुम इस बारे में मेरी राय जानना चाहते हो। मैंने वल्लभभाई को अपनी राय पूरी तरह बता दी थी। पत्र-लेखक के कथन से मैं सहमत नहीं हूं। मुझे तो वह कुछ पक्षपात लिये प्रतीत हुआ कम-से-कम उसकी भाषा से तो ऐसा ही लगता है। जो भी हो, मैंने वल्लभभाई से कह दिया है कि वह फिलहाल कोई आक्रामक रुख अख्तियार न करें क्योंकि मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि प्रकृति विनिमय का घटाने में हमारी सहायता करेगी।

इस बारे में मुझे कोई संदेह नहीं है कि किंचित नीची दर हमारे लिए लाभप्रद होगी, पर मेरी धारणा है कि कांग्रेस के लिए जल्दबाजी में कोई कदम उठाना ठीक नहीं रहेगा। उसे कोई नीति निर्धारित करने से पहले स्थिति का अध्ययन करना चाहिए। इसके अलावा जब तक संघ की घोषणा न हो तब तक कांग्रेस प्रचार करने से अधिक क्या कर सकती है इससे अधिक मेरी समझ में नहीं आ रहा है। यदि प्रचार किया जायगा तो निहित हित उसका दुरुपयोग करेंगे, यह निश्चित है। इन सारी बातों का ध्यान में रखकर मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि यद्यपि मुद्रा विनिमय की दर में कमी करनेवाला प्रस्ताव पास करने में मैं नहीं हिचकिचाऊंगा क्योंकि वैसा करना देश के हित में होगा यद्यपि फिलहाल मैं आक्रामक प्रचार का प्रारम्भ करने से बचूंगा।

मुझे इम्पीरियल बैंक से पता चला है कि उन लोगों ने चरखा संघ का खाता खोलने का प्रस्ताव पास कर दिया है। पर यदि इससे कुछ अधिक करने की जरूरत हो तो मुझे लिख देना।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

२७

कलकत्ता
२८ जुलाई १९३८

प्रिय महादेवभाई,

बंगाल में खरे के बहिर्गमन का अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा है जैसा कि 'अमृत बाजार पत्रिका' और 'हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड' के सम्पादकीय लेखों से प्रतीत होता है। इन लेखों से बंगाल के जनमत का आभास मिलता है क्योंकि इन पत्रों के सम्पादकों की जो विचारधारा है आम जनता की विचारधारा उससे कुछ अधिक स्वस्थ नहीं है।

खरे को जो नीचा देखना पड़ा, वह तो होना ही था। उनके पक्ष में कोई नहीं बोलेगा। पर मध्य प्रांत का शासन चलाने में मिश्र जैसे लोगों का मंत्रिमंडल खरे के मंत्रिमंडल से श्रेष्ठ साबित होगा, इसमें मुझे संदेह है। पर शायद अन्य कारण भी रहे होंगे। बापू इस मामले में स्वयं दिलचस्पी ले रहे थे इसलिए मैंने सोचा था कि अब जो मंत्रिमंडल बनेगा, वह अपेक्षाकृत अधिक टिकाऊ रहेगा।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

२८

कलकत्ता
३० जुलाई १९३८

प्रिय महादेवभाई

मध्य प्रांत के मंत्रिमंडल के बारे में कार्यकारिणी का निर्णय मित्रों को भी नहीं भाया। दूसरी ओर शत्रुता की भावना से अनुप्राणित आलोचक अपना सारा

गुस्सा कांग्रेस हाई कमाण्ड पर उतार रहे हैं। उनकी दृष्टि में हाई कमाण्ड का एकमात्र अर्थ ही वल्लभभाई है। लेकिन वे वस्तुस्थिति से बेखबर हैं।

निर्णय कुछ कठोर अवश्य रहा, पर मुझे उसमें तानाशाही की वृत्ति या लोकतंत्रीय पद्धति का चोट पहुंचानेवाली कोई बात नहीं दीखती। यद्यपि विरोधियों और मित्रों दोनों का समान आरोप है। लोगों को यह पता है कि प्रश्न का निपटारा संसदीय समिति पर छोड़ दिया गया था और उसने खरे के खिलाफ फैसला दिया। पर लोग यह बात भुलाने को तैयार नहीं हैं कि प्रेरणा कार्यकारिणी ने दी थी।

बंगाल के समाचार पत्र और जनमत खास तौर से राजाजी और वल्लभभाई के खिलाफ हैं। थोड़ा सा बहाना मिलते ही और बगैर किसी उचित कारण के इन दोनों के खिलाफ जहर उगला जा रहा है। इधर मित्रों की यह शिकायत है कि वस्तुस्थिति को ठीक ढंग से नहीं समझा गया है। हम लोग ब्रिटिश राजनैतिक पद्धति के बुरी तरह कायल हो गये हैं और यह सोच भी नहीं सकते कि मंत्रिमण्डलों के गठन अथवा विघटन का कार्य विधान-सभाओं की संसदीय समितियों के अलावा किसी और के द्वारा भी सम्पन्न करना सम्भव है।

मध्य प्रांत के बखेड़े का लक्ष्य लगता है कि तद्विषयक सारा निर्णय स्वयं बापू का है, पर लोगों में बापू की आलोचना करने का तो साहस है नहीं, इसलिए वे सारा रोष वल्लभभाई के मत्थे मढ़कर अपना ताव निकालते हैं। लोगों में यह धारणा घर कर गई है कि वल्लभभाई प्रजातंत्र के कायल नहीं हैं और राजाजी चतुर हैं।

मेरा विश्वास है कि इस धारणा का निराकरण बापू 'हरिजन' के माध्यम से कर सकेंगे। 'लीडर' की कटिंग साथ भेजता हूं। देखोगे कि बापू पर कैसी कीचड़ उछाली गई है। 'लीडर' तो बापू के प्रति घृणा की भावना से ओतप्रोत है ही, इसलिए इसका कोई इलाज नहीं है। आशा है, यह पत्र बापू को पढ़कर सुना दोगे।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

२६

कलकत्ता
३१ जुलाई, १६३८

प्रिय मीराबेन

मैंने सुना था कि आप सगाव लौट रही हैं। राजेन्द्र बाबू ने मुझे बताया कि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। ऐसा लगता है कि हम दोनों को ही अधिक ऊंचाईवाले स्थान प्रतिकूल हैं। रांची पहुंचने के दो घण्टे बाद ही मेरी भूख गायब हो जाती है। मैं तो नहीं समझता कि वर्षा समाप्त होने के बाद भी वह स्थान आपके लिए उपयुक्त होगा। पर हमें अच्छे की ही आशा करनी चाहिए। मेरी जमींदारी रांची से अधिक दूर नहीं है। आप जब दुबारा जायेंगी, तो बता दूंगा कि कहां जाना है।

मैं बापू के इस कथन से सहमत नहीं हूं कि वाइसराय उनसे पीछा छुड़ाना चाहते हैं। शायद वाइसराय को लग रहा है कि फिलहाल उनके किये कुछ न होगा और इस विश्वास के कुछ वैध कारण भी अवश्य रहे होंगे। उनसे निकट भविष्य में मिलने की सम्भावना तो दिखाई नहीं देती पर यदि मिला तो वस्तुस्थिति का पता लग जायगा। आपने सुना होगा कि वाइसराय हाल ही में सैयद महमूद से मिले थे और बापू की भूरि भूरि प्रशंसा कर रहे थे। इसलिए ऐसा लगता है कि कारण कुछ और ही है जिसका हमें पता नहीं है। मेरी तो अब भी यही धारणा है कि वह हमारे मित्र हैं पर वह जो-कुछ करेंगे, स्वतः ही करेंगे और अपने ही ढंग से करेंगे।

सप्रेम,
घनश्यामदास

सुश्री मीराबेन,
सगाव

३०

कलकत्ता
३१ जुलाइ, १६३८

प्रिय महादेवभाई

बापू की प्रेस मुलाकात के बाद भी कार्यकारिणी के प्रस्ताव का जान बूझकर गलत अर्थ लगाया जा रहा है। मुझे आशका है कि यह गलतफहमी जारी रहेगी। बापू की मुलाकात क उत्तर म खरे ने जो कुछ कहा है उससे उनके खरेपन का परिचय नही मिलता। यदि बापू ने अपन लेखा द्वारा वस्तुस्थिति पर और अधिक प्रकाश डालना जारी नही रखा तो कार्यकारिणी की प्रतिष्ठा को विशेषकर सरदार की प्रतिष्ठा को धक्का लगेगा। इसके अलावा मुझे इसमे भी शक है कि शुक्ल मत्रिमडल अधिक दिना तक चल पायेगा ! एक विशुद्ध नया मत्रिमडल क्या न बनाया जाये ! मुझे ता दोना गुटो म कोई विशेष अन्तर दिखाई नही देता, पर साथ ही मुझे खरे के सम्ब ध मे लिया गया निर्णय बिलकुल उचित प्रतीत होता है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

३१

मगनवाडी
वर्धा (मध्य प्रात)
२ अगस्त, १६३८

प्रिय घनश्यामदासजी

पिछल महीन की २० तारीख का आपका पत्र मिला। हमारे अधिकाश समाचार-पत्र खर के मामले का लकर बौखला उठे है। यह कहना मुश्किल है कि उनम सबस अधिक दोषी कौन है। उस प्रस्ताव के लिए अकेले बापू ही उत्तरदायी

हैं और उनकी तो यही धारणा है कि यह प्रस्ताव और भी अधिक कठोर होना चाहिए था। बापू इस सप्ताह के 'हरिजन' में एक लंबा लेख लिखनेवाले हैं, जिससे समाचार पत्र और भी बिगड़ेंगे। मुझे इससे पहले इस बात की प्रतीति इतनी अधिक कभी नहीं हुई थी, कि हमारे अन्दर राजनीतिक समझ बूझ का नितांत अभाव है। ये लोग इस व्यंग्य विद्रूप में लगे हुए हैं कि यह हिटलरवाद और तानाशाही है पर उन्हें यह पता नहीं है कि खरे ने जैसा विश्वासघात किया यदि इटली या जर्मनी में कोई वैसा करता तो उसे गोली से उड़ा दिया जाता।

नये मंत्रिमंडल के बारे में अभी से कुछ कहना कठिन है पर कम-से-कम यह बात तो उनके पक्ष में है ही कि वे बापू को सुनेंगे।

सप्रेम,
महादेव

३२

इंडिया हाउस,
एल्डविच,
लन्दन, डब्ल्यू० सी० २
३ अगस्त, १९३८

प्रिय महोदया,

हाल ही में आपने मुझसे भेंट की थी और कल टेलिफोन भी किया था, इस सम्बन्ध में मुझे आपको यह सूचना देनी है कि ऋण कोष समिति ने कल श्री अन्सारी के ऋण संबंधी प्रार्थना पत्र पर विचार किया, और प्रारंभ में ६ पौंड के ऋण की स्वीकृति प्रदान कर दी है, जिससे वह तीन सप्ताह तक अपना खर्च चला सकें। इस रकम का चेक श्री अन्सारी के पास भेज दिया गया है और उन्हें यह भी सूचित कर दिया गया है कि आगामी २२ तारीख सोमवार को उनके प्रार्थना-पत्र पर विचार करने के बाद समिति यह निर्णय करेगी कि उनके लिए और अधिक क्या किया जा सकता है। पर मैं इस अवसर का उपयोग करके आपको यह बता देना चाहता हूं कि समिति के साधन बहुत सीमित हैं। उसे भारतीय आय में से प्रतिवर्ष २०० पौंड मिलते हैं विभिन्न दाताओं से ४० या ५० पौंड मिलते हैं तथा जिन लोगों ने पहले से ऋण ले रखा है उनसे ऋण की

अदायगी के रूप म प्रतिवप १६० स २०० पौंड मिल जाते हैं। समिति को प्रति वप पचास स साठ विद्यार्थिया को जो आर्थिक कठिनाइया म फस जाते हैं, सहायता देनी होती है। ऐसी परिस्थिति म समिति के सामने इसके सिवा और कोई चारा नही है कि केवल उ ही विद्यार्थिया की सहायता का जिम्मा वह ले, जिनकी जरूरतें नितात आवश्यक हो और ऐसे मामला म भी केवल सीमित अवधि भर क लिए निवाह योग्य ऋण दिया जा सकता है जिसस वे भारत स उस अवधि मे रुपया मगा सकें। इसलिए आप मेरे इस कथन से सहमत होगी कि यदि समिति के कोष म अपक्षाकृत अधिक मात्रा म धन रहता तो उसक लिए जितन विद्यार्थिया की सहायता करना इस समय सम्भव है उससे कही अधिक विद्यार्थियो की वह उदारता क साथ सहायता करती।

मुझे विश्वास है कि समिति श्री अ सारी को कुछ हफ्तो तक आर्थिक सहायता देती रहेगी और व इस बीच भारत स इतना रुपया मगाने की भरसक कोशिश करेंगे जिससे इस देश म उनकी शिक्षा की समाप्ति तक उनका निर्वाह हो जाय।

मैं यह भी कह दना चाहता हू कि हमार पास जो रिपोर्टें पहुची ह उनसे लगता है कि श्री अ सारी ने अपने काम का सतोपजनक परिचय दिया है और यदि वह आर्थिक साधनो के अभाव के कारण यहा अपनी शिक्षा पूरी न कर सकें तो यह बडे दु ख की बात होगी। नियमा क अनुसार श्री अ सारी को भारत के किसी मायता प्राप्त मडिकल स्कूल म चिकित्सा सबधी प्रशिक्षण काय जारी रखने का अधिकार रहेगा, और यदि वह अन्य नियमा का पालन कर सकें तो वह समय आने पर कम्ब्रिज लौटकर अतिम मेडिकल परीक्षा म भाग लने का प्राथना पत्र दाखिल करने के भी हकदार होगे।

मुझे विश्वास है कि मैंन अपना आशय पूणत स्पष्ट कर दिया है और यदि आप कुछ और अधिक जानना चाह तो मुझे आपका पत्र पुन पाकर प्रस नता होगी।

भवदीय,
दत्त

कुमारी अगाथा हैरिसन
२, क्रनवॉन कोट
लन्दन, एस० डब्ल्यू० ११

३२

२, क्नवान कोर्ट
एलबर्ट ब्रिज रोड, एस० डब्ल्यू० ११
४ अगस्त १६३८

प्यारे महात्माजी,

आपने जो पत्र-व्यवहार भेजा था उसे वापस करती हू। साथ ही श्री दत्त का पत्र भी रख रही हू जो अभी अभी मिला है। आपका पत्र पाते ही मैंने हेनरी पोलक के साथ मशवरा किया और उन्होंने श्री दत्त से बात की पर साथ ही मुझसे कहा कि मैं खुद ही इस मामले से निपटू क्योंकि उनकी मा बीमार है और वह नगर से बाहर गये हुए हैं।

सबसे पहले मैं श्री दत्त के बारे में बताना चाहती हू। उन्होंने बड़ी सहायता की। मैंने समुद्री डाक से दो रिपोर्टें भेजी हैं। उनमें से एक शिक्षा विभाग के काम के बारे में है और दूसरी विद्यार्थियों को सहायता देने के कोष के संबंध में है। इस सामग्री में आपके उठाए प्रश्नों का उत्तर मिल जायगा।

मैंने उस तरुण अन्सारी का मामला समझाया और पूछा कि क्या उसके लिए किसी प्रकार की आर्थिक सहायता का प्रबंध हो सकता है। जहां तक इस कोष का संबंध है इसमें कुछ ही सप्ताह के निर्वाह की व्यवस्था रखी गई है। श्री दत्त ने तुरत मुझे प्रार्थना पत्र का फार्म पकड़ाया और कहा कि उनका गैर सरकारी दफ्तर अन्सारी को ऋण देकर अवश्य सहायता करेगा, और उनके पत्र से आप देख ही लेंगे कि इसकी तुरत व्यवस्था हो गई है।

दूसरे दिन मैं कैम्ब्रिज गई जहां मैं लड़के और उसकी मा से मिली। श्रीमती मरे से भी मिली जो दोनों की परम हितैषी हैं। उनके पति सरविन कालेज के भूतपूर्व प्रधान शिक्षक थे, जहां युवक अन्सारी शिक्षा पा रहा है। बहुत स्पष्टता के साथ बातचीत हुई। डा० शाह जिस कठिन स्थान पर है, उसका उन्हें पूरा ध्यान है और वे उनकी आर्थिक स्थिति से भी अवगत हैं। वे स्वयं भी आर्थिक संकट में पड़े हैं। गत मार्च से एक पैसा भी नहीं आया है और इन कई महीनों से वे यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि क्या करना चाहिए। चिंता ने अन्सारी के स्वास्थ्य को भारी क्षति पहुंचाई है। आश्चर्य है कि वह परीक्षा में सफल कैसे हो सका।

बस, यह वस्तुस्थिति है। जब तक इस बात की गारण्टी न मिल जाए कि आगामी तीन वर्षों तक अपनी शिक्षा के दौरान वह आर्थिक चिन्ता से मुक्त रहेगा,

उसके लिए आगामी अक्तूबर म किसी अस्पताल म प्रवेश पाना असम्भव रहेगा। कोइ ३०० पौंड वार्षिक का खच है। यह आकडा भारतीय विद्यार्थियोके परामश दाता न दिया है। इसका मतलब यह हुआ कि कुल मिलाकर ६०० पौड की जरूरत रहेगी। इसम श्रीमती मरे की ५० पाड की वह रकम भी शामिल ह, जो वह गत माच से खच चलाने के लिए देती आ रही हैं साथ ही पिछले दो सत्रा की फीस भी इसी रकम मे शामिल है जो अ सारी अदा करन मे असमथ रहा था। निवास स्थान का भाडा भोजनालय डाक्टरो क बिल और ओषधिया—इन सबके लिए आवश्यक रुपया भी इसी रकम से लिया जायेगा।

आप श्री दत्त के पत्र के अतिम परे म देखेंगे कि उन्होंने अन्सारी क भारत वापस लौटन पर अपनी शिक्षा पूरी करने का प्रश्न उठाया है। बस साधारणतया वह तथा अन्य लोग यह प्रश्न नही उठाते है। मेरा यह पूरा विश्वास है कि यह कोई अच्छी याजना नही है। मरी धारणा है कि इससे कठिनाइया का निवारण होने के बजाय उनटे कठिनाइया बढ जायेंगी। मैं जब इस नतीजे पर पहुची तो मैंने श्रीमती मरे से अकेले म चर्चा की और वह भी मेरे कथन से पूणतया सहमत हुइ। उनकी निणयात्मक बुद्धि के बारे म सदेह की गुजाइश नही है।

यदि इस प्रश्न को लेकर सहमति हो जाए, तो अगला प्रश्न यह उठेगा कि आगामी तीन वर्षों के लिए रुपय की गारण्टी भारत से मिलेगी या कही और स। आपने जानना चाहा है कि क्या ऋण का बन्दोबस्त यहा नही हो सकता। कहना पडता है कि यहा यह सम्भव नही है पर मुझे बताया गया है कि भारत मे कुछ स्थावर सम्पत्ति है जिसे बेचने की बात चल रही है। क्या उस बिक्री से जो रकम मिलेगी उसस आवश्यक खच की पूर्ति नही हो सकगी ?

हरल्ड असारी के मामल के अलावा बेगम अन्सारी का मामला भी विचार णीय है। वह परिस्थितिया का जिस धय और आस्था के साथ सामना कर रही है उसका मुझ पर गहरा प्रभाव पडा। वह खुद भी अधिक स्वस्थ नही है, और उसे भी प्रति सप्ताह कुछ न-कुछ मिलते रहने की व्यवस्था होनी चाहिए। इन दोनो के पास जो छोटा-सा घर है उसका एक कमरा श्रीमती अन्सारी ने किराये पर उठा लिया है। इससे १८ पौड आ जाते हैं। जब हरल्ड अस्पताल म दाखिल हो जाएगा, तो वह एक और कमरा किराय पर उठा देंगी। ऐसी अवस्था म यदि उन्हें १ पौंड प्रति सप्ताह मिलता रहे तो उनका काम चल जाएगा। उनकी एक मात्र अभिलाषा यही है कि उनका लडका योग्य बनकर भारत वापस लौटे और जनता की सेवा करे।

इस प्रकार कुल मिलाकर मान्वेट को ११५० पौंड की जरूरत है जिसस तीन

तब तक गुजारा हो जाएगा।

इस मामले में कोई व्यवस्था शीघ्र होनी चाहिए, क्योंकि इस समय दोनों कर्ज के रुपये पर गुजारा कर रहे हैं। आपने देखा ही होगा कि श्री दत्त कहते हैं कि २२ तारीख को मामले पर पुनर्विचार हो सकता है। पर तब भी जो रुपया मिलेगा, वह ऋण ही होगा और उसका भुगतान जरूरी है। मुख्य बात यह है कि जब तक इस बात की गारण्टी न मिल जाए कि आगामी ३ वर्षों के लिए व्यय की व्यवस्था हो गई है, तब तक हैरल्ड का किसी अस्पताल में दाखिला नहीं हो पाएगा।

आशा है, मैंने स्थिति को स्पष्ट कर दिया है। मैंने पत्र में जो कुछ लिखा है उसे मैंने हेनरी पोलक को फोन पर पढ़ सुनाया और वह मेरे कथन से सहमत हुए। जब मैं कैम्ब्रिज में थी, तो श्रीमती मरे ने मुझसे जानना चाहा कि क्या इस बात को लेकर कोई कठिनाई उपस्थित होगी कि दोनों मसीही हैं। मैंने उन्हें बताया कि आपके निकट मत-मतान्तर कोई मानी नहीं रखते और डा० अन्सारी के मित्रों में भी इस बात को लेकर कोई समस्या आने से रही। लड़का हू-ब-हू अपने पिता पर गया है। मैं जब-जब मां और बेटे के पास बैठी मुझे उस प्यारे मृत व्यक्ति की याद आई और मैंने सोचा कि यदि डा० अन्सारी को यह मालूम होता कि उनके परिजनों को ऐसी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तो उन्हें कितना दुःख होता।

श्रीमती मरे की कृपा से हैरल्ड इस समय उनके कुछ इष्ट मित्रों के साथ रहकर छुट्टियों का आनन्द ले रहा है। इससे उसके स्वास्थ्य में सुधार होगा। और यदि इस पत्र का उत्तर आने में देर न लगे तो उसको किसी अस्पताल में दाखिल कराने के लिए प्रार्थना पत्र तुरंत दे दिया जाएगा, और मां-बेटे को जो चिन्ता सता रही है उससे उन्हें त्राण मिल जाएगा। हैरल्ड और उसकी मां, दोनों इसके लिए आपके बड़े कृतज्ञ हैं कि आप उनके मामले में इतनी दिलचस्पी ले रहे हैं।

सप्रेम,
अगाथा हैरिसन

पुनश्च

जब मैं वहां आऊंगी, तो आपके सामने इंडिया हाउस द्वारा भारतीय विद्यार्थियों के लिए काम किये जाने की आवश्यकता का भी प्रसंग छेड़ूंगी। मैं जानती हूं कि इंडिया आफिस के काम के बारे में नुक्ताचीनी होती रहती है, पर

यदि भारत सहायता कर तो उसका काय अधिक उपयोगी हो सकता है।

अगाथा

३४

कलकत्ता

५ अगस्त १९३८

प्रिय महादेवभाई

बापू 'हरिजन' म लिख रहे हैं यह देखकर प्रसन्नता हुई। इससे समाचार पत्र कुछ खीजगे जरूर पर यदि बापू ने इस मामले म निपटना जारी रखा तो अन्त म इसका परिणाम अच्छा ही होगा। तानाशाही देशों म समाचार पत्रों को वाहियात बात करने की छूट नहीं रहती और तिस पर भी लोग कहते हैं कि कांग्रेस म तानाशाही का दौर दौरा है।

चरखा सघ को ऋण देने के बारे म तुमने मेरे पत्र का कोई उत्तर नहीं दिया है। मुझे मालूम हुआ है कि इम्पीरियल बैंक ने प्रस्ताव पास करके ऋण की स्वीकृति दे दी है, और इस प्रकार समस्या का निपटारा कर दिया है।

सप्रेम,

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा (म० प्रा०)

३५

वर्धा

८ ८ ३८

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपके सहृदयतापूर्ण नोट के लिए धन्यवाद। हा, चरखा सघ ने इम्पीरियल बैंक के साथ काम-काज आरम्भ कर दिया है, और अखिल भारतीय चरखा सघ ने

मुझे आदेश दिया है कि मैं उसकी ओर से इस हेतु आपका आभार व्यक्त करूं।

हां, कार्यकारिणी और बापू पर दोनों हाथों से कीचड़ उछाली जा रही है पर इसके एकमात्र शिकार बापू ही हैं। मैंने बापू के महाराष्ट्र प्रवास को इससे पहले इतना कभी नहीं कोसा। वे लोग परले सिरे के झगड़ालू और कलह प्रिय हैं और एक दुर्वचन-कला पारंगत मराठी पत्र ने तो युवकों को बापू का खात्मा करने तक के लिए उकसाया है। बापू पर बम फेंकने का श्रेय पूना को ही तो है। यदि यहां भी कुछ हो जाय तो आश्चर्य नहीं। दुनिया भर में मराठी समाचार पत्र जैसे गंदे पत्र चिराग लेकर ढूंढें नहीं मिलेंगे। ये लोग अपशब्दों और दुर्वचनों के द्वारा स्वराज्य का पूरा आनंद ले रहे हैं।

बापू व्यस्त हैं पर स्वस्थ हैं। कहा जा सकता है कि वह दुर्वचनों से पोषक तत्त्व ग्रहण करते हैं।

सप्रेम,
महादेव

३६

सेगांव
वर्धा
१२-८-३८

भाई घनश्यामदास,

इस पत्र और अपना अभिप्राय बताओ। जो पैसे तुम्हारे मार्फत मिलते हैं उसका उपयोग ऐसे कामों के लिए बगैर सम्मति के मैं नहीं करना चाहता हूं और आजकल जो खर्च मैं कर रहा हूं उस दृष्टि से इतनी बड़ी रकम मैं न भी बचा सकूं। कुछ भी हो मैं इस बारे में तुम्हारा स्वतंत्र अभिप्राय चाहता हूं। साकत लाक्तर के पास आज कुछ नहीं है। बेगम अन्सारी के पास कुछ छोटी सी जायदाद देहात में है उस पर लाक्तर के भाई दावा करते हैं किसी की इच्छा ट्रस्ट की मदद करने की नहीं है। साकत और जोहरा अन्सारी की बेटी है। अन्सारी तो हमेशा पैसे देते ही थे पता नहीं धम क्या कहता है। मुझे खुल्ले दिल से लिखो भी।

बापू के आशीर्वाद

३७

भाई घनश्यामदास,

तुमने ठीक लिखा है। मैं तो तुमारे मन पर क्या असर होता है जानना चाहता था। लडके के लिये सब पसे भोपाल स मिल जायेंगे। मेरे मन पर इसका बडा बोज था।

हा, काग्रेस म अराजकता बढती नजर आती है। उसे रोकन का मैं भरसक प्रयत्न कर रहा हू—करूगा। परिणाम तो भगवान क ही हाथा म है। हम शुद्ध प्रयत्न करेंगे तो अन्त अच्छा ही होनेवाला है।

वियोगी हरि के बारे म सुनकर मुझे बहुत खुशी होती है।

यहा हवा आजकल बहुत खराब है। हरसी होने पर थोडे दिनो के लिए आओ और सेगाव मे ही रहना। ज० की कुटीर अच्छी है।

बापु के आशीर्वाद

सेगाव
२६ ८ ३८

३८

मगनवाडी,
वर्धा (म० प्रा०)
२७ ८ ३८

प्रिय घनश्यामदासजी

भोपाल के नवाब न हरस्ट असारी का भार ग्रहण करके बापू को एक बडी चिन्ता स मुक्त कर दिया। जब बापू आपको लिख रहे थे तो मने उन्हें वसा करन स रोकने की चेष्टा की पर उन्होंने कहा घनश्याम अपन दिल की बात कह देगा और यदि उसने इन्कार किया तो मैं समय जाऊगा।

बापू के पूर्ण मौन-व्रत न उनकी बडी मदद की पर महाराष्ट्र ने झूठ और घृणा और हिंसा से भरा हुआ निहायत गदा प्रचार चला रखा है जिसमे वह

व्याकुल हो उठे हैं और मुझे आशंका है कि कहीं वह दीर्घकालीन उपवास की घोषणा न कर बैठें। यह उपवास २१ दिन तक चल सकता है। मेरी इस आशंका का कोई आधार नहीं है, पर मैं अपने मन की बात कह रहा हूं, क्योंकि मुझे बड़ी बेचैनी हो रही है। परंतु आप मत घबराइये। मेरी आशंका बिलकुल निर्मूल भी सिद्ध हो सकती है, पर मैं उसे आप-जैसे मित्रों से कैसे छिपा सकता हूं? प्यारेलाल की बीमारी ने भी बड़ा बेचैन रखा, पर अब वह खतरे से बाहर है।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक घोषणा के विपरीत बम्बई में न होकर दिल्ली में होगी, ऐसा लगता है। यदि ऐसा हुआ तो कई दिन साथ रहना हो जाएगा।

सप्रेम
महादेव

३६

३१-८-३८

प्रिय महादेवभाई,

समाचार-पत्रों से लगता है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक दिल्ली में ही होगी। वैसी स्थिति में बापू भी दिल्ली आयेंगे। बापू हरिजन-बस्ती में रहेंगे या मेरे यहां? मैं समझता हूं कि सरदार और कई-एक अन्य कांग्रेसी नेता भी मेरे पास ही ठहरेंगे। मैं उनसे पूछकर पता लगा लूंगा। कल मैं दिल्ली के लिए रवाना हो रहा हूं, उसके बाद फिर कलकत्ता लौट आऊंगा। पर यदि बापू आयें तो मैं २१-२२ सितम्बर तक पुनः दिल्ली चला आऊंगा।

आशा है बापू ने भारत ब्रिटिश व्यापार समझौते के बारे में सरदार से भी यहां परामर्श किया है जो कल हम लोगों से मिलनेवाले हैं। समझौते की अंतिम रूप-रेखा कुछ ऐसी है कि उसे स्वीकार करने के बारे में बाद उत्साह नहीं रह गया है। पर अंतिम निर्णय करने से पहले हमने विभिन्न उद्योगों से सलाह-मशवरा करने का निश्चय किया है। ऐसा लगता है कि कपड़े के उद्योग-क्षेत्र में कुछ बेचैनी फैल गई है। धारणा है कि यदि हमने शर्तें स्वीकार न कीं तो टैरिफ बोर्ड का सहारा लेकर उन्हें उद्योग-क्षेत्र पर थोप दिया जायगा।

हम लोगों ने कोई अन्तिम निर्णय नहीं लिया है। हम देश की इच्छा-अभिलाषा के अनुरूप ही आचरण करना चाहते हैं। उद्योग-क्षेत्र के साथ सलाह मशवरा कर लिया गया है। इसलिए अब सारी बात हमारे ऊपर ही आ जाती है। मशवरे के लिए जो मुख्य पार्टियां रह गई हैं वह कृषि उत्पादक और कांग्रेसी नेता। भूलाभाई स्वीकार करने के एकदम खिलाफ हों ऐसी बात नहीं है पर यदि बापू अपना विचार बतायें और सरदार बाद के मुताबिक तार द्वारा हमें सूचना दे दें तो हम भी अपना कर्तव्य समझ जायेंगे।

डा० अन्सारी के पुत्र की सहायता भोपाल के नवाब करेंगे सो जाना। उन्हें बापू ने लिखा होगा। बापू ने अपने पत्र में लिखा है कि नवाब भोपाल ने उन्हें एक बड़ी चिन्ता से मुक्त कर दिया। बापू से कह देना कि रुपये पैसे की बात को लेकर उन्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। जब तक मैं पैसा देने की स्थिति में हूँ वह जो कुछ करना-कराना चाहें उसके लिए मेरे ऊपर निर्भर रह सकते हैं।

अधिक भेंट होने पर।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

४०

तार

महात्मा गांधीजी
मार्फत मुख्य मंत्री सीमा प्रांत
पेशावर

अपना प्रोग्राम सूचित करिये।

—घनश्यामदास

रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता
६ १० ३८

४१

शिविर कोहाट
२१ १० ३८

प्रिय बिडलाजी

बापू के आदेशानुसार अपने प्रोग्राम की नकल भेज रहा हू। इसका पूरा ब्यौरा एसोसिएटेड प्रेस का दे दिया था। पता नही आपकी नजर से गुजरा या नही।

राजनतिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो यहा की स्थिति भी अन्य स्थानो की तरह ही विशृखल है। बापू उसमे कोई रुचि नही ले रहे हैं क्योकि यहा हम कुछ भी करने मे असमर्थ है। पर यदि खुदाई खिदमतगार अपना नाम सार्थक करने को उत्सुक हुए तो उस स्थिति से निपटा जा सकता है। उनका गठन असीम सभावनाओ से परिपूर्ण है। फसल तयार है लहलहा रही है पर काटनेवाले बहुत कम है। सारी कठिनाई यही है। बापू ने रचनात्मक कार्यक्रम म दीक्षा देने का कार्यक्रम बनाया है जिसके द्वारा खुदाई खिदमतगारो और जनता के बीच सम्पर्क स्थापित हो सकता है। बापू चाहते हैं कि खुदाई खिदमतगार जनता के सच्चे रक्षक बनें। सयोगवश यह भी कह दू कि बापू सीमा पार के कबीलो की समस्या का हल भी खोज पाने की आशा कर रहे हैं।

बापू का स्वास्थ्य आला दर्जे का चल रहा है ठीक वसा ही जसा दिल्ली म था। चार पौंड वजन बढा है।

भवदीय
प्यारेलाल

४२

कोहाट
२२ अक्तूबर १६३८

तार

बिडला,
रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता

सोमवार तक कोहाट मे। प्रोग्राम भेज रहा हू। ६ नवम्बर को दौरा समाप्त।

—बापू

सीमा प्रात मे गाधीजी के दौरे [redacted] कायक्रम

तारीख	समय	स्थान	मील
२१ १० शुक्रवार	प्रात काल ८ बजे	उतमानजई स पशावर	२०
	९ बजे	पेशावर पहुचना	
	मध्याह्न १ बज	पेशावर से कोहाट	४०
	सध्या के ५ ३० बजे	कोहाट पहुचना	
२२ १० शनिवार }	—	कोहाट की ५ तहसीलें	
२३ १० रविवार }	—	—	
२४ १० सोमवार	१ बजे मध्याह्न	कोहाट स ब नू	८०
	६ बजे सध्या	ब नू पहुचना	
२५ १० }			
२६ १० }		जिने मे कायक्रम	
२७ १०	१ बजे मध्याह्न	ब नू म डेरा इस्माइल खा	६०
	६ बजे सध्या	डेरा इस्माइल खा पहुचना	
२८ १० शुक्रवार और		डेरा इस्माइल [redacted] मे पडाव	
२९ १० शनिवार	—		
३० १० रविवार }		डेरा इस्माइल खा मे प्रोग्राम	
३१ १० सोमवार }		(टँक और कुलाची)	

तारीख	समय	स्थान	मील
१ ११ मगलवार	१ बजे मध्याह्न	डेरा इस्माइल खा से मीराखेल को रवाना	८५
२ ११	१ बजे मध्याह्न	मीराखेल स पेशावर को रवाना	१२५
	६ बजे सध्या	पशावर पहुचना	
३ ११ बृहस्पतिवार		पेशावर खादी प्रदशनी ४ बजे सध्या	
४ ११ शुक्रवार और ५ ११ शनिवार ६ ११ रविवार		पशावर म पडाव	
	२ बजे मध्याह्न	पशावर स हरिपुर को रवाना	६०
	६ बजे सध्या	हरिपुर पहुचना	
७ ११ सोमवार	२ बजे मध्याह्न	हरिपुर स एबटाबाद को रवाना	३०
	४ बजे अपराह्न	एबटाबाद पहुचना	
८ ११ मगलवार	१ बजे मध्याह्न	एबटाबाद से म सेरा को रवाना	२
	२ बजे मध्याह्न	म सेरा पहुचना	
	६ बजे सध्या	म सेरा से एबटाबाद वापसी	२०
	७ बजे सध्या	एबटाबाद पहुचना	
९ ११ बुधवार	१ बजे मध्याह्न	एबटाबाद से पेशावर को रवाना	१२०
	६ बजे सध्या	पशावर पहुचना	

४३

बम्बई
७ नवम्बर, १९३८

प्यारे महात्माजी

आज रात को भूलाभाई दिल्ली के लिए रवाना हो रहे हैं तो मैं यह पत्र उनके साथ भेज रही हू। मथुरादासभाई मुझे मिल थे। उन्होंने मुझे शीघ्र आने का आपका सदेश दिया था पर जहाज एक दिन देर से रवाना हुआ और इधर आपका तार पहुचा जिसमे आपने सुझाया था कि मैं वर्धा पहुचू इसलिए मैं वर्धा के लिए बुधवार को रवाना हो रही हू। आपके फिर दर्शन होंगे इसकी कल्पना करके आनन्द होता है। अपने साथ आपके मित्रो के बहुत स सदेश ला रही हू।

आपकी स्नेहभाजन
अगाथा

पुनश्च

कैसा विचित्र सयोग है ! जो स्टूअर्ड आपकी लदन यात्रा के अवसर पर जहाज मे था वही मेरी इस यात्रा के दौरान भी साथ रहा उसका नाम है डिसूजा। उसने आपके लिए बहुत सारे सदेश दिये हैं।

४४

सेगाव
२२ १२ ३८

प्रिय घनश्यामदासजी

बापू ने आपके हाथो सुभाष बाबू का जो पत्र भेजा था उसकी नकल इस पत्र के साथ रखता हू।

सुभाष बाबू ने बापू को लिखा है कि उनके नोट से उन्हे गहरा धक्का लगा

है। बापू ने उनके पत्र का सविस्तार उत्तर दिया है। पर यहाँ उसका विवरण देने की जरूरत नहीं है।

बापू ने सीमा प्रांत में जो स्वास्थ्य-संचय किया था, अब वह उसे दोनों हाथों से लुटा रहे हैं और लेने के देने पड़ रहे हैं। गुजरात के एक महीने के प्रोग्राम की परेशानी सिर पर है ही। बापू यह स्वीकार करते हैं कि यह प्रोग्राम यातना देगा, पर उनका कहना है कि वह वहां आराम करने तो जा नहीं रहे हैं और उसके बाद वापस, और फिर गांधी सेवा संघ की बैठक यह सारा बड़ा महंगा पड़ेगा।

मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि गुजरात का दौरा बाद में रखा जाय। मैंने सरदार को लिखा भी है, पर यह सब अब आसमान के तारे तोड़ने की कोशिश करने जैसा है।

सच्ची बात तो यह है कि मुझ पर चिन्ता सवार हो गई है।

आपका
प्यारेलाल

संलग्न १

अत्यन्त गोपनीय

सेगांव
वर्धा
१८-१२-१९३८

प्रिय सुभाष,

मैं यह पत्र बोलकर लिखवा रहा हूं क्योंकि मैं स्वेच्छा से मौन बन गया हूं। मैं बोल रहा हूं और मौलाना साहब, नलिनी बाबू और घनश्यामदास जी सुन रहे हैं। बंगाल में मंत्रिमंडल के बारे में हमने विचार विमर्श किया। मुझे पहले से भी अधिक विश्वास हो गया है कि हमें मंत्रिमंडल को भंग करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। मंत्रिमंडल में हेर फेर करने से हमें कुछ हासिल नहीं होगा। सम्भव है उसमें किसी कांग्रेसी के लिये जाने से हम ही घाटे में रहें। इसलिए मेरी धारणा है कि शासन के ढांचे का परिष्कार करने और निश्चित प्रोग्राम और नीति को बरकरार रखने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि हम जो जो सुधार चाहते हैं वे वर्तमान मंत्रिमंडल के माध्यम से करायें। नलिनी बाबू को मंत्रिमंडल तभी छोड़ना चाहिए और वह छोड़ने को तैयार भी हो जायेंगे जब मंत्रिमंडल देश हित के विरुद्ध कोई काम करने पर उतारू हो जायेगा। वैसी स्थिति में उनका मंत्रिमंडल से हटना एक न्यायसंगत मर्यादापूर्ण कदम होगा। मैं समझता

है कि जहां तक म्युनिसिपल कानून का सम्बन्ध है परिगणित जातियों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था का परित्याग कर दिया गया है। पर मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था ज्यों-की-त्यों रहेगी। इस बात को लेकर विरोधी दल को मंत्रिमंडल के भंग होने की नौबत तक पहुंचाना वांछनीय है या नहीं सो मैं नहीं जानता। यदि मुसलमान पृथक निर्वाचन पर अड़े रहें, तो मेरी समझ में उनकी बात मान लेना उचित रहेगा। मैं यह कदापि नहीं चाहूंगा कि वे कांग्रेस के विरोध के बावजूद अपनी बात मनवायें। वैसा हुआ तो उसमें कांग्रेस का हित नहीं होगा।

यदि तुम मेरी बात मानने योग्य समझो तो बंदियों की रिहाई का प्रश्न एक साधारण सा प्रश्न बनकर रह जायगा। यदि यह राय तुम्हें श्रेयस्कर जंचे, तो नयी नीति के बारे में स्पष्ट घोषणा होनी चाहिए। ऐसा होने से बंगाल का वर्तमान तनाव कम हो जायगा और उसकी त्रिशंकु-जैसी स्थिति का अंत हो जायेगा। मौलाना साहब की इस राय के साथ पूर्ण सहमति है। नलिनी बाबू और घनश्याम दास भी सोलह आने सहमत हैं।

सस्नेह

बापू

४५

२५ दिसम्बर, १९३८

[illegible]लाल

[illegible]त्र और संलग्नक के लिए धन्यवाद। तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे [illegible]
[illegible]कि जब मैं वहां से चला था तो बापू का स्वास्थ्य अच्छा [illegible]

घनश्यामदासजी [illegible] बारे में तुमने जो कहा उससे मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। बापू ने आपके हाथों सुझाये कि वह मुझ पर खीज उठे हैं। उनकी धारणा है कि [illegible] रखता हूं। [illegible] वह मेरी प्रेरणा से लिखा है। जरा सोचो तो बापू को [illegible] भाष बाबू ने बापू को लिखा इसी में है [illegible] बेतुकी है।

छपी हैं उन्हें तुमने देखा ही होगा। मुझे लगता है कि अब बापू को 'हरिजन' में उन प्रान्तों के विषय को छूना चाहिए, जहां कांग्रेस का बहुमत नहीं है। इससे बहुत-कुछ गलतफहमी भी दूर हो जायगी। याद पड़ता है जब मैं वर्धा में था तो बापू ने 'हरिजन' में इस विषय को उठाने की बात कही तो थी।

बापू को बता देना कि मैंने नलिनी के आग्रह पर उन्हें सुभाष के नाम बापू के पत्र की नकल दे दी थी। साथ ही मैंने यह भी ताकीद कर दी थी कि उसे बिलकुल गोपनीय रखा जाय। नलिनी ने वचन दिया था। हां, उन्होंने यह अवश्य कहा था कि वे उसे गवर्नर को दिखाना चाहेंगे क्योंकि तरह-तरह की अफवाहें फैल रही हैं। मैंने मामला स्वयं नलिनी की समझ-बूझ पर छोड़ दिया था। पर मुझे इस बात का पूरा यकीन है कि वह उस पत्र को गोपनीय ही रखेंगे।

नलिनी इस बात से बड़े खुश हैं कि उन्हें बापू का मार्ग-दर्शन मिल सका। मेरा विश्वास है कि वह शनैः शनैः बापू के प्रभाव में आ रहे हैं। तुम जानते ही हो कि नलिनी दूध के धोये रहे हों ऐसी बात नहीं है। पर बापू के प्रभाव में आकर वह सुधर जायेंगे ऐसा लगता है। यदि ऐसा हुआ तो यह एक बड़ी उपलब्धि होगी।

आशा है तुम इस पत्र की बातों की जानकारी बापू को दे दोगे।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल,
सेगांव

४६

सेगांव
३०.१२.३८

प्रिय घनश्यामदासजी,

दोनों पत्र मिल गये थे।

कतरनें भेजी थीं, वे मैंने बापू को दे दी हैं।

हूं कि जहां तक म्यूनिसिपल कानून का सम्बन्ध है, परिगणित जातियों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था का परित्याग कर दिया गया है। पर मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था ज्यों की-त्यों रहेगी। इस बात को लेकर विरोधी पक्ष को मन्त्रिमंडल के भंग होने की नौबत तक पहुंचाना वांछनीय है या नहीं, सो मैं नहीं जानता। यदि मुसलमान पृथक निर्वाचन पर अड़ रहे तो मेरी समझ में उनकी बात मान लेना उचित रहेगा। मैं यह कदापि नहीं चाहूंगा कि वे कांग्रेस के विरोध के बावजूद अपनी बात मनवायें। वैसा हुआ तो उसमें कांग्रेस का हित नहीं होगा।

यदि तुम मेरी बात मानने योग्य समझो तो बंदियों की रिहाई का प्रश्न एक साधारण सा प्रश्न बनकर रह जायगा। यदि यह राय तुम्हें श्रेयस्कर जंचे, तो नयी नीति के बारे में स्पष्ट घोषणा होनी चाहिए। ऐसा होने से बंगाल का वर्तमान तनाव कम हो जायगा और उसकी त्रिशंकु जैसी स्थिति का अंत हो जायेगा। मौलाना साहब की इस राय के साथ पूर्ण सहमति है। नलिनी बाबू और घनश्याम दास भी सोलह आने सहमत हैं।

सस्नेह

बापू

४५

२८ दिसम्बर १९३८

प्रिय प्यारेलाल

तुम्हारे पत्र और संलग्नक के लिए धन्यवाद। तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे चिंता होने लगी है क्योंकि जब मैं वहां से चला था तो बापू का स्वास्थ्य आला दर्जे का लगता था।

सुभाष के पत्र के बारे में तुमने जो कहा उससे मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। मुझे मित्रों से पता चला है कि वह मुझ पर खीज उठे हैं। उनकी धारणा है कि बापू ने उन्हें जो पत्र लिखा है वह मेरी प्रेरणा से लिखा है। जरा सोचो तो बापू को प्रेरित करने की सामर्थ्य किसी में है इसकी कल्पना तक कितनी बेतुकी है।

पत्रों में मेरी वर्धा यात्रा और तत्पश्चात् बम्बई-यात्रा के बारे में जो अटकलें

छपी है उन्हें तुमने देखा ही होगा। मुझे लगता है कि अब बापू को 'हरिजन' में उन प्रांतों के विषय को छेड़ना चाहिए जहां कांग्रेस का बहुमत नहीं है। इससे बहुत-कुछ गलतफहमी भी दूर हो जायेगी। याद पड़ता है जब मैं वर्धा में था तो बापू ने 'हरिजन' में इस विषय को उठाने की बात कही तो थी।

बापू को बता देना कि मैंने नलिनी के आग्रह पर उन्हें सुभाष के नाम बापू के पत्र की नकल दे दी थी। साथ ही मैंने यह भी ताकीद कर दी थी कि उसे बिलकुल 'गोपनीय' रखा जाय। नलिनी ने वचन दिया था। हां, उन्होंने यह अवश्य कहा था कि वे उसे गवर्नर को दिखाना चाहेंगे क्योंकि तरह-तरह की अफवाहें फैल रही हैं। मैंने मामला स्वयं नलिनी की समझ-बूझ पर छोड़ दिया था। पर मुझे इस बात का पूरा यकीन है कि वह उस पत्र को गोपनीय ही रखेंगे।

नलिनी इस बात से बड़े खुश हैं कि उन्हें बापू का मार्ग-दर्शन मिल सका। मेरा विश्वास है कि वह शनै शनै बापू के प्रभाव में आ रहे हैं। तुम जानते ही हो कि नलिनी दूध के धोये रहे हों, ऐसी बात नहीं है। पर बापू के प्रभाव में आकर वह सुधर जायेंगे, ऐसा लगता है। यदि ऐसा हुआ तो यह एक बड़ी उपलब्धि होगी।

आशा है, तुम इस पत्र की बातों की जानकारी बापू को दे दोगे।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेगांव

४६

सेगांव
३० १२ ३८

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपके दोनों पत्र मिल गये थे।

आपने जो कतरनें भेजी थीं, वे मैंने बापू को दे दी हैं।

सुभाष ने बापू से बातचीत का श्रीगणेश किया ही था कि बीमार पड़ गये। अब उन्होंने चारपाई पकड़ ली है, नासिका के भीतरी भाग में सूजन है। उनकी अच्छी तरह देखभाल की जा रही है। आशा है उन्हें बापू के दृष्टिकोण का औचित्य दिखाई पड़ेगा।

सरदार ने एक बार फिर अपनी स्वाभाविक दक्षता के कारण बाजी जीती। पर अभी इस विजय ने स्पष्ट रूप धारण नहीं किया है और यदि वैसा करने में देर लगी तो बना-बनाया काम बिगड़ जायेगा। परन्तु मामले में ढील नहीं दी जा रही है। आपने देखा ही होगा कि राजकोट के उस गोरे दीवान को निकाल देने के मांग पत्र पर ४०,००० स्त्री-पुरुषों ने हस्ताक्षर किये हैं। यदि वह वहां से टला और उसके स्थान पर कोई अच्छा-सा आदमी आया तो सब-कुछ ठीक हो जायगा।

कल हम बारडोली के लिए रवाना हो रहे हैं। काफी बड़ा दल हो जायगा। दूसरे हफ्ते में देवदास भी बम्बई जाते समय कुछ दिनों के लिए साथ हो लेंगे।

नागपुर के बिशप ने अपना जाल सेगांव में भी फैलाया है। बापू ने इसका कठोर विरोध किया जिससे बिशप आग-बबूला हो गया। यदि बिशप को कोई आपत्ति न हुई तो पत्र-व्यवहार प्रकाशित कर दिया जायगा। आपको नकल तो भेजूंगा ही। राजकोट के इस गोरे दीवान ने वहां पुराने दीवान पर अपना सिक्का बैठाने की जो जो कोशिशें की उनकी कहानी बड़ी रोचक है। सारा मामला पत्रों में दर्ज है। प्रकाशित होगा तो लोग पढ़कर दंग रह जायेंगे।

भवदीय
प्यारेलाल

४७

बापू का लेख

एक महानतम काय

१९२० के सत्याग्रह-आन्दोलन क आरम काल स ही मादक द्रव्य निषेध काग्रेस का एक मुख्य ध्येय रहा है। इस ध्येय की सफलता के हेतु हजारा स्त्री पुरुषो को जेल जाना पडा, तथा बल प्रयोग का शिकार होना पडा है। इसको ध्यान म रखत हुए कायकारिणी की यह राय है कि काग्रेसी मत्रिमडल इस उद्देश्य की सिद्धि क निमित्त कायरत हो। कायकारिणी उनसे यह अपक्षा करती है कि वे अपन-अपन प्रातो म अगले तीन वर्षों मे मादक द्रव्य निषेधाज्ञा पूरी तरह लागू कर दें। कायकारिणी अन्य प्रातो के मत्रिमडलो तथा देशी रियासता स भी अपील करती है कि व जनता के नतिक और सामाजिक उत्थान के हेतु इस काय-योजना को अपनायें।

अपन अत्यधिक व्यस्त कायक्रम के दौरान कायकारिणी का यह प्रस्ताव उसके महानतम काय का एक अग है। मादक द्रव्य निषेध की माग बराबर बनी रही है। १९२० म इसन काग्रेस क अन्य रचनात्मक कार्यों म प्रमुख स्थान ग्रहण किया। फलत जिन जिन प्राता म काग्रेस ने शासन की बागडार अपने हाथ म ली, उनम यह निषधाज्ञा अविलम्ब जारी करना उसके लिए अनिवाय हो गया। मत्रिया का छह प्राता म ११ करोड की आय का बलिदान करने का साहस दिखलाना था। कायकारिणी अपने वचन का पालन करन तथा उन लोगा के जो इस दुर्व्यसन क शिकार हैं नतिक और आर्थिक उत्थान के निमित्त यह जोखिम उठाने को बाध्य थी मेरी तीव्र अभिलाषा है कि जिन पाच प्रातो म काग्रस का बहुमत नही है, व इन छह प्राता का अनुकरण करने म पीछे नही हटेंगे। उनके लिए इन छह प्राता क मुकाबले यह निषेधाज्ञा जारी करना अधिक सुगम है। और देशी रियासतो स ब्रिटिश भारत का अनुकरण करने की अपक्षा करना क्या एक असभव कल्पना है?

मुझ मालूम है कि अनेक लोगा को निषेधाज्ञा के सफल होन क बारे म शका है। उनकी धारणा है कि आर्थिक प्रलोभन का सवरण करना उनक लिए सभव नही होगा। उनकी दलील है कि व्यसनी लाखो म मद्यपान करन और अफीम खान

की आदत छुड़ाना सहज नहीं है वे अपने व्यसन की तृप्ति के लिए नाजायज ढंग से मादक वस्तुएं जुटायेंगे और जब मंत्री लोग यह देखेंगे कि इस आर्थिक बलिदान के बावजूद लोगों का व्यसन नहीं छूटा है तो वे पुन आय के इस दूषित साधन को अपना लेंगे तब दशा पहले से भी गई बीती हो जायेगी।

मुझे ऐसी कोई आशंका नहीं है। मेरा दृढ विश्वास है कि इस साधु उद्देश्य की सफलता के लिए आवश्यक नैतिक प्रेरणा राष्ट्र में प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। *यदि निषेधाज्ञा का कारगर होना होगा, तो इसके लिए तीन वर्ष की प्रतीक्षा* की जरूरत भी नहीं है छह महीने के भीतर ही पता लगने लगेगा कि यह उद्देश्य सिद्धि सम्भव है। जब भारत को वास्तविकता दीखने लगेगी तो जो प्रांत और रजवाड़े इस मामले में पिछड़ गये हैं वे भी उस अनिवार्य स्थिति के आगे सिर झुकाने को बाध्य हो जायेंगे।

यह मादक द्रव्य निषेध सम्बन्धी आंदोलन इस शताब्दी का महानतम नैतिक प्रयोग है इसलिए हमें यह अधिकार है कि हम न केवल अपने ही देश में बसे यूरोपियनों तथा अन्य राजनैतिक दलों की सहानुभूति और सहायता की आशा रखें बल्कि विश्व भर के चोटी के विद्वानों से भी वैसी ही सहानुभूति और सहायता की अपेक्षा करें।

फलत यदि हम मद्य निषेधाज्ञा आदि को भारत की नैतिक जागृति का चिह्न मानें तो शराबखानों की बंदी महज एक पहला अनिवार्य कदम होगा। यह आंदोलन तभी पूर्णतया सफल माना जायेगा जब मादक द्रव्यों के व्यसनी, जिनमें इस बुरी लतवाले गरीब लोग और मुट्ठी भर पैसेवाले लोग सभी आते हैं इस दुर्व्यसन का परित्याग कर देंगे जो शरीर और मन दोनों को समान रूप से क्षति पहुंचाता है। यह लक्ष्य सरकारी कारवाई मात्र से सफल नहीं हो सकता। इस संदर्भ में मैं वही बात दुहराऊंगा जो महादेव देसाई ने हरिजन की एक टिप्पणी के दौरान कही थी। उन्होंने अपनी टिप्पणियों में जिस कार्य-योजना का इंगित किया था उसे मैं यहां संक्षेप में देता हूं।

१ प्रत्येक प्रांत की शराब और अफीम गांजे की दूकानों का नक्शा तैयार किया जाये कि किस स्थान पर ऐसी कितनी दूकानें हैं।

२ ऐसी दूकानों के लाइसेंसों की अवधि पूरी होने पर उन्हें बन्द कर दिया जाए।

३ जब तक इस साधन से आय होती रहे तब तक इस आय का एकमात्र उपयोग निषेधाज्ञा को अमल में लाने के लिए किया जाए।

४ जहां कहीं सम्भव हो वहां शराबखानों को जलपान गृहों का रूप दे दिया

जाए जिससे आनेवाले पुराने ग्राहक वहा आते रहें। शराबखानो के पुरान मालिक ही उन्हें जलपान गहो के रूप मे चलायें तो ठीक रहेगा।

५ आवकारी क महकमे म काम करनेवाला अमला निषेधाना के लागू होने के बाद नाजायज ढग से शराब चुआनेवाले स्थानो की खोज खबर देना शुरु करे।

६ शिक्षण सस्थाओ स अपील की जाए कि वे अपने शिक्षको और विद्यार्थियो से मद्यपान विरोधी प्रचार काय म थोडा समय लगान को कहें।

७ महिलाओ स अपील की जाए कि व व्यसनियो के घरो मे जाकर उनके आश्रिता की दशा का निरीक्षण करें।

८ पडोसी रियासता म वसो ही निषेधाना लागू करने के बारे म बातचीत की जाए।

६ मद्यरहित पेय पदार्थों की खोज करन के लिए स्वयसवक अथवा चिकित्सको की सहायता ली जाए। वे यह भी सुझायेंगे कि व्यसनियो स यह लत कसे छुडाई जाए।

१० मद्यपान विरोधी प्रचार काय उन सभा सोसाइटिया म पुनर्जीवित किया जाए जो इस काय म सलग्न थी।

११ उद्योगवाला से कहा जाए कि वे अपन कल-कारखाना म जलपान गह खेल-कूद आमोद प्रमाद और शिक्षण-कक्षाए प्रवीण व्यक्तिया की देख रख मे ही चलायें।

१२ ताडी तयार करनवाला का उपयोग कवल नीरा तयार करने म किया जाए। वे उस तरल पदाथ का गुड क रूप म बदलने म शक्ति लगा दें। मुझ पता लगा है कि ताडी तयार करन म जिस प्रणाली स काम लिया जाता है, नीरा या गुड तयार करने की प्रणाली उसस भिन्न होगी।

शराब तथा अन्य मादक द्रव्यो के विरुद्ध प्रचार-काय इसी तरीक से किया जा सकता है।

अब रही यह बात कि आबकारी स प्राप्त होनेवाली आय की क्षति की पूर्ति कसे हो। कुछ प्रातो म आबकारी महकम की आय सरकार की सारी आय का एक तिहाई है। मैंने बराबर यही कहा है कि इस आय का उपयोग शिक्षण सस्थाओ के सचालन म दाखिल न किया जाय। मैं अब भी यही कहता हू कि शिक्षा को स्वावलबी बनाया जा सकता है। मैं इस विषय की चर्चा अन्यत्र करूगा। ऐसा एक दिन म सम्भव नही है। पहले तो शिक्षा को स्वावलबी बनाने की बात सिद्धात क रूप म स्वीकार करनी होगी। जो जिम्मेदारिया मौजूद हैं, उन्हें तो

निभाना ही होगा। इसलिए आय के साधनों की तलाश करनी होगी। मृतक द्वारा छोड़ी गई वसीयत पर कर लगाने तथा तम्बाकू और बीड़ी पर कर लगाने के सुझाव दिये जा चुके हैं। यदि फिलहाल इनकी सफलता तत्काल सम्भव प्रतीत न हो तो बजट के घाटे की पूर्ति के लिए ऋण लिया जा सकता है। यदि उससे भी पूरा न पड़े तो केन्द्रीय सरकार से सेना के व्यय में कटौती करने को कहा जा सकता है। उससे जो बचत हो वह प्रांतों को अनुदान के रूप में मिले। यदि प्रांत यह साबित कर सकें कि उन्हें आंतरिक शांति बनाये रखने के लिए सेना की जरूरत नहीं है तो इस मांग की उपेक्षा करना असम्भव हो जायगा।

४८

गांधीजी के साथ प्रेस मुलाकात

हम लोगों ने उनके साथ दिल खोलकर विस्तारपूर्वक बातचीत की। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह उपवास सोलह आने पृथक् निर्वाचन के विरुद्ध आरम्भ किया गया है। जब पृथक् निर्वाचन की व्यवस्था उठा ली जायगी, तो इस उपवास का भी अंत हो जायगा। पृथक् निर्वाचन की व्यवस्था का स्थान कौन सी व्यवस्था ग्रहण करे इस बाबत कई फार्मूलों पर विचार हुआ, पर उन्होंने कहा कि इन फार्मूलों पर हम लोग अपने मित्रों के साथ सलाह मशवरा करें। उपवास की शर्त को इतने स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया था यह हमारे लिए बड़े संतोष की बात है। उन्होंने हमसे इस बात पर जोर देने को कहा कि इस उपवास का उद्देश्य डरा धमकाकर जबरन दृष्टिकोण में परिवर्तन कराने का नहीं है। उन्होंने कहा है कि चार दिन पहले सरकार के पास अपना वक्तव्य प्रकाशनार्थ भेज दिया था, जिसमें उन्होंने अपने विचारों को पूर्णतया स्पष्ट कर दिया था। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्हें रावबहादुर एम० सी० राजा के पास से कोई खबर मिली है, तो उन्होंने नकारात्मक उत्तर दिया। पर जब हम उनसे वार्तालाप कर रहे थे, उसी अवसर पर उन्हें श्री पी० एन० राजभोज का एक पत्र दिया गया। उन्होंने कहा कि वह उस पत्र का शीघ्रातिशीघ्र उत्तर देंगे।

४९

एक अध्ययन

सहकारी योजना के अंतर्गत नारियल के तेल का उत्पादन

हम लोग नारियल का तेल सहकारी प्रणाली के द्वारा उत्पादन करने के परीक्षण में लगे हुए हैं जिससे भटियलपुर केन्द्र के चारों ओर जो दंगाग्रस्त गांव हैं उनके निर्धन स्त्री-पुरुषों को राहत मिल सके। यह उद्योग उस संस्था के माध्यम से किया जा रहा है जिसका विचार बहुद्देश्यीय उद्योग सहकारी संस्थान के रूप में विकास करने का है। इस संस्थान के सदस्यों को ४) सेर के हिसाब से मूल्य चुकाया जाता है। जो लोग सदस्य नहीं हैं उन्हें ५) सेर के हिसाब से दिया जायगा। सदस्यगण के लिए एक शर्त यह है कि अपना और परिजनों का तन ढकने के मामले में स्वावलम्बी बनें। हम खर्चीले हाथों में पैसा नहीं रखना चाहते क्योंकि ऐसा करने से कपड़े की चोरबाजारी को बल मिलेगा। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए प्रत्येक सदस्य को खुद सूत कातना और बुनना सीखना और अपने घर के सभी स्त्री पुरुषों को सिखाना जरूरी होगा। उसे सहकारी सोसाइटी से लेन रकम के एवज में कपास के चार पौधे उगाने होंगे जिनकी कपास वह स्वयं सूत कातने वाले को मुफ्त देगा। जब तक तेल उत्पादन करनेवाले इस प्रकार स्वयं उगाई गई कपास देने की योग्यता प्राप्त नहीं कर लेंगे उसे दिये जानेवाले तेल के मूल्य में से १) सेर के हिसाब से सोसाइटी अपने पास उसके शेयर की पूंजी के बतौर जमा रखेगी।

तेल उत्पादन के इस प्रोत्साहन के द्वारा उन लोगों को तुरंत कुछ आर्थिक लाभ होने लगेगा जो काम करने को राजी पाये जायेंगे। जो लोग सबके कल्याणार्थ दो घंटे निःशुल्क परिश्रम करने को तैयार होंगे उन्हें १ सेर चावल कन्ट्रोल की दर से दिया जायेगा। यह निःशुल्क परिश्रम यह होगा कि वे अपने अपने गांव की सड़कें तैयार करेंगे उन्हें अच्छी दशा में रखेंगे, पुल बनायेंगे और तालाब साफ करेंगे, और जो काम वह विशेष रूप से करेंगे वह यह होगा कि वे जल कचू उगायेंगे तालाबों में सिंघाड़े उगायेंगे और इस प्रकार अपने तथा अन्य लोगों के लिए खाद्य-सामग्री जुटायेंगे (इस समय तालाब किसी काम में नहीं आ रहे हैं क्योंकि उनमें कोई और पानी की घास छाई हुई है)।

इस योजना का दूसरा अंग यह रहेगा कि नारियल के खोपरे का सदुपयोग

किया जायेगा। नारियल के चोवे और मस्के अकाल की स्थिति में भोजन की सामग्री के रूप में काम लेने के उद्देश्य से सुरक्षित रखे जायेंगे। उसके कड़े छिलके से चाय के सुन्दर प्याले तयार किये जायेंगे बटन बनाये जायेंगे। चीनी रखने के भांड तयार किये जायेंगे। उसके रेशे से रस्सियां तयार की जायेंगी। काजिरखिल शिविर में यह प्रयोग इस समय भी हो रहा है। रेशे की डोरी आजकल २॥) सेर बिकती है। उसका इस्तेमाल मकान बनाने के काम में किया जाता है और इस अंचल में इसकी काफी मांग है। खोपरे से चावे और मस्के में चीनी अथवा गुड़ या नमक मिलाकर बड़ा पौष्टिक खाद्य पदार्थ तयार किया जा सकता है। तेल तैयार करने के लिए नारियल के केवल उसी अंश को व्यवहार में लाया जाता है जो खाने पीने के काम में नहीं आता है। योजना के इस अंश को अमली रूप देने के लिए हाथ से चलाई जानेवाली मशीनों की जरूरत होगी। उनका व्यवहार सुदक्ष लोग गांववालों को सिखायेंगे जिससे नाना प्रकार की वस्तुएं तयार की जा सकें।

अभी योजना के केवल पहले अंश को तथा दूसरे अंश के थोड़े-से भाग को अमली रूप दिया जा रहा है। नारियल के तेल का उत्पादन इस वर्ष १७ अप्रैल से आरंभ किया गया। पहले पखवाड़े में केवल चार सेर तेल तयार हो सका। १२ जून को यह प्रयोग स्थगित कर दिया गया। उस समय तक १६ १६ सेरवाले १६ और १४ कनस्तर तेल तयार होने लगे थे जिसका मूल्य क्रमशः (१२१६) और १०६४) था। अब तक जितना तेल तैयार हुआ है उसका मूल्य ३८००) था। कुल मिलाकर ५० कनस्तर तेल तयार हुआ। इस कार्य के द्वारा १३० परिवारों को काम मिला जिनमें ६७ हिन्दू और ६३ मुसलमान थे। वास्तव में ये लोग इस उद्योग के द्वारा ही दुर्भिक्ष से बच पाये। इसके द्वारा प्रत्येक स्त्री को दो रुपये दो आने प्रतिदिन की आय हुई। इस प्रकार डेढ़ महीने में कुल मिलाकर उन्हें १६००) की आय हुई और शेयरों की पूंजी के रूप में सोसाइटी के पास ६००) जमा हुए। कुछ स्त्रियों के पास २०) ३०) की पूंजी इकट्ठी हो गई। इतनी रकम वे अपने जीवनकाल में कभी संचित नहीं कर पाई थीं।

योजना के स्वावलंबी और आत्मनिर्भरता वाले अंग के अन्तर्गत ६५८१ जल कचू ४२० तान कचू ६५० कपास के पौधे उगाये गये। इनके अलावा, ३५० मन जमीकन्द की प्राप्ति भी हुई। १६५० मन खादी की पट्टी की उपलब्धि हुई जिनसे ८७०० गज कपड़ा प्राप्त हुआ।

तेल का उत्पादन करनेवाले तेल की डिलिवरी लगभग पूरे सप्ताह करते रहते हैं। सोमवार को हाट लगती है उस दिन डिलिवरी विशेष मात्रा में होती है। मूल्य तत्काल चुका दिया जाता है जिससे तेल तैयार करनेवाले हाट से अपने

अपने अपने घरों म आवश्यक चीजें खरीदकर ले जा सकें और तेल उत्पादन के लिए नारियल ले जा सकें। पहले नारियल का भाव प्रति रुपये ८ १० नारियल था अब चढ़कर ५ तक हो गया जिसके परिणामस्वरूप तेल का उत्पादन आर्थिक दृष्टि स बहुत खर्चीला हो गया है। यदि तेल का उत्पादन फिर भी जारी करना है तो इसके लिए यह आवश्यक है कि हमारे केन्द्र मे जो तेल आता है उसका सिलसिला बनाये रखने के लिए हाथ मे रुपया रहे जिससे तेल तैयार करनेवालो को पेशगी रुपया दिया जा सके। नकद रुपये की इसलिए भी जरूरत है कि उससे नारियल प्रचुर मात्रा म जमा कर रखा जा सके ताकि हफ्ते म दो बार लगनेवाली हाट के घटते-बढ़ते भावो म उत्पन्न होनेवाली स्थिति का सामना किया जा सके और तेल बनानेवाले लक्ष्मीपुर तथा अन्य स्थानो पर सस्ते दाम मे नारियल खरीदने म समर्थ हो सकें। हमारे पास नकद रुपये का रहना इसलिए भी जरूरी है कि टीन अधिक संख्या म खरीद जा सकें और उनम तेल भर जाने के तुरत बाद ढक्कन लगाने की व्यवस्था हो सके। इन टीनो का कराइखिल स कुमिल्ला चादपुर तथा अन्य स्थानो पर भेजने की समुचित व्यवस्था रखने के लिए भी नकद रुपये की जरूरत है। एक पखवाड़े म खरीदे जानेवाले तेल की कीमत चुकाने के लिए कितना रुपया रखना जरूरी है इसका तखमीना निम्नलिखित है

एक कनस्तर पीछे १६ सेर प्रति कनस्तर के हिसाब से एक पखवाड़े म खरीदे जानेवाले तेल की ४) प्रति सेर की दर स	३००० ० ०
संगृहीत नारियल का मूल्य	५००-० ०
कनस्तरो की कीमत और ढक्कन लगानेवाने का शुल्क	२०० ० ०
वर्षा ऋतु मे चाने और मस्के को तपाने के लिए जरूरी इंधन तथा कड़ाइयो और भट्टियो का खर्च	५०० ०-०
योग	८००० ० ०

कुमिल्ला म ४) सेर की दर से खरीदे जानेवाले तेल की कीमत कनस्तरो और ढक्कनो की कीमत तथा माल ढोने मे खर्च और ढक्कन लगानेवाले की मजदूरी स अलग है।

नारियल का तेल तयार करने की लागत

१) म १८ से २४ तक नारियल खरीदे जा सकते हैं। उन्हे गुड़गुड़िया का रूप देने पर उनकी बिक्री प्रति गुड़गुड़ी १ ≈) से ४।।) तक हो सकती है। यदि

उन्हे कुटीर-उद्योग के रूप म अच्छे ढग से तयार किया जाय तो ये और भी ऊची कीमत पर बिक सकती हैं। इस समय नारियल की रस्सी का दाम २॥) सेर है। १८ नारियलो म एक सेर रस्सी तयार हो सकती है। इसकी तयारी म दो दिन लगेंगे।

नारियल के तेल की बाजार दर ३॥) प्रति सेर है। ३ दिन म इन सारे पदार्थों की तयारी म ३ =) की खालिस आय होगी।

विभिन्न कीमतो पर उत्पादन का प्रतिशत अनुपात

कीमत प्रति गज	प्रतिशत
।=)	१
।)	२
≡)॥	४
≡)	१०
=)॥	१५
=)।	२३
=)	४५
औसत २ ३७ आने प्रति गज (कमीशन अलग)	१०० प्रतिशत

५०

माजिमुद्दीन के साथ हुई बातचीत पर नोट

१) महात्मा गाधी को सदेश

मार्च के अत तक जेल म कोई नही रहेगा। या तो रिहा कर दिया जायेगा या घर अथवा गाव म नजरबद कर दिया जायगा। पर गाधीजी को यह नही समझ रखना चाहिए कि इतने मात्र से ही सारा काम पूरा हो गया, यहा उनका आना अत्यावश्यक है।

२) वातावरण

यदि हिंदू समाचार पत्रो पर नियत्रण रखा जा सके तो वह मुस्लिम समाचार पत्रो को काबू मे रखने का जिम्मा लेते हैं। विश्वविद्यालय म कुछ के

फूल और 'श्री शान्त' से चिह्न है।

३) हिन्दू मुस्लिम प्रश्न पर विचार विमर्श

पृथक पृथक संस्थाओं का अस्तित्व अनिवार्य है। उन्हें कांग्रेस में मिलाने से मुसलमानो की स्थिति कमजोर हो जायगी। क्या इस पार्थक्य का एकमात्र परिणाम आपस की कटुता नही होगा? वह असहमत हुए।

४) वाद विवाद किस बात का लेकर है?

साम्प्रदायिक निर्णय की बात निपटा दी गई है। उनका कहना था कि यह सब कुछ हिन्दुओं की मनोवृत्ति के कारण है। उदाहरण के लिए ढाका विश्वविद्यालय में हिन्दुओं और मुसलमानों का समान अनुपात है, यद्यपि विद्यार्थियो अध्यापकों और सभी अन्य क्षेत्रो में हिन्दुओं की बहुतायत है। प्राथमिक शिक्षा का विरोध कलकत्ता कार्पोरेशन में हिन्दुओं ने कुछ नही किया कांग्रेसी मन्त्रिमंडलो में सच्चे मुसलमानों को नही लिया गया। इसके उत्तर में मैंने पूछा कि क्या बंगाल के मन्त्रिमंडल में सच्चे हिन्दुओं को लिया गया है? उन्हें शिकायत है कि रिआयत बरतने की मनोवृत्ति का सर्वथा अभाव है।

५) समझौते का आधार क्या हो?

वह विस्तार के साथ नहीं बता सके पर शिक्षा और नौकरियों के क्षेत्र को परमावश्यक माना गया। मुसलमान पिछड़े हुए हैं उन्हें आगे बढ़ाना है। हिन्दुओं को मेल मिलाप की भावना से काम लेना चाहिए। उन्हें उदारतापूर्वक रिआयतें देनी चाहिए।

६) मैंने पूछा कि सच्चे हिन्दुओं को मन्त्रिमंडल में लेने से क्या बंगाल की स्थिति में सुधार नही होगा? उन्होंने कहा कि मिली जुली सरकार का तब तक गठन संभव नही है जब तक मुसलमानों और कांग्रेस में समझौता नही होगा। मैंने कहा इसका प्रारम्भ बंगाल में ही क्यों न किया जाय? उनकी राय में यह मांग सबसे अच्छा रहेगा।

१९३९ के पत्र

१

१ जनवरी, १६३६

पूज्य बापू

जमनालालजी सवाइ माधोपुर स यहा वापस आ गये है। जयपुर स भी कुछ मित्रा का सलाह मशवरे के लिए बुलाया गया था। सबकी बात सुनन के बाद मैंने निश्चय किया कि ब्लेसी से मिलना ठीक रहगा। वह मेर लिए अपरिचित था फिर भी उसने मरे अनुरोध का स्वीकार किया। वह दो एक दिन म ही दौरे पर रवाना होनवाला था। मैंन उसे सारी स्थिति बताई। उसने जमनालालजी के बारे म कुछ सवाल पूछे। मुये यह जानकर बडा अचरज हुआ कि उसे जमनालालजी क खिलाफ कोई शिकायत नही थी फिर भी उसने उनके ऊपर प्रतिबध लगवा दिया। वास्तव म उसन मुझसे यह जानना चाहा कि जमनालालजी के खिलाफ क्या बात है। मैंन उससे कहा कि सबसे मजे की बात ता यह है कि उनके खिलाफ न जयपुर को कोई शिकायत है न दिल्ली को ही, फिर भी उन्होन उन पर यह रोक लगा दी है। मैंने उससे कहा कि जमनालालजी इस प्रतिबध के आगे इसी प्रकार सिर झुकाये रहेंग, एसा वह कदापि मानकर न चले। उसने स्थिति पर नये सिर से विचार करने का वचन दिया। ऐसा वह कब करेगा यह उसन नही बताया। उसने कहा कि जमनालालजी ने प्रतिबध मानकर बडी बुद्धिमानी दिखाइ। यदि उसक इस कथन को इस बात के साथ सबद्ध किया जाए कि उसे जमनालालजी के खिलाफ काइ शिकायत नही है, ता यह निष्कप निकलता है कि प्रतिबध उठा लेगा। मैंने वाइसराय को भी लिखा है। आशा है, सब कुछ अच्छा ही होगा।

जमनालालजी न मेरी सलाह मागी। मैंने उन्हें यह सलाह दी

प्रतिबध क बारे मे उन्ह जयपुर क अधिकारिया का लिखना चाहिए और प्रतिबध हटाने के लिए पर्याप्त समय दना चाहिए। यदि उनके सुझाव का व अस्वीकार कर दें तो कुछ दिन और रुकन के बाद उस प्रतिबध का उल्लघन करना चाहिए।'

पर मैंन उन्ह यह भी सुझाव दिया कि प्रतिबध के उल्लघन को सामूहिक सत्याग्रह का श्रीगणेश नही मानना चाहिए। मैं जयपुर की स्थिति स अनभिज्ञ हू। मैं जानता हू कि सत्याग्रह म भाग लेन का तो सकडा आदमी तयार हा जायेंगे पर उनम स मुश्किल स आधा दजन एसे निकलेंगे, जिन्होंने सत्याग्रह क मम का हृदयगम किया हो। यहा लोग-बाग कानून भग करने को कवल इसलिए आतुर

हैं कि इस बार उन्हें लगान मत दो का आंदोलन उठाने का मौका मिलेगा। जयपुर में अकाल है देहाती प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही है। जैसी स्थिति है उसे देखते हुए यदि कुछ न किया जाय,तो भी जो न हो जाय सो थोड़ा है। पर यदि वहां उन्हें कोई उकसानेवाला पहुंच गया, तो उपद्रव निश्चित है। वहां के लोगों की धारणा है कि यह बात उनके पक्ष में है। मेरा कहना है कि यही बात उनके विपक्ष में है। इसलिए मैंने जमनालालजी को यही सलाह दी कि यदि सत्याग्रह करने की नौबत आ जाये तो भी गिने-चुने आदमियों को ही उसमें भाग लेना चाहिए। पर सत्याग्रह के तौर तरीकों में आप मुझसे कहीं अधिक वाकिफ हैं इसलिए उनके लिए क्या करना ठीक रहेगा यह आप ही तय करेंगे। जयपुर के अधिकारी हम लोगों से समझौते की बात जारी रखने को अब भी उत्सुक हैं। यंग ने जमनालालजी पर प्रतिबंध लगाने के बाद मुझे फोन किया और मुझे ऐसा लगा मानो वह अपनी सफाई पेश कर रहा हो। मैंने उसी के सुझाव पर देहली में भेंट करने का फैसला किया था यद्यपि मेरी ग्लेंसी से पहले की जान पहचान नहीं थी। मुझे पता चला है कि बीकम जल्दी ही जयपुर से रुखसत होगा। उसके स्थान पर नौदियम अथवा कोई अन्य अधिक अच्छा अंग्रेज आयेगा। यंग की धारणा है कि बीकम के स्थान पर जो भी कोई आयगा उससे वह अच्छा ही होगा। मेरी राय में बीकम मूर्ख अधिक है दुष्टबुद्धि कम। मैंने यह भी देखा कि ग्लेंसी को एकदम भ्रामक खबरें मिलती हैं। शासन कार्य के मामले में जयपुर रियासत सबसे अधिक पिछड़ी हुई है इस बारे में संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है। जनता ने करवट बदलनी शुरू तो की है, पर जनमत को संगठित और रचनात्मक रूप देनेवाला वहां कोई नहीं है अतः वहां अब तक कोई रचनात्मक कार्य हुआ भी नहीं है। हीरालाल शास्त्री बड़े ही लगनवाले और साहसी आदमी हैं पर उतावली में आ जाते हैं और अपनी ही बात को ठीक समझते हैं। आपके पास ये सारे मित्र जायेंगे और आपकी सलाह मांगेंगे। आप भी उन्हें निःसंदेह अच्छी से-अच्छी सलाह देंगे। जमनालालजी ने मुझसे आग्रह किया था कि मैं आपको अपने विचार लिख भेजूं इसीलिए यह पत्र लिखा है।

एक बात और भी है। मुझे लगता है कि आप 'हरिजन' में जयपुर के बारे में कुछ न-कुछ लिखेंगे। यदि आपका ऐसा विचार हो तो क्या आप मेरे कालेज के बारे में भी कुछ लिखेंगे? यह अन्याय बहुत दिनों से होता आ रहा है।

स्नेहभाजन
घनश्यामदास

२

गाधीजी का लख

जयपुर

पाठक का जयपुर क आन्दोलन और राजकोट क आदोलन म जो भेद है उसे समझ लेना चाहिए।

राजकोट का आदोलन राज्य के भीतर उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की माग को लेकर है और वहा के नरेश ने जनता को जो वचन दिया है उसकी पूर्ति की वह अपेक्षा करती है। यहा के ब्रिटिश रेजिडेंट के घोर मर्यादा रहित आचरण का प्रतिरोध करने म राजकोट के लोग अपने आपको धूल म मिलाने क लिए कटिबद्ध है।

पर जयपुर का मामला अपेक्षाकृत साधारण सा ह और एक मामूली-सी बात को लेकर उठ खडा हुआ ह। जयपुर म ले देकर एक ही राजनैतिक सस्था थी, जो उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की माग कर रही थी। अब उसे लगभग गैर-कानूनी करार दे दिया गया ह और उसके अध्यक्ष पर जो जयपुर नगर का ही नागरिक ह, प्रतिबध लगा दिया गया है। इन बदिशो के हटाये जाने भर की देर ह कि वहा का सत्याग्रह आन्दोलन तुरत समाप्त हो जायगा। वहा क लोग केवल इतना ही चाहते है कि उनके मिलने जुलने पर कोई पाबन्दी न लगाइ जाय और उन्ह सभाए करने की स्वतत्रता रहे। पर यहा भी ब्रिटिश सिंह ने अपना पजा फैला रखा ह। जयपुर के अग्रेज प्रधान मत्री न सीकर के रावराजा के कानूनी सलाहकार बरिस्टर चूडगर से बातचीत के दौरान जो-कुछ कहा श्री चूडगर न उसका ब्योरा जमनालालजी को इस प्रकार दिया

आपको यह सूचना देना मेरा कर्तव्य हो जाता ह कि आज सुबह ११ बजे मैंने जयपुर के प्रधान मत्री सर बीकम सेंट जान क साथ उनके नटनी का बाग स्थित बगले पर जयपुर की स्थिति के बारे म बातचीत की। उसका साराश यह था

मैंने सर बीकम को बताया कि आपके ऊपर जयपुर की सीमा म प्रवेश करने पर जो प्रतिबध लगाया गया ह, उससे भारत के लाखो स्त्री-पुरुषो को बडा क्षोभ हुआ है, क्योकि आपको सभी लोग शातिप्रिय मानते हैं और आपका जयपुर राज्य म जाने का एकमात्र उद्देश्य यही था कि वहा के अकालग्रस्त अचलो का दौरा करके अकाल-पीडितो के कष्ट निवारण सम्बन्धी कार्यों की देखभाल करें।

सर बीक्म ने यह बात स्वीकार की कि आप शांतिप्रिय हैं। पर उनका कहना है कि आप और आपके संगी साथी दुर्भिक्ष पीडित लोगों के सम्पर्क में आयेंगे, जो राजनैतिक दृष्टि से वांछनीय नहीं होगा। मैंने सर बीक्म को बताया कि प्रतिबंध के आदेश की तामील होने के बाद आपका जो वक्तव्य पत्रों में प्रकाशित हुआ है, उससे यह जाहिर है कि आप इस प्रतिबंध को अनिश्चित काल तक कदापि नहीं स्वीकारेंगे इसलिए जनता और रियासत के हितों का ध्यान में रखकर यही अच्छा होगा कि प्रतिबंध हटा लिया जाए नहीं तो गड़बड़ी की आशंका है। वह अपनी बात पर अड़े रहे और बोले कि यदि आपने आदेश का उल्लंघन करने की ठानी तो वह किसी भी स्थिति का सामना करने को तैयार हैं। उनका कहना था कि कांग्रेसी लोग अहिंसा का आश्रय लेकर शांति पर उतारू हैं पर अहिंसा भी हिंसा जैसी ही है, बल्कि उससे भी अधिक शक्तिशाली है। उन्होंने यह भी कहा कि भारतवासी अंग्रेज जाति की मानवीय भावनाओं का फायदा उठाना चाहते हैं पर यदि अंग्रेजों के स्थान पर जापानी होते अथवा हिटलर होता तो हमारी अहिंसा उतनी सफल कदापि सिद्ध न होती।"

इसके पश्चात उन्होंने कहा कि भले ही अहिंसा का पूर्णरूप से पालन किया जाए उसका सामना हिंसा से ही किया जा सकता है और जयपुर में अहिंसापूर्ण आन्दोलन का उसके पास केवल एक ही उत्तर है 'मशीनगन'। मैंने कहा कि सभी अंग्रेजों के विचार उनके जैसे नहीं हैं और अंग्रेज जाति उनके साथ कदापि सहमत नहीं होगी। इस पर वह बोले "ऐसा हो भी सकता है नहीं भी हो सकता है", पर उनकी व्यक्तिगत सम्मति यही थी कि अहिंसा और हिंसा में कोई भेद नहीं है और अहिंसा का मुकाबला हिंसा से करने में कोई बुराई नहीं है।

'यदि आप अथवा महात्माजी इस वक्तव्य का उपयोग करना चाहें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।'

मुझे यह बात इतनी चौंका देनेवाली लगी कि मैंने जयपुर के प्रधान मंत्री को पत्र लिखकर उसमें इस वक्तव्य का हवाला दिया। पत्र आगे दिये जा रहे हैं।

उसकी पुष्टि कराने से पहले आपने उसे प्रकाशित नहीं किया, सो ठीक ही किया, और मैं यह कह सकता हूं कि उसमें मेरे विचारों को जिस रूप में पेश किया गया है, वह नितान्त भ्रामक है। मेरी समझ में नहीं आता कि श्री चुडगर ने मुझे इतना गलत कैसे समझा ? ऐसी मुलाकातों को अनुमति देने के मामले में मुझे जो सकोच रहा है, अब इस घटना में उसकी पुष्टि हो गई है।

अब वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त करने के बाद श्री चुडगर का पत्र प्रकाशित करने में आपके सकोच की पुष्टि हो गई होगी। पर यदि आपका विचार कुछ दूसरा हो तो आप मुझे यथासम्भव शीघ्र ही सूचना दे दें जिससे मैं उचित कारवाई कर सकू।

आपने इतना ध्यान रखा इसके लिए पुन धन्यवाद।

भवदीय,
बीकम सैंट जान

५

वारडोली
२२ जनवरी १९३९

प्रिय मित्र

आपने मेरे १८ तारीख के पत्र का उत्तर देने में इतनी तत्परता दिखाई इसके लिए धन्यवाद। मैं यह जानना चाहता था कि उस मुलाकात के दौरान क्या क्या बातें हुई, इस सबध में आपका क्या बयान है। क्या आप श्री चुडगर के कथन का खडन करते है ? यह मामला इतना गम्भीर है कि मैं इसे यो ही नहीं छोड सकता। आप चाहेंगे तो श्री चुडगर के बयान के साथ साथ मैं आपका बयान भी प्रकाशित कर दूंगा।

भवदीय
मो० क० गाधी

श्री बीकम सैंट जान
प्रधान मंत्री,
जयपुर रियासत

६

जयपुर
२८ जनवरी, १९३९

प्रिय मिस्टर गांधी

आपके २२ तारीख के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद।

जो मुलाकात हुई थी वह निजी और गोपनीय थी। दूसरे सबने उसका भ्रामक वर्णन प्रकाशित करने की धमकी दी है। ऐसी स्थिति में आप उस मुलाकात की कल्पित पेश करने में मेरे संकोच के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करेंगे इसका मुझे विश्वास है। ऐसा करने से कटुता बढ़ेगी जिससे कोई लाभ होता दिखाई नहीं देता है।

पर यदि श्री चूड़गर अपने गलत बयान को प्रकाशित करना उचित समझें तो मुझे यकीन है कि आप मुझे समय रहते चेतावनी दे देंगे जिससे मैं मुनासिब कारवाई कर सकूं, जैसा कि मैं पहले ही कह चुका [illegible]।

भवदीय,
बीक्म सेंट जान

७

बारडोली
२७ जनवरी, १९३९

प्रिय मित्र

आपके २८ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद।

मैं यह कहने को विवश हूं कि मैं आपके संकोच के प्रति सहानुभूति दिखाने में असमर्थ हूं। श्री चूड़गर ने जो रिपोर्ट भेजी है, वह इतनी महत्त्वपूर्ण है कि उसे प्रकाशित करना ही होगा। मैं तो यही चाहता था कि कोई ऐसी रिपोर्ट प्रकाशित न हो, जिसकी सत्यता को चुनौती दी जा सके।

मैं श्री चूड़गर से लिखा पढ़ी कर रहा हूं। उन्होंने सेठ जमनालालजी को जो रिपोर्ट दी है, यदि वह उस पर कायम रहें तो मेरे लिए उसे जयपुर के हित का

ध्यान म रखकर प्रकाशित करना अनिवाय हो जाएगा।

श्री चुडगर के बयान क प्रकाशन पर मुनासिब कारवाई करने की बात आपन कही है वह समझ म नही आई।

भवदीय
मो० क० गाधी

श्री बीक्म सेंट जान
प्रधान मत्री
जयपुर रियासत

८

बारडोली
२८ जनवरी १६३६

प्रिय जमनालालजी

महात्माजी और सर बीक्म सेंट जान क बीच जो पत्र यवहार हुआ, उस मैंन पढा है अ तिम पत्र महात्माजी का है जो २७ तारीख का है। मैंन आपको १५ तारीख को जो पत्र लिखा था उसे पुन ध्यानपूवक प० गया। मेरा कहना यह ह कि उसम जो कुछ बताया गया है वह सर बीक्म और मेरे बीच हुइ वार्ता का यथाथ वणन है।

भवदीय
पी० एन० चुडगर

गाधीजी की टिप्पणी

प्रधान मत्री का पत्र अजीब-सा है। मन रोटी मागी थी उ होन पत्थर भेज दिया। यदि वह अपनावाला बयान पेश न करे तो मुझे श्री चुडगर क बयान को ही ठीक मानना पडेगा। प्रधान मत्री इसके लिए मुझे क्षमा कर। उ होन केवल

खण्डन किया है साथ ही धमकी दी है इतना काफी नही है।

जब काग्रेस के हाथ म शक्ति है तो वह जयपुर की जनता का दिमागी और नतिक दुर्भिक्ष से मरते कदापि नही देख सकती है, विशेषकर जबकि इस दुर्भिक्ष की स्थिति के पीछे ब्रिटेन की भौतिक शक्ति है। प्रधान मंत्री जो कुछ कर रहे हैं, यदि उन्ह वह सब करने का अधिकार नही है तो कम से कम उन्ह वहा से हटा तो देना ही चाहिए।

मो० क० गाधी

३० १ ३८
बारडोली

६

२१ जनवरी १९३९

प्रिय महादेवभाइ

सर डेनियल हैमिल्टन ने मुझे पत्र लिखा है कि फरवरी का मध्य उनके लिए अच्छा रहेगा। मैं भी यदि सम्भव हुआ तो वाइसराय के लौटने पर जयपुर के मामले को लेकर मुलाकात करने का विचार कर रहा हू। इस प्रकार फरवरी का मध्य सर डेनियल और मेरे लिए ठीक रहेगा। उनका कहना है कि वह जनवरी के अन्त म गोसाबा[1] म नही होगे।

तुम्ह याद ही होगा कि बापू ने तुम्ह बताया था कि मेरे लिए जनवरी के अन्त म गोसाबा जाना शायद सम्भव न हो, क्योंकि मुझे वाइसराय से मिलना होगा। उनकी भविष्यवाणी कितनी नपी तुली होती है क्या यह प्रेरणा थी ?

कल मैंने सपना देखा कि मैं बापू के पास हू और उन्हें एक मिनट के लिए गश आ गया है। तब उन्होंने तुम्ह बुला भेजने को कहा और तुम आ पहुचे। उसके बाद बापू चंगे हो गए। मुझे सपना अच्छा नही लगा पर म वहमी नही हू और सपनो म कतई विश्वास नही करता। आशा है, बापू स्वस्थ होंगे।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

१ गोसाबा सुन्दरवन का एक स्थान है जहा डेनियल काम करते थे।

१०

बारडोली
२४ जनवरी, १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका २१ तारीख का कृपा-पत्र मिला। पादरी मेक्लियन ईसाई मिस्टर के साथ अपने पत्र-व्यवहार की चर्चा की है। उनके साथ मेरा जो पत्र-व्यवहार हुआ है उसमें मेरे रुख का काफी समाधान है क्योंकि मुझे पता था कि वह [illegible] ईसाई मत का प्रचार कर रहे हैं। उन्होंने हिन्दू पाठशालाओं में ईसा की प्रार्थना चलाई थी। यह प्रार्थना बाइबिल से ली गई थी। पाठशालाओं की दीवारों पर बाइबिल से सम्बद्ध चित्र लटकाए गए थे जिनमें बाइबिल के वाक्यांश उद्धृत किये गये थे। पादरी ईमानदार हैं पर अभी अपनी [illegible] से पीछा नहीं छुड़ा सका है। उनके लिए इस उम्र में सम्भव भी नहीं है। मुझे तो यही आशंका है कि जब तक ईसाइयत नहीं रहेंगे तो मिशनरी लोग उनके द्वारा किये गये सारे [illegible] कामों पर पानी फेर देंगे। पर मैं अब भी गलतफहमी में पड़ गया हूं। उनके साथ मेरी जो पत्र-लिखावट हुई है उसकी नकल आपके पास भेज दूंगा। यदि आपके साथ उनका पत्र-व्यवहार हो चुका है तो मेरा आपके साथ जाना जरूरी नहीं है। बापू का कहना है कि आप जाएं तो अच्छा रहे।

आपका जो सपना देखा विचित्र था। पर जब कभी हम दुःस्वप्न देखें तो उनका उलटा अर्थ ग्रहण करना चाहिए। बापू बिलकुल स्वस्थ हैं, तथा मैं और आप उनसे जितने काम की आशा कर सकते थे वह उससे भी अधिक कर रहे हैं। जब कल शाम उन्होंने आपके साथ फोन पर बात की तो मैं और देवदास दोनों वहीं मौजूद थे। यहां जो कुछ हो रहा है उसका ब्योरा आपको मिल ही चुका है। वास्तव में बापू और सरदार पटेल का सारा समय देशी रियासतों की झंझट में ही लग रहा है। बापू ने आज टाइम्स आफ इण्डिया को एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दिया है। आशा है हिन्दुस्तान टाइम्स में भी यह छपेगा। छपा होगा, तो इस पत्र के पहुंचने से पहले ही वह आपकी नजर से गुजर चुका होगा। यदि नहीं छपा होगा तो देवदास और मैं उसी सामग्री में से हिन्दुस्तान टाइम्स के लिए एक भेंट-वार्ता बना लेंगे।

आप यहां कब तक हैं? मैं जल्दी ही अपनी खुराक का प्रयोग करने का विचार कर रहा हूं। पथ्य में—गाय का दूध, गाय का घी, शहद और चावल रहेंगे। सोच

रहा हू, आपके यहा नयी दिल्ली मे यह प्रयोग करू तो कसा रहे ? आपका वहा मौजूद रहना जरूरी नही है पर आपकी अनुपस्थिति म वहा मुझे ये सारी चीजें मिलती रहेगी न ? प्रयोग चालीस दिन चलेगा।

सप्रेम,
महादेव

११

नयी दिल्ली
२५ जनवरी १९३९

प्रिय महादेवभाई,

बापू को यहा क लक्ष्मीनारायण मदिर के उदघाटन की तिथि निश्चित करने की याद दिला देना। उन्होंने काग्रेस के तुरत बाद आने का वचन दिया था और अब तिथि निश्चित करनी है।

जयपुर के बारे म मैं राजनतिक विभाग के सक्रटरी से फिर मिला था। उस जमनालालजी के खिलाफ कोई शिकायत नही थी। इसलिए उसन एकमात्र इस दलील का सहारा लिया कि अन्तिम निणय केवल दरबार ही ले सकता है। मैंने उम बता दिया कि सारा दोष दरबार के मत्थे मढना व्यथ है क्योंकि वह तो नाम मात्र का सर्वोच्च है। अत मे उसन दरबार को लिखन का वचन दिया, पर इसका कुछ भी अथ निकाला जा सकता है। मुझे लगता है कि बापू न इस मामले का जिस ढग से अपने हाथ मे लिया है उसका प्रभाव पडे बिना नही रहगा। अब मैं वाइसराय स मिलन की प्रतीक्षा कर रहा हू।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बारडोली

१२

२६ जनवरी, १६३६

प्रिय महादेवभाई

मुस्लिम लीग क महामत्री नवाबजादा लियाक्त अली खा[1] मर प्रिय मित्र हैं। उनके बारे म मेरी बहुत अच्छी धारणा है। जहा तक मुझे मालूम है वह स्पष्ट वादी हैं और उनकी विचारधारा प्रगतिशील है। हम दोनो जब कभी मिलते हैं, साम्प्रदायिक चर्चा होती है। उन्होने मुझसे शिमला म भी कहा था और यहा भेंट होने के अवसर पर भी कि साम्प्रदायिक समस्या का हल तलाश करना मुश्किल नही है आवश्यकता केवल इस बात की है कि जो मुसलमान मत्री लिय जाए वे ऐसे हो जिन पर मुसलमानो और मुस्लिम लीग का विश्वास हो। मुस्लिम लीग न यह बात औपचारिक रूप स तो नही कही है पर उनका कहना है कि यदि आपस मे समझौते की बात चलाई जाती तो केवल इसी एक बात पर जोर दिया जाता कि जहा-जहा सत्ता की बागडोर काग्रेस के हाथ म है वहा मिली जुली सरकार का गठन हो। मैंने कहा कि मुझे तो मामला इतना सहज नही दिखाई देता। मैंने कहा कि मेरी अपनी धारणा तो यही है कि दोनो पार्टियो के बीच किसी तरह का समझौता कभी भी सम्भव नही होगा। पर मैंने उन्हें सलाह दी कि यदि वह बापू स अनौपचारिक ढग स और बगर ढिंढोरा पीटे मिलें तो अच्छा रहेगा। उन्हे यह विचार पसद आया पर इस शर्त पर कि समाचार पत्रो को काना कान खबर न हो। यह बिलकुल सभव है। उन्होने कहा कि जब बापू दिल्ली म होगे, तो वह उनस मिलन क अपन इराद की बात जिन्ना को भी बता देंग।

अब तुम यह लिखो कि क्या बापू के लिए उनसे मिलना सम्भव होगा। मुझे पक्का यकीन है कि बापू को यह आदमी अच्छा लगगा और यदि वह लियाक्त अली खा से मिलन के लिए समय निकाल पायें तो कम-स कम एक घटे का समय निकालें जिसस सारी बातो पर दिल खोलकर चर्चा हो सके।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बारडोली

1 बाद म लियाक्त अली पाकिस्तान के प्रधान मत्री बन।

१३

२६ जनवरी १९३९

प्रिय महादेवभाई

यह घिनौना पत्र गत ३० दिसम्बर के स्पेक्टेटर में छपा था। इसका लेखक वही आदमी लगता है जिसका वल्लभभाई ने कुछ महीने पहले पर्दाफाश किया था। क्यों, है न वही आदमी? जी में आया कि इस पत्र का मुंहतोड़ जवाब दूं।

वर्धा में जिस आदमी की मृत्यु हुई थी, उसके बारे में पराजपे को अवश्य ही मालूम रहा होगा कि जो लाछन लगाया गया था उसका तुमने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में पूर्णतया खण्डन कर दिया था। पर एक अविवाहित युवती उपासिका के नाम लिखे गये पत्रों के प्रकाशन के पीछे क्या रहस्य है सो मैं नहीं जानता। मैं समझता हूं कि इसका उत्तर न देना ही ठीक रहेगा। पता नहीं तुम इस बारे में क्या कहना चाहोगे?

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बारडोली

१४

नयी दिल्ली
२६ जनवरी, १९३९

प्रिय महादेवभाई

तुम अपनी खुराक का जो प्रयोग करना चाहते हो वह मुझे कुछ जचा नहीं। यदि तुम गाय के दूध, घी, शहद और थोड़े बहुत आवलों तक ही अपना प्रयोग सीमित रखो तो वह ठीक रहेगा क्या? जब तक ठोस भोजन न लेने लगो, तब तक ईश्वर के वास्ते घी से बचे रहना। वैसे तो शहद में भी थोड़ी-बहुत चर्बी रहती ही है। इस प्रयोग का क्या नतीजा होगा इसके विचार मात्र से व्याकुलता होती

है। आशा है, तुम इस बारे में बापू से सलाह मशवरा अवश्य कर लोगे शायद तुमने कर भी लिया होगा।

पर यदि मेरी सलाह के बावजूद तुमने प्रयोग करने का निश्चय किया तो नयी दिल्ली के बिडला हाउस में खुशी-खुशी कर सकते हो सारी चीजो का ठीक ठीक प्रबंध हो जायेगा, मैं वहा रहू या न रहू। कृपया लिखो कब से श्रीगणेश करने का विचार है जिससे आवश्यक प्रबंध किया जा सके। पर मेरी सलाह मानकर एक बार फिर सोचकर देखो तो अच्छा रहेगा। स्वास्थ्य के लिए दूध और फल ही सबसे अधिक लाभदायक है। यदि तुम आवला और दूध पर ही रह सको तो और भी अच्छा होगा। पर उनके साथ शहद और घी का सम्मिश्रण मुझे ठीक नही लगता।

३१ तक तो यही हू। उस दिन जमनालालजी आनेवाले है यहा रुके रहने का एक कारण यह भी है। इससे पहले भी चल पडता पर हो सके तो एक बार वाइसराय से मिलने की इच्छा है। रियासतो की समस्या विकट रूप धारण करती जा रही है। जहा तक मुझे मालूम है यह नीति वाइसराय की नही है। उन्होने यह कहा बताते है कि उनके कल पुर्जे ठीक ढग से नही चल रहे हैं। इसका एक मात्र अर्थ यही हो सकता है कि अधिकारी लोग उनकी नीति का अनुसरण नही कर रहे हैं। जैसा-कुछ होगा दो एक दिनो में स्पष्ट हो जायेगा। मैं उनके साथ दोटूक बात करना चाहता हू। मुझे इस बाबत तनिक भी सदेह नही है कि वाइसराय नीयत के साफ हैं। पर उन्होने मुझसे बापू को बताने के लिए जो कुछ कहा राजनैतिक विभाग के अधिकारी लोगो का आचरण उसके सर्वथा विपरीत दिखाई दे रहा है।

रही डेनियल हैमिल्टन के स्थान पर मर जाने की बात सो तुमने जो कुछ कहा है उससे मारे उत्साह पर तुषार पात हो गया है। जब तुम वहा से निराश होकर लौटे हो तो मेरा स्वतत्र रूप से जाच पडताल करने का कोई इरादा नही है।

सप्रेम

घनश्यामदास

१५

स्वराज्य आश्रम
बारडोली
२७ १ ३९

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका २५ तारीख का पत्र मिला। आज तो निश्चित तिथि बताना कठिन है विशेषकर इसलिए कि त्रिपुरी को लेकर सब-कुछ अधर म है। सारी बात इस पर निर्भर करेगी कि सभापति कौन होगा? यदि सुभाष सफल हुए तो शायद बापू त्रिपुरी जायें भी नहीं। यदि पट्टाभि हुए तो बापू अवश्य जायेंगे। इसलिए मैं निश्चित तिथि २९ तारीख को सभापति के निर्वाचन के परिणाम की घोषणा के बाद ही बता सकूगा। आप चाहने तो तार भेज दूगा। मेरा भाई अब ठीक है। बापू यहा से पहली तारीख को रवाना हो रहे हैं पर शायद उन्हे अधूरे प्रोग्राम को पूरा करने के लिए दुबारा यहा लौटना पड़े।

सप्रेम,
महादेव

१६

बारडोली
२८ १ ३९

प्रिय घनश्यामदासजी

मैं इसके साथ श्रीमती चदाबीबी का पत्र और आपके नाम उनके पत्र की नकल भेज रहा हू। आप इस विषय म कुछ कहना पसद करें तो दो एक पत्तियां अवश्य लिख भेजें।

बापू के स्वास्थ्य रूपी दीपक की बत्ती दोनो छोर स जल रही है। रक्तचाप रोज १८६/१०८ तक जा पहुचता है दोपहर को १६६/१०० तक आ जाता है पर सध्या होते होते प्रातःकाल की भांति ही पुन ऊपर चढ जाता है। आपने देख ही लिया होगा कि इस प्रकार रक्तचाप स्थायी रूप से कुछ कम है। डा० जीवराज

का कहना है कि हृदय का फलाव किंचित बढा है। पर यह सब होना ही था और जमा कुछ है उस ग्रहण करने के सिवा कोई चारा नही है।

सदभावनाओ क साथ

आपका
प्यारलाल

१७

बारडोली
२६ १ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

हरिभाऊ सार कागज-पत्र लेकर कल रवाना हो गये हैं। टेलिफोन पर जो बातें हुइ उसका साराश बापू को बताया तो उन्होंने यह टिप्पणी की अगर उनके खयाल मे समस्या इतनी विकट हो गई है कि वातावरण को शान्त रखना आवश्यक है और तिस पर भी व लोग वस्तुस्थिति से इतने बेखबर हैं तो क्या उन्हें मेरे सम्पक म आने म जल्दी नही करनी चाहिए ? घनश्यामदास को उन्हें यह बात साफ-साफ बता देनी चाहिए।' मैंने कल रात टेलिफोन पर आपको यह बात बतानी चाही पर आप नही मिल।

आप तो मेरे खुराक-सम्बन्धी प्रयोग की बात से व्यर्थ ही घबरा गये। प्रयोग इतना कुछ निशान सिद्ध है कि उसे बापू का आशीर्वाद प्राप्त हो गया है। प्रयोग के निमित्त चार स्थान उपयुक्त समझे गये—साबरमती आश्रम नासिक (बालचद की जमीदारी) सेगाव और आपका स्थान। बापू ने आपके स्थान का पसद किया कारण ये थे

(१) इस प्रयोग के लिए ठण्डी आबोहवा की जरूरत है

(२) दूध और घी शुद्ध होने चाहिए

(३) काम धधा भी होता रहेगा। यह अतिम कारण सबस बढकर निर्णायक रहा। पर आपके यहा अच्छी गायें मिल सकेंगी इस बारे म बापू को सदेह था। मैंने बताया कि आपके पास बढ़िया किस्म की गायें हैं और मैंने कहा कि मुझे आपक यहा का दूध हमेशा अच्छा लगा। उन्होंने कहा कि तब फिर कोई कठिनाई नही है। मैं पहली को चलकर दूसरी को पहुच रहा हू। आशा है मरा कायक्रम आपको

पसद आयेगा। मरी स्त्री और मरा लडका मेरे साथ रहेंगे। क्या तार द्वारा सूचित करने की कृपा करेंगे कि यह सब कुछ आपको पसद है ?

आपका
महादेव

१८

मगनवाडी
वर्धा (मध्य प्रात)
३० १ ३९

प्रिय घनश्यामदासजी

घटनाए कुछ इतनी तेजी स घट रही हैं कि बापू के लिए खामोश रहना कठिन हो गया है। जयपुर को लेकर बापू ने हाल ही म जो लख लिखा है वह हरिजन म प्रकाशनाथ आज भेजा जा रहा है। आप शायद इस लेख का लेथवेट को दिखाना चाहेंगे।

नवाबजादा लियाकत अली के बार म बापू का कहना है कि जब वह दिल्ली आयेंग तो उनस खुशी-खुशी मिलेंगे।

काग्रेस-अध्यक्ष के निर्वाचन के परिणाम पर अचम्भा भी हुआ और विषाद भी। पहले तो जसा कि मैंने आपको लिखा ही था बापू न कहा था कि वह अधिवेशन म भाग लेन नही जायेंगे, फिर उन्होंने सोचा कि सब समझेंगे कि खीज के कारण नही गय इसलिए जाना ही ठीक रहेगा। जो फूट पडी है उसका सामना करना होगा और यदि गाधीवादियो को विदा लेनी है तो ऐसा वे पूरे कानून कायदे क साथ करेंगे। फलत मन्दिर का उद्घाटन १६ या १७ दोनो म से किसी भी दिन हो सकता है जो दिन आपको रुचे और आनके शास्त्रियो को जच। बापू त्रिपुरी मे १५ तारीख के बाद नही रहेंगे।

हा जेम्किन वहा पूनावाला दुष्ट है उसके पास खोन का प्रतिष्ठा नाम की चीज है ही कहा ? हिंदुस्तान भर म उसका नाम रोशन है। यह परिताप का विषय है कि स्पक्टेटर न इस बदनाम आदमी का पत्र छापना उचित समझा। सरदार और जवाहरलाल दोनो ने ही उस अच्छी तरह बेनकाब कर दिया है और बापू का कहना है कि उसके मुह लगने म अपनी ही हठी है।

देवदास दिल्ली कब लौट रहे हैं ?

अगर मैंने आपके यहां दूध पर रहना शुरू किया तो जैसा कि मेरा विचार है तो मैं वहा ७ या १० माघ तक टिका रहूंगा। पत्नी और लड़का दोनों मेरे साथ रहेंगे।

सप्रेम,
महादेव

१६

नयी दिल्ली
३० जनवरी १९३९

प्रिय महादेवभाई

मैंने लेथवेट से पिछले शनिवार को भेंट की थी। उसके बाद मैंने जयपुर और राजकोट से सम्बद्ध सारे कागज पत्र तथा इस बारे में वाइसराय के साथ बापू के पत्र व्यवहार की नकल भेजने के लिए तुमसे कहा था। आज लेथवेट से फिर मिला और काफी देर तक बात की।

गत शनिवार को लेथवेट ने पहले से एक नोट तैयार कर रखा था। शायद वह नोट वाइसराय ने बोलकर लिखाया होगा। नोट जितना मेरे लिए था उतना ही बापू के लिए भी था। वाइसराय को बापू का आखिरी खत मिल गया था उसका उन्होंने उत्तर नहीं दिया था, और शायद वह नोट बापू के पत्र के उत्तर के रूप में था। नोट कुछ इस प्रकार था

मुझे महात्मा का एक अत्यन्त सौहार्दपूर्ण पत्र मिला है और उन्होंने उसमें जो-जो बातें कही हैं उनमें से अधिकांश में मैं पूर्णतया सहमत हूं। पर मुझे कहना पड़ता है कि उन्होंने मेरी कठिनाइयों की ओर ध्यान नहीं दिया। देशी रियासतों के बारे में मैं बिड़ला के साथ खुलकर बातचीत कर चुका हूं और उनमें प्रजातन्त्रीय ढांचा लाने के विचार के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करने में मैंने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। वास्तव में पिछले बारह महीनों में इस दिशा में काफी कुछ किया जा चुका है पर उसे नजरअन्दाज कर दिया गया है। इस अवधि में जो कुछ विचारा गया मैं उसका ब्योरा इकट्ठा कर रहा हूं जिससे यह बताया जा सके कि देशी रियासतों में इस दिशा में कितनी प्रगति हुई है।

व्यक्तिगत शासन और उत्तरदायित्वपूर्ण शासन-व्यवस्था में जमीन-आसमान का अन्तर है। भारतीय प्रांतों को अपने अभीष्ट की सफलता के लिए कितनी प्रतीक्षा करनी पड़ी यह गांधीजी जानते ही हैं। रियासतों में व्यक्तिगत शासन अभी तक जारी है। उसमें परिवर्तन करना एक दिन में सम्भव नहीं है। इसलिए गांधीजी को इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि इस नाजुक मामले में मुझे किस प्रकार फूंक फूंककर कदम रखना है। अंतिम लक्ष्य के प्रति मेरी पूरी सहानुभूति है पर मुझे गांधीजी के खिलाफ एक बड़ी शिकायत यह है कि वह इस मामले में मेरी सहायता नहीं कर रहे हैं। वास्तव में एक प्रकार से मुझे कुछ-न-कुछ करने को विवश किया जा रहा है।

देशी रियासतों की समस्या के दो पहलू हैं। एक पहलू वैधानिक है, दूसरा प्रशासनिक है। जहां तक प्रशासनिक पहलू का सम्बन्ध है सर्वोपरि सत्ता को रियासतों में राज काज को अच्छा बनाने या उनकी न्याय-व्यवस्था को अधिक संतोषजनक रूप देने के निमित्त हस्तक्षेप करने का अधिकार है। ऐसे ही अन्य मामलों में हस्तक्षेप करने के लिए मैं तैयार हूं।

रहा वैधानिक पहलू, सो सार्वभौम सत्ता के लिए इस दिशा में कुछ करना सम्भव नहीं है। यह बात सोलह आने नरेशों की इच्छा के ऊपर निर्भर है। नरेशों का भी भय है। जिन रियासतों को प्रगतिशील समझा जाता है वे भी उपद्रवों से खाली नहीं हैं। मैसूर, त्रावणकोर तथा बड़ौदा के उदाहरण पेश किये जा सकते हैं।

रही जयपुर और राजकोट की बात, सो मैं वहां की वस्तुस्थिति से पूर्णतया अवगत नहीं हूं। मुझे तो केवल उतना ही ज्ञात है जितना पत्रों में प्रकाशित हुआ है। पर राजकोट के बारे में मेरी यह धारणा अवश्य है कि वहां जो-कुछ हो रहा है वह वहां की जनता के हितार्थ उतना नहीं, जितना उस रियासत पर कांग्रेस का दबदबा बढ़ाने के उद्देश्य से हो रहा है।

'जयपुर के बारे में मेरा कहना यह है कि वहां परामर्शदायिनी समिति की स्थापना के रूप में जो-कुछ किया जा चुका है उसे अलग रखकर इस प्रयोग की उपयोगिता को परखकर देखना अच्छा रहता।

बस, लेथवेट ने मुझे जो नोट पढ़कर सुनाया उसका निचोड़ यही था।

मैंने बताया कि मैं जयपुर की स्थिति से पूर्णतया परिचित हूं, इसलिए मैं तुरंत कह सकता हूं कि महामहिम को एकदम भ्रामक सूचना दी गई है। मैंने लेथवेट को सारी दास्तान कह सुनाई और यह भी बताया कि वहां जो समझौता हो पाया उसमें मेरा कितना हाथ था। इसके बाद मैंने गवर्नर की वेला का टालने

के उद्देश्य से निम्नलिखित सुझाव अपनी ओर से पेश किये और कहा कि यदि दरबार इन सुझावों को स्वीकार करे तो ये सुझाव मैं जमनालालजी को भी दूंगा।

मैंने कहा कि संकट तीन बातों को लेकर पैदा हो सकता है (१) जमनालालजी पर प्रतिबंध (२) प्रजामंडल की मान्यता तथा (३) सीकर के बन्दियों की रिहाई।

प्रतिबंध को तुरंत उठा लेना आवश्यक है। लेथवेट ने कहा कि अब समय बहुत थोड़ा रह गया है और मामला इतना आगे बढ़ चुका है कि पीछे कदम उठाना सम्भव नहीं प्रतीत होता। इस पर मैंने यह सुझाव दिया कि जमनालालजी को गिरफ्तार करके रियासत की सीमा के बाहर ले जाकर मुक्त कर दिया जाय। मैं जमनालालजी से कह-सुनकर शीघ्र ही दोबारा वहां जाकर अपनी गिरफ्तारी कराने से रोकूंगा, पर शर्त यह है कि इसके बाद प्रतिबंध उठा लिया जाय। प्रजामंडल को मान्यता प्रदान करने तथा सीकर के बंदियों को रिहा करने के प्रश्न पर मेरे साथ बातचीत चलाई जाए। लेथवेट ने यह सुझाव वाइसराय के सामने पेश करने का वचन दिया। उसने यह भी स्वीकार किया कि जयपुर का मामला उतना जटिल नहीं है। मैंने कहा कि जयपुर की समस्या का समाधान होने के बाद सारा ध्यान राजकोट पर केन्द्रित किया जा सकता है।

कल संध्या के समय तुम्हारे भेजे सारे कागज आ पहुंचे। मैंने उन्हें बड़े गौर से पढ़ा और आज सुबह लेथवेट से फिर मिला। कोई एक घंटा बातचीत होती रही। उसने बताया कि मामला वाइसराय के सम्मुख रखा गया था, उसके बाद जयपुर दरबार के साथ सम्पर्क स्थापित किया गया। उस रियासत की स्थिति के प्रति दरबार का दृष्टिकोण बड़ा कठोर लगा। यदि समाचार पत्रों में कीचड़ न उछाली जाती तो उसके (अर्थात् लेथवेट के) लिए सहायता करना कठिन न होता, पर अब मामला बहुत आगे बढ़ गया है। पर दरबार एक काम अवश्य कर सकते हैं, वह जमनालालजी को बड़ी शिष्टता के साथ हिरासत में लेने के बाद रियासत की सीमा पर ले जाकर छोड़ सकते हैं। साथ ही लेथवेट ने कहा, "आपको एक भेद की बात बता दूं, बीकम के स्थान पर एक नया दीवान आ रहा है। कौन आ रहा है यह तो नहीं बताऊंगा, पर जो आदमी आ रहा है वह व्यवहारकुशल भी है और सौहार्द सहानुभूति से भी काम लेगा। आगामी मार्च के पहले सप्ताह में वाइसराय भी जयपुर जायेंगे। यदि जमनालालजी को नये आदमी के आने तक जयपुर से दूर रखा जा सके तो स्थिति अवश्य सुधरेगी और तनाव अवश्य दूर होगा। मैं जानता हूं कि आपकी मांग मामूली-सी है, पर स्थिति ने इतना जटिल

रूप धारण कर लिया है कि फिलहाल मैं इससे अधिक कुछ करने मे अपने-आपको असमर्थ पाता हू।"

मैंने उत्तर दिया, 'जमनालालजी इतने से कदापि सतुष्ट होनेवाले नही हैं। क्योकि मुख्य बात वाक स्वातत्र्य और सभा सोसाइटी का गठन करने म किसी प्रकार की रोक न रहने की है। जब तक इसकी गारण्टी नही मिलेगी समस्या ज्यो की त्यो बनी रहेगी। सीकर के बदियो की रिहाई के मामले का कुछ दिनो तक भल ही स्थगित रखा जाये पर वाक स्वातत्र्य के बारे म जमनालालजी का समाधान करना तथा उन्हे जयपुर जाने स रोकना मेरे लिए क्योकर सम्भव होगा ?'

लथवेट बाला पर प्रजा मण्डल को अवध घोषित तो किया नही गया है।

मैंने उत्तर म कहा, यह ठीक है कि उसे अवध घापित नही किया गया है पर जो आर्डिनेंस जारी किया गया है उसका तो यही मम है कि एक वध सस्था के रूप मे उसका अस्तित्व सम्भव नही है। क्या आप मुझ यह आश्वासन देने के लिए तयार हैं कि जब तक नया दीवान न आ जाय प्रजा मडल को अपना काय एक वध सस्था के रूप म जारी रखने की स्वतत्रता रहगी भल ही उस औपचारिक मान्यता प्रदान न की जाए ? यदि इतना हुआ तो भी समझा जायेगा कि कुछ-न कुछ तो हुआ ही है।"

लेथवट ने एक बार फिर पूछा ' प्रजा मडल को मान्यता से वचित रखने से उस क्या क्षति उठानी पड रही है ? मैंन कहा यदि उस एक वध सस्था के रूप म चलने दिया जाय तो मान्यता न मिलन पर भी उसकी कोई क्षति नही होगी। पर यदि ताजा आर्डिनेंस का आशय यह हो कि प्रजा मडल को गर-कानूनी भले ही घोषित न किया गया हो उसे चलन नही दिया जा सकता, तो उसकी क्षति एक स्वयसिद्ध विषय है।

लेथवेट न कहा कि वह अभी नही कह सकता कि प्रजा मडल की वास्तविक स्थिति क्या रहगी पर कल बतायगा।

इसके बाद मैंने राजकोट का प्रसग छेडा। लेथवट ने कहा राजकोट का मामला कुछ अधिक पचीदा है। सरदार और राजकोट क ठाकुर के बीच एक करार हुआ था। हम उस करार क बार म काई जानकारी नही है। पर ठाकुर ने सरदार का जो पत्र लिखा है यदि उस आधारस्वरूप माना जाय ता उसका यही अथ निकलता है कि सरदार को लोगो क नाम सुझाने का अधिकार रहेगा पर किस किस को नामजद किया जाय, इसका अन्तिम निणय ठाकुर खुद करेंगे। सम्भव है दोनो के बीच जा समझौता हुआ उसका अभिप्राय भिन्न हो पर जो

कुछ मूत रूप म हमार सामने है हम ता उसी को आधारस्वरूप मानेंग। मुस्लिम लीग की माग गर मुनासिब नही लगती और चूकि समझौत मे हमारा कोई हाथ नही था, इसलिए हम ठाकुर पर दबाव कम डाल सकते हैं ?

मैंन उत्तर दिया जो आरोप लगाया जा रहा है वह यह है कि जो वार्ता भग हुई है उसका दोपी मि मन है। लेथवेट न कहा हम इस आरोप का स्वीकार करने का तयार नही हैं। मैंने कहा कि इसके प्रमाण मौजूद हैं। गिब्सन और ठाकुर क बीच क्या क्या वातें हुइ उनके नोट का प्रामाणिक कदापि नही माना जा सकता।

हम दोनो न उडीसा की भी चर्चा की पर कोई खास बात नही हुई।

इस पूर मामल म वाइसराय की क्या स्थिति है यह उनक ऊपर लिखे नोट स प्रकट ही है।

लेथवेट न कहा कि गाधीजी ने आज के हरिजन म उडीसा की समस्या की जिस ढग से चर्चा की है महामहिम का उसके खिलाफ शिकायत है। लेथवेट बोला कि वस्तुस्थिति का वणन करन म व क्षोभजनक भावा का प्रयाग कर रहे हैं। इसस वाइसराय को कोई सहायता नही मिल रही है।

वह मुझसे इस बात पर सहमत हुआ कि सकट टालने का सबस अच्छा उपाय यही हाता कि पहल राजकोट और जयपुर जस कुछ विवादग्रस्त मामलो से निपट लिया जाता। पर उसन वताया कि व लाग असहाय हैं और उनकी असहाया वस्था को ध्यान मे नही रखा जा रहा है।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादवभाई देसाई
बारडाली

२०

३१ जनवरी, १९३९

प्रिय प्यारेलाल

तुम्हारी २८ तारीख की चिट्ठी तो मिला, पर तुमने साथ म जो सामग्री भेजने

की बात लिखी है वह नही मिली। मैं आज बनारस जा रहा हू। उस सामग्री के मिलने पर बताऊगा कि मुझे क्या कहना है। मेरा बनारस का ठिकाना यह है बिडला हाउस लाल घाट।

भवदीय
घनश्यामदास

श्री प्यारलाल
बारडोली

२१

नकल

प्रिय लार्ड लिनलिथगो

श्री कन्हैयालाल माणेकलाल मशी सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास और अब श्री घनश्यामदास बिडला भी यह कह रह हैं कि मैं हरिजन मे रियासतो की बाबत जो कुछ लिख रहा हू उसम विशेषकर मेरे जयपुर-सम्बन्धी लेखो से आपको परेशानी हो रही है। इसलिए मैं एक लेख इस पत्र के साथ रख रहा हू जिसे मैंने प्रकाशनाथ 'हरिजन' के मनेजर को पूना भेज दिया था पर अब इसका छपना रोक दिया है।

मेरे लिए यह कहना अनावश्यक है कि ऐसा कोई काम करने की सामर्थ्य रखते हुए भी करने की इच्छा नही है जिससे आपको परेशानी हो। मेरा एकमात्र लक्ष्य यही है कि सम्बद्ध जनता के साथ न्याय होना चाहिए।

मैंने अपने पहले पत्र मे जिन तीन मामलो की चर्चा की थी यदि उनके बारे म आप प्रभावोत्पादक कदम उठा सकें तो कितना अच्छा हो।

क्या आप एक पक्ति यह लिखने की कृपा करेंगे कि मैंने जिस लेख को प्रकाशित होने ■ रोक दिया है, उसके बारे म मुझे क्या करना है ?

आपका,
मो० क० गांधी

बारडोली
३१ १ ३९

२२

१ फरवरी, १६३६

प्रिय प्यारेलाल

बीक्म के साथ चुडगर की मुलाकात वाला जो लेख हरिजन' मे प्रकाशनार्थ भेजा गया था वह मैंने पढा है। उसे पढने के बाद मुझ तो उसमे चिढानेवाली कोई बात नहीं लगी। इधर बापू रियासतो पर जो लेख लिखते रहे हैं उनमे मुझे चिडचिडाहट की गध आई थी। दो वाक्य मुझे विशेष रूप से पसन्द नही आये। एक वाक्य यह था जिसमे बापू ने कहा था कि सेना निर्दोष स्त्री-पुरुषो के धन पर गुलछर्रे उडा रही है। दूसरा वाक्य था सगठित गुडागर्दी। ऐसी भाषा के प्रयोग के कारण रहे होगे पर कोई ठोस दृष्टात पेश नही किया गया था और मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा था कि यह भाषा बापू की कदापि नही हो सकती।

जब महादेवभाई ने मुझे बताया कि बापू बीक्म पत्र व्यवहार को प्रकाशित करने जा रहे है तो मैं भयातुर हो उठा। पर उस पत्र-व्यवहार को देखने के बाद मुझे लगा कि वह पत्र व्यवहार उनके लेखो की अपेक्षा अधिक कठोर नही था।

मेरे लिए यहा बैठे-बैठे सारी स्थिति पर प्रकाश डालना सम्भव नही है पर यदि बापू की यह धारणा हो कि गिब्सन और बीक्म वाइसराय के निर्देश के अनुसार आचरण कर रहे है तो मैं उनसे सहमत नही हू। सच तो यह है कि वाइसराय ने बीक्म को उसके अविवेकपूर्ण आचरण पर बुरी तरह लताडा था। उन्होने गिब्सन को भी कुछ कहा हो पर मैं कह नही सकता। गिब्सन की करतूत वाइसराय को तभी मालूम हुई जब सारा मामला समाचार पत्रो मे प्रकाशित हुआ।

रियासतो की प्रगति के मामले मे वाइसराय का रुख सहानुभूतिशून्य रहा हो ऐसी कोई बात नही है पर वह परिस्थितियो के बधन मे जकडे हुए हैं। रजवाडो ने एका कर रखा है और राजनतिक विभाग के अधिकारी लोग भडकानेवाली कार वाई करते रहते हैं। वाइसराय इन पर एक हद तक ही नियत्रण रख सकते है। उन्हें यह सारा मामला तब मालूम हुआ जब शरारत हो चुकी थी। अब वाइसराय को शिकायत है कि बापू उनकी सहायता नही कर रहे हैं। मैंने वाइसराय को जोरदार शब्दो मे बताया कि बापू के साथ सम्पर्क रखना कितना जरूरी है। वह मेरे सुझाव पर विचार कर रहे हैं। पर इस प्रसग मे भी वाइसराय को आशका है कि रजवाडे क्या सोचेंगे। यदि वह कोई कदम उठाते हैं तो राजा महाराजा मे

प्रतिक्रिया की लहर दौड़ जाना निश्चित है। वाइसराय स्वच्छ मानस के आदमी हैं उनमें सहानुभूति की भावना प्रचुर मात्रा में मौजूद है उनके विचार भी निर्मल हैं पर उनमें सूझ बूझ का अभाव है। मेरी धारणा है कि साक्षात्कार हो जाए तो बापू समस्या का हल अवश्य खोज निकालेंगे।

महादेवभाई यहां कल संध्या को आ रहे हैं। यदि मुझे ऐसा लगा कि मेरे द्वारा कोई ठोस काम होना सम्भव है, तो मैं यहीं रुका रहूंगा अन्यथा परसों कलकत्ते के लिए रवाना हो जाऊंगा।

पर मुझे जिस बात की सबसे अधिक चिन्ता है वह है बापू का स्वास्थ्य। तुम्हारे पत्रों को मैंने गम्भीरतापूर्वक ग्रहण नहीं किया था और महादेवभाई ने भी अभी उस दिन लिखा था कि बापू खासे अच्छे हैं। अब देखता हूं कि तुमने जो कुछ कहा वह ठीक था महादेव ने जो कहा वह गलत साबित हुआ। मैं व्याकुल हूं। मुझे पूरी पूरी खबर देते रहा करो। साथ हो बापू पर पूरा आराम लेने के लिए जोर डालो। पर जब राजकोट और जयपुर में यह सब हो रहा है तो क्या उनके लिए चैन से बैठना सम्भव होगा? जयपुर के बारे में मैं अब भी सुफल की आशा लगाये हुए हूं। यदि कोई अनपेक्षित घटना न घटे तो इस दीवान का जाना ही है। मार्च के आरम्भ में वाइसराय वहां स्वयं जानेवाले हैं।

पर राजकोट के मामले में मुझे कोई आशा नहीं है। यहां का राजनैतिक विभाग शुद्ध औपचारिक रवैया अपनाए हुए है। हम क्या कर सकते हैं? समझौते का अर्थ लगानेवाले हम कौन होते हैं? और यदि ठाकुर साहब ने उसे भंग करने का फैसला ही कर लिया हो तो हम उन पर वैसा न करने के लिए दबाव कैसे डाल सकते हैं? यदि गिब्सन कोई नासमझी का काम कर बैठे, तो उसे अवश्य डांट बताई जा सकती है उससे कहा जा सकता है कि भविष्य में सावधानी से काम लो। पर हम ठाकुर साहब को समझौता बरकरार रखने के लिए विवश कैसे कर सकते हैं?'

पर यह सब जबानी जमा-खर्च है। हम सब अच्छी तरह जानते हैं कि यदि राजनैतिक विभाग कुछ कर गुजरने की ठान ले तो उसके लिए कोई चीज असम्भव नहीं है। पर ये लोग यदि कुछ कर गुजरने की ठान लें तो वह बुरी चीज ही होती है यदि ये कोई अच्छी चीज करने पर उतारू हो जाएं तो उन्हें राजा महाराजाओं के तथा विभाग के निचले अमले के प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है। वाइसराय का रुख सहानुभूतिपूर्ण है पर वह लाचार हैं। यदि कुछ करने लगेंगे तो ऊपर से डांट फटकार मिलेगी। इसलिए वह रजवाड़ों पर दबाव डालने से बचे रहना चाहते हैं। इस तरह वाइसराय की स्थिति कष्टकारीण है। मैं तो

अब भी यही आशा लगाए बैठा हूं कि सदा की भांति इस अवसर पर भी समस्या का कोई-न-कोई संतोषप्रद हल बापू तलाश कर सकेंगे।

तुम्हारा
घनश्यामदास

२३

तार

दिल्ली
१ २ १९.९

प्यारेलाल
मारफत महात्मा गांधी
बारडोली एव वर्धा

बापू जब तक पूर्ण स्वास्थ्य लाभ न कर लें उनकी कुशल मंगल तार द्वारा नित्य प्रति भेजते रहो। आशा है अब वह पूर्ण विश्राम लेंगे और मौन रहेंगे। सशंकित हूं। ३ तारीख तक यहीं हूं।

—घनश्यामदास

२४

तार

बारडोली
१ फरवरी १९३९

घनश्यामदास बिड़ला
अल्बूकर्क रोड
नयी दिल्ली

जयपुर विषयक लेख रोक लिया गया है। कल फ्रंटियर मेल से पहुंच रहा हूं। बापू दुर्बल हैं। जीवराज की सलाह है कि बापू एक पखवाड़े तक पूर्ण विश्राम लें।

—महादेव

२५

तार

वर्धागंज
२ फरवरी १९३९

घनश्यामदास बिड़ला
नयी दिल्ली

स्वस्थ हूं। जितने विश्राम की जरूरत है ले रहा हूं। फिक्र मत करो।

—बापू

२६

तार

वर्धा
३ फरवरी १९३९

घनश्यामदास बिड़ला,
बिड़ला हाउस
अल्बुकर्क रोड
नयी दिल्ली

सूजन कम हो गई है। लगभग पूर्ण विश्राम ले रहा हूं। कल रात रक्तचाप १५४/९८ था। अधिकारियों का लिखित अनुरोध न मिलने तक जमनालालजी प्रतीक्षा न करते रहें। जयपुर-सरकार की विज्ञप्ति नितांत असंतोषप्रद है। वक्तव्य दिया है।

—बापू

२७

तार

बिड़ला हाउस
नयी दिल्ली
३ २ ३९

महात्मा गांधी
सेगांव
वर्धा

जयपुर का मामला सुलटने की आशा है। जमनालालजी को सुझाव दिया है कि जयपुर एक पखवाड़े तक लौटन म रके रहें। प्रतिबंध उठवाने की कोशिश कर रहा हू। कृपा करके आप भी उन्ह यही सलाह दीजिए। इस अवसर पर आपके वक्तव्य से सहायता मिलेगी।

—घनश्यामदास

२८

तार

नयी दिल्ली
४ २ ३९

महात्मा गांधी
मारफत जमनालाल बजाज
वर्धा

जमनालालजी के साथ जा पुलिस अफसर हैं उन्होने उनसे जबानी अनुरोध किया है कि वह अधिकारियो को पुनर्विचार करन का समय दें। क्या मैं जमनालालजी स कह सकता हू कि वह रियासत के अधिकारियो को पत्र लिखकर पुलिस के अनुरोध का उल्लेख करें विज्ञप्ति को निरथक बतावें और ८ तारीख तक का समय दें ? पत्र का मसौदा भेज रहा हू। आप उसे ठीक समझें तो उन्हें पत्र लिखने का कहे।

—महादेव

२९

सेगांव, वर्धा
४.२.१९३९

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका १ तारीख का पत्र मिला, जो मैंने बापू को भी दिखाया। बापू आपको खुद लिखते, पर वह बहुत व्यस्त हैं। आपने यह अंदाज ठीक ही लगाया कि बापू ने 'हरिजन' में जो इतनी कठोर भाषा का व्यवहार किया उसका कोई बड़ा कारण अवश्य रहा होगा। अब मैं आपको बताता हूं कि नरम भाषा कितनी अनुपयुक्त ठहरती।

आपने पहला हवाला इस वाक्य का दिया है कि "सेना निर्दोष लोगों के धन पर गुलछर्रे उड़ा रही है।" इस वाक्य का सम्बन्ध उड़ीसा की तालचर और ढेंकानल रियासतों में हुई घटनाओं से है। तालचर के गांवों में फौजें गश्त लगाती हैं, और उससे वहां के विपदग्रस्त स्त्री-पुरुषों को त्रास मिलता है। यह वहां के "निर्दोष स्त्री-पुरुषों के धन पर सेना का गुलछर्रे उड़ाना" नहीं तो क्या है? एक अंग्रेज अफसर की मृत्यु को लेकर पूरे देहात में आतंक का दौर-दौरा रहा। आखिर इन बेचारे ग्रामीणों ने ऐसा क्या अपराध किया है कि उन पर आतंक जमाने के लिए सैनिक प्रदर्शन की जरूरत हुई? सैनिकों ने मजे में गश्त लगाई। उन्हें किसी प्रकार के संकट का सामना नहीं करना पड़ा।

रही 'संगठित गुण्डागर्दी' की बात सो राजकोट से खबरें आई हैं कि वहां आदमियों को दूर ले जाकर नंगा किया जाता है और मारा-पीटा जाता है। बेंत लगाने का आदेश जारी कर दिया गया है। इसकी कोई जरूरत नहीं थी। जनता ने हिंसा का आचरण नहीं किया था। फिर यह संगठित गुण्डागर्दी नहीं तो क्या है? और यह कोई नयी तरकीब नहीं है जिसका एकमात्र इसी अवसर के लिए आविष्कार किया गया हो। यदि आप १९१९-२२ की 'यंग इंडिया' की फाइल देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि इसका पहली बार किस संदर्भ में प्रयोग किया गया था।

बापू का समर्थन के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें जो चुनौती दी गई है सबसे पहले उसे समझा जाय। पहले तो ब्रिटिश सरकार के एजेंट ने वहां के नरेश को अपनी प्रजा को दिये गये वचन का उल्लंघन करने को बाध्य किया और फिर अपने अनैतिक आचरण पर पर्दा डालने के लिए इस सफेद झूठ का आश्रय

लिया कि उसे उत्तेजित करने के लिए बहुत कुछ किया गया था। बापू अनाचार और असत्य का दर्शन मात्र से व्यथित हो उठते हैं यह आपको बताने की जरूरत नहीं। एक निरंकुश सत्ता ने वहां बापू को असत्य और अनाचार की चुनौती दी थी। इस संदर्भ में द्वितीय गोलमेज कान्फरेंस के अवसर पर ब्रिटिश सरकार द्वारा अल्पसंख्यक जातियों के पैक्ट को मान्यता प्रदान करने का भी उल्लेख प्रासंगिक होगा। बापू के पास ऐसी चुनौतियों से निपटने का केवल एक ही शस्त्र है, 'प्राणों की बाजी लगाकर उसका प्रतिरोध करना।' इस सम्बन्ध में सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं है।

रही वाइसराय की बात। वे अपने अधिकारों का सम्पूर्ण उपयोग गिब्सन वीकम कम्पनी की नीति के समर्थन में कर रहे हैं तो उनकी मौखिक सहानुभूति का क्या मूल्य है? आपने रजवाड़ों को किसी काम के लिए विवश करने के मामले में वाइसराय की असमर्थता की दलील के संदर्भ में बापू की स्थिति को ठीक ठीक नहीं समझा। राजकोट के ठाकुर साहब को अपने वचन का उल्लंघन करने को गिब्सन के अतिरिक्त और किसी ने बाध्य नहीं किया। वाइसराय चाहें तो गिब्सन को अपनी गलती का परिमार्जन करने को बाध्य कर सकते हैं। हो सकता है कि वाइसराय ने गिब्सन को ऐसा आचरण करने को प्रत्यक्ष रूप से प्रेरित न किया हो, पर वे अपने एक मातहत के आचरण के दोष से सर्वथा मुक्त कैसे हो सकते हैं? यदि गिब्सन सम्राट की सरकार की अवमानना जैसा कोई काम कर बैठता तो क्या उसका एक क्षण के लिए भी अपने पद पर बने रहना सम्भव होता?

बापू के स्वास्थ्य को लेकर आपको जो चिन्ता हो रही है मुझे भी हो रही है। मेरी बहन (डॉ० सुशीला नैयर) उनके पूरी तरह स्वस्थ न होने तक आपको रोज उनका स्वास्थ्य समाचार भेजती रहेगी। आज मैं सिविल सर्जन को बापू के नेत्रों की रक्तसंचार करनेवाली धमनियों का सम्यक परीक्षण करने को सुना रहा हूं। मुझे बेचैनी हो रही है। पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ के लिए बापू को जितने विश्राम की जरूरत है वह उन्हें मिलता दिखाई नहीं दे रहा है। उन्होंने जवाहर और बाग को लिख भी दिया है कि विशेषकर स्वास्थ्य के कारण उन्हें त्रिपुरी के अधिवेशन में भाग लेने से मुक्त रखा जाय। अन्यथा यह कार्य कितना कष्टकर सिद्ध होगा अन्दाज है, इसे ध्यान में रखना जरूरी है। इतना पर भी यदि राजकोट की स्थिति और

बिगडी, तो आप उन्हें राजकोट के आस पास ही कहीं पडाव डाले पायेंगे। बापू का स्वास्थ्य जरा है, उसे देखते हुए उन्हें इस स्थिति से बचाना बहुत जरूरी है।

भवदीय,
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिडला
बिडला हाउस
बालीगज कलकत्ता

३०

मगाव
६ २ १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मिला। आपने जिस सलग्न सामग्री का जिक्र किया है, वह याद नहीं क्या थी। हो सकता है कि आपको पत्र लिखने के बाद ऐसा लगा हो कि उसे भेजना अनावश्यक है, इसलिए नत्थी नहीं किया हो। यदि मेरा पत्र आपके पास अभी भी हो तो कृपा करके उसे मेरे पास भेज दीजिए जिससे मुझे याद आ जाये कि वह क्या सामग्री थी।

आपकी एक लम्बी चिट्ठी के जवाब में मैंने कल आपको एक महत्त्वपूर्ण पत्र कलकत्ते के पते पर भेजा था। उसकी नकल महादेवभाई के पास दिल्ली भेज दी थी कि सम्भव है आप अभी वहीं हों।

बापू का आज का स्वास्थ्य समाचार इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। कल वाला बुलेटिन महादेवभाई को भेजी चिट्ठी के साथ नत्थी कर दिया था।

भवदीय
प्यारेलाल

पुनश्च

अपने प्रोग्राम की अग्रिम सूचना देते रहियेगा।

३१

= फरवरी, १६३६

प्रिय प्यारेलाल

तुमने अपने ६ तारीख के पत्र में लिखा है कि मेरी चिट्ठी के जवाब में तुमने मेरे कलकत्ते के पते पर एक महत्त्वपूर्ण पत्र भेजा है। वह पत्र शायद कल पढने को मिले। मैं कलकत्ते के लिए कल रवाना हो रहा हू। दो-तीन हफ्ते वहीं ठहरूगा।

तुमने अपने ६ तारीख के पत्र में स्वास्थ्य समाचार नत्थी करने की बात कही है पर वह तो मिला नहीं।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेगाव

३२

बिडला हाउस
बनारस
८ फरवरी १६३६

प्रिय सुशीला बहन

तुम्हारे ४ तारीख के पत्र से बापू के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पूरी जानकारी मिली। यह जानकर एक बडी चिन्ता से छुटकारा मिला कि बापू के स्वास्थ्य में जो गडबडी हुई थी वह कार्यभार के कारण थी या और कोई चिन्ता की बात नही है। तुमने जो कुछ कहा है उससे यह आशा बधने लगी है कि जहा तक विश्राम करने का सम्बन्ध है बापू डाक्टरो की सलाह पर चलेंगे।

भवदीय
घनश्यामदास

सुश्री सुशीला नयर
सेगाव

३३

तार

बिड़ला हाउस लालघाट बनारस
८ २ १९३९

महात्मा गांधी
मारफत जमनालालजी बजाज,
वर्धा

जमनालालजी ने फोन पर बात की। मैंने उन्हें सलाह दी है कि उनका दुबारा जाना और अधिकारियों द्वारा बलात् पकड़े जाना खिलवाड़ और मर्यादा शून्य होगा। महादेवभाई ने भी फोन पर बात की। वह मुझसे सहमत हैं। मेरी राय में जमनालालजी को अधिकारियों को लिखित चेतावनी देनी चाहिए कि वे प्रतिबंध उठा लें यदि वे न उठावें, तो वहां दुबारा जाय। पत्र को प्रभावोत्पादक बनाने के हेतु उसे गोपनीय' रखना आवश्यक है। व्यापक दृष्टिकोण का तकाजा है कि स्थिति में सुधार करने की दिशा में आप श्रीगणेश करें। इससे राजकोट और जयपुर दोनों मामलों में सहायता मिलेगी। आप अपनी सम्मति भी तार द्वारा भेजिए।

—घनश्यामदास
मारफत 'लकी

३४

पुरुषोत्तम मैन्शन,
आपेरा हाउस के सामने
बम्बई ४
८ फरवरी १९३९

प्रिय महादेव

तुम्हारा पत्र मिला। उसके साथ तुमने श्री लयवेट के साथ हुए पत्र व्यवहार

का साराश भेजा वह भी मिला। इन लोगो के रुख के बारे मे तुम्हारा जो अदाज है, उससे मैं सहमत नही हू। व्यवहार-कुशलता तो झलकती है, पर नीयत साफ नही है। 'स्टेटसमन' का अतिम लेख अधिक स्पष्टवादिता के साथ लिखा गया था, पर यदि हम किसी गिब्सन या वीकम के ऊपर लिखें या कहे तो हमारे इरादा पर शक होने लगगा। इस मामले मे जाति का सवाल बिलकुल नही है। हमने उनके किले पर धावा बाला है और वे खीज उठे हैं। उन्हे अपने अपराध का भान है पर वे अनजान बनते है। जो भी हो मुझे तो जमकर मोर्चा सभालने के आसार दिखाई दे रहे है। मुझे इस बाबत कोई सदेह नही है कि गिब्सन ने काठियावाड की सारी रियासतो म गुण्डागर्दी का सगठन किया है। लीमडी मे श्री गिब्सन की नीति जिस रूप म खुलकर सामने आई तुम्हे जानकर क्षोभ होगा। तीन बडी बडी डकतिया हुई हैं जिनम लोगो की सम्पत्ति लूटी गई और उन्हे घायल किया गया। रियासत के अनाचारो का जनता प्रतिरोध कर रही है। उसे आतकित करने के लिए सशस्त्र डकतिया कराई जा रही हैं। पिछले दो-तीन दिनो से लोग बाग महल के चारो ओर घेरा डाले बठे हैं और जाच की माग कर रहे हैं, पर राज्य के कानो पर जू तक नही रेंगी है। बा को कष्ट झेलना पड रहा है। यह सब कुछ गिब्सन की जानकारी म तो है ही इस सारे व्यापार म उसका हाथ है ऐसा लगता है।

तुम्हारा,
वल्लभभाई

श्री महादेव देसाई,
बिडला हाउस
नयी दिल्ली

३५

बिडला हाउस,
अल्बूकर्क रोड,
नयी दिल्ली
९ २ १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

रियासतो के बारे म आपने जवाहरलाल का वक्तव्य तो देखा ही होगा।

एसा लगता है कि समझौता नही होगा, और इस मामले को लेकर सम्बन्ध विच्छेद हो जायेगा। राजकुमारी ने मुझे जो पत्र लिखा है इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। चिह्नित परे को देखिए। वर्धा का दिमाग किस दिशा म काम कर रहा है इसका अनुमान आप उस परे स कर लेंग। यदि सरकार सर बीकम जसे जन्मजात मूर्खों का समथन करती रहेगी, तो पता नही क्या हो जाए। मुझे अभी तक बापू का तार नही मिला है और मुझे एसी आशका होन लगी है कि कोई तार नही आयगा, और बापू कोइ कदम नही उठायेंगे। प्यारेलाल का पत्र पढने लायक है।

सप्रेम,
महादेव

३६

तार

वर्धागज
६ फरवरी १९३६

घनश्यामदास बिडला,
'लक्ष्मी',
कलकत्ता

मरी समझ म जमनालाल का अपनी प्रेरणा के अनुरूप आचरण करन की स्वतत्रता दना ठीक होगा। नोटिस देन के पक्ष म मैं नही हूं। यदि उन्ह कष्ट झलना ही है, तो भले झेलें।

—बापू

३७

सगाव
६ फरवरी, १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

बापू का स्वास्थ्य पहले जैसा ही है। सूजन जो दिन पहले लगभग बिलकुल उतर गई थी आज फिर हो गई है। आज कर्नल होकोम्बीनटराय ने उनकी परीक्षा की। उन्होंने कहा कि उनके बारडोली आने से पहले उनके हृदय की ध्वनि जैसी थी अब उसकी अपेक्षा अधिक क्षीण है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बापू कम-से-कम एक पखवाड़ा पूरा विश्राम लें और कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने कदापि न जाएं। बापू ने कहा कि इतने स्थानों पर अग्नि प्रज्ज्वलित करने के बाद अब उनके लिए घर से बैठना सम्भव नहीं है। उन्होंने कहा कि रुई के गालों में लिपटकर जीवित रहने की अपेक्षा वह मुस्तैद रहकर मरना अधिक पसन्द करेंगे। जैसी कुछ स्थिति है उसे देखते हुए उनके लिए मानसिक शांति सम्भव नहीं है। भगवान उनकी देखभाल करेंगे। हमारे लिए जितना कुछ सम्भव है हम उन्हें आराम देते हैं और वह खुद भी सावधानी बरत रहे हैं। पर बापू लाचार हैं डा० जीवराज और गिल्डर के आने के बाद आपको फिर लिखूंगी।

भवदीया
सुशीला

पुनश्च

अपनी गतिविधि की सूचना देते रहिए।

३८

कलकत्ता
१० फरवरी, १९३९

प्रिय प्यारेलाल,

यहां पहुंचने पर देखा कि तुम्हारा पत्र प्रतीक्षा कर रहा है। मैं कल शाम ही लौटा हूं।

जयपुर के लिए जमनालालजी के तीसरी वार प्रस्थान के वार में वापू का तार मिला। मैं सहमत हूँ। वह जसा उचित समझें करें या यह चूहे बिल्ली का कौतुक मुझे अप्रिय लगा है। यग न जो कुछ किया है, उसका वणन वापू ने सगठित गुण्डागर्दी' और 'बर्बरता जस शब्दा म किया है पर वह मुझे अब भी पस द नही आया है। जमनालालजी न अपन सव प्रथम वक्तव्य म यह स्वीकार किया था कि पुलिस ने उनके साथ सदव्यवहार किया। उनकी दूसरी यात्रा के बार म जो कुछ समाचार अभी तक प्राप्त हुए हैं उनसे स्पष्ट है कि उन्ह बलपूवक हटाते हुए भी पुलिस ने उनके साथ भद्र व्यवहार किया और जव उन्होंने मोटर म बठने स इकार किया तो स्वय दामोदर का कहना है कि यग न अपने आदमियो को जमनालालजी को बलपूवक उठान म बडी सावधानी बरतने की ताकीद की। जो कुछ किया गया वह भले ही गलत हो पर पुलिस अफसर अपने स ऊचे अफसर के निर्देश के अनुरूप उन्हे राज्य की सीमा से बाहर छोडन को बाध्य थे। ऐसा उसन बडी भद्रता के साथ किया। उसके इस आचरण को बर्बरतापूण और 'सगठित गुण्डागर्दी' का नाम दना ठीक नहीं होगा। यह मरी समझ क बाहर ह कि एस वणन स यग या उसक उच्चतर अफसरो का हृदय परिवतन किस प्रकार सम्भव होगा।

आज जब विधान ने बताया कि बापू क स्वास्थ्य के विषय म उन्हे अच्छी रिपोट नही मिली है तो मुझे बडी चिन्ता हुई। बापू को विश्राम करना चाहिए राजकोट और जयपुर की देखभाल भगवान स्वय कर लेंगे। आज रात को विधान से मिल रहा हू। इस बीच मुझे बापू क स्वास्थ्य के समाचार बराबर भेजते रहना।

फिलहाल मेरे करने योग्य कोई काम बाकी नही रह गया ह। हा मैं दूसर पक्ष क साथ सम्पक अवश्य बनाये रखूगा, और यदि बापू के ध्यान म लाने लायक कोई बात हुई तो तुम्हे खबर कर दूगा। साथ ही, मुझे यह भी लिखते रहना कि बापू के क्या विचार हैं।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेगाव

३९

दिल्ली
१० फरवरी, १९३८

प्रिय घनश्यामदासजी

हां, अब हमें इस प्रयत्न में लगना चाहिए कि मूर[1] बापू को भली भांति समझें और तब भरसक प्रयत्न करें। आदमी नीयत का साफ है, हां कुछ मंद-बुद्धि अवश्य है। यदि वह चाहे तो बहुत कुछ कर सकता है।

वल्लभभाई का पत्र आया है। साथ में भेजता हूं। पढ़िए, खास तौर से चिह्नित वाक्य को। ऐसा मालूम होता है कि हमारा दल गोदावरी (या काशी) शायद ही जा सकेगा।

आपका,
महादेव

१ आर्थर मूर, स्टेट्समैन के सम्पादक।

४०

सेगांव
१० फरवरी, १९३९

प्रिय बिड़लाजी

आपका पत्र मिला।

मैंने आपको जो पत्र भेजा था, उसके साथ स्वास्थ्य का बुलेटिन नहीं भेज पाया। बात यह हुई कि मैंने उसकी एक नकल महादेवभाईवाले पत्र के साथ रख दी थी और तब पता चला कि आपके लिए कोई नकल नहीं बची है। डाक का समय हो गया था, इसलिए तत्काल कुछ किया भी नहीं जा सकता था। पता चला कि सुशीला ने कुछ बुलेटिन बुक-पोस्ट द्वारा कतिपय अन्य लोगों को भेजने की ताकीद कर दी थी। मैं आपका पत्र लिखनेवाला था, इसलिए बुलेटिन आपके पास

बुक-पोस्ट द्वारा नहीं भेजा गया। उधर बुलेटिन की सारी नकलें भी समाप्त हो चुकी थीं।

अपने पिछले पत्र के साथ कुछ और सामग्री भी रखने की बात सोची थी पर मैंने बापू से कहा कि मैं कुछ सामग्री आपके पास भेज रहा हूं तो उन्हें यह पसन्द नहीं आया। बोले कोई जरूरत नहीं।

पिछले दो दिनों में बापू के रक्तचाप में काफी सुधार हुआ है। आज मध्याह्न १ बजे १८८/९८ है। आज कोई बुलेटिन जारी नहीं किया जायगा। डा० गिल्डर और जीवराज मेहता शनिवार को पहुंच रहे हैं। स्वास्थ्य में थोड़ा सुधार होने का एक कारण यह भी हो सकता है कि मौसम उतना शीतल नहीं है। इधर सुशीला बापू को जल स्नान भी करा रही है।

आपका
प्यारेलाल

८१

कलकत्ता
११ फरवरी १९३९

प्रिय श्री प्यारेलालजी

हाल में महात्माजी ने वाइसराय को जो पत्र लिखा है श्री घनश्यामदासजी बिड़ला उसकी नकल अपनी फाइल के लिए चाहते हैं। वह पत्र महादेवभाई दिल्ली अपने साथ लाये थे, और उसे बिड़लाजी ने वाइसराय के सेक्रेटरी को स्वयं सौंपा था। कृपा करके उस पत्र की नकल ऊपर के पते पर भेजिए।

धन्यवाद,

भवदीय,
सक्रेटरी, श्री बिड़ला

श्री प्यारेलाल,
वर्धा

४२

स्वास्थ्य बुलेटिन

आज डॉ० गिल्डर और डा० जीवराज मेहता ने बापू की परीक्षा की। हृदय का विद्युत चित्र भी लिया गया। पता चला कि हृदय के स्नायु में दुर्बलता है।

परीक्षा के द्वारा इस बात की पुष्टि हुई कि किडनी और दिल दोनों ही ठीक ढंग से काम नहीं दे रहे हैं। उन्होंने वही पुरानी सलाह दी—पूर्ण विश्राम किया जाये। शारीरिक और मानसिक श्रम जितना कम हो अच्छा है। यात्रा से यथा सम्भव बचा जाय।

कल से सूजन फिर बढ़ गई है। मूत्र की परीक्षा से पता चला कि किडनी भरी हुई है।

मौसम में कुछ गर्मी है जिसके कारण रक्तचाप कुछ नीचे आ गया है। आज प्रातःकाल ५ बजे १६६/१०० था ११ बजे डा० गिल्डर ने रक्तचाप लिया तो १७०/१०२ निकला।

सुशीला नयर

११.२.३६
सगाँव

४३

तार

प्यारेलाल
मारफत महात्मा गांधीजी,
वर्धा

सुशीला बहन ने जो रिपोर्टें भेजी हैं उनके अध्ययन से डा० विधान सन्तुष्ट

नहीं हुए। मैंन उन्हें वर्धा जाने का कहा है। बापू की सहमति का तथा अनुकूल तारीख का तार भेजो।

—घनश्यामदास
मारफत 'लवी

बिड़ला ब्रदस लि०
कलकत्ता
११ २ ३९

४४

कलकत्ता
११ फरवरी १९३९

प्रिय महादेवभाइ

प्यारेलाल ने मुझे सून पत्र भेजा था और तुमने ठीक ही कहा कि उसे पत्कर कुछ आराम हुए नही हुआ। दिल्ली म जसा कुछ वातावरण है उसस मेरे लिए यह अनुमान करना कठिन नही था कि राजकोट म क्या हो रहा है। पर राजकुमारी अमृतकौर यह कसे कहती हैं कि मेरे मेल मिलाप की बात बन्द करने से सहायता मिलेगी ?

मैं लेथवेट का फिर लिख रहा हू। पर मैंन वाइसराय को जितना कुछ समझा है उसके आधार पर कह सकता हू कि वह जो-कुछ करेंगे स्वेच्छा स करेंगे और यदि उन्ह मेरा सुझाव रुचा भी तो भी वह यह नही बतायेंगे कि उनका दिमाग किस दिशा म काम कर रहा है। हम मगल की ही आशा करनी चाहिए।

बापू ने यग के हथकण्डा का सगठित गुण्डागर्दी बताया यह मुझे बिलकुल अच्छा नही लगा। मैंने उन्ह यह बात लिख भी दी है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
नयी दिल्ली

४५

स्वास्थ्य बुलेटिन

सेगाव, वर्धा
१२ २ ३६

डा० गिल्डर और डा० जीवराज मेहता के परामश क अनुसार कल रात वापू बरामदे म सोये। उन्ह यह पसद नही आया। वह रात के ११ बजे तक करवटें बदलते रहे और प्राथना के बाद भी उन्हें नींद नही आई।

उनकी साधारण स्थिति म कोई परिवतन नही हुआ है। सूजन बनी हुई है। आज प्रात काल रक्तचाप १७०/१०० था। दिन भर मौन के बाद वह १६२/१०० पर आ गया।

सुशीला नयर

४६

स्वास्थ्य बुलेटिन

सगाव, वर्धा
१३ फरवरी १६३६

कल रात बापू खुल म सोये और उन्ह अच्छी नीद आई। कल और आज दिन भर हरिजन सम्बधी काय और मुलाकातियो के साथ व्यस्त रहे।

भोजन की मात्रा पहले की तरह ही स्वल्प है पर वजन म कमी नही आई है। इसका कारण यह बताया गया है कि शरीर म तरल पदार्थ सचित है।

सूजन बनी हुई है।

आज प्रात काल और मध्याह्न के बाद भी रक्तचाप १७६/१०६ रहा।

सुशीला नयर

४७

तार

वर्धा
१३ फरवरी १९३६

घनश्यामदासजी
लक्ष्मी,
कलकत्ता

धन गिल्डर और जीवराज ने परीक्षा की थी पर डा० विधान को आने का अधिकार है जब आना चाहें आ जायें।

—बापू

४८

कलकत्ता
१४ फरवरी १९३६

प्रिय प्यारेलाल

डा० विधान राय यहां से वर्धा के लिए २२ तारीख को रवाना होंगे। आशा है, उनके वहां पहुंचते-पहुंचते बापू का रक्तचाप सामान्य स्थिति में आ जायेगा और वह अधिक स्वस्थ हो चुके होंगे। डॉ० राय को बापू के हृदय की दुर्बलता को लेकर चिन्ता उत्पन्न हो गई है। उनका कहना है कि यह दुर्बलता दूर होने के बाद फिर भी उभर सकती है। उन्हें मूत्र में एल्बुमिन की इतनी अधिक मात्रा को लेकर चिन्ता है। जो भी हो, वह वहां आ रहे हैं। पत्र का यह अंश अपनी बहन को पढ़कर सुना देना।

आर्थर मूर के साथ देर तक बातें हुई। इन सब लोगों को बापू के रुख पर हैरत है। यह तो कोई नहीं कहता कि उन्हें मुठभेड़ बन्द कर देनी चाहिए पर इन लोगों की समझ में यह नहीं आ रहा है कि इतनी कठोर भाषा का प्रयोग क्योंकर हुआ। मूर ने मुझे बताया कि उसे भारत-सरकार से सूचना मिली है कि उन

लोगों की धारणा है कि यह सारा बखेड़ा ठाकुर साहब ने खड़ा किया है, वह रजिडेंट का आश्रय लेकर सार्वभौम सत्ता और कांग्रेस को आपस में भिड़ाना चाहते हैं। यदि इस कथन में कोई तथ्य हुआ तो मुझे ताज्जुब नहीं होगा। इस मामले में मैं विशेष रूप से कुछ कहने का अधिकारी नहीं हूं पर इतना अवश्य कहूंगा कि मुझे हार्दिक विश्वास है कि वाइसराय वही बात कहेंगे, जो उनकी दृष्टि में ठीक जंचेगी और यदि वह कुछ कर सकने में अपने आप को असमर्थ पा रहे हैं तो इसका एकमात्र कारण यही है कि उनके मार्ग में अड़चनें हैं। गिब्सन और ग्रीफ्न को दिल्ली बुलाया गया था क्या परिणाम निकला सो मैं नहीं जानता। पर लेथवेट के साथ अपनी बातचीत के दौरान मेरी यह असन्दिग्ध धारणा हुई थी कि राजकोट में जो दमन जारी है यदि सचमुच ऐसा ही कुछ है तो उसका अन्त कर दिया जायगा। लेथवेट ने कहा था कि इस दमन कार्य के बारे में स्वयं उसे कोई जानकारी नहीं है। भूर के विचार में पारस्परिक सम्पर्क बड़ा सहायक रहेगा। वह दिल्ली वाइसराय से मिलने जा रहा है। जरूरत हुई तो यहां भी जायगा। बापू को यह सब बता देना।

सुशीला से कहना कि वह जो बुलेटिन भेज रही है इसके लिए मैं उसका आभारी हूं। आशा है जब तक बापू का स्वास्थ्य चिन्ता का विषय बना रहे तब तक वह इसी प्रकार बुलेटिन भेजती रहेगी।

भवदीय,
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेगांव वर्धा

४९

तार

नयी दिल्ली
१४ फरवरी १९३९

घनश्यामदास
लकी,
कलकत्ता

आज मुझसे फोन पर बात कीजिए अत्यावश्यक।

—महादेव

५०

कलकत्ता
१५ फरवरी १६३६

प्रिय महादेवभाई,

मूर आज सुबह फिर मिलने आया था। बोला, मैंने वाइसराय को लिखकर पारस्परिक सम्पर्क की आवश्यकता सुझाई है। मैंने सोच विचार के बाद तुमसे फोन पर बात करना ठीक नहीं समझा। अब तो वर्धा को संवाद भेजने और वहां से पाने के नए साधन जुट ही गये हैं उनका पूरा उपयोग होना चाहिए।

मूर ने कहा कि इस स्टेज पर वह सार्वभौम सत्ता के हस्तक्षेप पर जोर देगा। बाना यह कहना बेहूदा है कि हस्तक्षेप किया ही नहीं जा सकता पहले भी अनेक बार ऐसा हो चुका है। नाभा और इन्दौर के उदाहरण मौजूद हैं।

आगे क्या कुछ होता है उसे सामने रखकर मैं अपना प्रोग्राम बनाऊंगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
नयी दिल्ली

५१

कलकत्ता
१८ फरवरी १६३६

प्रिय प्यारेलाल

बापू का स्वास्थ्य सुधरता दीखता है। तुम जानते हो कि वह खुद इस मामले में कितने चौकन्ने रहते हैं। यदि बीच-बीच में वह लापरवाही बरतने लगते हैं तो इसका एकमात्र कारण यही है कि उनसे लोगों की अपेक्षाओं की कोई सीमा नहीं है। बापू जिस प्रकार प्रवृत्ति को तिलांजलि देकर सकल्प का आश्रय लेने पर उतारू हो जाते हैं उससे यह स्पष्ट है कि वह विश्व के कल्याणार्थ अपनी सारी शक्ति-

सामथ्य को सचित रखना चाहते हैं। मैं तो उन्हें यही सुझाव देना चाहूंगा कि वह मुलाकातियों की सख्या बिलकुल घटा दें और पत्र व्यवहार भी सीमित कर दें। बापू के लिए इस ओर ध्यान देना अत्यावश्यक है और यदि तुम्हें ऐसा लगे कि वह इस ओर ध्यान दे रहे हैं तो उन्हें यह बताना मत भूलना कि मेरी यह दृढ सम्मति है कि वह इस बारे म तुरत कोई फसला कर डालें।

अब मैं इस इतजार मे हू कि तुम मुझे यह बताओगे कि बापू के साथ सुभाष की भेंट का क्या परिणाम निकला। मुझे जो कुछ मालूम हुआ है, और मेरी सूचना का मूल स्वय सुभाष बाबू ही हैं वह यह है कि बापू न उनसे कहा है कि वह अपनी कबिनेट स्वय बना लें और ६ महीने का नोटिस देने और उसकी समाप्ति पर सघष आरम्भ करने का कायक्रम भी स्वय ही बनाए। इसका क्या परिणाम होगा यह बताना मेरे बूते के बाहर है। यह बिलकुल स्पष्ट है कि अकेले सुभाष बाबू के लिए लडाई छेडना सम्भव नही है। यह भी प्राय निश्चित है कि जब तक कमी लडाई की साथकता के बारे म बापू का समाधान न हो जाए सुभाष बाबू को उनका सहारा मिलने से रहा। तो फिर क्या बापू उनके लिए मैदान खुला छोड देंगे ? मुझे ऐसा लगता है कि बापू की अपनी कोई काय-योजना है।

आथर मूर मुझसे दो बार मिल चुका है। मुझे उससे पता चला है कि उसने वाइसराय को लिखकर पारस्परिक सम्पक की आवश्यकता पर जोर दिया है। आशा है ऐसा सम्पक स्थापित होकर रहगा।

मैं जल्दी ही कलकत्ते से बाहर जाने का विचार कर रहा हूं। पहले मेरा विचार था कि वर्धा होता हुआ दिल्ली जाऊ पर बापू के स्वास्थ्य की बात को ध्यान म रखकर वसा करना ठीक नही जचा। अब यह बताओ कि बापू क्या पसद करेंगे ?

भवदीय
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेगाव

५२

तार

वर्धा

१८ फरवरी १९३९

घनश्यामदास बिड़ला
लकी
कलकत्ता

विधान स वहा बारडोली यात्रा रद्द कर दी है। चिन्ता की कोई बात नही है।

—बापू

५३

सेगाव वर्धा

१८-२-३९

प्रिय बिड़लाजी

आपका पत्र आज बापूजी को मिला। उसके जवाब मे जो तार उन्होने भेजा है वह मिला होगा।

इसके साथ वाइसराय और बापू के पत्रो की नकल आपकी सूचना के अनुसार भेजी जा रही है।

बापूजी की तबीयत अभी पूर्व स्थिति म ही है। या पावा की सूजन लगभग चली गई है। पेशाब म अब एल्बुमिन बिल्कुल नही है। कास्टस भी नही है। यूरिया ठीक स्थिति मे है। पेशाब कम होने पर भी गुर्दे अपना काम बराबर द रहे हैं। इससे लगता है कि उनकी स्थिति अच्छी है। जो विकार पेशाब म पाया गया था वह अस्थायी कारणा स था।

भवदीय,
प्यारेलाल

५४

वाइसराय भवन
नयी दिल्ली
१९ फरवरी १९३९

प्रिय मिस्टर गांधी

आपके १२ फरवरी के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। आपने अपना जो लेख पढ़ने का मुझे अवसर दिया है उसके प्रकाशन के आपके संकल्प के बारे में मुझे कोई गलतफहमी नहीं है। आपने देखा ही होगा कि सर बीकम सेंट जान ने उस मुलाकात का अपना विवरण दिया है।

मुझे यह जानकर दुःख हुआ है कि आपकी तबीयत खराब है। डाक्टरों ने आपको झंझटों से दूर रहने की सलाह दी है तिस पर भी आपने मुझसे सारी स्थिति पर बातचीत करने के लिए यहां आने की तत्परता प्रकट की इसकी मैं सराहना करता हूं। मैं समझता हूं आप जानते हैं कि मैं आपसे मिलने को हमेशा तैयार हूं और इस विचार ने मुझे बड़ी प्रसन्नता प्रदान की कि हम एक-दूसरे के साथ सम्पर्क स्थापित करने का अवसर मिला है। यदि आप वैसा सम्पर्क अब स्थापित करने का विचार रखते हों तो मैं बातचीत के लिए बिलकुल तैयार हूं। पर मेरे विचार में फिलहाल यह भेंट स्थगित रखना ठीक रहेगा। क्यों सो भी साफ-साफ बता दूं। पिछले अवसरों पर जब हम मिले थे तब हमने अपनी भेंट का प्रबंध कुछ इस ढंग से किया था कि उसका एक असाधारण घटना के रूप में विज्ञापन न हो और न उन अवसरों पर जनसाधारण में तनाव पैदा करनेवाला कोई वातावरण ही उपस्थित था जिसके निराकरण के लिए तुरत और विशिष्ट कारवाई की जरूरत होती। आप और मैं दोनों इस बारे में निश्चिन्त हैं कि हम दोनों में जो बातचीत होगी वह शांति और अवसादशून्य वातावरण में ही होगी। पर आप जानते ही हैं कि मुझे और मुझे विदित है कि आपको भी अन्य अनेक हितों को ध्यान में रखना है और मेरी यह धारणा है कि यद्यपि मैं आपसे भेंट करने के अवसर का सदैव स्वागत करूंगा हमारी भेंट तभी हो जब उसके द्वारा कोई उद्देश्य सिद्ध होना सम्भव हो और वैसी भेंट के लिए पहले जैसा अनुकूल वातावरण हो। फिलहाल परस्पर विरोधी तत्त्वों और हितों में सामंजस्य स्थापित करने की जो समस्या उठ खड़ी हुई है उसे ध्यान में रखते हुए ऐसी भेंट से जनसाधारण में गलतफहमी पैदा हो सकती है तथा ऐसी आशाओं अपेक्षाओं को बल मिल सकता है जिनकी

पूर्ति सम्भव न हो। यह प्रश्न गम्भीर विचार की जरूरत रखता है क्योंकि इसका सावजनिक दृष्टि से असाधारण महत्त्व है। आप मुझे जानते हैं, और मेरी धारणा है कि अच्छी तरह जानते हैं इसलिए मैंने जो कुछ कहा है वह इस कारण नहीं कहा है कि मुझसे भेंट करने की आपकी तत्परता की सराहना न कर पा रहा होऊ, विशेषकर इस समय तो आपकी यह तत्परता मेरे लिए बडे मूल्य की वस्तु है। पर आप और मैं दोनों ही सावजनिक हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं इसलिए हम जो कुछ निर्णय निश्चय करेंगे उसकी सावजनिक प्रतिक्रिया अवश्यम्भावी है और हम ऐसी आशाओं के नैराश्य से बचना चाहिए जिनके प्रति हमारा कोई उत्तरदायित्व नहीं है। पर मैंने जो-कुछ कहा है यदि उसे पढ़ने के बाद भी आपको ऐसा लगे कि भेंट करना अच्छा रहेगा तो मुझे आपसे पुन मिलकर बडी प्रसन्नता होगी। मेरे इज्जतनगर के दौरे का समय आ गया है। २४ तारीख निश्चित हुई है। यदि यह भेंट मेरे राजपूताना के दौरे के बाद रखी जाए तो मेरे लिए सुविधाजनक रहेगी।

आपका
लिनलिथगो

४५

सेगाव
वर्धा (मध्य प्रान्त)
२० फरवरी १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आज बहुत दिनों के बाद आपको शांतिपूर्वक पत्र लिख सका हू।

आपने बापू के सम्बन्ध में जो कुछ कहा ठीक ही है। मुझे तो यही उम्मीद है कि बापू अपने स्वास्थ्य के बारे में लापरवाही नहीं बरतेंगे, क्योंकि वह खुद भी तो अपने कुशल मंगल को एक आध्यात्मिक थाती मानते हैं। कसर इतनी ही है कि बापू किसी भी कीमत पर 'स्वास्थ्य अथवा जान है तो जहान है' में विश्वास नहीं रखते। अब से कोई दो साल पहले एक मित्र ने बडे दिन के उपहारस्वरूप जो पंक्ति लिख भेजी थी वह मुझे चिरस्मरणीय रहेगी। पंक्ति थी 'दीया प्रकाश प्रदान करने की धुन में अपने-आपको स्वाहा कर डालता है।' भगवान के संदेश

वाहकों के भाग्य में भी यह बदा है कि वे इस अंधकारपूर्ण जगत को अपनी ज्योति से प्रज्ज्वलित करने की धुन में अपने-आपको स्वाहा कर डालें।

सुभाष यहीं थे कोई तीन घण्टे बापू के साथ एकान्त में बातें करते रहे। पत्रों में जो समाचार छपा है, वह निराधार नहीं है। मैं आपको लिख ही चुका हूं कि बापू ने उन्हें जो सलाह दी उसे उन्होंने एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दिया। वह स्वयं कुछ कर गुजरने पर तुले हुए हैं। जिन साथियों का सहारा लेकर वह अध्यक्ष की गद्दी पर आसीन हुए हैं वे उन्हें कहां लेकर ले जायेंगे यह कौन जानता है? उनके साथियों का यह गिरोह खतरनाक है। पर बापू की धारणा है कि यदि सुभाष अपने अहिंसापूर्ण तौर तरीके को उचित ढंग से कार्यान्वित करेंगे तो कुल मिलाकर उससे कांग्रेस और देश दोनों का ही हित-साधन होगा।

इधर ऐसा लगने लगा है कि अपनी अगली बैठक में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का बहुमत समझ बूझकर चलने के पक्ष में रहेगा। सलाह-मशवरा जारी है। एक दो दिन में आपको सब मालूम हो जाएगा। बहुत सम्भव है बापू प्रकाश नाथ वक्तव्य जारी करें।

जयपुर की तरह राजकोट के मामले को लेकर कुछ एक अनपेक्षित उम्मीदवार पांचवें सवारों की फेहरिस्त में नाम लिखाने को उतावले हो रहे हैं। नाम नहीं बताऊंगा। अब यह बा के ऊपर निर्भर है कि वह इन अपेक्षाकृत अधिक ख्याति प्राप्त सज्जनों का साथ चाहेंगी या नहीं।

भवदीय,
प्यारेलाल

५६

सेगांव, वर्धा
२१ फरवरी १९३९

प्रिय लार्ड लिनलिथगो

आपके सहृदयतापूर्ण और स्पष्टवादिता से ओतप्रोत पत्र के लिए आभारी हूं। ऐसी परिस्थिति में मैं उस समय की प्रतीक्षा करूंगा, जब आपको भेंट वांछनीय लगेगी।

आपका
मो० क० गांधी

५७

सेगांव वर्धा
१२ फरवरी १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

देखता हूं कि कुछ पत्रों में यह धारणा बनाई जा रही है कि कांग्रेस की भावी कार्यक्रम क्या हो, इस बारे में बापू और सुभाष के बीच एक प्रकार का समझौता' हुआ है। यदि इसका आशय यह हो कि सुभाष जिस ढंग की नीतियों का प्रतिपालन करने का दावा करते हैं उनके प्रति बापू की ओर से किसी प्रकार की रिआयत की गई है अथवा उन्हें मान्यता प्रदान की गई है तो यह बिलकुल बेबुनियाद और सरासर भ्रामक धारणा फैलाई जा रही है। बापू ने सुभाष के सामने यह बिलकुल स्पष्ट कर दिया था कि अपनी नयी नीतियों के बारे में उन्हें कांग्रेस की पुरानी कैबिनेट से सहयोग की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। पर फिलहाल बापू इस मिथ्या धारणा का निराकरण करने के लिए कोई वक्तव्य नहीं देंगे क्योंकि निहित हितों द्वारा उसका दुरुपयोग किया जा सकता है, अथवा उसके गलत अर्थ लगाए जा सकते हैं।

बोस और डा० सुनील के तार के उत्तर में बापू ने कार्यकारिणी की वर्तमान बैठक में मुख्य प्रश्न पर अंतिम निर्णय लेना स्थगित कर दिया है। पर सदस्यगण यदि चाहें तो उन्हें पत्र लिखकर यह बता सकते हैं कि उनका इस्तीफा तैयार है वह जब चाहें स्वीकार कर सकते हैं। इधर बापू का ध्यान लींबडी और राजकोट की स्थिति की ओर अधिकाधिक खिंचता जा रहा है। राजकोट में जिन सत्याग्रहियों को गिरफ्तार किया गया है, उन्हें यातनाएं दी जा रही हैं। इसके विरोध में अधिकांश गिरफ्तार सत्याग्रहियों ने भूख-हड़ताल शुरू कर दी है। इनमें कई एक पुराने और मंजे हुए सहकर्मी भी शामिल हैं। बापू के दृष्टिकोण से यह एक गम्भीर मामला है। जिन कार्यकर्त्ताओं को यातनाएं दी जा रही हैं उनमें से अनेक को वह स्वयं जानते हैं और उनके हिंसाशून्य आचरण के बारे में उन्हें जरा भी संदेह नहीं है। अतः उनकी यातना के समाचार से बापू व्यथित हो उठे हैं।

बापू ने राजकोट के प्रमुख सचिव को तार देकर यह सारा काण्ड समाप्त करने को कहा है और उसी तार में यह भी कहा है कि उन्हें संग्राम में कूद पड़ने से अपने-आपको रोकने में कितनी कठिनाई हो रही है।

आज दोपहर की नींद लेने के बाद बापू का रक्तचाप ऊंचा हो गया—

१८६/११४। यह उनके किसी अज्ञात आंतरिक उद्वेलन के ही कारण हुआ होगा पर है यह अस्थायी। फिलहाल चिंता की कोई बात नहीं है।

भवदीय,
प्यारेलाल

पुनश्च

आपके वर्धा आने के बारे मे बापू कुछ कहने स चूक गए। मैं उनस अवसर मिलते ही फिर पूछूगा पर इतना तो कह ही दू कि जहा तक बापू के स्वास्थ्य का सबध है उसे लेकर आप यहा आने से कतई मत रुकिए। यदि आप आने और फिर वापस लौटने म जल्दबाजी स काम न लें तो आपका आना बापू की परेशानी का कारण होने के बजाय उन्हे राहत पहुचायेगा।

५८

तार

महामहिम वाइसराय के प्राइवेट सेक्रेटरी
नयी दिल्ली

मैंने राजकोट के प्रमुख सदस्य का निम्नलिखित तार दिया है

यदि जितने समाचार मिले हैं वे सब मनगढ़त है तो यह मेरे और मेरे सहकर्मियो के लिए गम्भीर बात है। यदि उनम कुछ तथ्य है, तो यह राज्य के अधिकारियो के उपर गम्भीर लाछन है। उधर भूख हडताल जारी है ही। चिंता ने मुझे व्याकुल कर दिया है। अत मैं कल रात का अपने साथ चिकित्सक, सेक्रेटरी और टाइपिस्ट का लेकर राजकोट के लिए रवाना हो रहा हू। मैं सत्य की खोज म और शान्ति स्थापना के लिए आ रहा हू। गिरफ्तारी कराने का कोई इरादा नही है। मैं अपनी आखो देखना चाहता हू और यदि मैंने देखा कि सहकर्मियो ने मनगढ़त समाचार भेजे हैं तो मैं पूरा मुआवजा दूगा। मेरी ठाकुर साहब स भी अपील है कि वह जनता की खातिर अपने भग किये वचन का पालन करें। मैं जनता से प्रदर्शन रोकने को कहूगा और जब तक राजकोट म मेरे प्रयत्न

जारी रहे तब तक के लिए सरकार से राज्य और राज्य से बाहर के लोगों का सत्याग्रह स्थगित करने को कह रहा हूं। यदि ठाकुर साहब और कौंसिल के लिए कुछ सदस्यों के हेर फेर के बाद समझौते को बरकरार रखना तथा बंदियों को तुरत रिहा करना और जुर्माने वापस करना सम्भव हो तो मैं स्वभावतया ही अपनी यात्रा रद्द कर दूंगा। कौंसिल में कौन कौन सदस्य रहें इस बाबत बातचीत चलाने के लिए आप किसी पूर्ण अधिकारयुक्त व्यक्ति को भेज सकते हैं। शर्त यही है कि उसमें सरदार द्वारा नामजद व्यक्तियों का बहुमत रहेगा। भगवान ठाकुर साहब और उनके परामर्शदाताओं का पथ प्रदर्शन करें। क्या मैं एक्सप्रेस तार की प्रतीक्षा करूं ?

कृपया इसे वाइसराय के सम्मुख रख दीजिए।

—गांधी

वर्धा
२४ फरवरी, १९३९

५९

तार

महात्मा गांधी,
राजकोट

हम आत्मा से आपके साथ हैं। भगवान आपको हमारा पथ प्रकाशमय रखने के निमित्त दीर्घ जीवन प्रदान करें। प्रेम, प्रणाम।

—घनश्यामदास महादेव देवदास

बिड़ला हाउस, नयी दिल्ली
७ मार्च, १९३९

६०

वाइसराय का शिविर
भारत
१० मार्च १९३९

प्रिय श्री देसाई

मुझे यह अभी-अभी महामहिम के पास से वापस मिला है। उन्होंने आपको इस सौजन्य के लिए धन्यवाद देने का आदेश दिया है और यह कहा है कि उन्होंने यह बड़ी रुचि के साथ पढ़ा। आप जानते ही हैं कि हम आगामी बुधवार का दिन के ११ बजे महात्माजी की प्रतीक्षा करेंगे। उनकी अनुमति लेकर मैंने इस विषय की सूचना प्रेस को दे दी है। आशा है महात्माजी अनशन के कारण आई कमजोरी से छुटकारा पा गए होंगे। देखता हूं कि वह यथास्वभाव कार्य रत हैं।

आशा है आप भी अब पहले से अच्छे होंगे और आपने अधिक आराम लिया होगा।

भवदीय
जे० जी० लेथवेट

श्री महादेवभाई देसाई
बिड़ला हाउस
नयी दिल्ली

६१

१० मार्च १९३९

प्रिय श्री लेथवेट

आपके १० तारीख के पत्र के लिए और विशेष रूप से महामहिम के इस कृपापूर्ण सन्देश के लिए कि उन्होंने मेरे लेख का पारायण करने लायक समय निकाला, मैं अत्यंत आभारी हूं।

मैं जो इस मामले में इतनी दिलचस्पी ले रहा हूं सो केवल इसलिए कि मुझसे जो अत्यंत महत्त्व का प्रश्न किया गया था उसे लेकर महामहिम के दिमाग में यदि

किसी प्रकार का स देह बना हुआ हो तो मैं उसे यथासम्भव दूर कर सकू। इस सम्बन्ध म मुझे जो चि ता है वह यह कि राजकोट मे अभी भी चल रहे झूठे प्रचार म वृद्धि हुई है। गाधीजी वहा केवल अनशन करने के लिए गये थे जिससे देश भर म अशाति की लहर फल जाय।

जिस दिन मुझे वाइसराय से साक्षात्कार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, काश मैं उस अवसर पर अपने-आपको इतना सयत कर पाता कि उन्हे उन सारी बातो की जानकारी देता, जिनका अत उन अनेक अनशनो के रूप म हुआ है। महामहिम मुझे वसा एक अवसर पुन प्रदान करें यह तो मैं सोच भी नही सकता पर मैं उनस यह अनुनय अवश्य करूगा कि वह गाधीजी के साथ दिल खोलकर बात करें जिसस उनके लिए सारी स्थिति का स्पष्ट करने का मौका मिल। मैं जानता हू कि किस प्रकार लाड इर्विन न उनसे लम्बे अर्से तक चलनेवाली बातें की थी, तो उनस अनेक अतरग प्रश्न भी किये थे। उस वार्ता-समुच्चय का अत गाधी इर्विन समझौते के रूप मे हुआ जो अब इतिहास की सामग्री बन चुका है। उस अतरग वार्तालाप के फलस्वरूप दोनो प्रेम की रज्जु मे बध गए थे।

मैं आपको इस मामले म एकमात्र यही उद्देश्य सामने रखकर व्यस्त कर रहा हू। मेरी एकमात्र कामना है कि एक-दूसरे को समझने और एक-दूसरे के प्रति मैत्री की भावना पदा करने का अवसर दिया जाये—केवल यही नही बल्कि राज कोट म भी यही करना होगा। वैसा होने स जिन महती सम्भावनाओ की आशा बधेगी उसे क्षति पहुचानेवाली किसी भी परिस्थिति को प्रश्रय न दिया जाए।

मैंने १८ फरवरी को 'हि दुस्तान टाइम्स' के वार्षिक अक के लिए एक लेख लिखा था। उस समय मुझे यह पता नही था कि गाधीजी राजकोट जाने का विचार कर रहे हैं। उस लेख से गाधीजी के मानस का सम्यक दिग्दर्शन होता है। उसकी एक प्रति आपके—और यदि सम्भव हो तो महामहिम के—अवलोकनार्थ इस पत्र के साथ रखता हू जिसम यदि आप आधा घण्टा उसके निमित्त निकाल सकें तो निकालें। ऑफिस का कामकाज बडा थकानेवाला होता है। इस लेख से आपका दिल-बहलाव भी होगा और महामहिम को गाधीजी को समझने म सहायता भी मिलेगी।

भवदीय
महादेव दसाई

श्री ज० जी० लथवेट
वाइसराय भवन
नयी दिल्ली

६२

गांधीजी का लिनलिथगो को पत्र

बिड़ला हाउस
नयी दिल्ली
१ मार्च १९३९

मैं यह पत्र आपके पास लाहौर पहुंच कर भिजवाने की आशा कर रहा था। पर वाइसराय भवन से मैं सीधा दिल्ली जंक्शन गया, जहां वल्लभभाई मेरा इंतजार कर रहे थे। उनके साथ ठहरने के लिए मैंने जितना समय की अपेक्षा समझ रखी थी, उससे कहीं अधिक समय लगा—पूरे दो घंटे। मुझे यह कहते प्रसन्नता होती है कि वल्लभभाई ने मेरी बात सुनी और मेरी मौजूदगी में ही अपना समाधान कर लिया। उन्हें यकायक आगरा जाना पड़ रहा था। अब मैं उनकी विदाई के बाद यह पत्र रजिस्टर्ड मैसेंजर को लिख रहा हूं।

आपके साथ मेरी जो बातचीत हुई, उसे मैं अब लिपिबद्ध करता हूं। मैंने आपके तार से समझा कि ठाकुर साहब ने गत २६ दिसम्बर को सरदार वल्लभभाई पटेल को जो पत्र दिया था उसका अर्थ प्रधान न्यायाधीश लगायेंगे। यह समझकर कि ऐसा हमारी इच्छा के अनुरूप हुआ है, अब ऐसी समिति का गठन किया जायगा जिसमें सरदार द्वारा नामजद सात लोग होंगे और राज्य के तीन अधिकारी भी होंगे जिनकी नामजदगी स्वयं ठाकुर साहब करेंगे। इन सदस्यों में से एक को ठाकुर साहब अध्यक्ष नियुक्त करेंगे।

आपके तार में जिस दूसरी बात का उल्लेख है वह यह है कि यदि एक ओर सरदार द्वारा नामजद सदस्यों में और दूसरी ओर अधिकारियों में २६ दिसम्बर की विज्ञप्ति के अर्थों को लेकर कभी मतभेद हुआ, तो प्रधान न्यायाधीश को पंच बनाया जायगा और उनका निर्णय अंतिम माना जायगा। जहां तक प्रधान न्यायाधीश को दिये गए दो हवालों का सम्बन्ध है, आपके तार का मैं यही सरकारी मर्म ग्रहण करता हूं। रही शासन विधान की रूप रेखा निश्चित करने की बात, सो इस मामले में बहुमत की ही मान्यता हो जाएगी।

मैंने जो दो मुद्दे उठाये थे उनके बारे में मैंने आपको लिखने का वचन दिया था। इस पत्र में उनको लेकर और अधिक लिखना अनावश्यक है। पर आपके प्रति

औचित्य के आचरण का तकाजा कहता है कि ठाकुर साहब के परामशदाताओ ने उनसे कुछ ऐसी नामजदगिया करा डाली है जिनसे पीछे हटना सर्वोपरि सत्ता के लिए भी परशानी से खाली नही रहेगा। मेरा अभिप्राय दा मुसलमाना और एक भायात की नामजदगी से है। सम्भव है आपको इस कठिनाई का ज्ञान हो, मैंने भी इससे पार पाने के लिए कुछ रास्ते आपको सुझाये थे। यदि आपको उनकी जानकारी न हो तो मैं उनका खुशी खुशी खुलासा करूगा। आपके साथ अपनी बातचीत का सिंहावलोकन करता हू तो मुझे लगता है कि कई मामलो म किसी निणय पर नहीं पहुचा जा सका था। मुझे आपका अधिक समय न लेने का बराबर खयाल रहा, और जब यह प्रतीत होने लगा कि अन्य अनेक मामलो की भाति इस मामले को लेकर भी कोई कठिनाई उपस्थित नही होगी तो बातचीत को और आगे बढाना मैंने अनावश्यक समझा। आप मेरे इस कथन म सहमत होग कि मैंने जिन शर्तों पर अपन उपवास का अत किया था, उनकी पूर्ति के बारे म किसी तरह की गलतफहमी नही होनी चाहिए। जो कदम उठाय जानेवाले हैं यदि उनकी घोषणा के बाद उनम से किसी पर मुझे आपत्ति हुई, तो यह बडी भयकर बात होगी। इसलिए मेरा सुझाव है कि राजकोट के मामले मे जो घोषणा अथवा घोषणाए की जानेवाली हो उनसे मुझे पहले से ही अवगत कर दिया जाए।

अन्य कुछ बातें ऐसी हैं, जिनकी मैंने अपनी बातचीत के दौरान चर्चा की थी और जिन्हे ठाकुर साहब को 'अल्टीमेटम' कहकर बताया जा रहा है। इस बारे मे आपके दा तार सदेशो म मुझे आश्वासन मिला है। मेरे और आपके बीच तारा का जो आदान प्रदान हुआ है, उनमे और भी कुछ ऐसी बातो का उल्लेख है जिनकी पूरी सफाई के लिए एक और भेंट की जरूरत है। आपके और मरे बीच रियासतो के बारे मे जल्दी-जल्दी जो बातें हुइ, उनके दौरान आपने मुझे यह बताया था कि आप निकट भविष्य म एक नयी नीति काम म लान का विचार रखते हैं। उस वार्ता के फलस्वरूप मेरे मन मे अशान्ति-सी पदा हो गइ है। अपनी इस अस्पष्ट आशका को लिखित रूप देने मे मुझे सकोच हो रहा है। आप यदि यह सोचते हो कि मैंने आपके अभिप्राय को ठीक ठीक समझा है तो बात दूसरी है। इसके लिए भी मैं आपसे एक बार फिर मिलना चाहूगा।

क्या आप सूचित करने की कृपा करेंगे ?

६३

विड़ला हाउस
नयी दिल्ली
१६ मार्च १९३९

प्रिय सर रेजिनाल्ड

महादेव देसाई ने आपको मेरा पत्र देते समय आपके साथ जो बातचीत की उसका सारांश उन्होंने मुझे बताया है। आपने उनके लिए समय निकाला इसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूं। आपने जो सुझाव दिये वे उन्होंने मुझे बताये। मैं बन्दियों की इच्छा को जाने बिना कोई कदम नहीं उठाना चाहता था इसलिए मैंने उन्हें उनके पास भेजा था। अब मैं यह कहने की स्थिति में हूं कि भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए हिंसा के मार्ग में उनकी कोई आस्था नहीं है और न उनका ऐसी किसी संस्था में प्रवेश करने का ही इरादा है जिसकी कार्य पद्धति हिंसात्मक हो। मुझे आशा है कि इस पत्र को आधार मानकर आप अब उन बन्दियों की बिना शर्त रिहाई की घोषणा कर देंगे। मुझे यह भी आशा है कि बन्दियों की रिहाई के प्रश्न से प्रत्येक प्रांत में अलग अलग ढंग से निपटने की नीति का पूर्णतया त्याग कर दिया जाएगा।

भवदीय
मो० क० गांधी

आनरेबल सर रेजिनाल्ड एम० मैक्सवेल
गृह-सदस्य भारत सरकार
नयी दिल्ली

६४

नयी दिल्ली
१६ मार्च १९३९

प्रिय सर रेजिनाल्ड,

मुझे जो सुविधाएं देने की कृपा की गई उनसे मैं दिल्ली जेल में उन तीन

भूख हड़तालियों से भेंट कर सका। मुझे यह बहुत प्रसन्नता होती है कि उन्होंने मेरी सलाह मान ली और भूख हड़ताल स्थगित कर दी। सरकार जो आश्वासन चाहती थी, मैंने उन्हें वह आश्वासन देने के लिए राजी करने की भरसक कोशिश की, पर उनका कहना था कि वे कौल-करार के द्वारा अपनी आजादी नहीं खरीदना चाहते, उन्हें बगैर मुकदमा चलाए जेल में डाला गया है और जिस प्रकार अन्य अनेक बंदियों को रिहा किया गया है उसी प्रकार उन्हें भी बगैर किसी शर्त के रिहा किया जाए। मुझे उनकी आपत्ति में औचित्य दिखाई दिया। पर मैंने उनसे कहा कि उनकी रिहाई के निमित्त सफल प्रयत्न करने के लिए यह आवश्यक है कि वे मेरा समाधान करायें, कि व कांग्रेस की अहिंसात्मक नीति में विश्वास रखते हैं और भविष्य में कांग्रेस की देखरेख में काम करेंगे। इसके लिए वे तुरत तैयार हो गये, और उन्होंने अपने आश्वासन को लिखित रूप दे दिया। पर साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि मैं उस लिखित आश्वासन के आधार पर उनकी रिहाई का प्रयत्न कदापि न करूं और न उनकी रिहाई के प्रयत्न के दौरान सरकार को वह पत्र दिखाऊं। इन बंदियों को आप बिना किसी शर्त के रिहा कर सकें तो बड़ी बात हो। यदि आप ऐसा करेंगे, तो राजनैतिक क्षेत्र में अहिंसा की नीति का अवलम्बन करने के मेरे मिशन में बहुत सहायता मिलेगी।

श्री पक्वे ने मुझे जो पत्र भेजा है उसमें मैं इस शर्त का भी उल्लेख पाता हूं कि ये बंदी अमुक-अमुक प्रांत में प्रवेश नहीं करेंगे। यह शर्त अनावश्यक है। यदि उन प्रांतों की सरकारें वहां उनकी उपस्थिति के खिलाफ होंगी तो उन प्रांतों में उनके प्रवेश पर प्रतिबंध लगा देंगी। भारत सरकार को ये शर्तें लादने की क्या जरूरत है ?

मैं यह पत्र महादेव देसाई के हाथ भेज रहा हूं ताकि वह आपको पूर्ण रूप से बता सकें कि उन ३ बंदियों और मेरे बीच क्या क्या बातें हुई।

भवदीय,
मो० क० गांधी

आनरेबल सर रजिनाल्ड एम० मैक्सवेल,
सी० एस० आई०
गृह-सदस्य भारत-सरकार
नयी दिल्ली

६५

महात्माजी का लार्ड लिनलिथगो को पत्र

बिड़ला हाउस,
नई दिल्ली
१३ मार्च १९३९

'आपने कल मुझे प्रधान न्यायाधीश को दिये जानेवाले हवाले का जो मसौदा कृपापूर्वक दिया था, वह वापस भेज रहा हूं। मैंने मसौदा सरसरी नजर से देख लिया। न तो वह उसमें कोई परिवर्तन-परिवर्द्धन करना चाहता है न मैं ही करना चाहता हूं। मसौदे की नकल रख ली है।

मैंने आपका इतना समय लिया, इसके लिए पुनः क्षमाप्रार्थी हूं। पर मुझे आशा है कि मेरी तरह आपकी भी यही धारणा बनी होगी कि इस समय का सदुपयोग हुआ, कम-से-कम इतना तो हुआ कि राजकोट के मामले को लेकर भविष्य में किसी तरह की गलतफहमी पैदा होने की सम्भावना यथासम्भव कम हो गई।

आपने लेडी लिनलिथगो से परिचय कराया, इसके लिए एक बार फिर आपको धन्यवाद देता हूं।

६६

आनरेबल सर मॉरिस ग्वायर के० सी० बी० के० सी० एस० आई० भारत के प्रधान न्यायाधीश के नाम

मैं निम्नलिखित दस्तावेजों की नकलें सम्मानपूर्वक प्रेषित करता हूं :

(अ) राजकोट-दरबार की २६ दिसम्बर, १९३८ की विज्ञप्ति संख्या ५०।

(आ) उसी तारीख को दिया गया राजकोट के ठाकुर साहब का श्री पटेल के नाम पत्र।

इन दस्तावेजों के सही अर्थ को लेकर संदेह उठ खड़ा हुआ है और मेरा यह सम्मानपूर्ण अनुरोध है कि आप यह सलाह दें कि उनका क्या अर्थ लगाया जाये।

जिस मुद्दे पर आपकी सलाह की तत्काल जरूरत है वह यह है कि ठाकुर साहब ने जिस समिति के गठन का वचन दिया है उसका गठन किस रूप में किया जाय। इस बारे में ठाकुर साहब का कहना है कि उन्होंने समिति में लिये जानेवाले व्यक्तियों की सिफारिश करने को श्री पटेल से अवश्य कहा था, पर किन किन को नामजद किया जाय इसका निर्णय वह स्वयं करेंगे। इसका मतलब यह हुआ कि वह श्री पटेल द्वारा सुझाये गये लोगों में से किसको सदस्य बनायेंगे किसको नहीं, इस बारे में वह स्वतंत्र रहेंगे। उधर श्री पटेल का कहना है कि अपने २६ दिसम्बर के पत्र में ठाकुर साहब उनके द्वारा सुझाये गये सभी लोगों को समिति का सदस्य बनाने के लिए बाध्य हैं।

ठाकुर साहब और श्री पटेल से कहा गया है कि उन्हें अपने अपने विचार के प्रतिपादन में जो-कुछ कहना है, उसे लिखित रूप में पेश करें। जब उनके बयान प्राप्त होंगे आपके पास भेज दिये जायेंगे। यदि उनके लिखित बयानों का अध्ययन करने के बाद आपको लगे कि उनके मौखिक बयानों की भी जरूरत है, तो वैसा प्रबंध भी हो सकेगा।

आप से यह अनुरोध है कि मामले का अध्ययन करने पर जैसे ही आप यह बताने की स्थिति में हों कि समिति का गठन किस प्रकार किया जाय आप अविलम्ब बता दें। समिति का गठन फिर उस आधार पर किया जायेगा। इसके बाद यदि सदस्यों में इन दस्तावेजों के किसी अंश विशेष के मर्म के संबंध में कोई मतभेद होगा तो मामला पुनः आपके पास भेजा जायगा, और मतभेद के विषय पर आप अपना निर्णय देंगे कि उसका ठीक ठीक अर्थ क्या हो सकता है।

६७

बिड़ला हाउस
नयी दिल्ली
१७ मार्च १९३९

प्रिय महोदय

आपके १६ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद। आपके आग्रह के पालनस्वरूप मैं इस पत्र के साथ राजकोट के ठाकुर साहब का २६ दिसम्बर, १९३८ का मूल

पत्र नत्थी करता हू ।

इसी के साथ ठाकुर साहब के उक्त पत्र का अपना अर्थ तथा उसी तारीख को राज्य द्वारा जारी की गई विज्ञप्ति का सबधित अश भी भेज रहा हू ।

भवदीय
वल्लभभाई पटेल

पश्चिमी भारत के राज्यो के
माननीय रजिस्ट्रार
राजकोट मेरा निवेदन

(१) निवेदन है कि २६ दिसम्बर १९३८ को राज्य द्वारा जो विज्ञप्ति जारी की गई थी उसी दिन ठाकुर साहब ने जो पत्र लिखा था वह अपने आशय में असदिग्ध है और उसका केवल एक ही अर्थ लगाया जा सकता है। फलत उसका अर्थ निकालने के लिए बाह्य साक्षी अग्राह्य है।

(२) ठाकुर साहब की दलील उक्त विज्ञप्ति की भाषा और मर्म के प्रतिकूल है।

(३) इतने पर भी यदि प्रधान न्यायाधीश किसी मुद्दे पर कथित तथ्य करें तो मैं पेश करने को प्रस्तुत हू ।

(४) यदि ठाकुर साहब की ओर से कोई दलील पेश की जायगी तो उसका प्रत्युत्तर देने का मुझे अधिकार रहेगा।

वल्लभभाई पटेल

६८

२० मार्च १९३९

प्रिय श्री लथवेट

आपके आज प्रात काल के पत्र तथा आपके इस आश्वासन के लिए कि आप *मामले में उचित कार्रवाई कर रहे हैं मैं अत्यधिक कृतज्ञ हू।*

पर मुझे एक और दु खद कहानी कहनी है। आज सुबह जब सरदार वल्लभ भाई अपने एक मित्र को माननीय प्रधान न्यायाधीश को भेजे गये अपने निवेदन की नकल दिखा रहे थे, तो उन्होंने देखा कि उस निवेदन में मूल में तीन शब्द

छूट गये हैं वसे य छूटे हुए तीन श द विशेप महत्त्व के नहीं ह । सरदार को यह उचित लगा कि वह प्रधान यायाधीश का ध्यान इस ओर आकर्पित करें, ताकि उनके कथन मे वे तीन शब्द शामिल किये जा सकें । उ हान उनम यह अनुरोध भी किया कि उ हें दिल्लीम कितने दिन और ठहरना होगा, इस सबध मे यदि सम्भव हो तो वह उ ह सूचना द दें, क्याकि वह दिल्ली म केवल इसी अपेक्षा म रक हुए हैं कि सम्भव है उनकी उपस्थिति की आवश्यकता हो। हम सब माननीय प्रधान यायाधीश के प्राइवेट सनेटरी की इस सूचना म हैरत म पड गय कि उसे कवल हवाले के मुद्दे प्राप्त हुए ह सरदार का निवेदन अभी नही मिला है। प्रधान यायाधीश राजनतिक विभाग स सम्पक स्थापित करेंग तथा जब तक उनके सामने मारे कागज पत्र पश नही हाग, उनक लिए यह बताना सम्भव नहीं होगा कि सरदार को यहा और कितने दिन ठहरना होगा।

यह आपकी सूचनाथ है, क्याकि मैं कल इसकी चर्चा आपसे कर ही चुका ।

यह सारा विलम्ब किसलिए है ? इसमे किसका दोप है ?

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

श्री जे० जी० लेथवेट
वाइसराय के प्राइवेट सेक्रेटरी
का आफिस
नयी दिल्ली

६९

२१ माच, १९३९

प्रिय श्री लेथवट,

यह रही राजकोट स आय एक ताजा तार की नकल

'एक और काश्तकार की जमीन बचने का आदेश हुआ है। कल बची जायगी। जुर्माने के लिए काश्तकारो की जमानतें ली गई हैं।—ढेबर।"

सब्र का प्याला लबरेज हो चुका है। यह जाहिर है कि यहा से जो निर्देश भेजे जाते हैं उनक बावजूद राजकोट के अधिकारी यह सब कर रहे हैं—या तो अन जान म या जान बूझकर। तार म जमीनें बेचे जाने का आदेश गाधीजी को प्रमुख

सदस्य द्वारा दिये गये इस आश्वासन के सर्वथा प्रतिकूल है कि जमीनें बेचने के नोटिसों पर अमल नहीं किया जायगा। जुर्माने के लिए जमानतें तलब करना वाइसराय के निर्देश का स्पष्ट उल्लंघन है। महामहिम ने यह निर्देश गत ७ तारीख को मेरी मौजूदगी में सम्भवत राजनैतिक विभाग को दिया था जब मैं उनसे भेंट करने उपस्थित हुआ था। वह निर्देश यही था कि कैदियों को रिहा करने तथा लिये गये सारे जुर्माने वापस करने का आदेश तुरंत जारी किया जाय।

जब मैंने उक्त तार गांधीजी को पढ़कर सुनाया तो उन्होंने कहा सब्र की सीमा पार हो गई। क्या यह मामला तत्काल कार्रवाई करने की जरूरत नहीं रखता ?

भवदीय
वल्लभभाई पटेल

श्री जे० जी० लथवेट
वाइसराय के प्राइवेट सेक्रेटरी
का आफिस
नयी दिल्ली

७०

श्री गाई विट के साथ हुए वार्तालाप के नोट

१ अप्रैल १६३६

श्री गाई विट गांधीजी से जो जो प्रश्न करना चाहते थे उनकी सूची उन्होंने पहले से ही दे दी थी। उनका प्रथम प्रश्न भारत के विकासशील प्रजातंत्र की साम्प्रदायिक समस्या से वैधानिक तौर तरीकों पर चलने की नीति के विरुद्ध तरुण समाज के विद्रोह से राजनैतिक दलबंदी से श्रमिक समाज के असंतोष से तथा ग्रामीण समाज की सीधी कार्रवाई करने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति से उत्पन्न होनेवाले खतरे से सम्बन्ध रखता था। गांधीजी का उत्तर था श्री विट इन समस्याओं को जितना महत्त्व देते हैं वास्तव में वह डाक्टरों की निदान करने की भाषा की याद दिलाता है जिसमें यह मान ही लिया जाता है कि लक्षण साधानिक सिद्ध हो सकते हैं। पर वास्तव में वे आम तौर से साघातिक सिद्ध नहीं होते। फलत आप

इन समस्याओं को जितना गम्भीर समझते हैं, उतना मैं नहीं समझता। मैं यह मानता हूं कि उत्तर भारत में शेष भारत की अपेक्षा साम्प्रदायिक समस्या अधिक उग्र है पर यह उतनी उग्र नहीं है, जितनी फिलस्तीन में है। हिंदू मुस्लिम वैमनस्य आम जनता में घर नहीं कर सका है। जैसा कि पंडित जवाहरलाल ने आज सुबह जारी किये गये अपने वक्तव्य में कहा है यह लड़ाई उतनी धार्मिक नहीं है जितनी राजनैतिक और आर्थिक। यदि कांग्रेस एकाग्र चित्त होकर और केवल एक लक्ष्य सामने रखकर कार्यरत हो, तथा मुसलमानों की उग्र आकांक्षाओं की पूर्ति कर, तो इक्के दुक्के दंगों को छोड़ साम्प्रदायिक समस्या अवश्य सुलझ जायगी। मुख्य बात यही है कि हम अपने अहिंसा-व्रत के संकल्प में विचलित न हों। यह संतोष का विषय है कि यह समस्या नगरों में सिर उठाती है गांवों में नहीं, और असली भारत का निवास गांवों में है। यह वस्तुस्थिति है कि राजनैतिक उबाल नगरों में ही दिखाई पड़ता है, पर इसका दोष ब्रिटिश शासन के कुप्रभाव के मत्थे मढ़ना चाहिए। जैसा कि मैं कह चुका हूं यदि कांग्रेस मुसलमानों की राजनैतिक आकांक्षाओं का समाधान करे, तो लड़ाई झगड़ा खत्म हो जाय।

'रही मुस्लिम लीग द्वारा लगाये गये इस लांछन की बात कि मुसलमानों पर अत्याचार हो रहे हैं सो विभिन्न प्रांतीय सरकारों ने इन आरोपों की जाच-पड़ताल करने के बाद उन्हें बेबुनियाद पाया है।'

श्री विंट ने भाषा-सम्बन्धी वाद विवाद का उल्लेख किया था। इस सम्बन्ध में गांधीजी ने कहा, 'मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि इस शिकायत में कोई सार नहीं है। कांग्रेस ने उर्दू पर कभी प्रहार नहीं किया वास्तव में किसी और ने भी ऐसा कभी नहीं किया। आपको शायद यह मालूम न हो कि इस विचार का, कि भारत की राष्ट्रभाषा का स्थान अंग्रेजी को देने की बजाय हिंदुस्तानी को दिया जाय, जन्मदाता मैं खुद हूं। मैं अभी अपने प्रयत्न में सफल नहीं हुआ हूं पर हम लोग सचेष्ट हैं। वास्तव में भारत का राजकाज चलाने के लिए हिंदुस्तानी ही उपयुक्त हो सकती है—न अकेली हिंदी हो सकती है न अकेली उर्दू। हिंदुस्तानी हिंदू मुसलमान दोनों बोलते हैं लिखते हैं कुछ देवनागरी लिपि में कुछ फारसी लिपि में। हिंदुस्तानी में संस्कृत फारसी और अरबी के क्लिष्ट शब्दों का अभाव रहता है। मैं उर्दू का काफी ध्यानपूर्वक अध्ययन करता हूं पर उर्दू की दार्शनिक पुस्तकों का आशय मैं ग्रहण नहीं कर पाता क्योंकि उनमें फारसी और अरबी के शब्द भरे रहते हैं जिनके बहुवचन फारसी और अरबी कायदे के होते हैं। इस बात में मतभेद की कोई गुजाइश नहीं है कि उर्दू का एक अपना निश्चित और प्रतिष्ठित स्थान है। वास्तव में, पंजाब में तो उर्दू हिंदू मुसलमान दोनों की

है, यदि मेरी बताई गई शर्तें पूरी हो जाय, तो मैं विधान के इस अंग को भी अमल में लाने में नहीं हिचकिचाऊगा पर साथ ही यह शर्त भी रखूंगा कि कांग्रेस सचमुच की अहिंसा अपनाय न कि इस समय की मूक अहिंसा।"

श्री विट ने पूछा कि वास्तविक नियंत्रण से आपका क्या अभिप्राय है ?'

गांधीजी ने उत्तर दिया उस स्थिति में वाइसराय वैसा आचरण करने में सकोच करेगा जैसा अब करता है। इस समय स्थिति यह है कि यदि व्यवस्थापिका सभा किसी बिल को रद्द कर देती है तो वाइसराय उसे वैध करार दे देता है और व्यवस्थापिका सभा को उसके आगे सिर झुकाना पड़ता है। भारत ब्रिटिश पैक्ट को व्यवस्थापिका सभा ने १० वोटों से रद्द कर दिया था और यदि सरकारी वोटों और ४० नामजद सदस्यों के वोटों को कम कर दिया जाये तो पैक्ट के पक्ष में केवल ६ वोट थे। इतने पर भी उसे लाद दिया गया। यह कितने परिताप का विषय है! जब भारत को स्वराज्य देना ही लक्ष्य है तो भारत सचिव हमारी बातों का निर्णय क्या करें ? वाइसराय की राय भले ही भिन्न हो पर वह मुह खोलने में असमर्थ रहता है। इस प्रकार ३८ करोड़ स्त्री पुरुषों की इच्छा व्यक्त करने का जिम्मा अपने ऊपर लिये हुए है। इससे अंग्रेज जाति की नियंत्रणप्रियता भली भांति प्रमाणित होती है पर इससे मेरे जैसा व्यक्ति जो भारत और ब्रिटेन के बीच सचमुच की मैत्री चाहता है भयातुर हो उठता है। जब जनमत की इस प्रकार अवज्ञा की जाती है तो आदमी को भारत शासन के खिलाफ विद्रोह करने की प्रेरणा मिलती है।

रक्षा के मामले में भी रुपये का जिस प्रकार अपव्यय हो रहा है देखते नहीं बनता है। आप सीमा प्रान्त के दौरे में मेरे साथ रहते तो देखते कि यहां जिन लोगों का वास्तविक महत्त्व है उन्हें किस प्रकार उपेक्षित रखा जाता है। खान अब्दुल गफ्फार खा को ही लीजिए। वह फौलाद जैसे खरे हैं और अंग्रेजों के प्रति उनके हृदय में किसी प्रकार की दुर्भावना नहीं है। पर उन्हें सदेह की दृष्टि से देखा जाता है, और सरकार की दृष्टि में उनका कोई महत्त्व नहीं है।'

श्री विट ने फिर जिज्ञासा जतलाई कि श्री पी० एन० सप्रू ने सुझाव दिया था कि व्यवस्थापिका सभा की एक सेना समिति गठित की जाये जो वाइसराय की प्रबन्धकारिणी समिति के साथ मिल-जुलकर काम करे। यदि वैसी किसी समिति का गठन हो जाय, तो क्या आप सतुष्ट हो जायेंगे ?

गांधीजी ने उत्तर दिया कदापि नहीं। हम अपनी क्षमता की कसौटी पर कसकर देखना है। यदि सम्पूर्ण अधिकार हमारे सुपुर्द करने की इच्छा मौजूद है

ता उसी अनुपात म हम पर भरोसा करन की सम्भावना को भी जन्म दना होगा, उत्तरदायित्व का हस्तातरित करना होगा हम भूल करन की स्वतत्रता प्रदान करनी होगी, विशषज्ञा क सलाह मशवरे की जरूरत होने पर उपयाग करने का हम अवसर लना हागा। पर इस समय यह सलाह हमार ऊपर लादी जा रही है। यह तो सहयोग का माग नहीं ह।

श्री विट न पूछा 'परन्तु क्या हमन उत्तरोत्तर अधिकाधिक अधिकार सौंप कर अपना इरादा स्पष्ट नही कर दिया ? हमारे इरादे का सशय की दष्टि स दखने म अतिशयोक्ति स काम लिया गया है। क्या सत्ता हस्तातरण की अतरिम अवधि म श्री सप्रू का सुझाव उपादय सिद्ध नहीं हागा ? यदि १० वर्षो के भीतर हस्ता तरण क कारण उन्स्थिर हा, ता क्या यह अतरिम व्यवस्था स्वय भारत के हित म लाभदायक नही होगी ?'

'भारत के साथ ब्रिटेन का नाता काफी पुराना हो चुका ह। यदि इतन वप बीतन के बाद भी आप हमार ऊपर भरासा करक हम अधिकार नही सौंप सकत हैं, ता इस पुरान नात का देखते हुए कोई विशेष बात नही है। जब आप परिवतन काल की बात कहते है ता मुझे आप पर शक हाने लगता है। परिवतन-काल का प्रश्न उठे ही क्या ? यदि आप वास्तव म हम अधिकार सापना चाहत है ता हम नैतिक और वास्तविक नियत्रण का अधिकार तुरत मिल जाना चाहिए। आपने हमार मत्रिया पर भरोसा किया सो बेजा नही किया। और यदि आप कहन लगें कि गवनरा न अपने विशषाधिकारा का प्रयोग नही किया ता हम कहग कि इसका थोडा बहुत श्रेय हम भी मिलना चाहिए क्याकि हमन उन्हें वसा करन का अवसर ही नही दिया। मैं चाहता हू कि ब्रिटिश सरकार कुछ इस ढग का आचरण करे, जिसस यह लगन लगे कि समूचा शासन विधान ही अलमारी में सुपुद कर दिया गया है। हमारे ऊपर सालह आन भरोसा करना हागा थोडा थाडा करके नही जसा कि इस समय हो रहा ह। यदि साझेदारी हा ता सचमुच की और स्वच्छा पूवक हो। तकनीकी मामला म आप लोगा के विशेषज्ञ हमार शिक्षक रहग, हमार स्वामी नही।

आप हिन्दू मुस्लिम तनाव की बात कहते हैं। इस तनाव के मौजूद रहत हुए भी आप लागा का यह शिकायत करन का कभी अवसर नही मिला कि मत्रिया न एक वग के हिता पर किसी अन्य वग क हिता का बलिदान किया। हम लागा न आठ प्राता म अपनी अच्छी-खासी काफी प्रगति की है। अतएव आप एसा वातावरण पैदा कीजिए कि हम लोग एक दूसर का अधिकाधिक प्रिय लगने लगें। इस भरास की भावना का श्रीगणेश आपकी आर स ही हाना है।

है यदि मेरी बताई गई शर्तें पूरी हो जाय तो मैं विधान के इस अंग को भी अमल में लाने में नहीं हिचकिचाऊंगा पर साथ ही यह शर्त भी रखूंगा कि कांग्रेस सचमुच की अहिंसा अपनाये न कि इस समय की मूक अहिंसा।

श्री विंट ने पूछा कि वास्तविक नियन्त्रण से आपका क्या अभिप्राय है ?"

गांधीजी ने उत्तर दिया उस स्थिति में वाइसराय वैसा आचरण करने में संकोच करेगा जैसा अब करता है। इस समय स्थिति यह है कि यदि व्यवस्थापिका सभा किसी बिल को रद्द कर देती है तो वाइसराय उसे वैध करार दे देता है और व्यवस्थापिका सभा को उसके आगे सिर झुकाना पड़ता है। भारत ब्रिटिश बजट को व्यवस्थापिका सभा ने १० वोटों से रद्द कर दिया था और यदि सरकारी वोटों और ४० नामजद सदस्यों के वोटों को कम कर दिया जाय तो बजट के पक्ष में केवल ६ वोट थे। इतने पर भी उसे लाद दिया गया। यह कितने परिताप का विषय है! जब भारत को स्वराज्य देना ही लक्ष्य है तो भारत सचिव हमारी बातों का निर्णय क्या करें? वाइसराय की राय भले ही भिन्न हो पर वह मुंह खोलने में असमर्थ रहता है। इस प्रकार ३५ करोड़ स्त्री पुरुषों की इच्छा व्यक्त करने का जिम्मा अपने ऊपर लिये हुए है। इससे अंग्रेज जाति की नियन्त्रणप्रियता भली भांति प्रमाणित होती है पर इसमें मेरे जैसा व्यक्ति जो भारत और ब्रिटेन के बीच सचमुच की मैत्री चाहता है भयातुर हो उठता है। जब जनमत की इस प्रकार उपेक्षा की जाती है तो आदमी को भारत शासन के खिलाफ विद्रोह करने की प्रेरणा मिलती है।

रक्षा के मामले में भी रुपये का जिस प्रकार अपव्यय हो रहा है देखते नहीं बनता है। आप सीमा प्रांत के दौरे में मेरे साथ रहते तो देखते कि वहां जिन लोगों का वास्तविक महत्त्व है उन्हें किस प्रकार उपेक्षित रखा जाता है। खान अब्दुल गफ्फार खां को ही लीजिए। वह फौलाद जैसे खरे हैं और अंग्रेजों के प्रति उनके हृदय में किसी प्रकार की दुर्भावना नहीं है। पर उन्हें संदेह की दृष्टि से देखा जाता है और सरकार की दृष्टि में उनका कोई महत्त्व नहीं है।'

श्री विंट ने फिर जिज्ञासा जतलाई कि श्री पी० एन० सप्रू ने सुझाव दिया था कि व्यवस्थापिका सभा की एक सेना-समिति गठित की जाय, जो वाइसराय की प्रबन्धकारिणी समिति के साथ मिल-जुलकर काम करे। यदि वैसी किसी समिति का गठन हो जाय तो क्या आप संतुष्ट हो जायेंगे?

गांधीजी ने उत्तर दिया कदापि नहीं। हमें अपनी क्षमता को कसौटी पर कसकर देखना है। यदि सम्पूर्ण अधिकार हमारे सुपुर्द करने की इच्छा मौजूद है

तो उसी अनुपात में हम पर भरोसा करने की सम्भावना को भी जन्म देना होगा, उत्तरदायित्व का हस्तान्तरण करना होगा, हमें भूल करने की स्वतन्त्रता प्रदान करनी होगी। विशेषज्ञों के सलाह-मशवरे की जरूरत होने पर उपभोग करने का हमें अवसर देना होगा। पर इस समय यह सलाह हमारे ऊपर लादी जा रही है। यह तो सहयोग का मार्ग नहीं है।'

श्री विंट ने पूछा : 'परन्तु क्या हमने उत्तरोत्तर अधिकाधिक अधिकार सौंप कर अपना इरादा स्पष्ट नहीं कर दिया? हमारे इरादे को संशय की दृष्टि से देखने में अतिशयोक्ति से काम लिया गया है। क्या सत्ता-हस्तान्तरण की अंतरिम अवधि में श्री सप्रू का सुझाव उपादेय सिद्ध नहीं होगा? यदि १० वर्षों के भीतर हस्तान्तरण के कारण उपस्थित हों तो क्या यह अंतरिम व्यवस्था स्वयं भारत के हित में लाभदायक नहीं होगी?'

'भारत के साथ ब्रिटेन का नाता काफी पुराना हो चुका है। यदि इतने वर्ष बीतने के बाद भी आप हमारे ऊपर भरोसा करके हमें अधिकार नहीं सौंप सकते हैं तो इस पुराने नाते का स्मरण करना कोई विशेष बात नहीं है। जब आप परिवर्तन-काल की बात कहते हैं तो मुझे आप पर शक होने लगता है। परिवर्तन-काल का प्रश्न उठे ही क्यों? यदि आप वास्तव में हमें अधिकार सौंपना चाहते हैं, तो हमें नैतिक और वास्तविक नियन्त्रण का अधिकार तुरन्त मिल जाना चाहिए। आपने हमारे मन्त्रियों पर भरोसा किया या कभी नहीं किया। और यदि आप कहने लगें कि गवर्नरों ने अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग नहीं किया, तो हम कहेंगे कि इसका श्रेय-वश्रेय हमें भी मिलना चाहिए क्योंकि हमने उन्हें वैसा करने का अवसर ही नहीं दिया। मैं चाहता हूँ कि ब्रिटिश सरकार कुछ इस ढंग का आचरण करे जिससे यह लगने लगे कि समूचा शासन-विधान ही अलमारी के सुपुर्द कर दिया गया है। हमारे ऊपर सोलह आने भरोसा करना होगा, थोड़ा-थोड़ा रखके नहीं, जैसा कि इस समय हो रहा है। यदि भरोसा हो तो सचमुच का और स्वेच्छापूर्वक हो। नवनीती मामलों में थोड़े लोगों के निमित्त हमारे मित्र रहेंगे, हमारे स्वामी नहीं।

आप हिन्दू-मुस्लिम-तनाव की बात कहते हैं। इस तनाव के मौजूद रहते हुए भी आप लोगों को यह सिद्ध करने का कभी अवसर नहीं मिला कि मन्त्रियों ने एक वर्ग के हितों पर किसी अन्य वर्ग के हितों का बलिदान किया। हम लोगों ने आठ प्रान्तों में अपनी अच्छा-खासा कर दिखाया है। अतएव आप ऐसा वातावरण पैदा कीजिए कि हम दोनों एक-दूसरे को अधिकाधिक प्रिय लगने लगें। इस संग्राम की भावना का श्रीगणेश आपकी ओर से ही होना है।

ब्रिटेन और भारत के पारस्परिक सम्बन्ध के बारे में बोलते हुए गांधीजी ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह केवल अपनी बात कह रहे हैं। उन्होंने कहा, 'मैं वस्तुस्थिति का कुछ उच्च स्वरूप में पेश करना चाहूंगा। मैं ब्रिटेन और भारत के बीच मुक्त और बराबरी की साझेदारी चाहता हूं। ब्रिटेन ने हमारा शोषण किया है, फिर भी मेरे मन में अंग्रेजों के प्रति आदर की भावना बनी हुई है। हम लोग कूप मण्डूकवत् स्वतंत्रता के अभिलाषी नहीं हैं, हम विश्व भर की मैत्री का स्वाद लेने को आतुर हैं। और यदि हम बराबरी के दर्जे की साझेदारी का रिश्ता कायम करना है तो हम इस साझेदारी का स्थायी रूप देना चाहेंगे। पर यह ब्रिटेन भारत मैत्री निष्प्राण न होकर सजीव हो। अंग्रेज जाति के भीतर यह दृढ़ भावना जाग्रत होनी और रहनी चाहिए कि उनके संकट काल में हम उनका परित्याग कदापि नहीं करेंगे। साथ ही हमारे अंदर भी इस आशंका को आश्रय नहीं मिलना चाहिए कि आप लोग हमारी मुसीबत में हमारी सहायता के लिए आगे बढ़ने में पसोपेश करेंगे। आपको हमारे ऊपर ३५ करोड़ स्त्री पुरुषों के अनुरूप भरोसा रखना होगा, रेंगते हुए असहाय कीड़े मकोड़ों के अनुरूप नहीं। वैसी अवस्था में प्रभाव का केन्द्र लन्दन में होकर दिल्ली बन जायगा। इस हस्तांतरण के पश्चात् हम लोग आज की भांति ब्रिटिश कामनवेल्थ के पिछलग्गू न रहकर शक्ति-सम्पन्न साझीदार बन जायेंगे। मेरा यह सुख-स्वप्न बहुत पुराना है। हो सकता है कि यह मेरे जीवन में अथवा कदापि चरितार्थ न हो, पर यदि भारत ने अहिंसा में अपनी आस्था बनाये रखी तो यह स्वप्न चरितार्थ अवश्य होगा। पर यदि काफी अर्से तक साझेदारी का प्रश्न टाला जाता रहा तो जो संघर्ष होगा भगवान जाने उसका किस रूप में अंत होगा। यदि हम अहिंसा के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त करने में सफल हुए तो हम अंग्रेज जाति तथा सम्पूर्ण मनुष्य जाति को यह तोहफा पेश करेंगे।

७१

नयी दिल्ली
२ अप्रैल, १९३९

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा २१ तारीख का पत्र मिला। इससे पहले का पत्र भी मिल गया था। तुमने बड़ी स्पष्टवादिता से काम लिया है और विचारों को जिस सुन्दर ढंग

स स्पष्टीकरण किया है, मुझे वह बहुत पसन्द आया।

तुमने जिन विचारो का प्रतिपादन किया है वे अन्य लागो के और स्वय मेरे विचारो से इतने भिन्न है कि उनमे किसी प्रकार का सामजस्य स्थापित करने की कोशिश करना व्यथ होगा। मै मानता हू कि सबको अपना अपना विचार जनता के सामने बिना किसी प्रकार के अविश्वास के रखने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। यदि ऐसा स्वच्छ मानस के साथ किया जाय तो मैं तो नही समझता कि किसी प्रकार की तिक्तता का अवसर उपस्थित होगा, और जिसके परिणामस्वरूप गृह युद्ध की नौबत आयगी।

जो खराबी है वह यह नही है कि हम लोगो मे मतभेद हैं बल्कि यह कि हम लोगो ने एक-दूसरे के प्रति आदर और भरोसे की भावना को तिलाजलि दे रखी है। समय के साथ इस त्रुटि का परिमाजन हो जायगा, समय बीतने पर घाव भरते और सूखते है। यदि हम लोग अहिंसा की भावना से अनुप्राणित रहे, तो गृह-युद्ध होने अथवा तिक्तता रहने का सवाल ही नही उठता है।

इन सारी बातो को ध्यान मे रखते हुए मेरी राय तो यही है कि तुम अपनी कबिनेट का गठन खुद करो और अपनी काय योजना भी खुद ही निश्चित करो और फिर उसे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की अगली बठक के सामने रखो। यदि कमेटी ने तुम्हारी काय योजना अपना ली, तो सब कुछ सहज भाव से हो जायगा और तुम अपनी काय योजना को, अल्पसख्यक टोली की चिन्ता किये बगर, कार्यान्वित कर सकोगे। पर यदि कमेटी ने तुम्हारी काय योजना मानने से इनकार कर दिया तो तुम्हे इस्तीफा दे देना चाहिए। तब कमेटी अपना अध्यक्ष स्वय चुनेगी। वसी स्थिति मे तुम जनता को अपनी कायविधि से अवगत करने के लिए स्वतन्त्र रहोगे। मैं यह सलाह पडित पत के प्रस्ताव के बावजूद दे रहा हू।

अब तुमने जो प्रश्न किये है उनके सम्बन्ध मे मैं कुछ कहूगा। जब पडित पत का प्रस्ताव रखा गया था, तब मैं बिस्तर पर था। प्यारेलाल मेरे स्वास्थ्य के समाचार टेलिफोन पर त्रिपुरी पहुचाता रहता था। एक दिन सवेरे वह यह सदेशा लाया कि एक ऐसा प्रस्ताव पेश किया जानेवाला है जिसके द्वारा पुराने महारथियो मे विश्वास व्यक्त किया जायगा। मेरे समक्ष उस प्रस्ताव का मजमून मौजूद नही था। मैंने कहा कि यदि ऐसा हो तो अच्छा ही है, क्योंकि मुझे सगाव मे बताया गया था कि तुम्हारा निर्वाचन तुममे उतनी आस्था व्यक्त नही करता जितना पुराने महारथियो मे विशेषकर सरदार पटेल मे अनास्था व्यक्त करता है। उसके बाद तो प्रस्ताव का मजमून केवल इलाहाबाद मे ही मेरी नजरो से गुजरा, जहा मैं मौलाना साहब से मिलने गया था।

मेरी प्रतिष्ठा का तो सवाल ही नहीं उठता है। उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। जब मेरी नीयत पर शक किया जाता है, और देश मेरी नीति और कार्य योजना को मान्यता देने से इंकार कर देता है तो मेरी प्रतिष्ठा भी समाप्त हो जाती है। भारत का उत्थान अथवा पतन उसके लाखों करोड़ों स्त्री पुरुषों के सामूहिक आचरण पर निर्भर करता है। व्यक्तियों का चाहे वे कितने ही प्रतिष्ठित हों इससे अधिक और कोई मूल्य नहीं है कि वे जनता जनार्दन का सच्चा सच्चा प्रतिनिधित्व करें। फलतः इन सारी बातों पर विचार करते समय मुझे बिलकुल अलग रखो।

मैं तुम्हारे इस कथन से कतई सहमत नहीं हूं कि देश आज जितना अहिंसा प्रिय है उतना पहले कभी नहीं रहा। मैं इस वायुमंडल में जब सांस लेता हूं तब मुझे हिंसा की गंध आती है पर हिंसा ने छद्मवेश धारण कर लिया है। यह पारस्परिक अविश्वास हिंसा का एक घिनौना रूप है। हिन्दुओं और मुसलमानों का जो तनाव बढ़ता जा रहा है वह भी इसी दिशा की ओर संकेत करता है। मैं अन्य अनेक दृष्टान्त पेश कर सकता हूं।

ऐसा मालूम पड़ता है कि इस समय कांग्रेस में भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति आ घुसी है उसके बारे में मेरे और तुम्हारे बीच मतभेद हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि यह प्रवृत्ति जोर पकड़ रही है। मैं पिछले कई महीनों से इसकी छानबीन करने पर जोर दे रहा हूं। ऐसी परिस्थिति में मैं सामूहिक अहिंसात्मक आंदोलन के लिए आवश्यक वातावरण का अभाव पाता हूं। जब तक हमारी चुनौती के पीछे आवश्यक बल न रहे वैसी चुनौती देना निरर्थक ही नहीं बल्कि हानिकर भी होगा।

पर जैसा कि मैं तुम्हें बता चुका हूं मैं बुड्ढा हो चला हूं और सम्भव है, डरने भी लगा होऊं और फूंक फूंककर कदम उठाना ठीक समझने लगा होऊं। तुम जवान हो तुम्हारे सम्मुख पूरी जवानी मौजूद है और जवानी का जोश तुम्हारी रग रग में समाया हुआ है जो कि एक जवान आदमी के लिए ही सम्भव है। मेरी कामना है कि मैं गलत साबित होऊं और तुम ठीक साबित होओ। मेरी दृढ़ धारणा है कि अपने वर्तमान स्वरूप में कांग्रेस कुछ भी करने की स्थिति में नहीं है सविनय अवज्ञा आंदोलन का संचालन करने की बात तो बहुत दूर है। अतएव यदि तुम्हारा निदान ठीक है तो मैं पुराना पड़ गया हूं और सत्याग्रह के प्रमुख सेनानी के रूप में मेरी उपयोगिता समाप्त हो गई समझ लेनी चाहिए।

तुमने राजकोट जैसे छोटे मामले का उल्लेख किया यह खुशी की बात है। यह मामला हम दोनों भिन्न रूप में देख रहे हैं। इस मामले में मैंने जो

७२

नयी दिल्ली
७ अप्रल १६३६

प्रिय लार्ड लिनलिथगो,

आपका पत्र अभी अभी मिला। उसमे दिये गये सम्पूर्ण और असदिग्ध आश्वासन के लिए धन्यवाद। इस आश्वासन को अपने साथ लेकर जब मैं यहा से इस समाचार के साथ रवाना हो रहा हू कि ठाकुर साहब की २६ दिसम्बर की विज्ञप्ति का अक्षरश पालन होगा।

यदि मैं अपने उत्तर मे इस बात पर मेद प्रकट करने से रह जाऊ कि मेरे इस सुझाव को आपका ६ मार्च वाला तार रद्द करता है अथवा उसका खुलासा करता है इसका निर्णय भारत के प्रधान न्यायाधीश पर छोड दिया जाए उसे आपने अस्वीकार कर दिया है तो मैं इस पत्र को अपूर्ण समझूगा।

आपका
मो० क० गाधी

७३

नयी दिल्ली
७ अप्रल १६३६

प्रिय श्री लेथवेट

इस पत्र के साथ गाधीजी का महामहिम के नाम लिखा पत्र नत्थी कर रहा हू। वह आज रात को राजकोट के लिए रवाना हो रहे हैं पर मैं तो आपको बीच बीच मे परेशान करने के लिए यहा मौजूद ही हू। आप इतने सज्जन हैं कि मैंने आपको दिन मे या रात मे किसी भी समय व्यस्त करने मे कभी किसी प्रकार का सकोच नही किया। मैंने एक बार गाधीजी को बताया था कि आप मेरे साथ कितनी भद्रता से पेश आते रहे हैं। वह बोले कि उन्होने आपमे सहायता करने की जिस तत्परता तथा सौजन्य को देखा उससे उन्हें १६१०-१४ का दक्षिण अफ्रीका के समय का स्मरण हो आया। वहा तब जनरल स्मट्स के सेक्रेटरी

किया गए तो भारत के प्रधान न्यायाधीश के निर्णय के अनुसार समिति का गठन कदापि सम्भव नहीं होगा। यदि आप सर्वोपरि सत्ता के प्रतिनिधि की हैसियत से सक्रिय रूप से हस्तक्षेप नहीं करेंगे तो दिल्ली में जो योजना तय की गई थी वह पूरी ही निष्प्रयोजन सिद्ध होगी। मैं आपका ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं कि ठाकुर साहब ने सरदार पटेल के नाम लिखे अपने १२ जनवरी के पत्र में उनके बताये सात व्यक्तियों में से चार की नामजदगी की मंजूरी दे दी थी। ठाकुर साहब की ओर से पेश किये गये कागजात में परिशिष्ट के तौर पर जो ढेर के ढेर कागज पत्र शामिल किये गये थे उनमें इन सात व्यक्तियों का विस्तारपूर्ण विश्लेषण था जिनकी सरदार पटेल ने सिफारिश की थी। इस परिशिष्ट पर दरबार वीरावाला तथा परामर्शदायिनी समिति के अन्य सदस्यों के हस्ताक्षर थे। इन सात व्यक्तियों में से केवल दो को इस कारण अस्वीकार किया गया था कि वे राजकोट रियासत के निवासी नहीं हैं। अब ऐसी क्या बात हो गई कि एक को छोड़ बाकी सारे के सारे व्यक्तियों को नामजदगी के अयोग्य समझ लिया गया? और मेरे ऊपर जो भार लादा गया है यदि मैं उसे वहन कर सका तो न तो इन प्रारम्भिक कामों का अन्त होगा और न कभी जांच ही होगी।

आपको कष्ट देने या सर्वोपरि सत्ता के हस्तक्षेप की मांग करने का विचार मुझे रुचिकर नहीं है। पर इस कठिनाई से पार पाने का और कोई उपाय भी तो नहीं है?

भायात एवं गिरासिया समाज ने जो रुख अपना रखा है वह भी मुझे हद दर्जे का गैर मुनासिब लगता है। ज्यों ही मैंने पत्रों में पढ़ा कि वे लोग मेरे तथा कथित वचन को निष्पक्ष निरीक्षण का विषय बनाना चाहते हैं मैं उनके प्रस्ताव पर तुरंत राजी हो गया। पर मुझे लगा कि इस हथकण्डे के माध्यम से मामला देर तक खींचने का भारी इरादा है। इसलिए मैंने कहा कि इस बीच समिति के गठन का काम चलता रहे और यदि उक्त निष्पक्ष निरीक्षण के परिणामस्वरूप भायात लोगों की बात सही उतरे तो समिति में उनका प्रतिनिधि ले लिया जायगा और हमारे द्वारा नियुक्त सदस्य को हटा दिया जायगा। भायात समाज ने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। उनका कहना है कि जब तक विचारक की नियुक्ति न हो जाए और उसका निर्णय उपलब्ध न हो तब तक के लिए समिति के गठन का काम स्थगित रखा जाय। यदि मेरे प्रस्ताव को मान लिया जाता तो निर्णय प्राप्त होने तक समिति अपना कार्य आरम्भ कदापि न कर पाती और समिति के गठन के फलस्वरूप निर्णय अधिक शीघ्रता के साथ उपलब्ध हो जाता।

मैंने यह सम्मति व्यक्त की है कि इस मामले को लेकर सर मॉरिस ग्वायर का कष्ट देना अनावश्यक है, पर यदि भारत-सरकार को उनकी नियुक्ति के लिए राजी किया जा सके और सर मारिस यह निमन्त्रण स्वीकार करें तो मुझे कोई आपत्ति नही होगी। बदले म, मैंने यह सुझाव दिया कि बम्बई हाई-कोट के किसी जज का यह मामला सौंपा जाए। मेरा विश्वास है कि यदि आप चाहे तो इसका बन्दोबस्त आसानी से कर सकते हैं। मैं समझता हू जज के लिए कल या परसों तक हवाई जहाज से आ पहुचना बिलकुल सम्भव है। मेरे पास जज से कुछ अधिक कहने के लिए नही है, और न भायात लोगो का ही कुछ अधिक कहना है। इसलिए जज को अपना निणय देने म अधिक समय की जरूरत नही होगी। मुझे जिस बात की आशका है और जिस चीज का सन्देह है वह यह है कि यथोचित कारवाई करने की कही कोई इच्छा नहा है। मैंने आपस अपने मन की बात कह दी इसका कुछ खयाल मत कीजिए। मैं आपको राजा क स्थानीय प्रतिनिधि के रूप म देखता हू जिनके सुपुर्द समिति के गठन तथा उसके सुचारु रूप से सचालन का काम सौंपा गया है, इसलिए यदि मैं अपने मन की बात आपस न कहू तो यह आपके साथ अन्याय होगा।

मुझे २४ तारीख को दोपहर के १-१० बजे राजकोट से कलकत्ता के लिए रवाना होना है। वहा से मुझे वृन्दावन जाना है। यहा मैं जल्दी-से-जल्दी वापस लौटने की कोशिश करूगा, पर अगले महीने की ७ तारीख स पहले लौटना सम्भव नहा है। इस बीच श्री ढेबरभाई मरा प्रतिनिधित्व करेंगे। पर मुझे आशा है कि इन ४ दिनो के भीतर ही बहुत कुछ काय सम्पन्न हो जायेगा।

क्या मैं आपको याद दिला दू कि मेरा उपवास केवल स्थगित किया गया था और यदि मेर सारे प्रयत्नो के बावजूद इस मामले म प्रगति नही हुई तो मुझे पुन उपवास करना पड़ेगा। यदि वैसा हुआ तो उसका परिणाम गम्भीर हो सकता है और मै उस स्थिति को बचाना चाहता हू। मेरे शरीर मे उपवास करने की सामथ्य नही है पर जहा कत्तव्य का आवाहन है ऐसी भौतिक बाधाए गौण हो जाती हैं। यह मामला इतना गम्भीर है कि मुझे आशा है कि आप महामहिम को कम स-कम इस पत्र क सार से अवश्य अवगत करा देंगे। मैं उनके आराम म विघ्न नही डालना चाहता क्योकि उन्हें विश्राम की बेहद जरूरत है। यदि आपको लगे कि मेरी शिकायत म कुछ तथ्य है, और आप उसे दूर करने की क्षमता और इच्छा रखते हैं तो महामहिम को परेशान करने की जरूरत नहीं है।

मैं यहा मौजूद हू ही और यदि आप समझें कि मिलकर बातचीत करना

आवश्यक है तो आप मेरे बुखार की बिलकुल परवाह मत कीजिए। मैं तुरत आ जाऊंगा। हां ११॥ बजे डा० अम्बेडकर से अवश्य मिलना है।

फिलहाल मैं ठाकुर साहब के पत्र का उत्तर नहीं दे रहा हूं।

भवदीय

मो० क० गांधी

७५

नयी दिल्ली

२० अप्रैल १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

इस पत्र के साथ जो सामग्री भेज रहा हूं वह मुझे डिकाने में आई थी। और मैं ठहरा आपका पुराना सेक्रेटरी इसलिए मैंने उसका अवलोकन किया और उसे रोचक पाया।

राजकोट से जो समाचार आ रहे हैं उनसे बड़ी घबराहट पैदा हो रही है। गिब्सन को बापू ने जो पत्र लिखा है उसे भी एक तरह का अल्टीमेटम ही समझना चाहिए। बापू ने गिब्सन का ध्यान ठाकुर साहब से देर लगानेवाले हथकण्डों की ओर आकृष्ट किया है और कहा है कि यह और कुछ नहीं समिति न बनने देने की टालमटोल है। उन्होंने उसमें कहा है कि सर्वोपरि सत्ता के प्रतिनिधि की हैसियत से आपको इस मामले में हस्तक्षेप करना चाहिए। बापू ने यह मान रखा है कि उन्हें हस्तक्षेप करने का अधिकार है केवल इच्छा करने की देर है। यदि उन्होंने हस्तक्षेप करने से इन्कार किया तो बापू पुन उपवास करेंगे क्योंकि उन्होंने उपवास का परित्याग नहीं किया था। उसे केवल स्थगित किया था। उन्होंने यह भी कहा है कि यदि वह स्वयं हस्तक्षेप करने में असमर्थ हों तो उनके पत्र का सार महामहिम तक पहुंचा दें अन्यथा मैं उनके आराम में विघ्न डालना पसन्द नहीं करूंगा। यदि बापू की तबीयत ठीक रही तो वह आज तीसरे पहर तीन बजे गिब्सन से मिलनेवाले हैं। तब वह उसी के मुंह से सुनना चाहेंगे कि वह क्या कुछ करने का इरादा रखता है। इस भेंट पर बहुत-कुछ निर्भर है और यदि मुझे ऐसा लगा कि टेलिफोन पर कहने लायक कोई बात है तो मैं आपको फोन करूंगा।

आज सुशीला राजकोट से आई हैं और पजाब स्थित गुजरात जा रही हैं, जहा वह अपने भाई की शादी मे शरीक होगी। उन्होंने बताया कि एक दिन बापू और वल्लभभाई म दिलचस्प झडप हो गई। बापू न तीन पत्र लिखकर रख छोडे थ, जिनम उन्होने मुसलमानो और भायातो को सब-कुछ समपण कर दिया था। वल्लभभाई बिगड खडे हुए। बापू ने कहा 'मैं भली भाति जानता हू कि मेरी मूखताओ का फल तुम्हे भोगना पडता है।" वल्लभभाई ने उत्तर दिया अभी तक तो आपने मूखता का कोई काम नहीं किया है पर य पत्र अवश्य मूखतापूण हैं। बापू पहले तो हस पडे फिर गम्भीरतापूवक बोले "तो अब मुझे लीडरी छोडकर एकात वास करना चाहिए न ?" मैं यह तो नही जानता कि इस वार्तालाप का अत किस रूप म हुआ पर इतना अवश्य जानता हू कि वे पत्र फाड डाले गय। सुशीला ने यह भी बताया कि बापू को पता लग गया है कि उनकी अपेक्षा वल्लभ भाई का दुष्ट स्वभाववाले आत्मियो की मनोवृत्ति का अधिक और नैसर्गिक ज्ञान है। बापू एक बार स्वत ही कह उठे 'यह कदम आत्महत्या जसा घातक साबित होगा।' (उनका सकेत मुसलमानो द्वारा वचन पालन न किये जाने की स्थिति मे उपवास आरम्भ करने की ओर था)। अत हमारा उस दिन प्रात काल वाला लम्बा तार औचित्यपूण सिद्ध हुआ। पर इस सारे मामले ने मुझे गम्भीर चिन्ता म डाल दिया है। उस दिन सुबह हम दोनो के बीच अहिंसा की सम्भावनाओ और विशेषताओ को लेकर देर तक जो बातचीत होती रही थी सो तो आपको याद होगा ही। अब सुशीला ने मुझे जो कुछ बताया है उसम मैं इस दुविधा मे पड गया हू कि क्या अहिंसा के माध्यम से पार्थिव हित साधन किया जा सकता है। यह प्रश्न आथर मूर ने उस प्रसिद्ध वाद विवाद के दौरान उठाया था। अब जब हम दोनो बापू से मिलेंगे और उनका थोडा-बहुत समय ले पायेंगे तो मामले के इस पहलू पर उनके साथ विस्तारपूवक विचार विमश करेंगे। अभी तो मेरे लिए यह बताना मुश्किल है कि हमारे भाग्य म क्या बदा है। हम सब एक प्रकार के वणनातीत रहस्यमय अत की ओर बलात खदेडे जा रहे प्रतीत होते हैं।

अब रही गायो की बात मैं अभी तक उन्हें खरीदने नही गया हू। पता नही ढोरो की ठीक तरह स देखभाल करने के लिए ग्वालो का बन्दोबस्त करने से पहले गायें खरीदना ठीक रहेगा या नही। मेरी समझ मे तो आपके अनेक प्रासादो म स एक का भार उन्हे ठीक दशा म रखने के लिए आवश्यक साधनो का सग्रह किए बिना लेने के समान ही यह होगा। यदि गायो की उचित ढग से देखभाल नही की गई, तो उनकी दशा जल्दी ही बिगड जायेगी। इसलिए मेरे विचार मे अक्तूबर तक ठहरना ठीक रहेगा। तब हम दोनो फिर मिलेंगे ही। इस बीच मैं सेयर से फिर

मिलूगा और पूछूगा कि क्या वह हमारे एक या एक स अधिक ग्वालो के दो तीन महीने प्रशिक्षण का जिम्मा लेने को तयार हो जाएगा। क्या ठीक है न ? कृपया बताइए। बिडला हाउस आपकी अनुपस्थिति म सुनसान लगता है। बापू के जाने के बाद भी सुनसान जसा लगने लगा था। पर यह सब कुछ होते हुए भी जब मैं यहा से २४ या २५ को विदा होऊगा तो हृदय म टीस अवश्य उठेगी कि जिन चीजो मे आपका इतना मोह है उनकी जानकारी हासिल करने के बाद उन्हे छोडकर जा रहा हू।

सप्रेम
महादेव

७६

नयी दिल्ली
२१ ४ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

भट्ट आ गए हैं। वह तो सयर का अच्छी तरह जानते हैं। उनके हाथ के नीचे काम किया है। जो उचित होगा वही करेंगे। आज वे उनसे मिलने गए हैं।

आपका
महादेव

७७

बिडला हाउस
बनारस
२२ अप्रल १९३९

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारा २० तारीख का पत्र आज मिला। इस समय क्या स्थिति है यह जानने के लिए आज रात या कल सुबह तुम्हें फिर फोन करूगा। कल मेरी यह

प्रवल इच्छा हुई कि लेथवेट को पत्र लिखकर उस बताऊ कि यह मेरी व्यक्तिगत राय है कि सर्वोपरि सत्ता को २६ दिसम्बरवाली विज्ञप्ति के अनुरूप आचरण करवाने के लिए हस्तक्षेप अवश्य करना चाहिए। शासन विधान की रचना का काय उन लोगो को अपने हाथ म ले लेना चाहिए कि गाधीजी की महायता करन स इन्कार करके व लोग बहुत वडी गलतफहमी और आलोचना का निमत्रण दे रह हैं। मैं यह भी पूछना चाहता था कि राजकोट के शासन विधान की रचना का प्रश्न अपन हाथ म लेने म उन लोगो को क्या आपत्ति है। पर फिर मैंने सोचा कि कुछ और अधिक सूचना सग्रह करना ठीक होगा। साथ ही, मैंने यह भी सोचा कि तुम मुझस बात करोगे ही, और शायद उन लोगो मे स किसी को लिखा भी। तब भी एक ही विषय को लेकर दो दो पत्र लिखने मे कोई बुराई नही है तथापि ऐस नाजुक मामलो मे जल्दबाजी स काम लेन की अपेक्षा देर करना अधिक अच्छा है। अतएव मैं शायद कल तक फैसला करूगा कि क्या करना ठीक रहेगा।

तुम्हें अपने दिल की बात बताऊ, तो मैं कहना चाहूगा कि तुम्हार इस कथन से मैं सहमत ही हू कि सासारिक उपलब्धियों मे अहिंसा का माध्यम एक सदिग्ध माध्यम है, साथ ही मुझे इस बार म भी सन्देह है कि राजकोट म आरम्भ स अन्त तक जो-कुछ हुआ उस अहिंसा स अभिहित किया जा सकता है। वास्तव म जसा कि मैंने तुमसे उस दिन कहा था यह उपवास का मामला एक प्रकार का त्रास नही, तो क्या है ? इन अल्टीमेटमो के द्वारा हम लोग अपने प्रतिपक्षियो का हृदय परिवतन किस प्रकार कर सकते हैं यह मरी समझ म नही बठ रहा है। सरदार पटेल की स्थिति को समझना कठिन नही है क्योकि उन्होन कभी भी किसी ऊचे दाशनिक तत्त्व का प्रतिपादन करन का दावा नही किया और राजकोट म उन्होने जो कुछ किया वह एक प्रकार का नि शस्त्र विद्रोह ही था पर वह सोलह आने अहिंसापूण विद्रोह रहा एसी बात नही है। इसलिए यदि वीरावाला और ठाकुर साहब हमारा प्रतिरोध करने मे हमारी प्रणाली अपनायें तो हम शिकायत क्या करनी चाहिए ? हमने गिब्सन को कहा बख्शा, जो अब हम उससे सहायता की आशा करें ? हा, इस मामले म वाइसराय का उत्तरदायित्व अवश्य बना रहता है। पर वाइसराय की अपनी कठिनाइया होगी जिनका हम ज्ञान नहा है। हम लोग बेसब्री से काम ले रह हैं और यह बेसब्री किसी क लिए भी सहायक नही होगी। यदि यह सारा मामला बापू की दाशनिक कसौटी पर कसा जाय तो कहा जा सकता है कि हम दूध क धोये कदापि नही हैं। मरी यह प्रवल धारणा है कि अब यह उपवास का सिलसिला हमेशा क लिए खत्म होना चाहिए। जब बापू यहा कलकत्ता आयेंगे तो हम सब मिलकर उनसे यह मनवा लेंगे ऐसा मुझ आशा

है। यदि बातचीत शान्ति के वातावरण में होती है तो मेरा सुझाव है कि उस अवसर पर बापू, तुम और मैं इन तीन के सिवा और कोई मौजूद न रहे। सरदार की मौजूदगी में धावा बोलना मेरे बूते के बाहर है।

तुमने बापू और सरदार की आपसी बातचीत के बारे में जो-कुछ लिखा है उसमें मुझे बड़ा मजा आया। सरदार कम बोलते हैं और यत्रतत्र असम्बद्ध बात भी कह उठते हैं पर उनकी प्रेरणा शक्ति अद्भुत है। कसर इतनी ही रही कि वह भी वीरावाला से बाजी नहीं मार सके।

अब गाया के बारे में। भट्ट तुमसे मिल ही लिये होंगे। और मैं समझता हूं कि क्या कुछ करना ठीक रहेगा इस बारे में तुमने निर्णय कर लिया होगा।

तुम २८ या २६ को जा रहे हो सो समझा। मैं यहां से २५ को चल पड़ूंगा। यदि तुम मेरे वहां पहुंचने तक रुके रहोगे तो तुम्हारे वहां से रवाना होने के पहले तुमसे एक बार फिर बातचीत हो जायगी।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
नयी दिल्ली

७८

तार

२३ अप्रैल १६३६

महात्मा गांधीजी
राजकोट

विधान ने आपके निर्णय की बात पत्रों में दे दी है। उसमें परिवर्तन करने से उन्हें दुःख होगा।

कलकत्ता आने अथवा वहां से जाने के दौरान मालवीयजी से भेंट करने का स्मरण दिलाता हूं। उनका स्वास्थ्य गिर रहा है सम्भव है यह अन्तिम भेंट हो।

—घनश्यामदास

७९

तार

राजकोट
२४ अप्रल १९३९

घनश्यामदास बिड़ला
मारफत लनी'
बनारस

डॉ० विधान और सुभाष मेरे सोदपुर में ठहरने पर राजी हो गए थे। मालवीयजी से मिलने का अतिशय इच्छुक हू। कलकत्ता जाते समय यात्रा भग करना असम्भव है। लौटते समय मिलूगा।

—बापू

८०

तार

बम्बई
२५ अप्रल १९३९

घनश्यामदास बिड़ला,
लकी,
कलकत्ता

सरदार के साथ पूरी बातचीत करके निणय हुआ कि वह कलकत्ता की बैठक मे भाग न लें।

—बापू

८१

बिहार जाते हुए
२ मई, १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

कल रात मैंने बापू को राजकोट के दो तार दिखाए। उन्होंने उनका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया फिर बोले मुझे तो वीरावाला का तार साफ नीयत से दिया गया लगता है। इसमें सचाई की झलक मिलती है। उसने जो वचन दिया है उसका वह पालन करता दीखता है। आज बापू राजकोट पर वक्तव्य देनेवाले थे पर उन्होंने कहा, अभी कोई वक्तव्य नहीं। उसने जितना कुछ करने का वचन दिया है उसे उतना करने दो। कुछ दिन और बाट देखते हैं। सम्भव है आज बापू वीरावाला को राजी करनेवाला कोई तार भेजें। जो भी हो बापू राजकोट के समाचार से निश्चिन्त दिखाई पड रहे हैं यह अच्छी बात है।

यह गाडी इतनी खराब है कि आप पर बिगडी लिखावट का पत्र का और अधिक बोझ लादने का साहस मुझ में नहीं है।

कलकत्ता में जैसी कुछ गुजरी उससे भी बापू बडे प्रसन्न हैं—विशेषकर जवाहर की जवामर्दी से। वह स्टेशन आए और वहां भी उन्होंने बापू को अपने पूरे सहयोग का आश्वासन दिया।

सप्रेम
महादेव

८२

वृन्दावन
बेतिया हाकर (बिहार)
३ मई १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

इसके साथ जो सामग्री भेजी जा रही है वह वीरावाला से प्राप्त तथा उसे बापू का उत्तर है जो आपको रोचक लगेगा। आपको याद होगा मैंने बताया था

कि मुझे वीरावाला ने जो फोन किया था, उसमे किसी प्रकार प्रकारान्तर से उसने यह सुझाव दिया था कि बापू को राजकोट वापस नही लौटना चाहिए और किस प्रकार बापू ने अपने तार मे ये शब्द जोडे थे, सम्भवत राजकोट १० को पहुच रहा हू। इस तार म उसीका हवाला है। आपको यह भी याद होगा कि किस प्रकार वाइसराय बापू के राजकोट दुबारा जाने के विरुद्ध थे। वल्लभभाई ने बापू के साथ राजकोट को लेकर लम्बी बहस के दौरान यह कहा था कि उन्होने अपने वक्तव्य से सबको स्तब्ध कर दिया है। जब बापू ने देखा कि वल्लभभाई उनके दृष्टिकोण को नही समझ पा रहे हैं तो उन्होने केवल इतना ही कहा, वल्लभभाई मैं एक नूतन प्रणाली का विकास कर रहा हू। तुम अभी इसकी खूबिया को नही समझ रहे हो, पर एक न एक दिन अवश्य समझ लोगे और राजकोट की प्रजा को मेरे वक्तव्य के खिलाफ कोई शिकायत नही होनी चाहिए, क्योकि मैंने उसमे जो कुछ कहा है वही मैं उन सब लोगो को बताता आ रहा हू। हम लोगो ने वीरावाला के साथ जो इतनी ज्यादती की, बेजा किया। यही कारण है कि हम लोग उसके असली लक्ष्य सफल कराने मे असमर्थ रहे। अब मेरी सारी कोशिशें इसी उद्देश्य सिद्धि मे लगेंगी। पर कोई बात नही। अब मैं आप लोगो से केवल यही चाहता कि आप राजकोट को अपने दिमाग से निकाल दें और उसका सारा बोझ मेरे कधो पर लाद दें। और जब मैंने वीरावाला को दिए गए बापू का उत्तर वल्लभभाई को दिखाने की बात कही, तो वो बोल उठी महादेव वल्लभभाइ को क्यो व्यस्त करते हो ? इस सारे मामले से उन्हे परेशान करने की क्या जरूरत है ?'

यहा का मौसम काफी गर्म है पर कलकत्ता की गर्मी तो बरदाश्त के बाहर थी। हा एक बात जरूर है, यहा की रातें वहा की अपेक्षा अधिक शीतल थी। बगाल की खाडी की हवा का झोका यहा तक कहा पहुच पाता है ?

सप्रेम
महादेव

सलग्न—१

८३

तार

दरबार श्री वीरावाला
राजकोट

आपका तार मिला। मेरे तारों को एक साथ पढ़िए। नूतन प्रणाली का विकास कर रहा हूं। हस्तक्षेप न करने की मेरी इच्छा का यह अर्थ नहीं है कि जो लोग मेरा पथ प्रदर्शन चाहते हैं उनसे मैं उन्हें वंचित रखूंगा। पर मैं चाहता हूं कि ढेबरभाई तथा परिषद के अन्य लोग स्वयं अपने ही मामलों पर निर्भर रहकर मुझसे अथवा वल्लभभाई से स्वतंत्र रूप में आचरण करें। वे ऐसा करेंगे तो इसमें हमारी और आपकी, दोनों की विजय होगी। पर वे ऐसा तभी कर पायेंगे, जब आप परिषद के लोगों को उपेक्षित रखेंगे और उन्हें निकम्मा मानते रहेंगे। ढेबरभाई विधिवत भले ही इस राज्य के नागरिक भले ही न हों पर वह बाहरी आदमी नहीं हैं। इसके अलावा वह मेरा प्रतिनिधित्व करते हैं और वही एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिनसे मैं भली भांति परिचित हूं और जिन पर उद्देश्य सिद्धि के लिए भरोसा कर सकता हूं। उनमें एकमात्र त्रुटि यही है कि वह सरदार पर और मुझ पर आवश्यकता से अधिक निर्भर करते हैं। सरदार ने उनसे कह दिया है कि यदि उन्हें पथ प्रदर्शन की नितांत आवश्यकता हो तो केवल मुझसे ही अनुरोध करें। मैं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की चेष्टा कर रहा हूं। मैं राजकोट आना नहीं चाहता पर मैं वहां आने से तभी रुक सकता जब आप न्याय और उदारशीलता से काम लें, समझौता करने के अपने वचन को पूरा करें और सम्भ्रान्त व्यक्तियों की छीछालेदर करने के बजाय उनके प्रति आदर का व्यवहार करें।

—गांधी

८५

कलकत्ता
४ मई, १९३९

प्रिय महादेवभाई

तालचर और राजकोट के बारे में जो समाचार छप रहे हैं वे संतोषप्रद नहीं हैं पर मुझे आशा है कि बापू जिस ढंग से काम ले रहे हैं उसका परिणाम अच्छा ही होगा।

आशा है तुमने बापू से कहा होगा कि उन्होंने अपने जयपुर-सम्बन्धी वक्तव्य में उपवासों की बात लाकर भूल की। आज के पत्रों में निकला है कि २५ सत्याग्रही रिहा कर दिए गए हैं। ऐसा लगता है कि उन लोगों ने रिहाई का सिलसिला शुरू कर दिया है और कुछ ही दिनों में सब रिहा कर दिए जायेंगे।

आशा है बापू कांग्रेस के सम्बन्ध में वक्तव्य देंगे। यहां बंगालियों में यह गलतफहमी फैली हुई है कि बंगाल की उपेक्षा की जा रही है। विधान एक वक्तव्य देनेवाले थे। यह विचार मुझे नहीं रुचा, इसलिए उन्होंने अपना वक्तव्य देवदास के सुपुर्द कर दिया है। वह उसका परिमार्जन करेंगे। पर जिस चीज की जरूरत है वह है स्वयं बापू का वक्तव्य। यदि बापू ४ वर्ष अधिक तरुण होते तो मैं उनसे बंगाल का दौरा करने को कहता।

कुछ रोचक घटनाएं घट रही हैं। ऐसा लगता है कि बंगाल की लीडरी के लिए एम० एन० राय सुभाष से लोहा लेंगे। कल सुभाष ने एक सभा की थी। उनका प्रोग्राम कम से कम सिद्धांत की दृष्टि से कांग्रेस के प्रोग्राम से भिन्न नहीं लगता। सुभाष का दल बापू के प्रति आदर का भाव तो बनाए रखेगा लेकिन भरोसा नहीं करेगा। इसके विपरीत, एम० एन० राय में तो बापू के प्रति आदर का भाव ही नहीं है उन पर भरोसा करने की तो बात अलग ही है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वृन्दावन (चम्पारन)

८६

५ मई, १९३९

प्रिय महादेवभाई

क्या, विधान का वक्तव्य कैसा लगा ? वक्तव्य एक से अधिक हाथों से होकर जरूर गुजरा है पर उसका आशय सुस्पष्ट है। वास्तव मे विधान को वह बहुत रुचा और उन्हें कई एक ने बधाई भी दी। हम उसे एक दूसरे रूप म पेश करना चाहते थे पर उसमे स्वय विधान के दृष्टिकोण का समावेश करना भी तो जरूरी था। भाषा देवदास और पारसनाथजी की है।

बगाल की दशा दयनीय है। यहा दो दल हैं यह तो तुमने सुना ही होगा। ये दल हैं 'जुगान्तर दल' और 'अनुशीलन दल'। पता चला है कि अनुशीलन दल अपना-आपका अलग थलग रखेगा। दूसरा दल दो खण्डों म बटा हुआ है एक खण्ड एम० एन० का समर्थन करता है दूसरा विधान का। और एम० एन० राय और सुभाष मे तो प्रतिद्वद्विता है ही।

यदि कोई राजनेता मात्र होता, तो अपने विपक्षियो की इस आपसी फूट से फूला न समाता। पर बापू का दल राजनेताओ का गिरोह तो है नहीं इसलिए बगाल म जो-कुछ हो रहा है उसमे उनका दु खित होना स्वाभाविक ही है। बगाल को सहायता की आवश्यकता है पर जैसी परिस्थिति है उसे देखते हुए उसकी कुछ अधिक सहायता कर पाना किसी के लिए भी सम्भव प्रतीत नही होता।

माखन सेन का दल एम० एन० राय की सहायता करेगा। ऐसी अफवाह है कि इस दल ने जान बूझकर सुभाष का समर्थन इसलिए किया था कि उन्हे गलत रास्ता पकडनेवाला सिद्ध किया जा सके जिससे एम० एन० राय फायदा उठाये। इन अफवाहो पर अधिक विश्वास नही करना चाहिए पर तो भी वस्तुस्थिति यह है कि माखन सेन के दल ने देशबन्धु दास के विरोध म श्यामसुन्दर चक्रवर्ती का समर्थन किया फिर सुभाष के खिलाफ देशप्रिय सेनगुप्त का समर्थन किया उसके बाद विधान के विरोध मे सुभाष का समर्थन किया, और अब यही दल शायद सुभाष के विरोध म एम० एन० राय का समर्थन करेगा। काश, बापू बगाल का दौरा कर पाते।

वीरावाला और बापू के बीच तारो का जो आदान प्रदान हुआ उनकी नकल मिल गई। मुझे बापू के तार का एक वाक्य ठीक नही जचा। उन्होंने कहा था 'नूतन प्रणाली का विकास कर रहा हू।' तुम्हें गीता के १८वें अध्याय का ६७वा

श्लोक याद है न ? '

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ॥[१]

नूतन प्रणाली की चर्चा वीरावाला से करना भैंस के आगे बीन बजाने की कहावत चरितार्थ करने के समान है। पर शायद बापू को उसकी प्रासंगिकता अधिक जंची होगी।

मैं तुम्हें जो पत्र लिखता रहता हूं उनके जो अंश तुम्हें आवश्यक लगें, उन्हें बापू को अवश्य बता दिया करो।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वृन्दावन (चम्पारन)

१ जो तपस्वी नहीं है जो भक्त नहीं है जो सुनना नहीं चाहता और जो मेरा द्वेष करता है उससे यह ज्ञान तू कभी मत कहना।

८७

तार

६ मई १९३९

महादेवभाई
मारफत महात्मा गांधीजी
वृन्दावन (चम्पारन)

क्रानिकल की रिपोर्ट है सरदार को पार्लियामेंट्री बोर्ड में नहीं लिया गया उनकी जगह जवाहरलाल को लिया गया। बम्बई के व्यापारी मित्र स्तब्ध हैं उन्होंने मुझसे पूछने को कहा है। मैंने उत्तर दिया मैं समाचार को सत्य नहीं

मानता। खबर का खण्डन वाछनीय। तार भेजो। मालवीयजी का तार है सारे दन के ठहरने का सेवा-उपवन म प्रबध है। उन्हें पहुचन का तार भेजा।

—घनश्यामदास

बिडला ब्रदर्स,
कलकत्ता

८८

कलकत्ता
६ मई १९३९

प्रिय महादेवभाई

बापू ने वाइसराय को जयपुर राजकोट और अलवर के बारे म पत्र लिखा होगा। उसकी नकल भेजने की कृपा करो।

वल्लभभाई का तार मिला है कि बापू बनारस म मेरी प्रतीक्षा करेंगे। एसा लगता है कि उन्होंने मेरे साथ मजाक किया है। समझ म नही आया कि जब बापू बनारस मे कुछ ही घण्टे ठहरेंगे तो वहा वह मेरी प्रतीक्षा कैसे कर सकते हैं ? यदि मेरी सचमुच आवश्यकता हो तो तार देना। मुझे तो ऐसा लगता है कि जब मैंने उन्हें तार दिया कि मैं कलकत्ते मे उनकी प्रतीक्षा करूगा तो उन्होंने बदले म यह तार भेजा कि बापू बनारस मे मेरी प्रतीक्षा करेंगे।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वृन्दावन (चम्पारन)

८६

वृन्दावन
८ मई १६३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके सारे पत्र मिल गये। धन्यवाद।

वल्लभभाई का तार मजाक नहीं था। वास्तव में उस तार का मजमून मैंने बनाया था। बापू ने उनसे बनारस साथ चलने को कहा था और बताया था कि आप वहां होंगे। हां उन्होंने मुझसे यह अवश्य कहा था कि आप उन्हें बनारस में डाक्टरी परीक्षा के लिए चाहते हैं। बम्बई जाने पर वह वहां शायद अपनी कुछ चिकित्सा करायें।

धीराबाला ने बापू को एक और तार भेजकर राजकोट ने आने को कहा है। उन्होंने उत्तर में कहा है कि वह अपने सहकर्मियों को दलदल में फंसा नहीं छोड़ सकते। अब बापू को अपनी नूतन प्रणाली की आजमाइश सहकर्मियों पर करनी चाहिए। मैं इस बारे में आपसे सहमत हूं कि बापू की भाषा कभी कभी भैंस के आगे बीन बजाने के समान प्रतीत होता है। पर कभी-कभी बापू अपने प्रतिपक्षियों का चकित करने की ऊंचाई तक भी तो पहुंच जाते हैं।

बंगाल की दशा शोचनीय है। यदि किसी बाहरी आदमी को यह सब दिखाई न पड़े तो इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है?

हम राजकोट १० को पहुंच रहे हैं। अब आपको वहीं से लिखूंगा।

सप्रेम
महादेव

९०

कलकत्ता
१० मई १९३९

प्रिय महादेव

मैं इसी उधेड बुन म लगा हुआ था कि कही बापू बनारस म मेरी उपस्थिति किसी खास कारण स ता नही चाहते क्याकि यदि बसी कोई बात होती तो मैं वहा पहुच जाता। मुझे लगा कि उन्होने सोच लिया होगा कि मैं वहा मौजूद रहूगा इसलिए मैं वहा नही गया।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
राजकोट

९१

आनन्द भवन
राजकोट
१५ मई १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

इस पत्र के साथ वाइसराय तथा आर्थर मूर को भेजे पत्रो की नकल भेज रहा हू।

दो महीने पहले बापू की बसन्री न हमम स कुछ लागा को क्रुद्ध कर दिया था, अब उन्ही लागा को उनक सब्र स शुद्ध होना होगा। बापू यहा अनन्त काल तक बाट जोहन को तयार दिखाइ पडते हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि कही आश्रम खोलकर आसन न जमा दें। बापू तो राजभक्तो के सुधार प्रस्ताव तक को मानने को तयार हो गए। इन सुधार प्रस्तावो की प्रेरणा वीरावाला स मिली दिखाई देती है और उनका वास्तविक महत्त्व नही के बराबर है। कडेल ने तो इन सुधारो म भी अधिक प्रदान करने की तत्परता दिखाई थी। पर बापू इन सीमित सुधारो को भी ग्रहण कर लेंगे—शर्त यह है कि व स्वच्छा स और खुशी के साथ

प्रदान किये जाए। ये सुधार बलात छीन जानेवाले शत प्रतिशत सुधारों का २५ प्रतिशत मात्र है। कल वीरावाला से मेरी लम्बी चौडी बातचीत हुई। वह कभी तो समझौते के लिए बेतरह आतुर प्रतीत होता है, पर दूसरे ही क्षण विपरीत ढग का आचरण करने लग जाता है। फलत यह कहना कठिन है कि वह बापू के इस नये रवय को किस रूप मे ग्रहण करेगा। यदि वह इन हद दर्जे के अपर्याप्त सुधारो को स्वीकार करने की घोषणा कर दे तो सारी विपत्ति का अन्त हो जाए! पर यदि उसने इन सुधारो को भी मानने से इन्कार कर दिया तो पता नही हमे कितने दिन यहा अटकना पडेगा। यदि यह समझौता भग हुआ (वीरावाला का उत्तर आज रात को मिलनेवाला है) तो हम लाचार होकर ग्वायर के निर्णय का आश्रय लेना पडेगा जिसका अर्थ यह होगा कि मामला बहुत दिनो तक अटका रहेगा और यह विलम्ब हमारे लिए बडा ही व्यथा पहुचानेवाला होगा। भायात मुसलमानो के मामले को सर मारिस ग्वायर के हवाले कर दिया गया है। इस हवाले की धाराओ को लिखित रूप देने मे पूरा दिन खप गया। सर मारिस इग्लैण्ड के लिए रवाना होने से पहले अपना निर्णय दे जायेंगे पर उसके बाद क्या होगा? अतएव समझौते की सम्भावना की बहुत क्षीनी आशा लग रही है भले ही यह समझौता हद दर्जे का असतोषजनक हो। यहा की दुनिया सदेह यथापूर्ण चालो और इरादो से इतनी बुरी तरह भरी है कि आदमी आत्मविश्वास गवा बठता है।

बापू के लिए जितना स्वस्थ होना सम्भव है उतने स्वस्थ हैं।

सप्रेम,
महादेव

६२

कलकत्ता
१८ मई १९३९

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारा पत्र मिला साथ ही लार्ड लिनलिथगो और साथर मूर के नाम बापू की चिट्ठियो की नकल भी मिलने की बात थी। जब यह पता लगा कि वाइसराय के नाम चिट्ठी की नकल का कवर पर जिक्र था पर वह लापता थी तो बहुत परेशानी हुई। इस त्रुटि की पूर्ति मूर के नाम लिखे पत्र की दो नकल भेजकर हुई

दीखती है, पर इससे काम कैसे चलता । आज तुम्हें तार भेजा है कि बाकी पृष्ठ भी भेजा ।

आज बापू का वह वक्तव्य पढ़ा, जिसमें उन्होंने सर मारिस ग्वायर के निर्णय का परित्याग करने की घोषणा की है । मुझे इस विषय में रत्तीमात्र भी संदेह नहीं है कि उनका यह कदम बिलकुल ठीक है । हम लोगों ने बापू के उपवास को कभी भी अहिंसात्मक नहीं समझा था । मेरी धारणा है कि बापू की वर्तमान नीति अधिक सफल होगी । पता नहीं, इसमें सरदार को निराशा हुई या नहीं पर इसमें संदेह नहीं कि वर्तमान नीति की सफलता की सम्भावना यही अधिक है ।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
राजकोट

६३

आनन्द भवन
राजकोट
१६ मई १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका तार मिला । आपको यह तार भेजना पड़ा इसका मुझे दुःख है । यह मेरे सेक्रेटरी की भूल थी । (आप मेरे सेक्रेटरी नारायणराव को तो जानते ही हैं)। मैं पूरी नकल भेज रहा हूं साथ ही वाइसराय के उत्तर की नकल भी रख रहा हूं । यह उत्तर आज ही आया है । बापू ने उत्तर पढ़कर टिप्पणी की, "बड़ा सुन्दर पर उतना ही निकम्मा और निरर्थक, जितना ग्वायर निर्णय ।" पता नहीं आप ताजा वक्तव्य के बारे में क्या कहेंगे । यह हमारा दुर्भाग्य है कि जब बापू कोई कदम उठाते हैं तो हमारी प्रतिक्रिया पर खीज उठते हैं पर बाद में उसी नतीजे पर पहुंचते हैं जिस पर हम पहुंचे थे और तब अपना मन्तव्य इतने जोरदार शब्दों में व्यक्त करते हैं कि हम सबको हैरत होती है । हमने उनकी अधीरता पर अनेक बार टिप्पणी की । उन्होंने कहा कि वह अधीर नहीं हैं और हों भी तो उन्हें अधीर होने का अधिकार है । अब वह कह रहे हैं कि उनकी कमजोरी 'हिंसा' की प्रतीक है और

उनका सर्वोपरि सत्ता के पास दौडकर जाना ठाकुर साहब को धोखेबाज तथा वीरावाला को गिरगिट और रियासत के लिए अभिशाप बताना अधीरता का निशानी था इसलिए हिंसापूर्ण था। मैंने बापू के साथ उनके वक्तव्य पर लम्बी चौडी बहस की कहा, क्या आपका यह खयाल नहीं है कि आपका सर्वोपरि सत्ता के पास पहुचाना और उसका प्रधान न्यायाधीश के द्वारा निर्णय कराने का सुनाव नैतिक दृष्टि और तकनीकी लिहाज से भी अपने आपको ठाकुर साहब तक ही सीमित रखने की अपेक्षा अधिक वाछनीय नहीं था क्योंकि एक गुलाम के खिलाफ सत्याग्रह करना कोई अनुमोदनीय कार्य कदापि नहीं है और ये सब राजा-नवाब गुलाम मात्र नहीं तो क्या हैं? इस पर बापू बोले तुम यह नतीजा जाहिर होने के बाद कह रहे हो। तुम्हारा यह कथन कि ठाकुर साहब सर्वोपरि सत्ता के गुलाम मात्र हैं केवल अर्द्धसत्य है। यदि यह मान भी लिया जाए कि वह एक गुलाम से बढ़कर कुछ नहीं है तो भी मेरे सत्याग्रह का—यदि वह उच्च कोटि का हो तो—यह तकाजा है कि वह गुलाम को गुलामी की जजीर तोड फेंकने को प्रेरित करे। जो भी हो मेरा निर्णय को ठुकराने का सकल्प आत्म निरीक्षण का परिणाम मात्र है और यह आत्मनिरीक्षण और कुछ नहीं जिस मानसिक दबाव ने मुझे रात दिन व्यथित कर रखा था उससे त्राण पाने की आतुरता मात्र थी।

वीरावाला मुझसे सलाह और पथ प्रदर्शन की जिस हद तक अपेक्षा करने लगा है उससे मुझे परेशानी होने लगी है। मुझे रोज घण्टों उसका साथ निभाना पडता है। इस सम्पर्क का एकमात्र परिणाम यह हुआ है कि मैं उसे अधिकाधिक समझने लगा हू। उसके डाइन वाले स्वरूप से हम लोग बहुत पहले से परिचित थे। अब मैंने उसके डा० जेकिल वाले स्वरूप को पहचानना शुरू किया है और मुझे लगता है कि उसके इस स्वरूप को समझ पाऊगा। अक्सर उसका विश्लेषण करना असम्भव प्रतीत होने लगता है और अक्सर वह मुझमे इतनी आस्था दिखाने लगता है कि उसके लिए मैं अपने आपको तयार नहीं पाता हू। जब किसी दिन मिलना होगा तो इस बार में बहुत सारी बातें होगी।

गिब्सन के साथ मैंने कोई ६० मिनट बिताये। बडा शिष्ट था बडा स्पष्ट वादी उसने आदर भाव खूब दिखाया। वह पुराने घाव भूला नहीं है—गुण्डागर्दी का आरोप और मुलाकात का ऐसा प्रकाशन जिसे वह बिलकुल मिथ्या बताता है आदि पर मुझे कहना पडता है कि मुझे आदमी अच्छा लगा और यह प्रसन्नता की बात है कि मैं उससे मिला। अगाथा के बारे में आपको मालूम है उसने क्या कहा? बडी भद्र महिला है पर उसमे विनोद वृत्ति का अभाव है। हमारी बातचीत के विषय अनेक थे, और मुझे ऐसा लगा कि मैं उसे समझने लगा हू।

मैं जितना ही इन लोगों से मिलता हूं, मेरी यह प्रतीति दृढ होती जाती है कि हमारा समूचा आन्दोलन हमारी अधीरता का चिह्न मात्र था। यदि थोड़े बहुत धैर्य से काम लिया जाता, तो बात बहुत कुछ बन जाती। खैर, देर आयद दुरुस्त आयद।

हम लोग यहां २ जून के बाद ठहरनेवाले नहीं हैं। आज ही कोई न-कोई घोषणा होगी। मसौदा तैयार करने में मेरा बहुत बड़ा हाथ था, पर केवल इसी हद तक कि मैंने अपने-आपको वीरावाला का सेक्रेटरी बनने दिया (वह दिन में दस बार मुझे इस उपाधि से विभूषित करता है—वाह वाह! क्या बढ़िया उपाधि है!) पर मैं अपना पत्र किसी भी रूप में उसको समर्पित नहीं करता हूं। जहां तक वैधानिक सुधारों का ताल्लुक है, समझौते का अधिक महत्त्व नहीं है। उसका एक मात्र यही महत्त्व है कि उससे इन लोगों की नीयत परखने का अवसर मिल जाएगा (यदि इन लोगों की नीयत साफ हुई तो)।

सप्रेम
महादेव

९४

कलकत्ता
२८ मई, १९३९

प्रिय महादेवभाई,

बापू के वक्तव्य के बाद अब मैं 'हरिजन' में बापू के कुछ लेखों के बारे में अपने मन की बात कह दूं। एक लेख का शीर्षक था, लात और चुम्बनवाली स्पीच। इस स्पीच की कभी पुष्टि नहीं हुई। बापू ऐसी बातें तभी छाप सकते हैं, जब उनकी सत्यता के बारे में उनका पूरा समाधान हो जाए। इस स्पीच की सत्यता के बारे में मेरा सन्देह बना हुआ है। मेरी धारणा है कि एक स्पीच अवश्य दी गई थी पर महाराजा द्वारा नहीं कर्नल हक्सर द्वारा। यदि मेरी यह धारणा सच्ची प्रमाणित हो तो हमें किसी न किसी रूप में इस भूल का परिमार्जन करना होगा।

यदि गिब्सन अब भी कुछ मर्माहत हों तो बेजा नहीं है। मेरी ग्वालियर की मिल के मैनेजर और सेक्रेटरी उसकी प्रशंसा करते नहीं अघाते थे। उसके बारे में मुझे बताया गया था कि वह बहुत खरा आदमी है और सबसे दिल खोलकर

मिलता है, विशेषकर बच्चों से। वह मिल में आ जाता था और बच्चों के साथ खेलता रहता था। यह तो हो नहीं सकता कि अपने व्यक्तिगत आचरण में वह इतना अच्छा रहा हो, और राजनैतिक आचरण में इतना बुरा साबित हो। बापू ने उसे बुरा भला कहने में कोई कोर कसर बाकी नहीं रखी थी। क्या बापू उसके बारे में अपनी राय बदलेंगे? और क्या वह इसका अधिकारी है? मेरी यह धारणा तो है ही कि राजकोट में ठाकुर साहब ने जो वचन भंग किया उसका दोषी अंशतः गिब्सन भी है। पर मेरे सहयोगी यह मानने को तैयार नहीं हैं कि उसके लिए गुण्डेपन पर उतर आना सम्भव है।

लोदियन लिखते हैं

"ऐसा प्रतीत होता है कि महात्मा कांग्रेस को उसी नीति पर ले जा रहे हैं, जिसका उन्होंने मेरे सेगाव प्रवास के दौरान इंगित किया था। पर मेरी राय में रियासतों में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की मांग के लिए कुछ करना जल्दीबाजी होगी। जनता को अभी प्रतिनिधि शासन का अनुभव नहीं है और यदि कांग्रेस ने उन्हें उस दिशा में अधिक तेजी के साथ ढकेला तो सम्भव है वह मुसलमानों को भारत के बाहर ढकेल दे। मेरी यह धारणा पहले से भी अधिक दृढ़ हो गई है कि संघीय शासन-व्यवस्था का आधारभूत सिद्धान्त ही एकमात्र ऐसा उपादेय सिद्धान्त है जिसका सहारा लेकर भारत प्रगति कर सकता है और संकट से बच सकता है। आप महात्मा से मिलें तो उन्हें मेरी सद्भावनाएं दीजिए।"

कृपया यह पत्र बापू के सामने रखना।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
राजकोट

९५

राजकोट
२५.४.३९

प्रिय घनश्यामदासजी

प्रणाम। आपका २२का पत्र मिला। बहुत आनंद हुआ। बापूजी को पढ़ाऊंगा तो फिर आपको नमस्कार कह देने की याद रखने की बात नहीं रहेगी।

वीरावाला के बारे में आप जो कहते हैं सो ठीक है। हम कौन से तपस्वी हैं ? और सच बात तो यह है कि किसी का हृदय परिवर्तन करने के लिए हमारा अपना परिवर्तन सौ गुना होना चाहिए। वीरावाला अपना दाव खेल रहा था हम भी उसके साथ दाव खेल रहे थे—वल्लभभाई तो खेल ही रहे थे—उसमें उसने हमको शिकस्त दी। बापू वल्लभभाई के अतीव प्रेम के वश होकर और राजकोट की ममता के कारण भूल कर बैठे। परन्तु बापू को अपनी भूलें तुरंत सुधारना आता है हमारे जैसे तुरंत शोधन नहीं कर सकते और हमारी भूलें हमारे साथ जन्म भर चलती रहती हैं और आख-नाक की तरह हमारी प्रकृति का अंग बन जाती हैं। अपनी भूलें देखना और सुधारना हम बापू से सीखें, तो समझिए काफी सीखा।

'हरिजन' में ए मोमेन्टस डिसीजन लेख पढ़ियेगा। काफी सोचकर लिखा है।

वीरावाला के साथ काम ठीक चल रहा है। उस बेचारे की आदतें भी उसकी प्रकृति का अंग बन बैठी हैं उन्हें वह तुरंत कैसे सुधार सकता है ? परन्तु उसकी वृत्ति बदल रही है उसके साथ मीठा संबंध हो रहा है, और उसकी शक्ति का भी मैं काफी परिचय पा रहा हूं। परन्तु यह बात तो सही है कि वह गिब्सन का ही पिलाया पानी पीता है। छोटी से छोटी बात क्या न हो—बिना उसके पूछे नहीं होती।

हम एक तारीख तक यहां हैं। दूसरी को बंबई पहुंचेंगे। रामेश्वरजी के यहां ही रहने का निश्चय किया है।

आशा है आपकी तबीयत अच्छी होगी।

आपका विनीत सेवक,
महादेव

६६

राजकोट
२६ मई, १६३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका २५ तारीख का पत्र मिला। हां गिब्सन अब भी खोजा हुआ है। उसने मुझे अपनी शिकायतें कह सुनाईं। बापू ने उसे पत्र लिखकर उससे क्षमा

याचना की है कि उनके उपवास काल में उसे इतना त्रस्त होना पड़ा था। मैं उसकी अन्य शिकायतों की भी छानबीन कर रहा हूं। वीरावाला के निकट सम्पर्क में आने पर पता चला कि कई बातों को लेकर उसे भी कुछ सचमुच की शिकायत हैं। सारे मामले से भाड़े ढंग से निपटा गया केम औरबद्या यह भगवान् ही जाने। शायद दुर्भाग्य हमारा पीछा कर रहा था।

रियासतें रेजिडेंटों की मर्जी के बिना कुछ नहीं करती हैं। यह मैंने अपनी आंखों देखा है और इसमें मुझे कोई संदेह नहीं रह गया है कि वीरावाला ने जो कुछ किया उसमें उसे गिब्सन का समर्थन प्राप्त था। पर गिब्सन को इस बात को लेकर कोई शिकायत नहीं है। उसकी शिकायत तो यह है कि 'हरिजन' में उसकी मुलाकात का जो ब्योरा छपा उसमें कुछ ऐसे शब्दों का उल्लेख किया गया, जिनका उसने कभी व्यवहार नहीं किया था। उसे यह भी शिकायत है कि उसने यहां जो कुछ किया उसे बापू ने 'गुण्डागर्दी' का नाम दिया।

हम १ तारीख को फिर मिल रहे हैं और मुझे आशा है कि सारे मामले की सफाई हो जाएगी और फिर उसकी कोई शिकायत बाकी नहीं रहेगी। वीरावाला की कथा निराली है पर जैसा कि मैं आपको बता ही चुका हूं वह मुझ पर भरोसा करने लगा है और फिलहाल मुझे भी वह मिलनसार प्रतीत हो रहा है। उसे प्रभुता का साधारण मोह है और उस पर आंच आनेवाली किसी भी बात को वह सहन नहीं कर सकता।

हम यहां से १ तारीख को रवाना होकर दूसरे दिन बम्बई पहुंच रहे हैं और ६ तारीख को सीमा प्रान्त की यात्रा पर जाना है।

सप्रेम,
महादेव

६७

आनन्द भवन
राजकोट
३० मई, १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

मुझे पक्का यकीन है कि इस पत्र के साथ भेजी जा रही सामग्री आपको रुचिकर लगेगी। मैं इसे 'हरिजन' में नहीं दे रहा हूं। मन विटवाली मुलाकात भी नहीं

छापी थी। निश्चय ही इस आदमी को बापू से उतना नहीं मिल पाया, जितना विट हासिल करने में सफल हुआ था पर यह आदमी मुझे बड़ा ईमानदार और प्रभावशाली लगा।

गिब्सन यहा कल सध्या के समय पहुंच रहा है और बापू और मैं उसके साथ मुलाकात करेंगे। मैंने एक सप्ताह पहले उसके साथ अपनी भेंट का प्रारम्भ किस प्रकार किया था सो शायद आपको मालूम नही है। मैंने उससे कहा कि मैं उसके बारे में जितना कुछ जानता हू वह ग्वालियर की मिल के मैनेजर की जबानी ही मालूम हुआ है और वह यही कि वह बच्चो के साथ कितनी सहृदयता से पेश आता है और किस प्रकार वह बीच बीच में मिल मे उनके साथ खेलने के लिए आया करता था। बस, इतना कहने की देर थी कि उसका दिल पसीज गया और हम दोनो ६० मिनट तक बडे आनन्द के साथ दुनिया भर की बाते करते रहे जैसा कि आपको ज्ञात ही है।

मैंने ग्वालियरवाली तथाकथित स्पीच के बारे में आपका सदेश बापू को अभी नही दिया है पर मैं आपसे इस बारे में सहमत हू कि किसी न किसी रूप में परिमार्जन आवश्यक है।

आपने लोदियन का पत्र उद्धृत तो किया पर यह नही बताया कि उसके बारे में आपकी क्या धारणा है। रियासतो में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की अवधि को सीमित करना एक बात है और वहा की प्रजा को कुचलना जैसा कि लीमडी, तालचर और अन्य स्थानो पर हो रहा है, बिलकुल दूसरी बात है। पर भगवान को धन्यवाद देना चाहिए कि घण्टे के पेंडुलम का रुख अब विपरीत दिशा में हो गया है और बापू धैर्य से काम लेने का अभ्यास कर रहे हैं।

बम्बई पहुचकर फिर लिखूगा।

एक बात बताना भूल गया। गिब्सन में शुष्क विनोद की भावना मौजूद है। बापू ने उसे पत्र लिखा था कि उनके उपवास-काल में उसे कितनी दिक्कत उठानी पडी थी इसका उन्हें पता है और इसके लिए उन्हें दुःख है भले ही वह उपवास निष्फल सिद्ध हुआ हो। अब उसका जवाब आया है जिसकी नकल साथ रखता हू।

सप्रेम,
महादेव

सलग्न—गिब्सन का पत्र

रजिडेंसी
राजकोट,
बालाचडी
२७ मई १९३९

प्रिय मिस्टर गांधी

आपने पत्र लिखने का मौका दिया यह बहुत बढ़िया बात हुई। अनेक धन्यवाद। आपने जिन दिनों का उल्लेख किया है उन दिनों काम अवश्य बढ़ गया था पर यदि करने योग्य कोई काम हो तो मुझे कार्य भार की चिन्ता नहीं रहती है। उन दिनों जितना काम बढ़ गया था उसके मुकाबले आजकल का काम आज नहीं के बराबर है। पर वास्तव में जिन लोगों को काम का बोझ संभालना पड़ा था तार विभाग और टेलिफोन विभाग के लोग थे। रही रेजिडेन्सी के अमले की बात, सो (आपसे भेद की बात कह दूं) वे तो बराबर ही कार्य भार से दबे रहते हैं।

मैं राजकोट ३१ मई की रात को लौट रहा हूं और मैंने मिस्टर महादेव देसाई को लिख दिया है कि दूसरे दिन बातचीत होगी। आपके जाने के पहले मैं आपसे एक बार और मिलना चाहूंगा पर शायद उस दिन सुबह आप बहुत व्यस्त होंगे इसलिए मैं कोई सुझाव नहीं दे रहा हूं। पर यदि आप कुछ मिनट निकाल सकें तो जो समय आपकी सुविधा का हो आ जाइये।

भवदीय
के० सी० गिब्सन

९८

कलकत्ता
१ जून १९३९

प्रिय महादेवभाई,

पत्र के लिए धन्यवाद। मुझे मालूम हुआ कि जयपुर के मामले को लेकर राधाकृष्ण बापू से और तुमसे मिल चुके हैं। जमनालालजी और राज्य के विभिन्न अधिकारियों के बीच जो मुलाकात हुई उसका उनका संक्षिप्त ब्यौरा मेरे पास भी भेजा है। मेरे लिए यह समझ पाना कठिन है कि क्या तो टाड आरम्भ में इतनी

शिष्टता से पेश आया, और क्या वह अन्त में इतना रूखा बन गया ! यह यकीन करने को जी नहीं चाहता कि नीति में अचानक कोई परिवर्तन हुआ है। वास्तव में यदि मेरी यह धारणा सही निकले कि अपनी भेंट के दौरान दोनों में कुछ मत भेद उठ खड़ा हुआ, जिसके कारण दोनों का रुख बदल गया तो मुझे ताज्जुब नहीं होगा। मैं यह केवल इसलिए लिख रहा हूं कि वेसब्री से काम न लिया जाए और तसवीर के दोनों पहलुओं की जानकारी हासिल करने तक रुका जाए।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
राजकोट

६६

सेगांव वर्धा
१७ जून, १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपको याद होगा कि मैंने बापू के साथ स्टील की मुलाकात का ब्योरा आपके पास राजकोट से भेजा था। क्या आपने उसका कोई उपयोग किया ? आशा है आपने नहीं किया होगा। स्थिति इस प्रकार है—बापू सोच रहे थे कि मुलाकात को 'हरिजन' में प्रकाशित किया जाय या नहीं। जब मैंने वह ब्योरा भेजा था तो मुझे इस बारे में कोई संशय नहीं था कि उसे न छापना ही ठीक रहेगा। पर अब प्यारेलाल ने बम्बई से 'हरिजन' के लिए कुछ सामग्री भेजी है जिसमें उस मुलाकात का ब्योरा भी है। (अधिकांश में दोनों ब्यौरे एक ही जैसे हैं।) बापू ने जानना चाहा कि उसे क्या न छापा जाय। मैंने कहा कि मेरे विचार में उसे प्रकाशित करना वांछनीय नहीं है क्योंकि वैसा करने से व्यर्थ का वाद विवाद उठ खड़ा होगा और अटकलबाजियों का बाजार गर्म होगा। मैंने कहा कि इस ब्योरे को प्रकाशित करने की अपेक्षा यह कहीं अच्छा रहेगा कि उसे लेथवेट के पास भेज दिया जाय जिससे वह वाइसराय को दिखा दें विशेषकर इसलिए कि उसमें वाइसराय की भूरि भूरि प्रशंसा के उदगार भी हैं। बापू ने पूछा, तो तुम्हारा यह

खयाल है कि ऐसा करना इस छापने की अपेक्षा अच्छा रहेगा ?" मैंने कहा कि मुझे इस विषय म कोई सदेह नही है। ' फिर मैंने कहा "हो सकता है कि बिडला जी ऐसा कर भी चुके हो पर यदि वह ऐसा करते तो कह जरूर देते। ' बापू बोले, मुझे आशा है कि उन्होने एसा नही किया होगा, क्योंकि यह उचित नही है कि वाइसराय के पास ऐसी चीजें इस ढग स भेजी जायें। इससे उनकी शान पर आच आयगी। उन्होंने और भी बातें कही। मै आपसे इसीलिए पूछ रहा हू। मुझे पूरा यकीन है कि आपने ऐसा नही किया होगा। क्या आप अपना उत्तर तार द्वारा भेजने की कृपा करेंगे ?

बापू की तबीयत ठीक ही चल रही है हा कमजोरी बनी हुइ है। शरीर म फुर्ती का नितात अभाव है हो सकता है गर्मी के कारण हो पर अभी तो गर्मी भी अधिक नही पड रही है।

अब हम बम्बइ म मिलगे।

आपका,
महादेव

१००

सेगाव (वर्धा होकर)
१८ जून १९५९

प्रिय घनश्यामदासजी,

हम यहा स २० को रवाना हो रहे हैं।

आप हाथ के बने कागज पर क्यो नही लिखते ? आपके पास तो अब ढेर का ढेर पडा है। आप बम्बइ आ रहे है क्या? यदि आयें तो उसी ट्रेन म क्यो न आयें, जिससे हम चलेंगे ? पर मैं भूल गया। यदि आप १९ को चल पडे होग तो यह पत्र आप तक समय पर पहुच भी नहीं पायगा।

सप्रेम,
महादेव

१०१

तार

१६ जून १६३६

महादेवभाई देसाई,
मगनवाडी,
वर्धा (मध्य प्रात)

स्टील की मुलाकात का कोई उपयोग नहीं किया है।

—घनश्यामदास

बिडला ब्रदर्स लिमिटेड,
कलकत्ता

१०२

कलकत्ता
१६ जून १६३६

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारे पत्र के लिए धन्यवाद। मैंने स्टील की मुलाकात का कोई उपयोग नहीं किया है। पर बापू का यह कथन मेरी समझ में नहीं आया कि "यह उचित नहीं है कि वाइसराय के पास ऐसी चीजें इस ढग से भेजी जायें। इससे उनकी प्रतिष्ठा को आच आयगी।" यह बात जरा और खुलासा करके समझाओ तो अच्छा रहेगा। वास्तव में मुझे जब कभी ऐसा लगा कि फलां चीज वाइसराय तक पहुचाना कार्य के हित में है तो मैं वैसा करने से कभी नहीं चूका। इसलिए जब मैंने इस मुलाकात का ब्योरा पढा, तो मैं इस विचार में पड गया कि वाइसराय के पास इसका सम्बद्ध उद्धरण भेजा जाना ठीक रहेगा या नहीं। वाइसराय की प्रशसा में कही गई बात पढने के बाद ही मुझे ऐसी प्रतीति हुई। फिर तुरत ही मैंने यह सोचा कि वह प्रशसात्मक उद्धरण भेजूगा तो चाटुकारिता का दोषी सिद्ध होऊगा। इसलिए मैं रुक गया और फिर मैंने वह विचार ही त्याग दिया। यदि मुलाकात में

वाइसराय की सरासर नास्वहल कुछ न होना तो मैं उसका उपयोग करता और तब यदि तुम्हारा पत्र मिलता तो बड़ा क्षुब्ध होता।

कृपा करके यह पत्र बापू को दिखा देना और उनसे कहना कि भविष्य के लिए मेरा पथ प्रदर्शन करें। बापू के स्वास्थ्य के बारे में भी मेरी पूरी जानकारी बनाये रखना। खेद है, मैं बम्बई नहीं आ सकूंगा। इसके दो कारण हैं एक तो यहां का काम-काज दूसरा आलस्य।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बम्बई

१०३

कलकत्ता
२० जून १९३६

प्रिय महादेवभाई

तुम्हें याद होगा कि मैंने तुमसे कहा था कि पिलानी कालेज की पुस्तिका पर मैं तुम्हारी राय जानना चाहूंगा। मैंने बापू से भी कुछ संकोच के साथ कहा था कि इस पर निगाह डाल लें। जब मैंने बापू से आग्रह किया था तो शुद्ध काम-काजी प्रेरणा के कारण कहा था क्योंकि मैं जो-कुछ कर रहा हूं उस पर उनकी सलाह और पथ प्रदर्शन चाहता हूं। मित्र लोगों की बधाइयों के संदेशों का ढेर लग गया है जिससे उलटे बेचैनी होती है। तुमसे और बापू से अपेक्षा करता हूं मित्रतापूर्ण आलोचना की।

अलग डाक से पुस्तिका की दो प्रतियां भेज रहा हूं। सीमा प्रांत के दौरे में इस पढ़ने का समय निकाल पाओ तो बड़ी बात हो। आशा है बापू को भी उस पर निगाह डालने का समय मिल जायगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बम्बई

१०४

कलकत्ता
२० जून, १९३९

प्रिय महादेवभाई,

तुम्हारा १८ तारीख का पत्र पाने के बाद मुझे पछतावा हो रहा है कि मैं बम्बई नहीं गया। पर जैसा कि मैं अपने पिछले पत्र में लिख चुका हूँ, वहाँ न जाने का एक कारण काम काज था। मैं कलकत्ते के बाहर इतने अधिक दिन रहा कि अब काम काज बीच ही में छोड़कर यहाँ से जाना ठीक नहीं लगा। [illegible]मी निवास इन दिनों यहाँ नहीं है। मैं समझता हूँ कि अब बापू सीमा प्रान्त के लिए रवाना हो ही रहे होंगे। वहाँ से वापसी पर ही उनके दर्शन हो पायेंगे।

हाथ के बने कागज का चलन नयी दिल्ली के बिड़ला हाउस में जारी है। पर बिड़ला ब्रदर्स की फर्मों में उसके उपयोग का सुझाव मैं ब्रजमोहन को दूँगा, वह खुद अपनी बड़ी-सी फैक्टरी में कागज तैयार कर रहा है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
बम्बई

१०५

बिड़ला हाउस
माउण्ट प्लेजेंट रोड
बम्बई
२२ जून, १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके तीनों पत्र मिल गये—[illegible]। धन्यवाद। बापू ने कल रात को एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पत्र लिखा है, जिसकी नकल भेजता हूँ। आज रामेश्वरदासजी ने फोन पर आपसे [illegible] होगी।

पुस्तिका अभी तक नहीं पहुंची है। उसे जल्दी ही पढूंगा बापू भी पढ़ेंगे, पर यह तो भगवान ही जाने कि वह सीमा प्रान्त जाते हुए सम्भव होगा या राजकोट जाते हुए। पता नहीं किस कारण राजकोट की स्थिति एकाएक बिगड़ गई है। कल रात बापू को उसकी चिन्ता में नींद नहीं आई। प्रार्थना के समय वह बोल उठे, 'तुम्हें राजकोट जाना होगा। वहां से तुम्हारी वापसी पर आगे क्या करना होगा, इस पर विचार किया जायगा।

हो सकता है सीमा प्रान्त की यात्रा स्थगित रहे। यह सब खान साहब के आग्रह पर ही निर्भर है। यदि उनका विशेष आग्रह न हुआ तो सम्भव है, यात्रा का विचार त्याग दिया जाय। इसके बजाय, सम्भव है बापू त्रावणकोर जायें बशर्ते कि सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर को कोई एतराज न हो। बापू ने सी० पी० को इस बारे में तार भेजा है— त्रावणकोर कांग्रेस का आग्रह है कि उनकी बैठक का उद्घाटन मैं करूं। क्या आप मेरे आने के पक्ष में हैं ?" वहां से जो उत्तर आयेगा आपको उसकी सूचना दूंगा।

सप्रेम
महादेव

१०६

बिड़ला हाउस
मलाबार हिल
बम्बई
२२ जून, १९३९

प्रिय लार्ड लिनलिथगो

आपके १६ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद।

यद्यपि यह दुःख की बात है कि बन्दी पर्चोसिट को रिहा नहीं किया जा सकता तथापि मुझे आपके निर्णय को न समझ पाने में कोई कठिनाई नहीं हो रही है। अब मैं किसी अन्य अवसर की प्रतीक्षा करूंगा।

जयपुर का मामला अनिश्चय की स्थिति मे पडा है। समस्या के हल की आशा करू या नही यह मैं नही जानता। जहा तक मुझे मालूम है स्वय महाराजा सेठ जमनालालजी तथा अन्य बदियो को रिहा करने प्रजा परिषद् को मान्यता देने और जब तक अहिसा का पालन होता रहे तब तक नागरिक स्वतत्रता प्रदान करने को राजी थे।

इस पत्र म एक अन्य बात का भी समावेश करना उचित समझता हू। मुझे मालम हुआ है कि कई एक राजा नवाब मुझसे मिलने के लिए इच्छुक हैं पर राजनतिक विभाग की नाराजी से डरते है। जैसा कि मैंने दिल्ली म बातचीत के दौरान कहा था—मेरी राय म उन्हें जिस किसी स वे मिलना चाह उसस मिलने की आजादी रहनी चाहिए बशर्ते कि वह मिलना जुलना खुले रूप मे हो। इस बाबत आपकी नीति की घोषणा सावजनिक रूप से अथवा निजी तौर से जिस रूप म आप वाछनीय समझें करना अच्छा रहेगा। मरी धारणा है कि केवल मेरे जसे लोगो के मामले म रिआयत बरतना उचित नही है। इस बात को ध्यान मे रखते हुए कि रियासतो की प्रजा का सारे भारत म काग्रेसियो तथा अन्य लोगो के साथ राजनतिक एव सामाजिक नाता जुडा हुआ है क्या यह बुद्धिमत्ता और औचित्य का तकाजा नही है कि राजाओ नवाबो का उन लोगो के साथ जिनका उनकी प्रजा पर प्रभाव है, सम्पक स्थापित करन का प्रोत्साहित किया जाय ? काग्रेसियो तथा अ य लोगो को बाहरी आदमी समझते रहना इतना अस्वाभाविक है कि यह ब धन अधिक दिना तक टिकनेवाला नही है। इस ब धन का अन्त सघष और कटुता के बाद ही हो यह दु ख की बात होगी। पता नही इस वस्तुस्थिति की ओर आपका ध्यान गया है या नही कि कई एक रियासतो ने गर काग्रेमी प्रमुख यक्तियो को या तो आमत्रित किया है या उनका स्वागत किया है। मुझे इस बात का लेकर कोई शिकायत नही है। पर राजनतिक विभाग ने काग्रेसियो के प्रवेश के मामल म जिस विरोधी भावना को उत्तेजित किया है वह इस रवये के साथ विरोधाभास ही है।

भवदीय
मो० क० गाधी

१०८

बिडला हाउस
माउण्ट प्लेजट रोड,
बम्बई ४ जुलाई १६३६

प्रिय अगाथा

मैंने पिछले पाच या छह हफ्तो मे आपको कोई चार पत्र लिखे है। उनमे से एक की भी पहुच नही मिली है। मुझे चिन्ता हो रही है कि कही वे पत्र आपको न मिले हो।

मैंने अपना अन्तिम पत्र राजकोट से लिखा था। हम सीमा प्रान्त जाने की तयारी कर रहे हैं। राजकोट मे गिब्सन और वीरावाला अपनी जडें मजबूत करने मे लगे हुए हैं और प्रजा के मतिर ह्रास ने उन्हे ऐसा करने का स्वर्ण अवसर प्रदान किया है। ये दोनो ही स्पष्टवादी प्रतीत हुए पर दोनो कुत्सापूर्ण विजयोल्लास का आनन्द अवश्य ले रहे हैं। मैंने गिब्सन से पूछा कि क्या नूतन प्रणाली का राजकोट के लोगो पर किसी प्रकार का प्रभाव पडा ? उसने उत्तर दिया एक ठाकुर ही ऐसा आदमी है जिसने उसका मर्म ग्रहण किया है। उसने हम बहुत दिनो से तग कर रखा था। अब उसकी प्रशसा मे यह कहना पडेगा।' मैंने कहा यह जानकर बडी खुशी हुई, पर मैं वीरावाला तथा अन्य लोगो की बाबत जानना चाहता था। गिब्सन बोला 'आप यह समझे बठे हैं कि उनकी इस नूतन प्रणाली मे कोई आस्था है ?' मैंने उत्तर दिया इसके विपरीत मेरे कानो मे तो यह बात आई है कि वे लोग इसका मजाक उडा रहे हैं। तब गिब्सन बोला 'नही ऐसी बात तो नही है। हा, वे शायद इसके गूढ दार्शनिक पहलू को हृदयगम नही कर पाये हैं। और सचमुच बात भी यही है।

सरकार ने भी इसके दार्शनिक पहलू को हृदयगम नही किया है। आपको याद होगा कि किस प्रकार बापू ने मुलाकात के दौरान वाइसराय से भारतीय नरेशो के साथ सम्पर्क स्थापित करने का प्रसग उठाया था और किस प्रकार वाइसराय ने दो टूक बात कह दी थी कि वह इसके खिलाफ हैं। अब जबसे यह नूतन प्रणाली अमल मे आई है बेचारे नरेशो को—उनमे से कुछ को—यह लगने लगा है कि स्थिति बदल गई है और जसा कि मैं आपको अपने पिछले पत्र मे बता चुका हू, वे बापू के पास यह अनुरोध लेकर पहुचे कि वाइसराय उन्हें कांग्रेसियो से (जिनमे बापू भी शामिल हैं) बातचीत करने की छूट दे दें। इस पत्र

१०७

वाइसराय लॉज,
शिमला
१ जुलाई, १९३९

प्रिय मिस्टर गांधी

आपके २२ जून के पत्र के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। उसमें दो-एक ऐसी बातें उठाई गई हैं जिनका समावेश मैं अपने उत्तर में करना चाहता हूं।

१. जयपुर के सम्बन्ध में मेरा कहना है कि सेठ जमनालाल बजाज को आवश्यकता से अधिक देर तक रोक रखने की जरूरत नहीं है। आपको याद होगा कि प्रारम्भ में दरबार ने उन्हें रियासत में लेने में जाने की भरसक कोशिश की थी। सेठ जमनालाल तथा अन्य व्यक्तियों के संबंध में अभिलषित कार्रवाई दरबार जिन शर्तों पर करना चाहते हैं उनकी उन्हें पूरी जानकारी है और जहां तक मैं जानता हूं महाराजा के यहां से जाने के फलस्वरूप इस स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

२. अपने पत्र के अंतिम पैरे में आपने जो बात कही है उसे मैंने पूरे ध्यान से पढ़ा है और इस सम्बन्ध में आपने मुझे अपने दृष्टिकोण से अवगत करा दिया इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मैं समझता हूं राजनैतिक विभाग के साथ न्याय का यह तकाजा है कि मैं यह कह दूं कि नरेशों और उनकी प्रजा के साथ सम्पर्क स्थापित करने के मामले में वह (आप अपने वाक्य का उपयोग करने की अनुमति दें तो) गैर कांग्रेसी प्रमुख व्यक्तियों और कांग्रेसी प्रमुख व्यक्तियों में किसी प्रकार की भेदभाव की नीति को बढ़ावा नहीं देता।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक रहता होगा।

भवदीय
लिनलिथगो

१०८

बिड़ला हाउस
माउण्ट प्लजेंट रोड,
बम्बई ८ जुलाई १९३९

प्रिय अगाथा,

मैंने पिछले पांच या छह हफ्तों में आपको कोई चार पत्र लिखे हैं। उनमें से एक की भी पहुंच नहीं मिली है। मुझे चिंता हो रही है कि कहीं वे पत्र आपको न मिले हों।

मैंने अपना अंतिम पत्र राजकोट से लिखा था। हम सीमा प्रांत जाने की तैयारी कर रहे हैं। राजकोट में गिब्सन और वीरावाला अपनी जड़ें मजबूत करने में लगे हुए हैं और प्रजा के नैतिक ह्रास ने उन्हें ऐसा करने का स्वर्ण अवसर प्रदान किया है। ये दोनों ही स्पष्टवादी प्रतीत हुए, पर दोनों कुत्सापूर्ण विजयोन्माद का आनन्द अवश्य ले रहे हैं। मैंने गिब्सन से पूछा कि क्या नूतन प्रणाली का राजकोट के लोगों पर किसी प्रकार का प्रभाव पड़ा? उसने उत्तर दिया, 'एक ठक्कर ही ऐसा आदमी है जिसने उसका मर्म ग्रहण किया है। उसने हमें बहुत दिनों में तंग कर रखा था। अब उसकी प्रशंसा में यह कहना पड़ेगा।' मैंने कहा, 'यह जानकर बड़ा खुशी हुई, पर मैं वीरावाला तथा अन्य लोगों की बाबत जानना चाहता था।' गिब्सन बोला, 'आप यह समझे बैठे हैं कि उनकी इस नूतन प्रणाली में कोई आस्था है?" मैंने उत्तर दिया, 'इसके विपरीत, मेरे कानों में तो यह बात आई है कि वे लोग इसका मजाक उड़ा रहे हैं।' तब गिब्सन बोला, 'नहीं ऐसी बात तो नहीं है। हां वे शायद इसके गूढ़ दार्शनिक पहलू को हृदयंगम नहीं कर पाये हैं।' और सचमुच बात भी यही है।

सरकार ने भी इसके दार्शनिक पहलू को हृदयंगम नहीं किया है। आपको याद होगा कि किस प्रकार बापू ने मुलाकात के दौरान वाइसराय से भारतीय नरेशों के साथ सम्पर्क स्थापित करने का प्रसंग उठाया था और किस प्रकार वाइसराय ने दो टूक बात कह दी थी कि वह इसके खिलाफ हैं। अब जबसे यह नूतन प्रणाली अमल में आई है बेचारे नरेशों को—उनमें से कुछ को—यह लगने लगा है कि स्थिति बदल गई है और जैसा कि मैं आपको अपने पिछले पत्र में बता चुका हूं वे बापू के पास यह अनुरोध लेकर पहुंचे कि वाइसराय उन्हें कांग्रेसियों (जिनमें बापू भी शामिल हैं) बातचीत करने की छूट दे दें। इस पत्र

१०७

वाइसराय लाज
शिमला
१ जुलाई १९३९

प्रिय मिस्टर गाधी

आपके २२ जून के पत्र के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। उसमे दो एक ऐसी बातें उठाई गई है जिनका समावेश मैं अपने उत्तर म करना चाहता हू।

१ जयपुर के सम्बन्ध म मेरा कहना है कि सेठ जमनालाल बजाज को आवश्यकता से अधिक देर तक रोके रखने की जरूरत नही है। आपको याद होगा कि प्रारम्भ म दरबार ने उन्ह हिरासत म लेने म बचने की भरसक कोशिश की थी। सेठ जमनालाल तथा अन्य बन्दियो के सबध म अभिलषित कारवाई दरबार जिन शर्तों पर करना चाहते है उनकी उन्हे पूरी जानकारी है और जहा तक मैं जानता हू महाराजा के यहा से जाने के फलस्वरूप इस स्थिति म कोई परिवतन नही हुआ है।

२ अपने पत्र के अतिम पद म आपने जो बात कही है उसे मैंने पूरे ध्यान से पढा है और इस सम्बन्ध मे आपने मुझे अपने दृष्टिकोण से अवगत करा दिया इसके लिए मैं आपका आभारी हू। मैं समझता हू राजनैतिक विभाग के साथ न्याय का यह तकाजा है कि मैं यह कह दू कि नरेशो और उनकी प्रजा के साथ सम्पर्क स्थापित करने के मामले मे वह (आप अपने वाक्य का उपयोग करने की अनुमति दें तो) गैर काग्रेसी प्रमुख व्यक्तियो और काग्रेसी प्रमुख व्यक्तियो म किसी प्रकार की भेदभाव की नीति का बरताव नही देता।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक रहता होगा।

भवदीय
लिनलिथगो

श्री मो० क० गाधी
बम्बई

१०८

बिड़ला हाउस
माउण्ट प्लेजेंट रोड,
बम्बई ४ जुलाई १९३९

प्रिय अगाथा,

मैंने पिछले पांच या छह हफ्तों में आपको कोई चार पत्र लिखे हैं। उनमें से एक की भी पहुंच नहीं मिली है। मुझे चिन्ता हो रही है कि कहीं वे पत्र आपको न मिले हों।

मैंने अपना अन्तिम पत्र राजकोट से लिखा था। हम सीमा प्रान्त जाने की तैयारी कर रहे हैं। राजकोट में गिब्सन और वीरावाला अपनी जड़ें मजबूत करने में लगे हुए हैं और प्रजा के नैतिक ह्रास ने उन्हें ऐसा करने का स्वर्ण अवसर प्रदान किया है। ये दोनों ही स्पष्टवादी प्रतीत हुए, पर दोनों कुत्सापूर्ण विजयानन्द का आनन्द अवश्य ले रहे हैं। मैंने गिब्सन से पूछा कि क्या नूतन प्रणाली का राजकोट के लोगों पर किसी प्रकार का प्रभाव पड़ा? उसने उत्तर दिया, "एक ठेबर ही ऐसा आदमी है जिसने उसका मर्म ग्रहण किया है। उसने हमें बहुत दिनों में तंग कर रखा था। अब उसकी प्रशंसा में यह कहना पड़ेगा।" मैंने कहा, "यह जानकर बड़ी खुशी हुई, पर मैं वीरावाला तथा अन्य लोगों की बाबत जानना चाहता था।" गिब्सन बोला, "आप यह समझे बैठे हैं कि उनकी इस नूतन प्रणाली में कोई आस्था है?" मैंने उत्तर दिया, "इसके विपरीत मेरे कानों में तो यह बात आई है कि वे लोग इसका मजाक उड़ा रहे हैं।" तब गिब्सन बोला, "नहीं, ऐसी बात तो नहीं है। हां, वे शायद इसके गूढ़ दार्शनिक पहलू को हृदयंगम नहीं कर पाये हैं। और गनीमत बात भी यही है।"

सरकार ने भी इसके दार्शनिक पहलू को हृदयंगम नहीं किया है। आपको याद होगा कि किस प्रकार बापू ने मुलाकात के दौरान वाइसराय से भारतीय नरेशों के साथ सम्पर्क स्थापित करने का प्रसंग उठाया था और किस प्रकार वाइसराय ने दो टूक बात कह दी थी कि वह इसके खिलाफ हैं। अब जब यह नूतन प्रणाली अमल में आई है, बेचारे नरेशों को—उनमें से कुछ को—यह लगने लगा है कि स्थिति बदल गई है और जैसा कि मैं आपको अपने पिछले पत्र में बता चुका हूं, वे बापू के पास यह अनुरोध लेकर पहुंचे कि वाइसराय उन्हें कांग्रेसियों के साथ (जिनमें बापू भी शामिल हैं) बातचीत करने की छूट दे दें। इस पत्र

के साथ जो पत्र-व्यवहार नत्थी कर रहा हूं उससे आप स्वयं ही देख लेंगी कि हवा का रुख किधर है। मैं तो नहीं समझता कि इसके बाद वाइसराय के पास से और जो कोई पत्र आयगा वह इससे भी बुरा हो सकता है। वाइसराय ने बापू के लिए सारे द्वार बन्द कर दिये मालूम होते हैं और सम्भव है वह भविष्य में बापू के पत्रों का उत्तर तक न दें। कम-से-कम बापू की यही प्रतीति है। उन्हें घोर निराशा हुई है और वह इसी चिन्ता में निमग्न हैं कि अगला कदम क्या हो। यदि हो सका तो मैं इस पत्र के साथ हरिजन के लिए बापू के ताजा लेख की नकल भी भेजूंगा। यदि मेरे पास कोई अतिरिक्त नकल न बची तो चन्द्रशेखर तो पूना से यथापूर्व भेजेंगे ही।

आपका,
महादेव

१०६

बिड़ला हाउस
माउण्ट प्लेजेंट रोड,
बम्बई ५ जुलाई, १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके कृपापत्र के लिए धन्यवाद। यह आज ही आया। अन्त में मेरा त्रावणकोर न जाना ही तय हुआ। रामचन्द्रन ने तो तार भेजा है कि अभी वहां खादी का क्षेत्र इतना तैयार नहीं हो पाया है कि बापू मुझे वहां भेजें। बापू को यह जान कर आश्चर्य भी हुआ और व्यथा भी हुई कि वे लोग रचनात्मक कार्य में इतने पिछड़ क्यों गये हैं। पर असलियत सामने आ गई यह अच्छा ही हुआ। आपकी यह धारणा निराधार नहीं है कि बापू ने मेरे लिए कुछ कूटनैतिक कार्यक्रम सोच रखा था। वास्तव में रामचन्द्रन का संदेश मिलते ही उन्होंने सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर को मेरे बारे में लिखने की बात सोची। पर अब वह योजना कम-से-कम इस समय तो रद्द हो गई है। अब बापू मुझे त्रावणकोर के बजाय बिहार भेज रहे हैं और आज मैंने राजेन्द्र बाबू को पत्र लिखा है। इन दिनों उत्तर बिहार में वर्षा के कारण मौसम बहुत खराब होगा। वहां खादी का काम काफी

प्रगति कर चुका है इसलिए सम्भव है मैं दक्षिण विहार का दौरा करूँ। राजेन्द्र बाबू मुझे जरूर बुलाना चाहेंगे क्योंकि ज्यों ही उन्हें मालूम हुआ कि मैं सीमा प्रान्त वापस नहीं लौट रही हूँ उन्होंने मुझे बिहार आने का सुझाव दिया था।

मैं दिल्ली में अपनी जो चीजें छोड़ आई हूँ उनके सम्बन्ध में मेरा कहना यह है कि मुझे यह तो पता नहीं था कि मुझे कहाँ भेजा जायेगा अथवा किस प्रकार का काम मेरे सुपुर्द किया जायगा इसलिए उन्हें अपने साथ लिये फिरना मैंने उचित नहीं समझा। उनमें से अधिकांश घरेलू काम काज के बर्तन भाँडे आदि हैं और जब तक मैं कहीं जमकर डेरा न डालूँ मेरे लिए उनका कोई उपयोग नहीं है। सीमा प्रान्त में मुझे इन चीजों की जरूरत थी क्योंकि मैं अपना प्रबन्ध अलग और स्वतन्त्र रखना चाहती थी। इसलिए यदि कोई असुविधा न हो तो मैं चाहूँगी कि फिलहाल मेरी चीजें दिल्ली में ही रखी रहें। बिहार जाकर देखूँगी कि क्या करना ठीक रहेगा।

बापू आज रात को फ्रंटियर मेल से रवाना हो रहे हैं। जो दल साथ में है उसकी हालत ठीक नहीं है। महादेव के दाँत में दर्द है डाक्टर के पास गये हैं शायद वह कुछ कर सकें ताकि वह बापू के साथ जा सकें। प्यारेलाल के टांसिलों में सूजन आ गई है इसलिए उन्होंने भी अभी तक तय नहीं किया है कि बापू के साथ जाएँ या नहीं। यदि प्यारेलाल नहीं गये तो सुशीला भी जाने से रुक जायेंगी, और सुशीला रुक गई तो बा का भी जाना नहीं हो सकेगा क्योंकि हाल की बीमारी के बाद से उन्हें शुश्रूषा की जरूरत रहती है। अब बापू के साथ जाने योग्य केवल कनु और महादेव का लड़का नारायण रह गये बशर्ते कि वह अपने बाप से अलग रहने में समर्थ हो। या मैं यह आशा करती हूँ कि अन्त में सभी जाने लायक स्थिति में हो जायेंगे।

बापू बिलकुल स्वस्थ हैं। समुद्र की वायु ने उनका बहुत उपकार किया है। वह पेशावर न जाकर सीधे हजारा जायेंगे, इसलिए वहाँ के पहाड़ों में समय बिताने में उन्हें बड़ा आनन्द आयगा। बापू को ऊँचाई की विशेष चिन्ता नहीं है और यहाँ डॉक्टरों का कहना है कि ६००० फीट की ऊँचाई तक चिन्ता की कोई बात नहीं है। मेरी और आपकी भी यही कठिनाई है। खैर मेरे प्रति सहानुभूति दिखाने के लिए कम-से-कम एक आदमी तो मिला।

जब तक राजेन्द्र बाबू का उत्तर नहीं आयगा मैं ३-४ दिन तक यहीं ठहरी रहूँगी। मैंने उन्हें तार द्वारा उत्तर भेजने को लिखा है। मुझे वहाँ पड़ाव डालकर

काम म जुटना है, इस बावत मैं आपको सूचना दूगी।

सप्रेम,
मीरा

पुनश्च

क्या सीमा प्रात की उस सूत कातन की मशीनरी के बारे म कुछ सुनने म आया है ?

११०

बिड़ला हाउस
माउण्ट प्लेजेंट रोड
बम्बई
५ जुलाई, १६३६

प्रिय घनश्यामदासजी

मेरे एक दात म इतनी पीड़ा है कि साथ भेजा पत्र लिख चुकने के बाद आपको अलग से पत्र लिखने लायक हिम्मत रही ही नही। पर जो सामग्री साथ भेज रहा हू उसमे आपको सारी खबरें मिल जायेंगी और उन्हें दुहराने की आवश्यकता नहा है।

हम लोग आज रात को सीमा प्रात के लिए रवाना होनेवाले है पर बहुत कुछ दत चिकित्सक के ऊपर निर्भर है क्या पता वह रोक रखे। दुर्भाग्य से प्यारेलाल के भी एक दात म तकलीफ है और शायद आपरेशन कराना पडे। यदि वह भी नही जा सके तो विचित्र स्थिति उत्पन्न हो जायेगी क्योंकि तब कनु और मेरे लडके को छोड और कोई उनका साथ नहीं दे पायगा और बापू जाने पर तुल हुए हैं हो।

आपका,
महादेव

१११

कलकत्ता
७ जुलाई १९३९

प्रिय मीराबेन

मुझे यह जानकर घोर निराशा हुई कि अंत में आपका ऐबटाबाद जाना नहीं हो सका। 'मेरे मन कुछ और है, विधना के कुछ और'। आशा है भविष्य में विधाता की ऐसी कृपा होगी कि हमारे मनोरथ अधिक सफल होंगे।

स्थिति काफी अंधकारपूर्ण है। बापू की नूतन प्रणाली की खूबियां उनके जाने के बाद समझ में आयेंगी। पर जो लोग चीजों के अच्छे बुरे होने का निर्णय उनके परिणामों से करते हैं उन्हें तो यही प्रतीत होगा कि बापू की नूतन प्रणाली के कारण राजकोट, तालचर और अन्य स्थान अब पहले से अधिक सुखद स्थिति में हैं। पता नहीं, वाइसराय का दिमाग किस दिशा में काम कर रहा है। मैं उनसे मिलना चाहता हूं पर ऐसा लगता है कि सर्दियों से पहले उनसे भेंट नहीं होगी। क्या शिमला में अधिकारियों को बापू की नूतन प्रणाली की खूबियां जरा भी अच्छी लगीं? मुझे तो काफी शक है। मूर बीच बीच में अच्छे खास लेख लिखता रहता है पर अधिकारियों की दुनिया को ऐसा लगता है कि बापू की शक्ति सामर्थ्य अब समाप्त हो गई है, अथवा उन पर बुढ़ापे की सनक सवार हो गई है नहीं तो ऐसा कौन आदमी होगा जो होश हवास दुरुस्त रहते अपनी गलतियां कबूलेगा? पर उन लोगों ने तो जीवन भर बापू को गलत समझा है। जो भी हो भगवान् उनकी सहायता करेगा।

यह जानकर खुशी हुई कि आप बिहार जा रही हैं। यदि बिहार का अर्थ हजारीबाग और रांची भी हो तो आप मेरी जमींदारी में ही डेरा डालकर जी भरकर काम क्या न करें? रमणीय स्थान है। मैं उस पर अब तक कोई आठ लाख रुपया लगा चुका हूं पर आमदनी एक पैसे की नहीं है। भले ही आप जमींदारी के विरुद्ध जेहाद छेड़ा करें मैं बेफिक्र रहूंगा। वहां के लोग सचमुच दरिद्र हैं और अंधविश्वास के शिकार हैं। उनमें रहकर समाज कल्याण का कार्य काफी किया जा सकता है। मुझे यह कहते हुए लज्जा होती है कि जबसे मैंने यह जमींदारी खरीदी है, वहां एक बार भी नहीं गया हूं। सच तो यह है कि मैंने उसमें कभी रस नहीं लिया। पर आपको वहां की आबोहवा भी भायेगी और वहां के निवासी भी

अच्छे लगेंगे और हो सकता है कि आप उनके किसी काम ही आ जाएं। पर मैं समझता हूं आप राजेन्द्र बाबू के आदेश के अनुसार आचरण करेंगी और आपको कहा कहा जाना चाहिए इसका फैसला भी वे ही करेंगे।

हां हम आपकी सारी सम्पदा को दिल्ली में सावधानी के साथ सुरक्षित रखेंगे। आप निश्चिन्त रहिये ऐसा कुछ बन्दोबस्त कर दिया जायेगा मानो आपकी चीजें इम्पीरियल बैंक की तिजारी में रखी हों। पर मुझे तो ऐसा लगता है कि आपको उनकी जरूरत कभी नहीं होगी। और कौन कह सकता है आपको सरहदी सूबे में दुबारा जाना पड़े।

आज महादेव का एक पत्र आया है, जिसके साथ उन्होंने अगाथा के नाम लिखे पत्र की नकल भेजी है। बापू के नाम वाइसराय के पत्र की नकल भी है। मन बड़ा उदास हो रहा है। यह सब कुछ इस समय हो रहा है जब अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति इतनी खराब है। ब्रिटेन रूस से संधि की याचना कर रहा है। वह भारत के साथ संधि क्यों नहीं करता? पर जानबुल एक विचित्र जीव है। वह मंथर गति से चलता है और उसका आचरण मूर्खता से ओत प्रोत रहता है। हां यह अवश्य है कि वह किसी न किसी तरह पार पा जाता है। पर क्या यह सद्गुण है? मैं स्वगत यही प्रश्न करता रहता हूं।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक रहता होगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

सुश्री मीराबहन
बम्बई

११२

एबटाबाद
६ ७ ३९

भाई घनश्यामदास

डेयरी फार्म के बारे में किशोरलालजी ने जो फैसला किया है उसकी एक नकल तुमको भेजी गयी है। उसमें जो तुम्हारे करने का है सो कर दीजिये। ऐसे ही मैंने ल मीनारायणजी और परमेश्वरीप्रसाद को लिखा है।

आजकल मैं जो लिख रहा हूं वह मेरे हृदय मथन का शब्द चित्र है। लेकिन हिंसा के इतने अविर्भाव में वाचा बेचारी क्या कर सकती है ? इस खयाल से कई बार कलम बन्द करने का दिल होता है, लेकिन रोकी नही जाती है। दिल की बात सुनाता हूं।

नलिनी बाबू कदियों को छुडाने में कुछ नही कर सकते है। इस प्रदेश में शायद एक मास जायेगा। उससे अधिक तो नही। सम्भव है काश्मीर हो आऊ।

बापु के आशीर्वाद

११३

२ ननबान कोर्ट
एलबर्ट ब्रिज रोड एस० डब्ल्यू० ११
१८ जुलाई १९३९

मेरे प्यारे गाधीजी

महादेव कहते हैं कि मैंने कुछ भी लिखे बिना काफी समय गवा दिया है। मैंने जान बूझकर कुछ नही लिखा, क्योंकि इतने दिन यहां से अनुपस्थित रहने के बाद मैं सभा सोसाइटियों में भाग लेकर और मुलाकातें करके यहां के बारे में आपको पूरी जानकारी भेजना चाहती थी। आपको मेरे समुद्री तार से आश्चर्य हुआ होगा। मैं समझ तो गई थी पर मैं पूरा अभिप्राय जानना चाहती थी और हरिजन से पता चला कि यही क्या खुद भारत में भी लोग वाग यही चाहते थे।

यहां जो-कुछ हुआ उसका सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है यहां वापस लौटने के तुरत बाद मैंने लार्ड जेटलैंड से भेंट की दरख्वास्त की क्योंकि मैं जो बात बाद में सार्वजनिक रूप से बतानेवाली थी पहले उन्हे बताना चाहती थी। मैंने इडिया आफिसवालो से तथा अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से कुल मिलाकर चार मुलाकातें की। यह मैं आरम्भ में ही बता दूं कि यहां मैंने लोगों को मेरी बात सुनने के लिए इतना तत्पर पहले कभी नही पाया था। इसका प्रधान कारण यह था कि मैं वहां से कार्ल हीथ को जो पत्र भेजती रही थी, उनका उपयोग करके उन्होंने भारत सचिव को पूरी पूरी जानकारी दे रखी थी। इस प्रकार जब मैं यहां वापस लौटी,

तो माग खुला पाया। यदि आप इस बात को ध्यान म रखें कि इस समय यहा लोगो का ध्यान 'युद्ध या युद्ध नहा' क प्रश्न पर केन्द्रित है ता आपको मरे कथन का मम समझन म देर नही लगगी। क्योकि यहा वातावरण म जो तनाव है उसकी गुरुता समझना जरूरी है जो देखकर ही समझी जा सकती है। शुरू शुरू म मैंने अपनी सारी कोशिशें उस सूचना को फलान म जो मैं भारत से लाई थी और भारतीय स्थिति को लेकर जो गहरी चिंता का विषय है उसकी यहा जानकारी सम्बन्धित लोगा को देन म लगाई। यहा रियासतो के बारे म बहुत कम जानकारी है और मैंने सब कुछ अपनी आखो स देखा था और कानो स सुना था इसलिए मैं यहा सारी बात वह सुनान की स्थिति म हू। मैंने वर्धा म जो कई एक सप्ताह बिताये थ उनकी बदौलत मुझे पष्ठभूमि का सही भान हो गया था। मैंने दिल्ली म जो समय बिताया वह भी इस अवसर पर उपयोगी रहा। उत्कल म जो कुछ हो रहा था उसका भान मुझे था ही। मेरा राजकोटवाला अनुभव विशेष रूप से काम आया। सबसे पहल मैंने अपनी सारी सूचना भारत ब्रिटेन मत्री गोष्ठीवालो के पास पहुचाई। उसके बाद चथाम हाउस म एक सावजनिक सभा की गई जिसका सभापतित्व लाड लोदियन न किया। एसी सभाआ के द्वारा नयी सभाआ का आग्रह होता है। एक सभा क सभापति लाड सैंकी थ उसक बाद स मैं विशेष रूप स काय व्यस्त रही।

हम लोग जिस लाइन पर चल रहे हैं वह भी बता दू—भारत की स्थिति गम्भीर है सलाह-मशवरे की बेहद जरूरत है। मैंने गोष्ठी क बुलेटिन क निमित्त जो लेख लिखा था उसकी एक प्रति साथ रखनी हू। इस लख म तो आपको पता चलेगा कि मैं किन किन बातो पर जोर देती आ रही हू।

रियासतें

मैंने भारत से कार्ल हीथ को एक पत्र लिखकर एक ऐसी पुस्तिका तयार करने की आवश्यकता पर जोर दिया था जिसम यथासम्भव सारी स्थिति यहा की जनता के सामने पश की जाय। उस पुस्तिका की एक प्रति अलग डाक स आपको भेजी जा रही है। उसकी सामग्री के लिए होरेस अलेक्जण्डर और श्री प्रट विशेष रूप स जिम्मेदार थ। मेरे अनुभव को ध्यान म रखकर मुझस पुस्तिका की भूमिका लिखने को कहा गया था। यह पुस्तिका पार्लियामेंट के गिने चुने सदस्यो के पास भेजी जा रही है। साथ म उन तीन सदस्यो का एक पत्र भी रहेगा जिन्होने पार्लियामेंट भवन म भारत-सम्बन्धी बातें जानने के लिए उस दिन म्यूरिअल लस्टर को तथा मुझे एक बैठक म बुलाया था। वह पुस्तिका समाचार पत्रो और अन्य

व्यक्तियों के पास भी भेजी जायगी। भारतीय नरेशों का अपेक्षित उत्तर जल्दी ही प्रकाशित होने की सम्भावना है यह पुस्तिका उनके उत्तर से उत्पन्न हुई स्थिति से निपटने में काफी उपयोगी होगी। इधर यह सब हो रहा है उधर आपके और वाइसराय के बीच हुए पत्रों के आदान प्रदान की नकलें महादेव ने मुझे अपने पत्रों के साथ भेजी हैं। महादेव का पहला पत्र मिलते ही मैं सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट से भेंट करने गई उस समय लार्ड जेटलैंड बाहर थे। सर फाइण्डलेटर स्टीवार्ट से विस्तार के साथ बातचीत हुई। आप वाइसराय के साथ सम्पर्क बनाये हुए थे इसलिए मैंने इस मामले में सावधानी बरती कि कहीं ऐसा न लगे कि घटना स्थल पर मौजूद आदमी के पीछे यह सब किया जा रहा है। पर मैंने अपना अभिप्राय स्पष्ट कर दिया। मैंने बताया कि यदि राजे नवाब अपनी अपनी रियासत में सुधार लाने के निमित्त आपकी अथवा किसी की सहायता की याचना करें और उन्हें वैसा करने से रोका जाय तो इसको लेकर हम सबको घोर चिन्ता होगी। मुझे यह तो पता लग ही गया कि इस बारे में कोई नीति निर्धारित नहीं की गई है पर मैंने भारत में रहकर इस बारे में जितना कुछ सुना था वह सब मैंने सर फाइण्डलेटर को कह सुनाया।

महादेव की दूसरी चिट्ठी के साथ वाइसराय के उत्तर की नकल आई है और इससे व्याकुलता उत्पन्न हो गई है। महादेव कहते हैं कि आपको घोर निराशा हुई है। होना स्वाभाविक ही है, पर वाइसराय के पत्र को कई बार पढ़ने के बाद भी मुझे यह नहीं लगा कि वह इतना निराशाजनक है। वाइसराय फूंक फूंककर कदम रखते हैं इसलिए क्या आपके लिए उनके पूर ध्यान वाले शब्दों का कुछ अधिक उदार आशय ग्रहण करना सम्भव नहीं है? मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि आपको वाइसराय से मुलाकात करने में देर नहीं करनी चाहिए। आप इस समय सरहद के इलाके में हैं। क्या आपके लिए इस यात्रा के दौरान उनसे मिलने के लिए शिमला जाना सम्भव नहीं है? निर्णय को अस्वीकार करने के सम्बन्ध में आपने जो कदम उठाया था तब से आप उनसे नहीं मिले हैं। मैं यह जानती हूं कि आपने उन्हें पत्र लिखा था पर यदि आप अपनी यह नूतन प्रणाली उन लोगों को समझाना जरूरी समझते हैं जो आपके निकटतम सम्पर्क में हैं तो क्या आप उस वाइसराय-जैसे आदमी को जो भांति भांति के आदमियों से घिरे रहते हैं समझाना जरूरी नहीं समझते? आपके और वाइसराय के बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ है उसे पढ़ने के बाद काल हीथ ने महादेव को एक पत्र लिखा है। उस पत्र में काल हीथ ने कहा है कि आपकी नूतन प्रणाली को हृदयंगम करने के लिए आध्यात्मिक दृष्टि और समय की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी लिखा है कि इस प्रणाली को

तत्काल ग्रहण नही किया गया ता इस पर उन्हें आश्चय नही हुआ है। मुझे इस वात का पक्का यकीन है कि आपका वाइसराय से बातचीत करन का अवसर मिलना चाहिए। आप दोना म क्या कोई सकट उपस्थित होन पर ही भेंट होगी ? क्या आप सीमा प्रान्त स वापस लौटते समय उनसे मिलकर उस प्रश्न का उत्तर तलब नही कर सकते जिसकी उन्होन उपेक्षा कर दी है ? यदि आप उन्हे चकित पायें तो मुझे आश्चय नही होगा। वह आपस यदाकदा ही मिलते हैं जबकि आपक मन की बात जानने के लिए घनिष्ठतर और बार बार के सम्पक की जरूरत है। सम्भव है आपने पहले स ही ऐसा कुछ करने की बात सोच रखी होगी।

सघ की बाबत

मरे देखन म आया है कि यहा लोगो की अब भी यही धारणा बनी हुई है कि सघ की योजना स्वीकार कर ली जायगी। इस धारणा के मूल म प्रातीय स्वायत्त शासन-सम्बधी वस्तुस्थिति है। साथ म भारत स जा सूचना प्राप्त हुइ है उससे भी इस धारणा को बल मिला है। अनेक लोग लोदियन के विचार के हैं। लोदियन इस योजना के दोषा स अनभिज्ञ हैं पर उनका कहना है कि जब योजना अमल म आयगी तो त्रुटिया दूर हो जायेंगी। कागज पर योजना भल ही अव्यवहाय प्रतीत हो अमल म आन पर वह व्यावहारिक सिद्ध होगा। एकमात्र इसी योजना क विभिन्न पहलुओ पर इतने विस्तार के साथ विचार हुआ है। जवाहरलाल क रख का सबका पता है सुभाष बोस की इस धारणा की बात भी सबका मालूम ह कि अल्टीमेटम देन का समय आ पहुचा है। जब मैं इन सारी बातो पर विचार करती हू तो मुझे लगने लगता है कि थोडे बहुत सशोधन के साथ आप योजना को मान्यता प्रदान कर देंगे।

उत्तर म मैं वह बात दुहराना चाहती हू जो आपन मुझस मरी भारत-यात्रा के दौरान कही थी। आपन कहा था कि आप यह विश्वास करने स इन्कार करत हैं कि ब्रिटिश सरकार व्यापक विरोध क बावजूद योजना का भारत पर लाद देगी। आपन अमेरिकी प्रेस रिपाटर का हाल ही म जा लख दिया था मैं उसका उद्धरण द रही हू। पर इस सबका मूल धारणा पर अधिक प्रभाव नही पडता है।

आपन अपन एक पत्र म कहा था कि सघ की बात न अब गौण स्थान ग्रहण कर लिया है। पर जब कुछ ही दिनो म भारतीय नरेशा का उत्तर उपलब्ध हो जायगा ता यह प्रश्न फिर सामन आ खडा होगा। मैं इस बारे म आपका अथवा कायकारिणी को विवश तो नहीं करना चाहूगी पर इतना अवश्य कहूगी कि आप स्थिति को यहा व्याप्त दृष्टिकोण स देखने की कोशिश कीजिए। यह देश इस समय बडी झझट मे फसा हुआ है। इसलिए वह यह जानना चाहेगा कि यदि

सर मारिस ग्वायर यहा आ पहुचे हैं। हम लोग उनके साथ सम्पर्क बनाये हुए हैं। मुझे भारत से एक पत्र प्राप्त हुआ है जिसमे बताया गया है कि आपके राजकोटवाले निर्णय के सम्बन्ध म सर मारिस न व्यग्यपूर्ण उद्गार व्यक्त किये थे। मैं आपको यह बता देना चाहती हू कि उनका स्वभाव इस प्रकार का नही है। वह तो आपको मात्र समझना चाहते हैं। जब वह वापस लौटें तो आप स्वाभाविक ढग स भेंट का आयोजन अवश्य कीजिए।

मेरा प्रेम सन्देश ग्रहण करें।

अगाथा हैरिसन

पुनश्च

तालचर स मुझ सीधे समाचार नही मिलते। वहा की शोचनीय स्थिति अब सुधरी होगी? भूलाभाई यहो हैं पर आगामी रविवार को जा रहे है। उनस कुछ बातचीत हुई थी। मैंन उन्हें यहा की स्थिति स पूरी तरह अवगत कर दिया है।

११४

कलकत्ता

१६ जुलाई १६३६

प्रिय महादेवभाइ

राजनतिक बन्दियो की रिहाई के बारे म नलिनी बाबू के साथ बात हुई थी। उन्होन वही बात कही जिसका मैंने अनुमान लगा रखा था। उन्होने कहा कि यदि इस प्रश्न के साथ उचित ढग से निपटा जाये तो स्थिति म सुधार हो सकता है। इसलिए मैंने तुरत विधान बाबू स यह प्रसग उठाया और कहा कि उन्हे तुरत बन्दियो को समझा बुझाकर भूख हडताल का अन्त करने को राजी करना चाहिए और उसके बाद सरकार से समझौते की बात चलानी चाहिए। विधान नाजिमुद्दीन से मिल लिये हैं और बन्दियो स शायद कल मिलेंगे। देखें क्या होता है।

बापू को बता देना।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

सेवाग्राम

११५

कांग्रेस शिविर,
रामगढ
२८ जुलाई १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके दो पत्र मुझे रांची में मिल गए थे। मैं जवाब देने से रुकी रही क्योंकि मैं आपको कुछ अधिक निश्चित रूप से बताना चाहती थी।

मैं बिड़ला हाउस में बड़े आराम से रही। जब मैं वहां पहुंची तब राजेन्द्र बाबू की तबीयत अच्छी नहीं थी पर मेरे वहां से रवाना होने तक वे ठीक हो गए थे। अब मुझे आशा है कि काफी सफर करने लायक हो गए है यदि आप कलकत्ता में हुए तो उनसे निःसदेह मिलेंगे ही।

मैंने यहां आठ गावों में घूम फिरकर देखा। साथ में अखिल भारतीय चरखा संघ के दो कार्यकर्ता थे। बारिश काफी हो रही थी इसलिए यह कार्य कुछ कष्ट-प्रद सिद्ध हुआ पर यहां की स्थानीय स्थिति के बारे में हमारी काफी जानकारी हो गई। हम इस नतीजे पर पहुंचे कि बारिश के खत्म होने पर ही काम ठीक ढंग से प्रारम्भ किया जा सकता है। किसी गांव में जाकर डेरा डालना असम्भव है क्योंकि वर्षा में रहने योग्य कोई घर नहीं मिलेगा, और हम खुद घर तयार करने से रहे। यहां की आबोहवा भी कुछ अच्छी नहीं है और ऐसी परिस्थिति में मेरे लिए अपना स्वास्थ्य बनाये रखना सम्भव नहीं है। इसलिए हमने यह तय किया कि फिलहाल मैं रुखसत लूं और फिर वापस आकर लगन के साथ काम में जुट जाऊं। इसलिए मैं आज रात सेगांव के लिए रवाना हो रही हूं। सितम्बर के अंत में अथवा अक्तूबर के आरम्भ में वापस लौटने की आशा है। यहां दस्तकारी बिलकुल चला गया है पर उसे पुनर्जीवन प्रदान करना सम्भव है। यहां की स्त्रियां इस कला को सीखने को राजी हैं और कई एक वयस्क स्त्रियों को इस कला की अब भी स्मरण है। वे मोटा कपड़ा पहनती हैं और उन्हें यह भाता भी है। कुछ वृद्ध पुरुषों को अभी तक याद है कि किस प्रकार कभी उनके घरों में ही कपड़ा बुना जाता था जो ५ से ८ साल तक चलता था। कांग्रेस का अधिवेशन आगामी दिसम्बर में होगा, इसलिए समय थोड़ा रह गया है पर हमें इसी बीच कुछ-न-कुछ करना है। हम यह आशा लगाए बैठे हैं कि कांग्रेस रुपये पैसे से कुछ मदद करेगी क्योंकि चरखा संघ के लिए महंगा एक नए केन्द्र का व्यय भार उठाना कठिन सिद्ध होगा। आखिर हम लोगों ने कांग्रेस का नाम रोशन करने के लिए ही यह जगह छांटी है।

बगीचे तो बिहार में अन्य और ऐसे स्थान हैं जो इस काम के लिए उत्कृष्ट सिद्ध होंगे।

आखिर आपकी जमींदारी है कहां पर? किसी दिन वह जगह देखना चाहूंगी। यदि ८ लाख रुपया फूंकने के बाद भी आपकी आमदनी कम की भी नहीं है तो दाल में कुछ काला अवश्य है। मुझे तो ऐसा लगता है कि भगवान् ने आपको और अनेक सद्गुण प्रदान किये पर सार्वजनिक सम्पर्क का गुण प्रदान करते-करते रह गया। किसी दिन हम लोग साथ साथ रहने के इस अंचल का निरीक्षण और वहां के निवासियों का अध्ययन करेंगे।

मन को विषाद से भरनेवाली कुछ बातें अवश्य हुई हैं। भारतीय नेताओं के साथ सम्पर्क स्थापित करने के सुझाववाले बापू के पत्र का वाइसराय ने जो उत्तर दिया उससे दिल बैठ उठा। मैं तो नहीं समझती कि यह वाइसराय का हृदय था। जब बापू ने वह पत्र पढ़ा तो वह उनका मौन दिवस—सोमवार था। मैंने बापू से कहा, "मुझे तो वाइसराय लाचार-सा प्रतीत होता है।" मैं इसकी बातों में उड़ा देना चाहती थी। पर बापू ने एक पुर्जे पर लिखा, "वाइसराय लाचार नहीं है, मेरे जैसे आदमी से तंग आ गया है और मुझसे पीछा छुड़ाना चाहता है।" कल पत्रों में यह अफवाह छपी थी कि बापू महामहिम के साथ मुलाकात करने वाले हैं। बिलकुल वाहियात बात है। वाइसराय बापू से तंग भले ही आ गया हो, पर एक-न-एक दिन उसे बापू के साथ साक्षात्कार करना ही होगा। यदि ये अंग्रेज लोग साथ सम्पर्क के इच्छुक नहीं हैं तो बापू की यह नूतन प्रणाली उन्हें बेतरह व्यस्त करने को काफी है। हमने जो उन्हें दूर रखने की नीति बरती थी उससे उन्हें अच्छा खासा बहाना मिल गया था।

उदासी के चाहे जितने कारण उपस्थित रहें, जहां बापू हैं वहां मैं उदासी के अस्तित्व तक से इन्कार कर दूंगी। ऐसे महामानव को उनके जीवन-काल में ठीक ठीक न समझा जा सके यह कोई अनहोनी बात नहीं है। आश्चर्य तो इस बात का है कि उन्हें इतना कुछ समझा जाना भी सम्भव हुआ। भगवान् ने इस आदमी को कलिकाल में अवतरित किया है इसलिए उसे समझना लोगों के लिए कैसे सम्भव हो सकता है? क्यों, क्या आपकी यह धारणा नहीं है कि वास्तव में यही बात है और इसलिए जो कुछ हो रहा है स्वाभाविक है।

फिलहाल इतना ही। मुझे बिस्तर गोल करना है और पत्र जरूरत से ज्यादा लम्बा हो चला है।

सप्रेम

मीरा

११६

वाइसराय शिविर,
भारत
२८ जुलाई, १९३९

प्रिय मिस्टर गाधी,

मैं आपको यह सुझाव देने की बात सोच रहा था कि आगामी मास जब मैं उड़ीसा से वापस लौटू तो हम दोनो मिलें, पर मैंने पत्रा म देखा कि आप वर्धा वापस लौट रहे हैं। यदि आपके लिए सयोगवश आगामी ५ अगस्त शनिवार को दिल्ली आना सुविधाजनक हो, तो आपसे पुन भेंट करके मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी। मैं ४ तारीख शुक्रवार की सध्या तक दिल्ली वापस आने की आशा करता हू। ६ तारीख का सारा दिन हिसार मे दुर्भिक्ष सम्बन्धी राहत का निरीक्षण करने मे लग जाएगा। इसलिए शनिवार के दिन प्रात काल ११ बजे का समय आपके लिए सुविधाजनक हो तो मुझे आपसे मिलकर बडा हर्ष होगा।

२ आपसे मिलने का कोई विशेष प्रयोजन नही है पर भेंट हुए कई महीने बीत गए हैं अत आपसे पुन मिलने के अवसर का मैं स्वागत करूगा।

भवदीय,
लिनलिथगो

श्री मो० क० गाधी

*

११७

इडिया बुलेटिन

अगाथा हैरिसन के कुछ ससमरण

जुलाई अगस्त १९३९

मैं चौथी बार भारत होकर अभी लौटी हू। जब मैं पिछले अक्तूबर मे यहा से रवाना हुई थी तो किसी ने यह टिप्पणी की थी 'भगवान का लाख-लाख शुक्र,

ससार भर मे भारत ही एक ऐसा स्थान है जहा शाति विराज रही है।" 'शाति' से उसका क्या अभिप्राय था सो मैं नही जानती, पर मत्रीपूर्ण और आतिथ्य सत्कार की भावना स भरपूर इस देश म रहकर मैंने जो धारणा बनाई है उस याद करती हू तो यह टिप्पणी विचित्र-सी लगती है। पिछले एक वष से वहा की देशी रियासतो में जो भारी आन्दोलन चल रहा है क्या उसे शाति कहा जा सकता है ? और सघ-योजना के प्रति वहा जो विरोध और रोष की भावना व्याप्त है क्या उसके अमल म आने स शाति स्थापित हो सकती है ? योजना के आलोचका म मतभेद है यह मैं स्वीकार करती हू। राजा और नवाब उसका अपने निजी कारणा स विरोध कर रहे हैं। हाल म हुई उनकी बम्बई की अनौपचारिक बठक की जो रिपोट मिली है उससे पता चलता है कि उनके दिमाग में क्या चीज काम कर रही है। मुसलमान योजना के विपक्ष म हैं ही। और इस बुलेटिन के पाठका को पता ही होगा कि इस योजना के बारे म राष्ट्रवादी भारत का क्या दृष्टिकोण है।

मैंने वहा जो कुछ देखा और सुना उसे याद करके घोर चिन्ता लेकर लौटी हू। मैं वहा ब्रिटिश महिला समाज के सस्थाना की एक प्रतिनिधि के रूप मे अखिल भारतीय महिला परिषद के बम्बई-अधिवेशन म भाग लेने गई थी। मेरे जिम्म कोई काम नही था। पर उस अधिवेशन म भाग लेकर मुझे जो महत्त्वपूण अनुभव हुआ उसका वणन यदि स्थान रहता तो इस बुलटिन म अवश्य करती। मेरी यह धारणा है कि वहा का महिला-समाज यह अधिक पसन्द करेगा कि मैं आपको बताऊ कि भारत की स्थिति क्या है क्योकि वहा के महिला समाज का आन्दोलन वहा की देशव्यापी स्थिति का ही एक अग है।

वसे मैंने कोई योजना स्थिर नही की थी पर मैं यह अवश्य देखना चाहती थी कि वहा प्रान्तीय सरकारें कसी चल रही हैं। जब मैं वहा १९३६ ३७ मे गई थी, तो निर्वाचन हो रहे थे। मैं सरहदी सूबे मे जाकर वहा के निवासियो तथा वहा स्थित ब्रिटिश लोगो के साथ भी बातचीत करना चाहती थी। मैं चाहती थी कि वहा विभिन्न विचारो के लोगो स मिलू और उनकी विचारधाराओ की पूरी जानकारी हासिल करू। मैं उस काल के अनुभव की बात करती हू तो मुझे अधिकाधिक विश्वास होने लगता है कि सघष म जुटे हुए लोगा के बीच मुक्त रूप से तथा बिना किसी प्रकार का स्वाथ-साधन का उद्देश्य लेकर जाना कितना मूल्यवान सिद्ध होता है। मैं अनुभवा स भरपूर उन दिना की याद करती हू तो मेरा यह विश्वास और भी दृढ होता जाता है कि जब लाग सघष म रत हा तो उनके बीच नि स्वाथ भाव स मुक्त रूप स और अपनी मान मर्यादा की रक्षा करने की

चिन्ता से सर्वथा मुक्त होकर जाना कितना मूल्यवान सिद्ध होता है ! अपनी ऐसी यात्रा के दौरान मनुष्य को इस दृढ भावना से प्रेरित रहना चाहिए कि बड़े-बड़े मामले बलप्रयोग की अपेक्षा शांति के साथ समझौते की बातचीत द्वारा अधिक संतोषजनक और फलप्रद ढग से निपटाये जा सकते हैं।

मैं कुल मिलाकर चार बार दिल्ली गई, अंतिम बार उस समय जब राजकोट वाले उपवास के दिनो मे मिस्टर गाधी ने वाइसराय से बात की थी। इन चारो यात्राओ के दौरान मुझे केन्द्रीय शासन का कठिन कार्य सम्पादन करनेवाले उच्च-पदस्थ अधिकारियो और अन्य अनेक लोगो से बात करने का अवसर मिला। आपको उन शानदार इमारतो में जाकर कुछ आभास होता है कि भारत-जैसे बड़े देश का शासन-कार्य कितनी बड़ी समस्या है। पर यदि आप भारत की सच्ची झाकी लेना चाहते हो तो आपको अन्यत्र जाना होगा। भारत की नब्ज जिन लोगो के हाथ मे है वे इन भव्य प्रासादो में वास नही करते। वे लोग भारत के नेता हैं। उदाहरण के लिए महात्मा गाधी जवाहरलाल नेहरू और सुभाष बोस भिन्न परिस्थितियो में रहते और काम करते हैं। दुर्भाग्य से मेरी भारत-यात्रा के अधिकाश समय मि० बोस बीमार रहे। पर मैंने उनसे कई बार बातचीत की। अंतिम वार्ता अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की मई मास की कलकत्ता की बैठक के तुरत बाद हुई। उस अवसर पर उन्होने मुझे फारवर्ड ब्लाक के गठन की पृष्ठभूमि का दिग्दर्शन कराया। मुझे वे छह दिन भी याद है, जब मैं जवाहरलाल नेहरू के यहा इलाहाबाद मे ठहरी थी। प्रात काल से रात गये तक उनके घर का बरामदा उनके साथ बातचीत करने के लिए लालायित लोगो से भरा रहता था। सयुक्त प्रात मे हिन्दू मुस्लिम तनाव ने उग्र रूप धारण कर रखा था और दोनो ही सम्प्रदायो के लोग उनकी सलाह लेने के लिए आते थे। साथ ही श्रमिको के नेतागण भी, मजदूरो की समस्या का समाधान तलाश करने के निमित्त आते थे।

जवाहरलाल नेहरू इस परिस्थिति से जिस ढग से निपटते उनका धैर्य देख कर मैं आश्चर्यचकित रह जाती थी। उनकी दैनिक डाक काफी भारी होती है। उसमे भारत के कोने कोने से आये पत्र तो होते ही है, विश्व के अन्य अनेक देशो से आये पत्र भी होते हैं। फिर समुद्री तार, देशी तार और टेलिफोन की निरन्तर बजती रहनेवाली घण्टी। इस कार्यभार के ऊपर रियासती प्रजा मण्डल का भार भी आ गया था। मैं प्रजा-मण्डलो के लुधियाना अधिवेशन में भी भाग लेने गई थी। जवाहरलाल उसके सभापति थे। मैं उनकी सभाओ में भी गई थी। गावो मे आयोजित सभाओ मे मेरी विशेष रुचि थी। दुभाषिये ने मेरे बैठने की व्यवस्था सभा मच पर की थी। वहा से मैं सभा मे एकत्रित स्त्री-पुरुषो के चेहरो का अध्ययन

करती थी। वे धूप और गर्मी म मीलो चलकर अपने प्यारे नेता के दर्शन करने आए थे। जवाहरलाल उनसे सीधी-सादी भाषा म बात करते थे और उनकी दनिक समस्याओ की चर्चा करते थे। पर वह उनकी समस्या को विश्वव्यापी समस्या के साथ ग्रथित करने म कभी नही चूकते। उन्होंने पिछले साल स्पेन और यूरोप म रहकर जो अनुभव प्राप्त किया था उसकी उनके मानस पर गहरी छाप थी। मैं यह देखकर आश्चयचकित रह जाती थी कि वह सहज भाव स विश्वव्यापी व्यथा का वणन करते और उनके श्रोताओ का भी यही हो अनुभूति होती दिखाई देती। श्रोताओ की दृष्टि उनके चेहरे पर ही जमी रहती थी। कभी-कभी तो वह दो-दो घण्टे लगातार बोलते रहते थे।

अपनी वर्धा-यात्रा का वणन किन शब्दो म करू ? मैं वर्धा चार दफा गई। वहा से सेगाव जाना होना है जो मिस्टर गाधी का निवास स्थान है। यदि आप वहा कुछ देर तक ठहरें तो देखेंगे कि भारत के कोने-कोने से नेता लोग आकर एकत्र हुए हैं—और भारत ही क्यो ससार के अन्य देशो के विभिन्न श्रेणियो और कोटियो के लोग वहा एकत्र होते हैं। मैंने देखा कि चीन जापान फिलस्तीन जमनी आदि अनेक देशो के लोगो का मेला लगा हुआ है। वे सब अपने-अपने देश की समस्याओ का हल करने म अहिंसा का प्रयोग करने को आतुर थे। और विश्व के कोने-कोने से जो पत्र आते उनम भी ऐसी ही जिज्ञासा का समावेश रहता था।

टेलिफोन कई मील दूर है। दो मील की दूरी पर एक डाकघर खोल दिया गया है जिससे चिट्ठी पत्री भेजने और पाने की सुविधा रहे। यह प्रसन्नता की बात है कि मध्य प्रात की सरकार ने वर्धा से सेगाव तक पक्की सडक बनाने की मजूरी दे दी है। इस खबर स खुश होना स्वाभाविक है क्योकि मैं वर्धा से सेगाव तक ५ मील का फासला बलगाडी स तय करके जाती थी। नागपुर ५० मील की दूरी पर है। वहा हवाई अड्डा है। प्राता के मुख्य मत्री तथा अन्य मत्री अपनी कठिन समस्याओ के हल की तलाश म मिस्टर गाधी के मागदशन और सलाह मशवरे के लिए हवाई जहाज द्वारा आते रहते थे। नित्य प्रति स्त्री-पुरुषो का मेला लगा रहता था। पर उस अवसर पर मिस्टर गाधी को जिस बात ने बेचन कर रखा था वह थी रियासतो की समस्या विशेषकर राजकोट की समस्या। देश भर म फैली हुई रियासतो से लोग वहा अपने दमन की करुण कहानी सुनाने आते रहते थे और खबरो का तो ताता ही लगा रहता था।

मैंने रियासतों के प्रश्न का अध्ययन यही रहकर किया था। अब मैं वहा सशरीर मौजूद थी और मुझे वहा की प्रजा की कहानी अपने कानो से सुनने को मिल रही थी। मैंने जो-कुछ सुना उसे लेकर मैं वर्धा स दिल्ली पहुची और जानना चाहा कि

राजनतिक विभाग और उत्तरदायित्वपूण अधिकारियो को इस सबध मे क्या कहना है। दोनो ही पक्षो मे भले आदमियो का सवथा अभाव नहीं था पर उनके बीच जो खाई खोद दी गई थी उसके दशन करके बडा दु ख होता था। रियासतो की समस्या बहुत जटिल बना दी गई है, और सभी पक्षा क सयुक्त योगदान के द्वारा ही उसका हल खोजा जा सकता है और रियासतो की दशा सुधारी जा सकती है। इसके बाद मैं उडीसा गई और वहा लोगो स मिली। पालिटिकल एजेंट मेजर बजेलगेट की हत्या कुछ ही दिन पहले हुई थी और वहा वातावरण म बेहद तनाव था। मैं अगुल म तथा उसके चारो ओर फले हुए शरणार्थी शिविर देखने गई। यहा तालचर और ढेकानल के स्त्री पुरुष त्रास मे बचने के लिए एकत्र हुए थे। मैंने इन शरणार्थियो की आप बीती पूछी और मेरा हृदय क्षोभ से भर गया। इधर इग्लैड स मेरे पास पत्र आ रहे थे जिनसे पता चलता था कि किस प्रकार यूराप के लोग इग्लैंड मे आकर शरण ले रहे हैं और उनकी सहायता के निमित्त कितना कुछ किया जा रहा है। उडीसा म मैं वैसी ही समस्या का सजीव दशन कर रही थी। वहा के शरणार्थियो को अधिक नही तो कम-से कम वहा के निवासियाकेस्तरके अनुरूप सहायता पाने का अधिकार अवश्य था। पर मेरा खयाल है कि वहा ऐसी स्थिति कभी थी भी, इसका यहा बहुत ही कम लोगा को ज्ञान है—तफसील की बात जानना तो दूर की बात है। यह गनीमत हुई कि राजनतिक विभाग के लोग और काग्रेसी नेताओं ने आपस मे सम्पक स्थापित करके समस्या का हल तलाश करने की कोशिश की है। अभी भी वहा शरणार्थी शिविरो म कुछ शरणार्थी मौजूद हैं जो अत्यत दु ख का विषय है।

भारत की देशी रियासतो के बारे म हमारा अज्ञान बहुत है। हा वहा की कुछ बडी-बडी रियासतो के बारे मे हम थोडा बहुत अवश्य जानते हैं। हमे यह भी मालूम है कि कई नरेशो न अपनी रियासता म सुधार लागू किये हैं। हम यह जानते है कि कई अ य नरेशो न भी प्रजा की जागति से विवश होकर सुधार-काय आरम्भ किया है। पर कुल मिलाकर ५६२ रजवाडे है। इनम से कुछ तो बहुत ही छोटे हैं। इन रजवाडो की प्रजा भी वही सब कुछ चाहती है जिसके लिए ससार भर के स्त्री-पुरुष सघष कर रहे हैं—नागरिक अधिकार मिलने जुलने की आजादी, वाणी की स्वतत्रता, समुचित याय-व्यवस्था और प्रजातत्रीय ढाचे की शासन व्यवस्था जिसमे प्रजा का योगदान रहे। एक सर्वोपरि सत्ता की हैसियत से हमारा यह कर्त्त य हो जाता है कि हम इन सभी ५६२ रियासतो मे इन सारी चीजा की व्यवस्था करें। पर जब तक हमे वहा की वास्तविक अवस्था का पता नही लगेगा तब तक हम कुछ नही कर सकेंगे।

अब लदन वापस लौटने पर देखती हू कि लोगा का ध्यान अकेले भारत को छोड ससार के शेष सभी भागा पर केंद्रित है। क्या हम यह शुतुरमुग जसा रुख तब तक अपनाये रहेंगे जब तक खतरे की घडा सचमुच सिर पर सवार न हो जाएगी? और आनेवाले खतरे की घटनाओ की कोई जानकारी न रहन के कारण उस खतरे से निपटने के लिए सम्भव है हम कोई गलत काम कर बैठें। हम एक नया रास्ता ढूढ निकालना होगा। ऐसा करना नितात आवश्यक है। सघ की योजना को लेकर चलन के बजाय हम भारतीय जनता के साथ सलाह-मशवरा करें तो कसा रहे! भारत के लोग इस योजना के खिलाफ हैं सघ के खिलाफ कदापि नही हैं। मैं जानती हू कि भारत और ब्रिटेन दोनो ही देशो मे राज नीतिमत्ता का अभाव नहीं है इसलिए यदि सभी पक्षा के लोग एक साथ मिलकर वतमान स्थिति पर नये ढग से विचार करें तो एक सम्मानपूण माग खोज निकालना कोई असम्भव कल्पना नही होगी। इस निमित्त यहा के प्रत्यक स्त्री-पुरुष को आग्रह करना चाहिए।

११८

तार

वर्धा

१ अगस्त १९३९

महामहिम वाइसराय
वाइसराय शिविर

अतिशय खेद है कि ५ तारीख को पहुचना सम्भव नही है विशपकर जबकि भेंट का कोई खास प्रयाजन नही है। जरूरी काम से सरहद की थका दने वाली यात्रा की है। २० तारीख के बाद कोई भा दिन सुविधाजनक रहेगा।

—गाधी

११६

वाइसराय शिविर
भारत
(पुरी)
२ अगस्त, १६३६

प्रिय मिस्टर गाधी

आपका तार अभी-अभी मिला। अनेक धन्यवाद। आप वहा से निकल पाने मे जिस कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं, उसे मैं समझता हू। खुद मुझे आशका हो रही थी कि शायद आपके लिए वैसा करना सम्भव न हो और यही हुआ भी। मैं आप पर यात्रा करने के श्रम का भार डालने के मामले मे हद दर्जे के सकोच का अनुभव करता हू, और आपको जब कभी भेंट करने का मेरा सुझाव अनुकूल न लगे तो आप मुझे नि सकोच बता देंगे, इसकी मुझे पूरी आशा है। मैं आपकी सूचना के गलत मानी कभी नही लगाऊगा।

आपने जो यह सुझाव दिया है कि हम इस मास के अतिम दिनो म मिलें सो बडी कृपा की है। जसा कि मैं पहले ही कह चुका हू मुझे किसी खास विषय पर बात नही करनी थी और आपसे दिल्ली मे भेंट करने का मेरा एकमात्र उद्देश्य यही था कि आपसे सम्पक बनाये रखू और बीच-बीच म भेंट होती रह। न मैं यही चाहता हू कि आप शिमला की यात्रा करने का कष्ट उठायें। इसलिए मैं समझता हू कि फिलहाल यही ठीक रहेगा कि भेंट स्थगित रखी जाए। वर्ष के आगामी मासो म जब पहाड से वापस लौटूगा तो आपसे भेंट करन के अवसर की प्रतीक्षा करूगा।

सदभावनाओ के साथ

भवदीय
लिनलिथगो

श्री मो० क० गाधी,
सगाव

१२०

सगाव
२ अगस्त, १६३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

फिलहाल अगाथा को पत्र नहीं भेज रहा हूं पर जो सामग्री इस पत्र के साथ भेजता हूं वह उससे कहीं अधिक रोचक है। मैं तो समझता हूं कि यह अगाथा की भारत सचिव से मुलाकात का नतीजा है। भारत-सचिव ने वाइसराय से कहा होगा कि कुछ-न-कुछ करना जरूरी है। सरहद से वापस आने के बाद इतनी जल्दी बापू के लिए यह यात्रा सम्भव नहीं थी। दिल्ली से वर्धा तक की वापसी यात्रा काफी कष्टप्रद रही। हम लोग अनुशासन कब सीखेंगे? और जब तक लोग-बाग यह पाठ न पढ़ें तब तक बापू की यात्रा के दौरान उनके आराम की कुछ अधिक संतोपजनक व्यवस्था करना जरूरी है। रेलवे बोर्ड ही बापू के लिए एक अलग डिब्बे का इन्तजाम क्यों न करे?

आज और अधिक लिखने का समय नहीं है। बन्दियों के साथ मेरी मुलाकात का विवरण जानकर बापू को घोर वेदना हुई। उन्होंने उनके निमित्त जो संदेश भेजा है आपने देखा ही होगा। श्री सुभाष बोस और श्री शरत बोस के लिए यह कड़वा घूंट साबित होगा।

सप्रेम,
महादेव

१२१

कलकत्ता
४ अगस्त, १६३६

प्रिय महादेवभाई,

मुझे भी आशंका हो रही थी कि ५ तारीख बापू के लिए सुविधाजनक नहीं रहेगी। अब वह वाइसराय से २० के बाद मिलेंगे तो उन्हें शिमला जाना होगा।

जब तुम यहीं थे तो मैंने भविष्यवाणी की थी कि अनशन भग हो जाएगा। दूध बन्द करके पूरा भोजन देना शुरू कर दिया गया है। यह सब किस आश्वासन पर हुआ? मैं तो नहीं समझता कि दो महीने बाद आदोलन चलाने की बात सुभाष गम्भीरतापूर्वक कह रहे हैं। इस सूबे मे बेईमानी का जितना दौर दौरा है, देखते ही बनता है।

मैं यथासम्भव शीघ्र ही जयपुर जा रहा हू। देवदास ने कल फोन करके बताया था कि वह जयपुर के मामले को लेकर 'हिन्दुस्तान टाइम्स' म कडी आलोचना लिखने की बात सोच रहे हैं। मैंने कहा कि बापू की वाइसराय से भेंट होने तक रुके रहें और जब वह दिल्ली पहुचें तो उनकी सलाह लें। पर ऐसा लगता है कि अभी कुछ समय तक बापू का दिल्ली आना सम्भव नहीं है।

मैं भी बापू से मिलने का इच्छुक हू पर मैंने अभी तक यह तय नहीं किया है कि पहले वर्धा जाऊ या वर्धा जाने से पहले जयपुर हो आऊ। क्या तुम कोई सुझाव देना चाहोगे?

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१२२

सेगाव,
(वर्धा होकर)
४ अगस्त १६३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

अगाथा की चिट्ठी भेजता हू।

नागपुर से कोई खबर लाया है कि सारे बन्दी रिहा कर दिए गए हैं। यह जाहिर है कि नाजिमुद्दीन ने बात छिपा ली थी क्योंकि उन्होंने राजेन्द्र बाबू को या मुझे इसका कोई सकेत नहीं दिया था। हा, सुरेन बाबू ने यह अवश्य कहा था

कि यदि विधान सभा के कांग्रेसी सदस्य अन्य सारे मामलों में मंत्रिमंडल का समर्थन करने का वचन दें, तो बंदियों को सहज ही रिहा कर दिया जाएगा। चाहे यह हुआ है या इसी तरह की कोई और बात हुई है पर अब दोनों भाई अपनी कीर्ति का ढिंढोरा पीटने में लगेंगे और बापू को और भी अधिक तीव्रता के साथ उलाहना देंगे।

जिस समय बापू ने बंदियों के बारे में यह वक्तव्य दिया था, तो मैंने उन्हें रोका था। मेरा कहना था कि उससे बंदियों को भी रोष होगा और दोनों भाई भी खीज जायेंगे। वक्तव्य देने के बजाय बंदियों को उत्तर देना बेहतर होगा। पर बापू ठहरे दृढ़ संकल्पवाले और अब सुभाष बाबू ने भड़ककर यह बयान दे डाला। विपदा सिर पर खड़ी नाच रही है और ऐसा लगता है कि हम अपने जीवन-काल में ही अराजकता और अशान्ति देखेंगे।

सर सिकन्दर हयात ने लाहौर स्टेशन पर मुसलमानों के विरोधी प्रदर्शन के लिए क्षमा-याचना का तार भेजा है और जिन्ना ने तार भेजकर इस बात की खोज खबर लेने को कहा है कि ये प्रदर्शनकारी कौन थे और वे क्या चाहते थे।

बापू ने २० तारीख के बाद मुलाकात के सुझाव का जो तार भेजा था उसका वाइसराय ने अभी तक कोई उत्तर नहीं दिया है।

जमनालालजी का स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया है और बापू ने हरिजन के लिए बड़ा युद्ध छेड़ लिया है।

सप्रेम
महादेव

१२३

सेगांव, वर्धा होकर
५ अगस्त १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

बापू के तार का वाइसराय ने यह उत्तर भेजा है। आपकी क्या प्रतिक्रिया है? मैं तो समझता हूं बापू का ५ तारीख को न जाना अच्छा ही रहा।

सुभाष का वक्तव्य देखा। आप सच्चे भविष्यवक्ता निकले। ये लोग बापू और

काग्रेस को श्रेय देने को तयार नही थे। आशा है यह हथकण्डा सबकी समझ म आ जायेगा। वर्दिया को हमने जो आश्वासन दिया था, सुभाष का आश्वासन उससे बढिया कहा रहा ?

अस्तु, अत भला सो भला।

आज और अधिक लिखने को समय नही है।

आपका,
महादेव

१२४

कलकत्ता
७ अगस्त १९३९

प्रिय महादेवभाई

वाइसराय का पत्र खासा अच्छा है। मेरी तो यही प्रतिक्रिया है। वाइसराय न बापू को तो लिखा ही, साथ ही ज्यो ही लेथवेट को वाइसराय से पता चला कि बापू नही आ सकेंगे, उसन मुझे चिट्ठी लिखी। लेथवेट ने इस बात पर भी दुख प्रकट किया कि वह वाइसराय के साथ मेरी भेंट का बदोबस्त नही कर सका, क्योकि उसका खयाल था कि बापू दिल्ली आयेंगे।

मुझे तो तुम्हारा यह अनुमान ठीक नही जचा कि वाइसराय का पहलेवाला पत्र भारत-सचिव के किसी प्रकार के सकेत से आया है। न मुझे इसम अगाथा की पहल ही दिखाई देती है। मुझे तो सभी सूत्रो से यही सूचना मिल रही है कि वाइसराय बापू की बडी प्रशसा करते हैं और मेरी तो यही धारणा है कि बापू के साथ सम्पर्क बनाए रखने की वाइसराय की हार्दिक अभिलाषा है।

पर मैं वाइसराय के इस कथन का स्वीकार करने को तैयार नही हू कि उन्हे बापू से किसी विशेष विषय को लेकर बात नही करनी थी। मैं समझता हू कि कुछ समय बाद वह सघ के बारे म बातचीत करना शुरू कर देंगे, क्योकि वह मामला उत्तरोत्तर निकट आता जा रहा है। नरेशो के मामले म वाइसराय को जो लाचारी प्रतीत हो रही है उसका एक कारण यह भी हो सकता है कि उनके सघ म शामिल होने तक उन्हे बेचैन करने से वे बचना चाहते हैं।

बन्दियों की भूख-हड़ताल का खात्मा पूर्वनियोजित था। मुझे खबर मिली है कि २० ३० को छोड बाकी सबको दो महीने के भीतर रिहा कर दिया जायगा।

बापू ने यह वक्तव्य देकर ठीक ही किया। सुभाष ने उसकी आलोचना भल ही की हो यहा के पत्रो ने तो उस अच्छी भावना से ग्रहण किया है। बापू अपने मन की बात प्रकाश म लाए इसका समय आ पहुचा है। इधर उन्होने ऐसा करना शुरू कर भी दिया है।

यदि कार्यकारिणी कुछ करने पर उतारू हो गई तो नियन्त्रण-सम्बन्धी कार्रवाई का क्या परिणाम होगा इस बारे म मेरी कोई निश्चित धारणा नही है। मुझे इस मामले म परस्पर विरोधी सम्मतिया मिल रही हैं पर मेरी अपनी राय तो यह है कि जो ढर्रा चल रहा है उस ज्यो-का त्यो नही छोडा जा सकता।

अगाथा का पत्र मिल गया। उस अपनी फाइल म रख लू न ? यह मैं इसलिए कह रहा हू कि तुम चिट्ठियो की फाइल नहीं रखते हो और महत्त्वपूर्ण कागज पत्रो को सुरक्षित रखना जरूरी है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१२५

कलकत्ता
६ अगस्त १६३६

प्रिय महादेवभाई

मेरा जयपुर जाने का प्रोग्राम फिलहाल रद्द हो गया है क्योकि पत्रो मे निकला है कि टाड अचानक इग्लैंड के लिए रवाना हो गया है और सम्भव है वापस न आए। मैंने वाइसराय को लिखकर इस बात पर जोर दिया है कि किसी भारतवासी को ही जयपुर का प्रधान मन्त्री नियुक्त किया जाए।

अब मैं वर्धा आऊगा, पर मुझे सिंधिया के काम-काज के सिलसिले म बबई भी जाना होगा। वहा से खबर मिलते ही मैं अपना प्रोग्राम बनाऊगा।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

१२६

सेगाव
१० अगस्त, १६३६

प्रिय घनश्यामदासजी

मैं डा० भरूचा को साथ लेकर जमनालालजी को देखने जयपुर जानेवाला था, पर मेरा प्रोग्राम बना ही था कि बापू बोल उठे "शायद तुम्हारे जाने की जरूरत न रहे। हो सकता है तुम्हारे वहा पहुचने से पहले ही वह रिहा कर दिये जाए।" और इस बातचीत के दो घण्टे के भीतर तार पहुचा कि उन्हें रिहा कर दिया गया है। इस तरह जयपुर का मामला निपट गया। क्या पता, वाइसराय बापू को यही बताना चाहते होगे कि जमनालालजी को रिहा करने की बात सोची जा रही है। मुझे वाइसराय का पत्र तो अच्छा लगा, पर उनका बार-बार यह दुहराना अच्छा नही लगा कि "कोई विशेष प्रयोजन नही है। राजकुमारी कल ही आई हैं कह रही थी कि वे लोग सघ-सम्बन्धी वार्ता आरम्भ करनेवाले हैं। राजकुमारी को इसका आभास क्लेसी स लगा होगा। उन्होने यह भी बताया कि टाड जयपुर स जानेवाला है या शायद चला भी गया है क्योकि उसमे और महाराजा म पटरी नही बठी।

अब यदि बापू अक्तूबर म दिल्ली जाए—और उन्हें जाना ही होगा—तो आप उन्हें पिलानी अवश्य ले जाइए और इसके लिए एक सप्ताह अलग निकाल रखने का अनुरोध कीजिए। इससे उन्हें थोडा-बहुत आराम भी मिल जायेगा।

मुझे डा० विधान से बन्दी भूख-हडतालियो को लेकर दुनिया भर की गन्दी सौदेबाजी का पता चला। विधान कह रहे थे कि सुभाष भारी दाव लगा रहे हैं।

मैंने मन-ही मन कहा कि वह अपनी कब्र खुद खोद रहे हैं।

कार्यकारिणी के सारे के-सारे सदस्य सुभाष के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की माग कर रहे हैं पर शायद जवाहरलाल इसके लिए राजी नही होंगे। वह हद-से-हद यही चाहेंगे कि सुभाष को चेतावनी दे दी जाए। पर मैं कह नहीं सकता, आज तीसरे पहर चर्चा होगी।

बापू बिलकुल स्वस्थ हैं।

सप्रेम
महादेव

पुनश्च

क्या बजरगजी मेरे लिए कलकत्ता के किसी पुस्तक विक्रेता से ब्रटन की गुप्त माग शीर्षक पुस्तक लायेंगे ? मैंने लक्ष्मीनिवास के कमरे म जिसमे राजेन्द्र बाबू ठहरे थ ह्यूम के १२ उपनिषद देखे थे और मेटरलिंक के वे दो महान नाटक मेरी मग्डालेन' और 'मोनावाना —जिनका मैंने आपसे दिल्ली मे जिक्र किया था—देखे थ। आपके केन्द्रीय हॉल के बड़े पुस्तकालय म ये मौजूद हैं।

१२७

कलकत्ता
१४ अगस्त १९३९

प्रिय महादेवभाई,

तुम्हें वाइसराय का पुराना फार्मूला दुहराना अच्छा नही लगा, सो तो मैं समझा पर साथ ही मैंने यह भी पता लगाया है कि वाइसराय कथनी म कम, पर करनी म अधिक विश्वास रखते हैं और मेरा अनुमान है कि जमनालालजी की रिहाई कराने म उन्हें कुछ कठिनाइयो का सामना करना पडा होगा। मैं यह विश्वास करने को तयार नहीं हू कि इसका श्रेय महाराजा को मिलना चाहिए, क्योंकि मैं उन्हें खूब जानता हूँ। उनमे सत्साहस का नितान्त अभाव है।

बापू को उनके पिलानी आने के वचन की याद अवश्य दिला देना, जिससे जब वह वाइसराय स मिलने अक्तूबर म पधारें तो एक हफ्ता अलग निकाल

रखें। बापू पिलानी अक्तूबर म, नवम्बर मे, जब उनको सुविधा हो, आ सकते हैं। हा दिसम्बर मे सर्दी अधिक हो जाती है, जो उनके स्वास्थ्य के अनुकूल नही होगी। पर बापू अभी से इस बारे में स्वय ही अस्थायी रूप से तय कर लें तो उत्तम रहेगा।

सुभाष-काण्ड के बारे मे 'स्टेट्समैन' इधर कुछ बहुत ही सुन्दर लेख लिख रहा है। तुम्हें कटिंग भेज चुका हू। आशा है, वे तुम्हे ठीक लगे होग। मुझे अग्रेज लोग इसलिए अच्छे लगत हैं कि वे चीज का अध्ययन करन का कष्ट करते हैं। इधर 'हिंदुस्तान स्टण्डड' को दखो, दलील का घोडा दौडाने की धुन मे दुनिया भर की असम्बद्ध आलोचना करता रहता है।

विधान यहा आज सुबह ही पहुचे है। यदि उन्होन यह आशा लगा रखी होगी कि स्टेशन पर उनकी काले झण्डो से अगवानी की जायेगी तो उन्हें हताश ही होना पडा। उलटे बडा बाजार के लगभग २०० नागरिक वहा उनका स्वागत करने को मौजूद थे। कहना होगा कि कुल मिलाकर बगाल बात को पचा गया।

पुस्तको क बारे मे बजरगजी से कह दिया है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

१२८

तार

२४ अगस्त, १९३९

प्यारेलाल
मारफत महात्मा गाधीजी
सगाव, वर्धा

क्या तुम बापू के युद्ध विषयक प्रस्ताव का, जो कार्य-कारिणी न पास नही किया है मसौदा भेज सकते हो?

—घनश्यामदास

बिड़ला पाक

१२६

कलकत्ता,
२६ अगस्त, १६३६

प्रिय महादेवभाई

मैं इस पत्र के साथ एक विज्ञप्ति भेज रहा हू जिस पर युद्ध छिड़ जाने पर कई-एक प्रमुख व्यापारी हस्ताक्षर करेंगे। मैं अविलम्ब जानना चाहता हू, तार द्वारा हो तो और भी अच्छा कि बापू को इस सम्बन्ध में कुछ कहना है क्या? विज्ञप्ति के मजमून में हमारा स्वतन्त्र दृष्टिकोण पेश किया गया है, और यह दृष्टिकोण कांग्रेस द्वारा अपनाये गये रुख के अनुरूप ही है। फिर भी हम लोग ऐसा कोई काम नही करना चाहेंगे जो बापू की मर्जी के खिलाफ हो। अतएव बापू की प्रतिक्रिया मुझे जल्दी से जल्दी सूचित करना।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

फेडरेशन ऑफ इंडियन चेम्बर्स ऑफ कामर्स के लिए तैयार किया गया मसौदा

हम एक बहुत नाजुक अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का सामना कर रहे हैं। अधिकांश मानव जाति एक ऐसे महायुद्ध में लिप्त हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न देशों के असंख्य लोगों के प्राण जायेंगे और बेशुमार स्त्री पुरुषों को कष्ट झेलने पड़ेंगे। यो हम भारतवासियों का भौगोलिक दृष्टि से यूरोप के युद्ध से कोई वास्ता नही है पर यह स्पष्ट है कि हम उससे प्रभावित हुए बिना नही रह सकते। एक ऐसे युद्ध का परिणाम, जिसमे ब्रिटेन और साम्राज्य के अन्य देश लिप्त हो हमारे लिए एक से अधिक दिशाओ मे निर्णायक सिद्ध होगा। हम इस प्रश्न पर एकमात्र भारतीय हितो को सामने रखकर विचार करना है। पर भारत के आधारभूत और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हितो को एक ओर ब्रिटेन और फ्रास, तथा दूसरी ओर तानाशाही देशो के परस्पर सघर्ष से अलिप्त रखना सम्भव नही है।

भारतीय लोकमत ने इधर कई वर्षों म भली भांति देख लिया है कि जो शक्तियां ब्रिटेन की शत्रु है वे प्रजातन्त्र और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के उन आदर्शों की भी शत्रु हैं, जिनकी उपलब्धि के लिए भारतवासी सचेष्ट रह हैं। भारतीय लोकमत ने यह भी देख लिया है कि ये शक्तियां जाति की सकीर्ण मनोवृत्ति से प्रेरित हैं जो भारत की सहिष्णु जनता को सर्वथा अरुचिकर हैं। भारत को इस बात पर रोष और व्यथा है कि ब्रिटेन और फ्रांस अबीसीनिया चेकोस्लोवाकिया और चीन जसे छोटे अथवा निबल देशों के पक्ष मे खड़े नहीं हुए। इन देशों को तानाशाही शक्तियों के हाथों अपनी स्वतन्त्रता गवानी पड़ी। इन देशों को उन देशों की आततायी मनोवृत्ति की बलिवेदी पर कुर्बान होना पड़ा। पर यह सतोष का विषय है कि कम स कम अब ब्रिटेन और फ्रांस को यह भान तो हुआ कि इसस स्वय उनके हितों की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि कानून पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था कायम रहे। यह भी सतोष का विषय है कि ब्रिटेन और फ्रांस ने निबल देशों को अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिए सहायता देने का सकल्प किया है।

भारत को अभी स्वराज्य नहीं मिला है उसकी राष्ट्रीय आकांक्षाए अभी तक अपूर्ण हैं। पर वह इस सघर्ष के प्रति उदासीनता का रुख नहीं अपना सकता क्योंकि तानाशाही शक्तियों की विजय का भारत के भविष्य पर साघातिक प्रभाव पड़ेगा। एक ही सास म यह दलील पश करना कि इग्लण्ड या निबल देशों की रक्षा के लिए अथवा प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए लडना चाहिए और साथ ही साथ यह भी कहना कि भारत को ब्रिटेन की सहायता नहीं करनी चाहिए तकसगत तो है ही नहीं असम्भव भी है। पर भारत पर युद्ध का भार लादना जो वतमान शासन विधान के अन्तगत बिलकुल सम्भव है और भारत का स्वेच्छापूर्वक प्रदान किया गया सहयोग प्राप्त करना एक दूसर के प्रतिकूल बात है। जब तक प्रजातन्त्रीय सिद्धान्तों को जिनकी रक्षा के लिए ब्रिटेन लडने को तत्पर रहने का दावा करता है भारत म सतोषप्रद ढग स अमली रूप नहीं दिया जाता तब तक भारत स्वेच्छा पूर्वक सहयोग क स दे सकेगा ? इग्लैंड की कठिनाइयों को सामने रखकर भारत की सुविधाओं की बात उठाने का प्रश्न नहीं है नतिक दृष्टि से स्पष्टीकरण की आकांक्षा है। ब्रिटेन भारत स उच्च आदर्शों के नाम पर अपील करे। पशुबल का सहारा लेकर अथवा भारत की उदार मनोवृत्ति स लाभ उठाकर युद्ध मे उसका उपयोग न करे तथा जिन प्रजातन्त्रीय सिद्धान्तों की रक्षा के लिए वह युद्ध करने की तत्परता का दावा करता है उन्हे भारत म लागू करने से न बचा रहे। यदि पोलण्ड अथवा रूमानिया या टर्की की स्वतन्त्रता इग्लैंड को युद्ध मे घसीट सकती है

तो न्याय और विवेक का यह तकाजा है कि वह भारत की स्वतन्त्रता के निमित्त और भी अधिक प्रयत्नशील हो क्योकि भारत ब्रिटिश साम्राज्य का एक सदस्य है। असल बात तो यह है कि औपनिवेशिक देश तक बिना किसी शर्त के ब्रिटेन की सहायता करने को प्रस्तुत नही हैं। युद्ध होने की स्थिति मे वे इस बात की हठ करेंगे कि उनसे इस बार मे सलाह मशवरा किया जाए कि ब्रिटेन की विदेश नीति क्या रहेगी अथवा वह युद्ध मे किस उद्देश्य को सामने रखकर शामिल हो रहा है। भारत को भी अपने अधिकारो की माग करने का अधिकार है क्योकि वह ब्रिटिश साम्राज्य का एक स्वायत्त शासित देश होने का दावा करता है, और अपने धन जन के उपयोग के बारे म युद्ध उत्तरदायित्व उठाने का इच्छुक है। जसा कि ब्रिटिश प्रधान मन्त्री न जमनी और पोलण्ड के विवाद की चर्चा करते हुए कहा था यदि दोनो पक्षो म एक दूसरे पर भरोसा करने की भावना को पुन जाग्रत किया जा सके तो ऐसा कोई प्रश्न नही है जिसका निपटारा शस्त्रास्त्र का आश्रय लिये बिना न हो सके। जहा तक भारत और इग्लैंड का सम्बन्ध है दोनो के बाद विवाद का निपटारा करने के लिए शस्त्रास्त्र का सहारा लेने का सवाल ही नही उठता। भारत मे प्रातीय स्वायत्त शासन काय ढाई वष तक निष्कण्टक रूप से चलता रहा जिससे यह साबित हो गया है कि यह आपसी मतभेद बातचीत के द्वारा दूर हो सकता है बशर्ते कि दोनो पक्षो म एक दूसरे को समझने और एक दूसरे पर भरोसा करने की भावना पदा हो जाय। हम यह कहने को बाध्य होना पड़ता है कि एकमात्र इस अविश्वास की मनोवृत्ति के कारण ही दोनो देशो के सम्बन्धो म खिचाव पदा हो गया है। यदि अब भी उचित वातावरण बनाया जा सके तो राष्ट्रीय रक्षा के लिए योजना तयार करने म देर नही लगेगी। तब इस योजना को ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा का अविभाज्य अग माना जायगा। हम सौदेबाजी नही चाहते पर हम इतना अवश्य कहेंगे कि जो नीति तानाशाही देशो की मत्री प्राप्त करने की कोशिश म बरती गई थी वह नीति तो ब्रिटिश साम्राज्य म कही अधिक आवश्यक है फलत उसे भारत के मामले म बरतना चाहिए। भारत के पूर्ण स्वराज्य के लक्ष्य म अब शुबह की अब कोई गुजाइश नही है न इस प्रगति को शिथिल अथवा स्थगित ही किया जा सकता है। अब समय आ गया है कि केन्द्र म पूर्ण उत्तरदायित्व शासन स्थापित करने का प्रश्न जिसमे विदेश नीति और रक्षा विभाग भी शामिल हैं अविलम्ब हाथ म लिया जाए। ब्रिटेन मे इस साधारण से मनोवैज्ञानिक तथ्य को हृदयगम करने का विवेक होना चाहिए कि जब वह भारत म सहायता की माग करता है तो उसे भारत म वसा सहयोग प्रदान करने के लिए आवश्यक उत्साह उत्पन्न करने की कोशिश भी करनी

चाहिए। यह सहायता तभी दी जा सकती है, जब ब्रिटेन भारत के अधिकारों को मान्यता प्रदान करने और मांगों को पूरा करने को तत्पर प्रतीत हो। यदि भारत को इस युद्ध में स्वेच्छापूर्वक बलिदान करना है, तो उसे यह प्रतीति होनी चाहिए कि कम से कम अपने घर में तो वह स्वतन्त्रता का उपभोग कर रहा है जिसकी कामना वह संसार के सभी देशों के लिए करता है और जिसके लिए उससे युद्ध में हाथ बटाने को कहा जा रहा है।

मामला इतना गम्भीर और इतने अधिक महत्त्व का है कि उसके निपटारे में देर करने से काम नहीं चलेगा। हमारा सुझाव है कि वाइसराय भारत के सर्वमान्य नेताओं के साथ तुरंत सम्पर्क स्थापित करें और जो राजनैतिक समस्या अभी तक खटाई में पड़ी है उसका हल तलाश करने के हेतु उन नेताओं पर पूरा पूरा भरोसा करें ताकि समस्या का स्थायी हल खोजा जा सके। हमें इस बारे में कोई संशय नहीं है कि यदि उत्तरदायित्वपूर्ण भारतीय लोकमत से अपील की जायगी तो वह उसे ग्रहण कर आपसी मतभेद भुला देगा और घरेलू संघर्ष का अन्त कर देगा। पर उसके लिए यह आवश्यक है कि ब्रिटेन इस बात का प्रमाण दे कि वह नेकनीयती के साथ भारत को ब्रिटिश साम्राज्य में बराबर के साझीदार की हैसियत से स्वीकारता है।

२६ अगस्त १६३६

१३०

तार

वर्धागंज
२८-८-१६३६

घनश्यामदास
मारफत 'लकी',
कलकत्ता

कांग्रेस के अलावा बापू को भी नापसन्द है। वक्तव्य में आमूल परिवर्तन की जरूरत है। अभी जल्दी नहीं है।

—महादेव

१३१

तार

३० ८ १९३९

महादेव देसाई
मगनवाडी
वर्धा (मध्य प्रांत)

यापारी समाज के दृष्टिकोण का ध्यान म रखकर हमार हिताथ बापू की सलाह तुरत भेजो। मैं वर्धा आऊं तो अपने पीछे समाज के माग दशन के लिए कुछ छोड जाना चाहूंगा।

—घनश्यामदास

बिडला ब्रदस
कलकत्ता

१३२

सेवाग्राम
वर्धा
३० अगस्त १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

आपको फोन पर पाने के लिए घण्टा इतजार करना पडा तब कही आपसे बात हो सकी। मेरे विचार म मगनवाडी म टेलिफोन की बहुत जरूरत है साथ ही मेरे लिए एक छोटी-सी आस्टिन गाडी की भी। पर बापू को राजी कौन कर ? हो आप किसी न किसी दिन भले ही कर सकें। मैं रात भर मगनवाडी म ठहरा रहा और तडके ही आपको फिर फोन किया।

मैंने बापू से कहा कि आप मुझसे विज्ञप्ति का मसौदा तयार कराना चाहते हैं। बोले, नही सबसे अच्छा यही रहेगा कि आप यहा आ जाए। विज्ञप्ति की

एसी जल्दी क्या है, और ऐसा लगता है कि युद्ध छिडने स रह जाय। यदि न छिडे तो यह हमार हित म होगा। अयथा हमारी पोल खुल जायगी।

राजद्र बाबू बहुत बीमार है चल फिर भी नही सकते। तब फिर कायकारिणी की बठक राची म क्यो करें ? हम उह तग न करके उनके बगर ही कायकारिणी की बठक कर सकते है। पर हम युद्ध प्रेमी कतई नही हैं ! यदि हम युद्ध समाप्त होने क बाद भी मिलेंगे तब भी हम बेअसर रहग मानो कुछ हुआ ही न हो !

सप्रेम,
महादेव

१३३

कलकत्ता
३१ अगस्त १९३९

प्रिय महादवभाई

अतर्राष्ट्रीय स्थिति म अब भी तनाव बना हुआ है। मन कहता है युद्ध नही होना चाहिए पर जा दिखाई दे रहा है उससे ऐसी आशा नही बधती। यदि युद्ध छिडा तो मैं तुरत दिल्ली या वर्धा जहा भी बापू होगे, वहा के लिए चल पडूगा। यदि युद्ध न भी छिडा तो भी मैं कुछ दिन बाद बापू के दशन करना चाहूगा। समय पर हम और तुम दोनो मिलकर प्रोग्राम बना लेंगे।

सबकी कामना है मेरी भी यही कामना है कि इग्लड की विजय हो। यह आम धारणा है कि इग्लड के पक्ष म याय है। दूसर इग्लड की पराजय का भारत पर साघातिक असर पडगा जो कोई नही चाहता। क्या बापू न पालैंड को शुभ *कामना भेजकर अपने-आपको आध्यात्मिक रूप से वचनबद्ध नही कर लिया है ?*

पर यदि हमारी सहानुभूति इग्लड के साथ है तो जनता यह भी चाहती है कि राजनतिक समस्या का समाधान ढूढने म देर न की जाए। मूर ने दो बहुत ही सुदर लख लिखे हैं जिनमे उसने कहा है कि केद्र मे उत्तरदायित्वपूण मत्रिमडल अविलम्ब बनाया जाय। जिसम रक्षा और विदेश विभाग का उत्तरदायित्व भी भारतीय मत्रियो को सौंपा जाए। उसन मुझे बताया कि वाइसराय की प्रतिक्रिया

अनुकूल है। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि संकट आ पड़ा हुआ, तो समझौता होने में कोई कठिनाई नहीं होगा। इस प्रकार स्थिति यह है कि हम इंग्लैंड की विजय की कामना करते हैं साथ ही यह भी चाहते हैं कि हमारे राजनैतिक मतभेद अविलम्ब दूर हो जाएं। मैं किसी प्रकार की सौदेबाजी की भावना से प्रेरित नहीं हूं। मेरे विचार में हमारी समझौते की मांग का तालमेल ब्रिटेन के प्रति हमारी जो सहानुभूति है उसके साथ बठाया जा सकता है।

अब मैं अपनी स्थिति बताऊं। बापू का रुख कुछ इतना आध्यात्मिक और साधुतापूर्ण है कि मेरे जैसे व्यक्ति के लिए उसके अनुरूप आचरण करना सम्भव नहीं है। साथ ही मुझे कार्यकारिणी के प्रस्ताव के प्रति भी विशेष मोह नहीं है। शायद हमारे लिए यह कहना हमारी ईमानदारी का अधिक उत्तम प्रमाण होता कि यद्यपि हम इंग्लैंड की विजय चाहते हैं तथापि हम तब तक युद्ध में भाग लेने से बचे रहेंगे जब तक समझौता नहीं हो जाता। जो भी हो युद्ध छिड़ते ही यहां का व्यापारी समाज एक विज्ञप्ति जारी करेगा। उस समय मैं शायद वर्धा में होऊं इसलिए मैं यहां के लोगों के पथ प्रदर्शन के निमित्त कोई मार्गदर्शक सामग्री छोड़ जाना चाहता हूं। इसीलिए मैंने कल तुम्हें तार दिया था कि बापू का पथ प्रदर्शन भेजो जिसे मैं वर्धा रवाना होने से पहले यहां छोड़ जाऊं।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१३४

तार

वर्धागंज
३१ अगस्त १९३९

घनश्यामदास
लकी
कलकत्ता

मेरी दृढ़ सलाह है व्यापारी-समाज तब तक खामोश रहे जब तक नतीजा सचमुच प्रकाश में न आ जाए।

१३५

तार

कलकत्ता
१ ६ १६३६

महादेवभाई देसाइ,
मगनवाडी
वधा (मध्य प्रात)

फोन पर पान की चेष्टा की। कल प्रात काल सात बजे पी के ११६६ पर फोन करा। बापू स कहा मिलू, दिल्ली म या वधा मे।

—घनश्यामदास

बिडला ब्रदस लिमिटेड

१३६

गामा
८ सितम्बर १६३६
प्रात काल १० ०५

प्रिय घनश्यामदासजी

तो अब हम राजेन्द्र बाबू के पास है। मेरे सुपुद जो काम किया गया था, उस पूरा कर पाना कठिन होता पर राजेन्द्र बाबू की कृपा से सब कुछ सहज ही हो गया। वह जिस प्रकार इष्ट मित्रो से घिरे रहते हैं उस कारण यह असम्भव हो जाता पर अत म शातिपूवक बातचीत सम्भव हो ही गई और उनके जाने क निणय की घोषणा कर दी गइ। वह अब पहले की अपेक्षा कही अधिक स्वस्थ है और यात्रा का कष्ट झेल सकेंगे। उन्होंने बताया कि चक्रधरपुर का माग रात म बडा खतरनाक है इसलिए जोखिम उठाना ठीक नही है। वह चक्रधरपुर जाने का

तयार भी हो गए थे, पर सबने शोर मचाना शुरू कर दिया। मुझे एक बिहारी मोटर चालक का गत सायंकाल का अनुभव था, इसलिए मैंने चक्रधरपुर का आग्रह नहीं किया। फलत हम साढ़े बारह बजे पहुंचनेवाले बम्बई मेल की प्रतीक्षा कर रहे हैं कुछ मिनट बाकी हैं सोचा उनका उपयोग यह पत्र लिखकर ही क्या न किया जाए।

बिहारियों ने सुबह की गाडी में मुझे एक लंच से वंचित कर दिया। मैंने सोचा था अभी काफी समय पडा है इसलिए मैंने गया में १२ बजे के लंच का आडर दे दिया। वास्तव में मैंने ११ बजे के लिए कहा था पर वेटर ने कहा या तो १० बजे या १२ बजे। मैंने १२ बजे को पसन्द किया। लंच के वक्त का इंतजार कर ही रहा था कि देखता क्या हूं कि लंच के बजाय प्लेटफार्म पर मेरे इन्तजार में एक खासी भीड जमा है। गाडी रुकने की देर थी कि भीड ने कहा राजेन्द्र बाबू का फोन आया है उतरकर हमारे साथ चलिए। मैंने कहा भलमानसो मुझे अपना लंच तो खा लेने दो आता ही होगा और इसके अलावा क्या आप लोगों को पक्का यकीन है कि कोडरमा में मुझे लेने के लिए मोटर नहीं आई होगी ?' मगर उनका जवाब यही था कि राजेन्द्र बाबू का टेलिफोन आया है। मोटरवाला बंदोबस्त रद्द कर दिया गया है स्टेशन पर खाना खाने की बात तक मत सोचिए घर पर थाली ठंडी हो रही है। मैं लाचार था उतर पडा।

मैंने उनसे बहस की जिरह की कहा इस तरह आप लोग समय की बचत करने के बजाय और अधिक समय नष्ट करेंगे। मेरा पहले दर्जे का टिकट बरबाद करेंगे। लंच से तो वंचित कर ही दिया साथ ही एक गलत पटाखा फूंकेंगे सो जुदा। पर कौन सुनता है ? वे अडे रहे कि एक घण्टे का बचत होगी। पर मोटर का ड्राइवर मेरे तर्क से सहमत था। उसे रास्ता मालूम नहीं था। वह रास्ते में यह पूछने में लगा रहा कि गाडी किधर को मोडनी चाहिए। मुझे मालूम हो गया कि मुसीबत सिर पर सवार है। मैं डरने लगा कि इस तरह तो रामगढ पहुंचते पहुंचते रात हो जाएगी और हमने सचमुच ११० मील की यात्रा १८० मील का सफर करके पूरी की। सफर और भी लम्बा हो जाता पर हजारीबाग की एक मोटर जिसमें एक पुराना परिचित बिहारी राजबंदी था पास से होकर गुजरी। गाडी में से एक पुलिस इंस्पेक्टर उतरा और बोला हुजूर आपने गया में उतरकर गलती की। मुझसे समय की बचत बिलकुल नहीं हुई। मैंने आपको गया में उतरते देखा था और मुझे मालूम था कि आपके पास कोडरमा का टिकट है। मैं भी उसी गाडी में सवार था और हम लोग हजारीबाग रोड स्टेशन पर उतरे थे। मैंने कहा जब आप रास्ता बताइए किधर को जाना है।

अब पत्र समाप्त। बम्बई मेल आ गया है। जब गाडी मुगलसराय से चल पडी, तब कही मेरी निगाह आपके बिस्तरे पर पडी जो आप छोड गए थे। आपका मेरा गया से भेजा तार मिल गया था न ? आशा है, आपका बिस्तरा आप तक सही-सलामत पहुच जाएगा।

मणि पर खफा मत होइए, कम-से-कम उसका पत्ता मत काटिए। बेचारे का घर पर इतनी सारी चीजें छोड आने पर डाट पड चुकी थी नतीजा यह हुआ कि वह बिस्तरा भी छोड आया।

सप्रेम
महादेव

१३७

निजी

सेगाव
१० सितम्बर १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

जमनालालजी की गादी पर दुनिया भर के लोगो का जमघट था इसलिए मैं टेलिफोन पर आपको कुछ अधिक नही बता सका। कल बापू ने कार्यकारिणी के विचार के लिए एक और सुझाव पेश किया, यह मानकर कि कार्यकारिणी के सदस्य या मन्त्रिगण शातिवादी नही हैं। उन्होने कहा कि न तो अडगा लगाना चाहिए न असहयोग ही करना चाहिए। मन्त्रियो के लिए जहा तक सम्भव हो उन्हें काम चलाते रहना चाहिए तथा जिस हद तक सहयोग देने को अत करण गवाही दे देते रहना चाहिए। उन्होने बताया कि देश किसी प्रकार का प्रतिरोध करने की दशा मे नही है। दमन होगा और खुलकर होगा। जैसा कि जयप्रकाश ने कहा है हमे सीने पर गोलिया खाने के लिए सैकडो जयप्रकाश मिल जायेंगे पर फिर भी यह बलिदान निष्प्रयोजन होगा। अन्य विदेशियो की अपेक्षा अग्रजो से निपटना अधिक सहज है। इस युद्धाग्नि मे साम्राज्यवाद इतनी बुरी तरह झुलस जाएगा कि उनके लिए नये सिरे से उभरना सम्भव नही होगा। हमारे लिए सबसे अच्छी नीति यही रहेगी कि अडचन डालने के बजाय हाथ बटाए। बापू ने यह

सुभाष और जयप्रकाश ने उत्तर म कहा था। सुभाष का कहना था कि उनकी धारणा ह कि जनता दशव्यापी अहिंसात्मक प्रतिरोध क लिए तयार है। जयप्रकाश का कहना था कि अग्रेजो की मदद करने की अपेक्षा वह वशरहित मृत्यु को अधिक पसद करेंगे। बहस जारी है क्या नतीजा निकलगा सो अभी स कहना मुश्किल है। पर यह निश्चित ह कि वामपथियो के साथ खुल्लमखुल्ला सम्बन्ध विच्छेद होगा। कायकारिणी न भी अभी कोई निश्चित मत नहीं बनाया ह। खुद मुझे यह समझने म कठिनाई हो रही ह कि बापू न जिस ढग की तटस्थता सुझायी है उस मत्रिगण किस तरह अमल म लायग। मुझे तो एसा लगता ह कि इस सुझाव को मान्यता प्राप्त नहीं होगी।

मैंने वल्लभभाई को आपका इस सुझाव की बात बताई थी कि बापू को सर्वे सर्वा नियुक्त किया जाए। वह बोले कि इस सुझाव को अंगीकार करने म कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए पर सब कुछ जवाहरलाल पर निभर करता है जो आज तीसरे पहर पहुच रहे है। जवाहरलाल क जो मित्र यहा पहले से ही मौजूद है वे यह मानने को तयार नहीं हैं कि जिस ढग के वक्तव्य की चर्चा है वसा वक्तव्य जवाहरलालजी न वास्तव म दिया था। देखें क्या होता है। बापू कायकारिणी स यही अनुरोध करने म लगे हुए है कि वह उन्ह छोड दे और जो ठीक समझ वह करे।

मैंने आपका बिस्तरा गया म्यूनिसिपलिटी के चेयरमन और वहा के एडवोकेट श्री मथुराप्रसाद के पास जमा कर दिया था और कह दिया था कि वह उसे अगल दिन आपके सुपुर्द कर दें अथवा उसे रल स पासल कर दें। मैंने उन्ह आपका ठिकाना दे दिया है। आपको मैंने गामो स्टेशन से एक पत्र लिखा था मिला क्या ?

सप्रेम,
महादेव

पुनश्च

क्या आपके इधर आने की कोई सम्भावना है ?

१३८

कलकत्ता
११ सितम्बर, १६३६

प्रिय महादेवभाई

मेरे मनेजर ने कोडरमा कार भेजी थी, पर तुम वहा नही उतरे, इसलिए कार खाली वापस लौटी।

तुमने मेरा विस्तरा किसके पास छोडा सो नही जानता पर शायद वह मित्र मेरे पास समय पर भेज ही देगा।

आज सुबह तुम्हे फोन पर पाने की कोशिश की थी तुम नही मिले। आशा है, कार्यकारिणी बापू को सारे अधिकार सौंप देगी और इस सम्बन्ध मे प्रस्ताव पास कर देगी।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

१३९

कार्यकारिणी समिति का युद्ध विषयक प्रस्ताव

कांग्रेस ने देश को विदेशी प्रभुता से मुक्त करने के हेतु १६२० से जान बूझकर अहिंसा की नीति अपना रखी है। इस नीति की सार्थकता के मामले मे उतार चढाव आए, पर कांग्रेस यह साबित करने मे सफल हुई है कि भारत ने अपने लक्ष्य की दिशा मे जितनी प्रगति अहिंसा की नीति का अवलम्बन करके की है उतनी पहले कभी नही हुई थी। न उतना जन जागरण ही कभी देखने मे आया था जितना अहिंसा की नीति के बाद हुआ। पर साथ ही यह स्वीकार करना होगा कि अहिंसा की भावना जन साधारण मे उतनी गहराई से प्रवेश नही कर पाई है

जितनी करनी चाहिए थी। यह भी परिताप का विषय है कि काग्रसी मत्रियो को शाति बनाए रखने के हेतु पुलिस और फौज की सहायता लेनी पडी और लाठी प्रहार तथा गोली चलाने तक की अनुमति देनी पडी। कार्यकारिणी को इन्ही परिस्थितियो मे काग्रेस के प्रस्तावो का अर्थ लगाने का आवाहन मिला है। युद्ध के बादल मडरा रहे हैं यह वस्तुस्थिति भी सामने है। काग्रेस की यही कामना है कि विश्व भर मे शाति का राज्य रहे। यदि दुर्भाग्यवश युद्ध छिड गया, तो उससे न तो भारत का मगल होगा न ससार के किसी अन्य देश का ही। युद्ध का अन्त तथाकथित विजेताओ की विजय के रूप मे कदापि नही होता। उसका अत सभ्यता की हामी भरनेवाले ढाचे के सम्पूर्ण विध्वस के रूप मे ही होता है। फलत काग्रेस ने निरपेक्ष रहने का निर्णय किया है। वास्तव मे जब तक भारत मे विदेशी शासन मौजूद है युद्धरत देशो मे उसकी आवाज का कोई महत्त्व नही है। स्वय काग्रेस ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ युद्ध मे ही लगी हुई है यद्यपि उसका यह युद्ध शातिपूर्ण उपायो द्वारा जारी है। सब दृष्टियो से विचार करने के बाद काग्रेस का यह निर्णय है कि देश मे युद्ध की जो तैयारिया हो रही हैं उनसे किसी प्रकार का सरोकार न रखा जाय। भारतीय सेना को जिस प्रकार सिंगापुर मिस्र तथा अन्य देशो को भेजा गया है इसके प्रति काग्रेस उदासीन नही रह सकती। कार्यकारिणी का काग्रेसी मत्रियो से कहना है कि वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी प्रकार की युद्ध प्रवृत्तियो के साथ अपना सम्बन्ध न रखें और न ब्रिटिश सरकार द्वारा अपनाई गई किसी भी प्रकार की युद्ध सम्बन्धी कारवाइयो को स्वीकार करें। कार्यकारिणी जनता से अपील करती है कि वह युद्ध सम्बन्धी अफवाहो से विचलित न हो युद्ध सबधी प्रवृत्तियो के साथ कोई सहयोग न करे इसके विपरीत वह इस विश्वास द्वारा अनुप्राणित रहे कि वर्तमान युद्ध मे काग्रेस के भाग न लेने से भारत की किसी भी प्रकार की क्षति नहीं होगी क्योकि भारत युद्ध मे भाग लेने का इच्छुक नहीं है।

१४०

कलकत्ता
१५ सितम्बर १९३९

प्रिय महादेवभाई,

कार्यकारिणी ने जो प्रस्ताव पास किया है उससे मुझे निराशा हुई। उसमे

एक ही बात इतनी बार दुहरायी गयी है कि सारा-का-सारा प्रस्ताव अनर्गल-सा लगता है। उसमे जो कुछ कहा गया है उसे संक्षेप मे भी कहा जा सकता था। लगता है कि इस प्रस्ताव की रचना मे बापू का कोई हाथ नही है। भाषा जवाहरलाल की लगती है। परन्तु क्या इतना ही यथेष्ट है या अगले कदम की बात भी सोची जाएगी ? मैं नही समझता कि ब्रिटिश सरकार इस वक्तव्य का कोई उत्तर देगी। पर किसी प्रकार के आश्वासन की जरूरत हो तो इसके लिए बापू ही एकमात्र उपयुक्त व्यक्ति हैं। आशा है बापू वाइसराय से एक बार फिर मिलेंगे और कार्यकारिणी अपनी कार्यशीलता वक्तव्य पर वक्तव्य जारी करते रहने तक ही सीमित नहीं रखेगी। उभय पक्षो के लिए पारस्परिक सम्पर्क जरूरी है। और अब जबकि वाइसराय ने सघ की कार्यान्विया करने की घोषणा कर दी है जो कि वास्तव मे बापू और उनके पारस्परिक सम्पर्क का ही परिणाम है तो मेरी समझ मे अगला कदम अपेक्षाकृत अधिक सहज हो जाएगा। इस स्थिति से केवल बापू ही निपट सकते हैं।

पिछले चार दिनो मे मैं तुम्हे टेलिफोन पर पाने की निरन्तर असफल कोशिश करता रहा। मगनवाडी मे टेलिफोन लगने की बात थी, क्या हुआ ?

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

१४१

सेगाव वर्धा होकर
१५ ६ ३९

प्रिय घनश्यामदासजी

दो दिन पहले मैं आपके टेलिफोन काल पर दौडा आया पर काल कैंसिल करनी पडी। यहा तुरत फुरत मेरे लिए खबर भेजने का बन्दोबस्त करने का किसी पर भरोसा नही किया जा सकता और मेरे पहुचते पहुचते काल कैंसिल हो जाती है। आपको विकल्प के रूप मे वल्लभभाई को बुलाना चाहिए था।

आप जानते ही हैं कि क्या हुआ। जो कुछ हुआ उसका होना अनिवार्य था। कार्यकारिणी को बापू का प्रस्ताव पसंद न था। वल्लभभाई तथा अन्य लोगों में बापू के प्रस्ताव को लेकर जनता के सामने उपस्थित होने का साहस नहीं था। तब बापू ने कहा कि उन्हें जवाहर के प्रस्ताव पर ध्यान देना चाहिए। जवाहरलाल १४ पन्नों का एक प्रस्ताव लेकर आए और कार्यकारिणी से उसकी स्वीकृति चाही। कार्यकारिणी ने उस पर तीन दिन तक विचार विमर्श किया और थोड़े बहुत संशोधन के बाद स्वीकृति दे दी। मौलाना और वल्लभभाई दोनों ने बापू पर जोर डाला कि वह अब तक जो राजनीतिक संन्यास लिए हुए हैं उसका परित्याग करें। दूसरे शब्दों में उनसे कहा गया था कि समझौते की बातचीत का श्रीगणेश बापू करें अर्थात बापू ही इस मामले में मध्यस्थ हों। बापू ने कहा कि उनके लिए इस पर राजी होना सम्भव नहीं है क्योंकि कांग्रेस के बाहर अब वह सरकार के साथ समझौते की शर्तें तय करने नहीं जा सकते। वह जिस ढंग से समझौते की बातचीत चलाते हैं जवाहर का ढंग उससे भिन्न प्रकार का है। अतः इसका भार जवाहर के ही कंधों पर छोड़ देना चाहिए। हम लोगों में इस बात को लेकर भी मतभेद था कि यदि सरकार ने समुचित उत्तर न दिया तो हमारा अगला कदम क्या होगा। इसके बावजूद मौलाना और वल्लभभाई तथा अन्य लोग बापू पर जोर डालते रहे। तब फिर बापू ने जवाहर से कहा कि अपनी स्वतंत्र राय दो। जवाहर ने यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं किया कि समझौते की बातचीत चलाने की कला से बापू अनभिज्ञ हैं। उनके प्रतिपक्षी उनकी उदारता का हमेशा से लाभ उठाते आए हैं इसलिए सरकार से समझौता करने का काम वह बापू के सुपुर्द नहीं करना चाहेंगे। बापू ने कहा कि बिलकुल सच्ची बात है। यद्यपि समझौते की कला की अनभिज्ञता के कारण उनके द्वारा राष्ट्र की अभी तक कोई क्षति नहीं हुई है इसका उन्हें पूरा यकीन है। पर बापू इस बात पर अड़े रहे कि अब जब कि कार्यकारिणी ने जवाहर के प्रस्ताव को थोड़ा-बहुत छोटा करने के बाद मंजूरी दे दी है तो नेतृत्व की बागडोर भी उन्हें ही संभालनी है और सरकार से समझौते की बात भी चलानी है तथा यदि बातचीत असफल रहे तो लड़ाई का संचालन भी उन्हें ही करना चाहिए। लड़ाई का संचालन कैसे हो यह कोई नहीं जानता। स्वयं जवाहरलाल भी इस मामले में कोई निश्चित धारणा नहीं बना पाए हैं। पर हम लोगों ने एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण निर्णय कर डाला है, १९२९ के लाहौरवाले निर्णय से भी अधिक महत्त्वपूर्ण। चूंकि १९३० में सत्याग्रह के संचालन का भार बापू के कंधों पर था अब जवाहर के कंधों पर आ पड़ा है और यदि देश लड़ाई पर कमर कस ले तो बापू स्वयं नहीं जानते कि उसकी सहायता किस तरह की जाए,

क्या कि उन्हें दृढ़ विश्वास है कि लड़ाई के अनुकूल वातावरण आज नहीं है। बड़ी भयावह स्थिति है, पर कोई विकल्प भी तो नहीं था। क्योंकि कार्यकारिणी में बापू द्वारा सुझाया गया मार्ग अपनाने का साहस नहीं था और जवाहर में अपनी नीतियों सिद्धान्तों का सत्साहस प्रचुर मात्रा में मौजूद था। भविष्य अंधकारमय और विषादपूर्ण है और ऐसा लगता है कि हम तीन वर्ष या इससे भी अधिक समय तक शायद भटकना पड़ेगा। पर हम इसी के अधिकारी हैं। हमने न तो बापू की अहिंसा को हृदयंगम किया है, न अपनी ही कोई अन्य नीति निर्धारित की है।

जो-कुछ घटित हुआ यह उसकी एक झलक मात्र है। सम्यक और विशद वर्णन के लिए एक पुस्तक लिखनी पड़ेगी। ये दिन बापू के लिए परीक्षा और व्याकुलता के दिन हैं। पर वह कार्यकारिणी को नेतृत्व की बागडोर जवाहर को सौंपने की सलाह देने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं सुझा सके।

सरकार की क्या प्रतिक्रिया होगी, इसकी भविष्यवाणी करने का दुस्साहस नहीं करूंगा। सम्भव है सरकार चुप्पी साध ले या उसकी प्रतिक्रिया हो भी तो प्रतिकूल प्रतिक्रिया हो (जिसकी सम्भावना अपेक्षाकृत अधिक है) ऐसी स्थिति में हम भी निर्णय करना होगा कि क्या करना चाहिए। हम यही आशा रखनी और प्रार्थना करनी चाहिए कि इस गम्भीर संकट की घड़ी में बापू की सलाह पर ही चलने का सबको मति देगा।

सप्रेम
महादेव

१४२

कलकत्ता
२६ सितम्बर १९३९

प्रिय महादेवभाई,

वास्तव में कार्यकारिणी के प्रस्ताव का बापू ने जो खुलासा किया है उसे मल्लिनाथ के भाष्य के नाम से पुकारना ठीक होगा। बापू की टिप्पणी मूल से कहीं उत्कृष्ट है। पर जैसा कि मैं अपने कलवाले पत्र में कह चुका हूं इस समय जिस चीज की नितान्त आवश्यकता है वह है पारस्परिक सम्पर्क। वक्तव्य या पत्र द्वारा वार्तालाप करने से काम नहीं चलेगा। यह अच्छा है कि बापू इस दिशा में सचेष्ट हैं।

कल रात सरदार के साथ बातें हो रही थी। उन्होने बताया कि तुमने सेगाव मे स्थायी रूप से डेरा डाल दिया है। काम का क्या हुआ? सरदार मे मोर्चा सभालने की प्रवृत्ति की झांकी मिली और मुझे उनके राजकोटवाले दिनो की याद आ गयी। इसके विपरीत बापू का वक्तव्य बडी सात्वना प्रदान करता है। स्थिति कुछ ऐसी है कि उससे निपटने मे बडी सावधानी की आवश्यकता है, और मुझे इसमे कोई सदेह नहीं है कि बापू यही कर भी रहे हैं।

मैं शीघ्र ही दिल्ली जानेवाला हू। मै यही सोच रहा कि वर्धा कब जाना ठीक रहेगा। अथवा क्या बापू अक्तूबर के प्रथम सप्ताह मे दिल्ली आ रहे हैं?

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेगाव

१४३

वर्धा जाते हुए
१८ सितम्बर १९३९

प्रिय घनश्यामदासजी

कार्यकारिणी का प्रस्ताव जिन परिस्थितियो मे पारित हुआ मैं आपको बता चुका हू। उसके बाद बापू का वक्तव्य प्रकाशित हुआ और उसने स्थिति को बढिया ढग से सभाला। कार्यकारिणी के प्रस्ताव का इससे अच्छा भाष्य सम्भव नही था और यदि आपने इस वक्तव्य को हमारे उन लदन स्थित मित्रो को अभी तक नही भेजा है तो अब भेजिए। स्टेटसमैन का लेख इतना उत्तम है कि पढकर आश्चर्य होता है। अच्छा हो कि इसकी कटिंग भी वहा भेजें। मेरे विचार मे युद्ध मे रूस के आ कूदने से हमारा रास्ता और भी आसान हो गया है और अब ब्रिटेन के लिए भी काग्रेस के मैत्रीपूर्ण सकेत का समुचित उत्तर देना सुगमतर हो जायगा। और यदि कही जापान भी रूस से जा मिला तो हमसे भी युद्धाग्नि की लपटो मे झुलसने की अपेक्षा की जायगी। हमारे भाग्य मे क्या बदा है भगवान

ढग अच्छे प्रतीत नही होते, पर सम्भव है उसने पामूल की चर्चा राजाजी से विस्तार के साथ की हो।

सप्रेम
महादेव

१४६

सेगाव आश्रम
(वर्धा होकर)
१५ अक्तूबर, १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपको ताजा घटनाओ की जानकारी दू। राजाजी यहा अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बैठक मे भाग लेने आये थे। उन्हे वाइसराय ने बुला भेजा था, बल्कि यह कहना ठीक होगा कि मद्रास के गवर्नर ने उनसे दिल्ली जाकर वाइसराय से भेंट करने को कहा था। राजाजी को झिझक थी क्योकि उन्हे आशका थी कि लोग बाग तरह-तरह की अटकलें लगायेंगे साथ ही, उन्हें यह भी लग रहा था कि उनका वाइसराय से मिलना जवाहरलाल तथा अन्य लोगो का शायद अच्छा न लगे। पर बापू का इस बारे मे स्पष्ट मत था कि वह जरूर जायें इसलिए और सब भी सहमत हो गये। अब सुनने मे आया है कि राजाजी वाइसराय से दो बार मिले, और यह सब अकारण नही हुआ होगा। राजाजी आज सध्या को यहा वापस आ रहे हैं उनसे सारी यात्रा का पता लग ही जायेगा। इस बीच आपको वह सब बता दू, जो देवदास और लेथवेट के बीच गुजरा। देवदास उसे गत ११ तारीख को मेरा पत्र देने गये थे। वह पत्र मैंने बापू के निर्देश से लिखा था और उसमे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बैठक और उसके दौरान जवाहरलाल के दृष्टिकोण का ब्योरा था। मेरा पत्र पढने के बाद लेथवेट ने कहा, 'हा नेहरू ने जैसा कुछ कहा उससे मुझे भी खुशी हुई थी। लोक रुचि के प्रतिकूल बात कहना एक दुरूह कार्य है। फिर दोनो के बीच निम्न प्रकार चर्चा हुई

देवदास उनकी (अर्थात जवाहरलाल की) सबसे बडी विशेषता यही है कि वे स्पष्ट बात कहते है। छल-कपट उनके मानस मे नही है। यही कारण है कि उन्होने अपने मन की बात कह डाली।

राय की विज्ञप्ति के उत्तर म वक्तव्य तयार करना था, और उपर स शिक्षा सम्बन्धी वर्धा-योजना का अध्ययन करने के निमित्त जो ७० प्रतिनिधि आ पहुचे थे उनसे बातचीत करनी थी। इस समय बापू न चहलकदमी करना ब द कर रखा है और अधिकाश समय सोन म ही बिताते हैं। परसा रात बापू पूरे १० घण्टे सोये एक घण्टा मालिश करात समय सोय और तीसरे पहर के समय आध घण्टा सोन रहे। इस प्रकार कुल मिलाकर वह २४ घण्टे म १२ घण्टे सोय। नींद निर्विघ्न आती है। पावा की सूजन कम होने लगी है। पर सूजन पूरी तरह उतरन के बाद भी उ हें लम्बे अर्से तक विश्राम लेना होगा। सूजन केवल इस बात की निशानी है कि घोडे को उसकी सहन करने की सामर्थ्य से अधिक चाबुक लगाये गये है। कल दिन भर उनका रक्तचाप १८६/१०४ रहा। आज दोपहर की नींद लेने क बाद रक्तचाप १७२/१०४ निकला। यदि सावधानी स काम लिया गया तो सूजन एक हफ्ते से भी कम म पूरी तरह उतर जायगी। मूत्र म एल्ब्युमिन बिलकुल नहीं है। यद्यपि हृदय की धडकन धीमी है और हृदय की मासपेशी थ्का न है हृदय का फलना ब द हो गया है। य सारे लक्षण अच्छे हैं पर बापू तथा अ य सभी का सतक रहना जरूरी है।

भवदीया
सुशीला

१४५

मेगाव
१५ अक्तूबर १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

क्या आप कृपा करक और शीघ्र ही यह बतायेंगे कि बमा जान क लिए पासपोट की जरूरत पडती है क्या? मैं तो नहीं समझता कि पासपोट की जरूरत पडेगी पर आप ठीक ठीक पता लगाकर सूचना दीजिए क्योंकि पृथ्वीसिह अपन भाइयो से मिलने बमा जाना चाहत हैं। शायद गगनविहारी मेहता आपको ठीक ठीक सूचना दे सकेंग।

देवदास के साथ लेथवेट की बातचीत का आपने क्या अथ निकाला? रग

ढग अच्छे प्रतीत नहीं होते, पर सम्भव है, उसने फामूले की चर्चा राजाजी से विस्तार के साथ की हो।

सप्रेम,
महादेव

१४६

सेगाव आश्रम
(वर्धा होकर)
१५ अक्तूबर १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपको ताजा घटनाओं की जानकारी दू। राजाजी यहा अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बैठक म भाग लेने आये थे। उन्हें वाइसराय ने बुला भेजा था बल्कि यह कहना ठीक होगा कि मद्रास के गवनर ने उनसे दिल्ली जाकर वाइसराय से भेंट करने को कहा था। राजाजी का झिझक थी क्योंकि उन्हें आशका थी कि लोग-बाग तरह-तरह की अटकल लगायेंगे साथ ही, उन्हें यह भी लग रहा था कि उनका वाइसराय स मिलना जवाहरलाल तथा अन्य लोगों को शायद अच्छा न लगे। पर बापू का इस बारे मे स्पष्ट मत था कि वह जरूर जायें इसलिए और सब भी सहमत हो गये। अब सुनने मे आया है कि राजाजी वाइसराय स दो बार मिले और यह सब अकारण नहीं हुआ होगा। राजाजी आज संध्या को यहा वापस आ रहे हैं उनसे सारी बातों का पता लग ही जायेगा। इस बीच आपको वह सब बता दू, जो देवदास और लेथवेट के बीच गुजरा। देवदास उसे गत ११ तारीख को मेरा पत्र देने गये थ। वह पत्र मैंने बापू के निर्देश स लिखा था और उसमे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बैठक और उसके दौरान जवाहरलाल के दृष्टिकोण का ब्यौरा था। मेरा पत्र पढने के बाद लेथवेट ने कहा 'हा, नेहरू ने जैसा कुछ कहा उससे मुझे भी खुशी हुई थी। लोक रुचि के प्रतिकूल बात कहना एक दुरूह काय है। फिर दोनों के बीच निम्न प्रकार चर्चा हुई

देवदास उनकी (अर्थात जवाहरलाल की) सबसे बडी विशेषता यही है कि वे दोटूक बात कहते हैं। छल कपट उनके मानस म नहीं है। यही कारण है कि उन्होंने अपने मन की बात कह डाली।

लेथवेट मैं यह पत्र महामहिम को जरूर दिखाऊँगा। वास्तव में, गांधीजी जो पत्र भेजते हैं मैं वे सब महामहिम को दिखा देता हूँ।

घनश्यामदास वास्तव में मेरे पिताजी ने महामहिम को खुद लिखवाया था, पर यह पत्र भी ऐसा ही है मानो पिताजी ने खुद लिखा हो। उनके पास समय का अभाव तो था ही, वे बाहर गए हुए भी थे। फिर मुझको आशा है कि इस सबका परिणाम अच्छा ही निकलेगा।

लेथवेट आप जानते ही हैं कि कठिनाइयाँ हैं और अब मैं कहता हूँ कि कठिनाइयाँ हैं तो वस्तुस्थिति का खाका पेश कर रहा हूँ। आप इस अनिश्चित समय में यह सोचते हैं कि अल्पसंख्यक जातियों और वर्गों में बेचैनी है और वे संदेह की भावना से भरे हुए हैं। एक ओर कांग्रेस कहती है कि हम मंथर गति से चल रहे हैं और काफी दूर तक नहीं गये हैं, दूसरी ओर अल्पसंख्यक जातियों और वर्गों का कहना है कि हम बहुत तेजी से बहुत आगे बढ़ गये हैं। मैं अन्य सम्प्रदायों और वर्गों के कथन को महत्त्व नहीं देता पर कांग्रेस और मुसलमान—दोनों का ही महत्त्व है। और आप हिन्दू महासभा तथा डॉ० अम्बेडकर की भी उपेक्षा नहीं कर सकते।

घनश्यामदास इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि कुछ वर्गों में असंतोष की भावना काम कर रही है। पर जो व्यापक विश्वास है वह यह है कि इन वर्गों के हितों का बलिदान किये बिना भी कुछ-न-कुछ किया जा सकता है। ऐसा करना बहुत जरूरी है और इसमें गोलमोल से काम लेने की भी कोई बात नहीं है। आप स्वयं ही कह चुके हैं कि कांग्रेस किस तरह से आपकी सहायता करती है।

लेथवेट मैं जानता हूँ कि यह सत्य है और मैं यह भी जानता हूँ कि आम तौर से कुछ किया भी जा सकता है और सारे मामले की सुन्दर व्याख्या की जा सकती है। पर यह ईमानदारी नहीं होगी। ऐसा करना दुनिया की आँखों में धूल डालना भर होगा।

घनश्यामदास सरकार से ऐसा कोई काम करने को कौन कहता था, जो ईमानदारी के विपरीत हो, सवाल ही नहीं उठता। पर हमारा कहना तो यही है कि अल्पसंख्यक जातियों और वर्गों की समस्या ही एकमात्र समस्या नहीं है। साम्प्रदायिक समस्या के महत्त्व की बात स्वीकार करने के बाद भी कुछ ऐसी समस्याएँ बाकी रह जाती हैं जिनका सीधा सम्बन्ध स्वयं अंग्रेजों से है। कुछ ऐसी बातें हैं जिनके बारे में अंग्रेजों का निर्णय

करना होगा। उन्हें एक न एक दिन इस समस्या का सामना करना ही होगा। उस मामले से आज भी निपटा जा सकता है। ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए कि युद्ध की समाप्ति के बाद, और जैसी कि उम्मीद है प्रजातन्त्र की विजय होगी, किसी तरह का पछतावा करने की नौबत आये।

लथवेट हां, लेकिन मैं पुनः अपनी पहलीवाली बात की तरफ आपका ध्यान खींचना चाहता हूं। मेरा मतलब मुसलमानों और अन्य अल्पसंख्यक वर्गों से है, वे कांग्रेस के साथ सहमत नहीं हैं।

देवदास मैं समझता हूं कि यह प्रायः स्पष्ट है कि मुसलमानों के खिलाफ कांग्रेस की कोई दुरभिसंधि नहीं है। कांग्रेस उन्हें संतुष्ट करने के लिए सब कुछ करने को इच्छुक है। यदि महामहिम का इस बारे में समाधान हो जाये तो फिर उनका मार्ग स्पष्ट हो जाता है। कांग्रेस की किसी के खिलाफ दुरभिसंधि नहीं है।

लथवेट आप इस विषय में खातिर जमा रहिए कि जहां तक महामहिम का सम्बन्ध है, उनका मन संदेह की भावना से सर्वथा मुक्त है। उन्होंने वस्तुस्थिति को अच्छी तरह से समझ लिया है। कांग्रेसियों का मन साफ है और उनके मन में कोई मैल नहीं है, इस तथ्य से वस्तुस्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता, क्योंकि अल्पसंख्यकों के मन में संदेह बना हुआ है। पर महामहिम के सामने सारी स्थिति स्पष्ट है और उन्हें मिस्टर गांधी से भरपूर सहायता मिली है। दोनों एक-दूसरे को पूर्ण रूप से समझते हैं।

देवदास मैं जानता हूं कि मेरे पिताजी वाइसराय के सम्पर्क में आने के बाद से निश्चिन्त हो गये हैं। अब समस्या का समाधान स्वयं महामहिम के हाथ में है। मैं तो नहीं समझता कि लंदन स्वेच्छा से कुछ कर सकेगा।

लथवेट हां, यह बात भी है। लंदन को भी ध्यान में रखना होगा, पर जो-कुछ भी हो, उससे महामहिम और मिस्टर गांधी के एक दूसरे को समझ लेने की भावनाओं में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा।

आपका,
महादेव

पुनश्च

मैं यह पत्र बाबला को बोलता गया और उसने सीधा टाइप किया। एक मूखता भर प्रसग में बापू मुझे कलकत्ता भेजना चाहते हैं। जाना हुआ तो तार दूगा।

१४७

कलकत्ता
१७ अक्तूबर १६३६

प्रिय महादवभाइ

मैंने तुम्हें यह नही लिखा कि मरी सर मारिस ग्वायर के साथ बातचीत हुई थी। मैंने उनक यहा चाय पी और बातचीत कोई डेढ घण्ट तक चली। मैंन समझा कि हिंदू मुस्लिम समस्या और कई एक गौण समस्याए कठिनाइया पदा कर रही हैं। फिर भी मेरी यह धारणा है कि कुछ-न कुछ किया जाना सम्भव ह ौर शायद किया भी जाय। पर सारा प्रश्न इस बात का है कि यह कुछ न कुछ जवाहर लालजी को सतुष्ट कर पायगा क्या ? मुझे पूरी आशा है कि यदि बापू का सारा फामूला मालूम हो जाय और वह सरकार की स्थिति का जान सकें तो वह उस फामूल म कुछ इस ढग का परिवतन परिवद्धन कर सकेंगे जो काग्रेस के दक्षिण पक्षियो का ग्राह्य हो और शायद एसा ही होनवाला भी है।

राजाजी निराशावाद से ओतप्रात है। पर यदि वह १०० प्रतिशत निराशा वादी हैं तो उसम से कुछ कम करके उसका मूल्याकन ७५ प्रतिशत करना ठीक रहेगा। मेरी धारणा है कि वह स्वभाव से ही निराशावादी ह। पर साथ ही यह भी मानना होगा कि कठिनाइया हैं।

आज प्रात काल श्री एच० एम० बास ने फोन करक जानना चाहा कि क्या तुम आनेवाले हो। मैंने कहा तुम्हार आने के बार म मैं कुछ नही जानता, न यही कि तुम क्यो आ रहे हो, पर अब तुम्हार पत्र स लगता है कि तुम आ भी सकते हो। तुम्हारा आना एक मुख्य के काम से होगा या किन्ही के काम से इसका निणय तो तुम ही करोगे।

मैं यहा काइ एक सप्ताह और हू, पर जिस घडी बापू दिल्ली के लिए रवाना होग मैं भी चल पडूगा।

लयवेट का एक पत्र बिडला हाउस म तब पहुचा जब मैं वहा से चल चुका था। उसन पत्र म कहा था कि उसके लिए महामहिम के साथ मेरी मुलाकात की तिथि अगले हफ्ते (अर्थात इस हफ्ते) के किसी दिन निश्चित करना सम्भव होगा। मैंन उत्तर म कहा है कि महामहिम को इतनी अधिक मुलाकातें करनी पड रही है कि मैं उनकी सख्या म वद्धि करना नही चाहता। पर यदि वह समझें कि मैं किसी काम आ सकूगा, तो तार द्वारा सूचित करें। मैं तो नही समझता कि मेरी जरूरत होगी।

सप्रेम
घनश्यामदास

१४८

कलकत्ता
१८ अक्तूबर, १९३९

प्रिय महादेवभाइ

आखिर वक्तव्य प्रकाशित हो ही गया और उस पढकर निराशा हुई। मेरी तो यही धारणा है कि हम लोग इसी योग्य हैं। जब स्वय हमम ही इतनी फूट पडी हुइ है और हमने ही गडबड घोटाला कर रखा है, तो इसम वाइसराय का क्या दोप है कि उन्होंने हम टका सा जवाब दे दिया।

इस वक्तव्य को नेकनीयती से भरा हुआ और बदनीयती से परिपूर्ण—दोनो ही रूपो मे ग्रहण किया जा सकता है। दक्तास न पान पर बात की, तो मुझे बताया कि उन्हें वक्तव्य बुरा नही लगा, कुल मिलाकर अच्छा ही जचा। पर सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि उसका किस रूप म अध्ययन किया जाय। हम अपनी फूट को ध्यान से देखते हैं तो यही लगता है कि इसस बहतर चीज के हकदार नही हैं। पर यदि दूसरी ओर हम ब्रिटिश उदारता पर ही निगाह डालें, और उनकी त्रुटियो की ओर ध्यान न दें तो हम दूसरे ही नतीजे पर पहुचते हैं। पर मैं यही सोच रहा हू कि क्या बापू के लिए इस वक्तव्य को आधार के रूप म ग्रहण कर उस पर कोई रचनात्मक ढाचा तयार करना सम्भव होगा या नही। यह

जाहिर है कि बापू को फिर आमंत्रित किया जायगा और हमें आशा करनी चाहिए कि परिणाम अच्छा ही होगा। शायद अब कांग्रेसी सरकारें इस्तीफा दे देंगी।

तुम्हारा १५ तारीख का पत्र अभी मिला। बर्मा जाने के लिए पासपोर्ट की जरूरत नहीं है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
सेगांव

१४६

सेगांव
२१-१०-३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका १८ तारीख का पत्र मिला। मुझे कार्यभार वहन करने की नौबत न आई—भगवान को धन्यवाद। बापू मुझे मेट्रोपोलिटन के पास इसलिए भेजना चाहते थे कि वह वाइसराय पर दबाव डालें। फिर उन्होंने यह तय किया कि उसका कोई नतीजा नहीं निकलेगा।

आपने बापू का कठोर वक्तव्य निश्चित आश्चर्य के साथ पढ़ा होगा—यदि मैं उसके प्रति आपकी प्रतिक्रिया का ठीक-ठीक अनुमान लगा पाऊं तो यही कहना होगा। पर अब अपने मन की बात कह डालने के सिवा बापू के पास और क्या उपाय रह गया था? बापू की धारणा है कि वाइसराय ने अपने वहां के कट्टर पंथियों का मत परिवर्तन करने की दिशा में कुछ करा धरा नहीं। उन्हें लगने लगा है कि उन्होंने वाइसराय को अपना दृष्टिकोण समझाने के जितने प्रयत्न किये सब व्यर्थ सिद्ध हुए। कल 'टाइम्स आफ इण्डिया' का आदमी 'मिस्टर गांधी के नाम एक अपील' का प्रूफ लेकर आया था जो पत्र में सम्पादकीय लेख के रूप में प्रकाशित होने को था। गोपाल स्वामी ने बताया कि लेख बम्बई के गवर्नर के साथ परामर्श करने के बाद लिखा गया था। बापू ने उनसे लम्बी-सी मुलाकात की। यह भेंट वार्ता मैं समझता हूं प्रेस एजेन्सी द्वारा मय तार द्वारा भेज दी गई होगी और जो यह पत्र पहुंचने के पहले ही आप पढ़ चुके होंगे। इस मुलाकात के दौरान बापू

न जा सुनार दिया है उसका समुचित उत्तर देना सरकार के हाथ मे है। यह बापू क रचनामक प्रयत्नो की उच्च कोटि का नमूना है जो कि तीथल म दी गई मुलाकात जमा महत्त्वपूण सिद्ध हो सकता है। पर कल मुशी ने दिल्ली स फोन करके मुझे बताया कि जब जगदीश ने वाइसराय को यह सुझाव दिया कि वह बापू स मुलाकात करें, तो वाइसराय न उत्तर मे कहा "कोई लाभ नही होगा। उन्ह यहा घसीटकर लाने की क्या जरूरत ह जब मैं इसस अधिक कुछ देन म असमथ हू ?

बस, आज इतना ही बताना है।

सप्रेम,
महादेव

१५०

कलकत्ता
२३ अक्तूबर १६३६

प्रिय महादेवभाई

मेरी राय म कायकारिणी का प्रस्ताव अत्यन्त मर्यादापूण रहा। अब वाइसराय क्या करेंगे, सो तो मैं नही जानता। पर यह विश्वास करने को तबीयत नही करती कि पिछले दो वर्षों म जो कुछ किया गया ह उस पर इस तरह अचानक पानी फेर दिया जायगा। सब कुछ इस पर निभर करता है कि समस्या के साथ किस ढग स निबटा जाता है। मुझे आशा है कि हम अत मे सफल होंगे। पर यह आशा मात्र है। दरअसल म तो स्थिति घोर निराशापूण लगती है।

आशा है बापू का स्वास्थ्य ठीक रहता होगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेगाव

१५१

२६ नवम्बर, १६३६

प्रिय महादेवभाई

इस पत्र के साथ एक कटिंग भेज रहा हूं। इसमें जवाहरलालजी की स्पीच का उल्लेख है जिससे यहां कुछ चीज पैदा हो गई है। उन्होंने वाइसराय के इस कथन की कि कुछ बड़े बड़े पद दिये जायगे और सरकार उत्तर का सामना करने को तैयार है जिस ढंग से चर्चा की है उससे हम विशेष सहायता नहीं मिलनेवाली।

आज मैंने लेथवेट से देर तक बातचीत की। वह उसका विवरण वाइसराय को अवश्य देगा। उसके बाद यदि वाइसराय ने चाहा तो मैं उनसे भी मिलूंगा। यदि कोई लिखने लायक खास बात हुई तो तुम्हें फिर लिखूंगा।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१५२

३० नवम्बर, १६३६

प्रिय महादेवभाई

अभी तक मेरी किसी शीर्षस्थ व्यक्ति से भेंट नहीं हो पाई पर इस समय मुझे स्थिति कुछ इस प्रकार मालूम होती है

१ वाइसराय मतभेद दूर करने के बहुत इच्छुक हैं और चाहते हैं कि कांग्रेस पुन पद ग्रहण करे पर वह ऐसी कोई घोषणा करने की अनुमति नहीं है जो मुसलमानों को नाराज कर दे। हमारे त्याग पत्र देने के बाद से पंजाब और बंगाल के मुस्लिम लीग ने बहुत अवज्ञापूर्ण रवैया अख्तियार कर रखा है। वाणिज्य मंत्री रामस्वामी मुदलियार हाल ही में कलकत्ता गये थे। उनसे यूरोपीय जूट मिल

मालिकों ने डेपुटेशन ले जाकर भेंट की। उन्होंने इस बात की शिकायत की कि मन्त्रियों द्वारा निरंतर शोषण के फलस्वरूप व्यापार बहुत डावाडोल हो गया है। वाणिज्य मन्त्री उन्हें किसी प्रकार की सांत्वना देने में असमर्थ था। पंजाब और बंगाल के मंत्रिमंडलों ने भारत सरकार को बता दिया है कि मुस्लिम लीग के निर्देश के पालनस्वरूप वे अपने त्याग पत्र अपनी जेबों में तैयार रखे हुए हैं। कांग्रेसी मंत्रिमंडलों के त्याग पत्र के कारण यहां सरकार उन्हें नाराज करने को तैयार नहीं है।

२ ब्रिटेन की कैबिनेट की यह धारणा लगती है कि वाइसराय ने भारतीय नरेशों को नाराज कर ही रखा है अब वह मुसलमानों को नाराज करने का नया जोखिम तब तक उठाने को तैयार नहीं है जब तक कांग्रेस की सीमा के भीतर रह कर संतुष्ट करने की गारंटी न रहे। वैसी स्थिति में सरकार ऐसा कोई बड़ा कदम नहीं उठायेगी जिससे मुसलमान उसके खिलाफ हो जायें। सरकार इस बात को नहीं भुला सकती है कि आसपास के देशों की सारी शक्तियां मुसलमान शक्तियां हैं, और ब्रिटेन इस समय लड़ाई में फंसा हुआ है ही।

३ मुसलमान हम लोगों के साथ किसी भी स्थिति में तब तक कोई समझौता नहीं करेंगे, जब तक उन्हें प्रशासनिक मामलों में किसी भी कदम को रद्द करने का अधिकार न दे दिया जाये। जिन्ना तथा अन्य लोगों की शिकायत है कि जवाहरलाल ने उनके साथ समझौते की बात चलाने की कभी कोशिश नहीं की। अब उन लोगों ने यह रुख अपनाया है कि यदि जवाहरलाल जिन्ना से मिलना चाहें तो व्यक्तिगत रूप से भले ही मिल सकते हैं पर यदि हम लोग सचमुच समझौते के इच्छुक हैं, तो कांग्रेस औपचारिक रूप से मुस्लिम लीग को यह लिखकर स्वीकार करे कि भारतीय मुसलमानों की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था मुस्लिम लीग ही है। समझौते का आधार ५० ४० हो गया अतः समझौते की कोई सम्भावना नहीं है। सर जगदीशप्रसाद और रामस्वामी जैसे लोगों की धारणा है कि यदि हम लोग पद ग्रहण किये रहते तो मुसलमान लोग हमारे साथ समझौता करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक तत्पर दिखाई देते। अब जहां तक मुसलमानों का संबंध है समझौते की कोई आशा नहीं है। इन लोगों को अब भी यही आशा है कि किसी प्रकार गांधीजी मतभेद दूर कर सकेंगे और प्रांतों में पुनः कांग्रेसी मंत्रिमंडल बन जायेंगे। यहां सभी उच्च पदस्थ हिंदुओं का विश्वास है कि जब तक हम पुनः सत्तारूढ़ नहीं होंगे मुसलमान लोग समझौता नहीं करेंगे। सर जगदीशप्रसाद की यह निश्चित धारणा है कि यदि हम लोग वाइसराय की प्रबंधकारिणी परिषद् में शरीक हो जायें, तो भारत के आठ प्रांतों में और केंद्र में एक प्रकार से कांग्रेसी

सरकारें हो जायेंगी। मैं तो समझता हूँ कि उनके इस कथन में कुछ सार है। मैं यह सब तुम्हें केवल यह बताने के लिए लिख रहा हूँ कि हवा का रुख किधर है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१५३

८ दिसम्बर १९३६

प्रिय महादेवभाई,

यहां कुछ ऐसी धारणा व्याप्त है—वाइसराय का उससे कोई प्रत्यक्ष लगाव भले ही न हो उनका रुख हमारे प्रतिकूल तो है ही—कि दक्षिणपंथी और वामपंथी मिलकर यह खेल खेल रहे हैं। दक्षिणपंथी पहुंचते हैं और किसी-न-किसी प्रकार के मंत्री सूचक संकेत की याचना करते हैं और जब ऐसा कोई संकेत किया जाता है तो उसे ठुकरा दिया जाता है। इस बात का हृदयंगम नहीं किया जा रहा है कि सारा दोष सम्राट की सरकार का है जो आये दिन घोषणाएं करती है पर यह पता लगाने का यत्न नहीं करती कि उसकी घोषणा स्वीकारी जायगी या नहीं। पर वस्तुस्थिति यह है कि वाइसराय सम्राट की सरकार की निगाह में गिर गये हैं। उन्हें दो बार मुंह की खानी पड़ी और अब वह कोई नयी घोषणा करते हुए घबराते हैं। औपनिवेशिक दर्जे की परिभाषावाला बापू का 'हरिजन' में प्रकाशित लेख भी यहां गलत समझा गया यद्यपि वह गलत नहीं समझा जाना चाहिए था। संयुक्त प्रांत के सरकारी अमले की जवाहरलालजी ने जो आलोचना की है उससे अमले में काफी चिड़चिड़ाहट फैल गई है। एक तरह से वाइसराय ने अपनी पराजय के आगे घुटने टेक दिये हैं और ऐसा लगता है कि प्रतिक्रियावादी तत्वों की बन आई है।

वाइसराय ने बापू के लेख की आलोचना करते हुए कहा कि इस प्रकार उनके हाथों को कमजोर किया जा रहा है। वह उदास से थे और उनकी धारणा है कि अब कुछ करना शेष नहीं रह गया है, क्योंकि वह कुछ भी करेंगे कांग्रेस उसे

अवश्य नामजूर कर देगी। उनके कथनानुसार वह अपनी हार मानने को कुछ इस लिए बाध्य नही हुए है कि वह कुछ करना नही चाहते बल्कि इसलिए कि कांग्रेस का समाधान एक असम्भव बात है। और मुसलमानो का सवाल जो कठिनाई है वह भी सचमुच की कठिनाई है। इसलिए मैं आज लेथवेट से फिर मिला और उनके साथ देर तक बातें की। इस बातचीत का यह तो परिणाम हुआ ही कि उसने वस्तुस्थिति के दूसरे पहलू पर भी नजर दौड़ाई। मैंने कहा कि वह सारी चीजो को एक गलत दृष्टिकोण से देख रहा है, और ऐसी स्थिति की कल्पना कर रहा है जिसका अस्तित्व ही नही है। इस बातचीत का ठोस परिणाम यह हुआ है कि यदि राजाजी ने मेरी सहायता की तो मैं और राजाजी एक फार्मूला तयार करेंगे, जिसे मैं अपनी जिम्मेदारी पर पेश करूगा और लेथवेट भी मेरे इस काम में फार्मूले का रचनात्मक विश्लेषण करके मसौदे मे आवश्यक हेर फेर सुझायगा। यदि हम दोनो किसी सहमति पर पहुच पाये तो मेरा अगला कदम यह होगा कि उस फार्मूले का मसौदा बापू को दिखाऊ। यदि जरूरत हुई तो तुम्हे कलकत्ता आना होगा क्योकि वर्धा जाने और वहा से वापस लौटने मे काफी समय बर्बाद होगा। कम से कम प्रारम्भ मे तो ऐसा होगा ही।

मैं तुमसे फोन पर इस बारे मे बात कर ही चुका हू। सौभाग्य से कल राजाजी भी यहा पहुच रहे हैं। उनका आगमन बड़ा सामयिक होगा।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१५४

वर्धा जाते हुए मार्ग मे
२५ १२ १६३६

प्रिय घनश्यामदासजी

मैं पिछले दो हफ्तो से बराबर एक स्थान से दूसरे स्थान को आता जाता रहा हू और मुझे घर की कोई खोज खबर नही है। मैं मद्रास मे जिस किसी से मिला उसने यही कहा कि वाइसराय बापू से बम्बई मे भेंट करेंगे। लेकिन मैं नही जानता

कि इसमें कितनी सचाई है, पर यदि इस खबर में कुछ सार है तो आपको अवश्य जानकारी होगी। क्या देवदास अभी वहीं हैं ?

जमनादास गांधी ने जो वच्छराज कम्पनी में था अब शुगर सिंडीकेट द्वारा विज्ञापित स्थान के लिए अर्जी दी है। वह मगनलाल गांधी का भाई है, योग्य है और ईमानदार है। यदि उम्मीदवार के चुनाव में आपको बोलने का अधिकार हो तो मेरा आग्रह है कि उसके प्रार्थना पत्र पर विचार किया जाय। देवदास आपको उसके बारे में कुछ अधिक बता सकेंगे।

आपका
महादेव

पुनश्च

हमारे मिलने की फिलहाल कोई सम्भावना है क्या ?

१५५

२८ दिसम्बर १९३९

प्रिय महादेवभाई

मैं तुम्हें फोन पर यह बताना भूल गया कि वाइसराय भवन में श्री माउथवे से अचानक मिलना हो गया। उन्होंने तुम्हें याद किया है। ऐसा मालूम पड़ता है कि तुम्हारी उनके साथ प्रगाढ़ मैत्री हो गयी है। उन्होंने कहा कि जब अगली बार जब कभी तुम दिल्ली आओ तो मैं उनकी और तुम्हारी भेंट का बन्दोबस्त कर दूं। मैंने उन्हें बता दिया है कि बापू जनवरी में दिल्ली आनेवाले हैं तब तुम भी उनके साथ आओगे।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१५६

२८ दिसम्बर १९३९

प्रिय महादेवभाई

जमनादास गांधी के बारे में व्रजमोहन से कहूंगा। इस मामले में उनकी कुछ चलती है। पर यदि मैं भूल नहीं कर रहा हूं तो मुझे याद पड़ता है कि मौलाना अबुल कलाम आजाद ने एक मुसलमान सज्जन की जोरदार सिफारिश की है और यदि व्रजमोहन कोई फैसला कर चुके हों तो कोई ताज्जुब नहीं।

तुमने पूछा है कि निकट भविष्य में हमारे मिलने की कोई सम्भावना है? मैं तो आशा लगाये बैठा हूं कि दिल्ली में भेंट होगी, पर यह तो समय ही बताएगा कि यह आशा साकार होगी या नहीं। मैं लाउथियन से तो मिला ही, साथ ही वाइसराय के परिवार के अन्य सदस्यों से भी मेरी भेंट हुई। मुझे चारों ओर से बताया गया है कि वाइसराय बड़े उदास हैं, क्योंकि उन्हें बड़ी निराशा हुई है। लेडी लिनलिथगो ने मुझे बताया कि वाइसराय यह सुस्वप्न देख रहे थे कि उनके शासन काल में एक नये भारत का जन्म होगा, और अभी तक उनकी यह आकांक्षा पूरी नहीं हुई है। यदि इस बार बापू दिल्ली पधारें तो धरना देकर बैठ जाएं और जब तक सारा मामला तय न हो जाए, टलने का नाम न लें। या तो पूरी तरह समझौता हो जाये या यदि न ही हो, तो असंदिग्ध 'न' हो। मुझे इस बाबत कोई सन्देह नहीं है कि जब उभय पक्ष समझौते की कामना करते हों, तो समझौता हो क्या नहीं सकता?

क्या मेरा यह कथन तुम्हें ठीक लगेगा कि अब तक हम जबानी जमा खर्च करते रहे, समझौते की शर्तों को हमने छुआ तक नहीं।

उस दिन डा० प्रफुल्ल घोष मिले थे। कह रहे थे कि बापू ने उनसे कहा है कि वह मुझसे कहें कि मैं उन्हें पिलानी जाने के उनके वचन से मुक्त कर दूं, क्योंकि वह चीज को 'पकाने' के लिए समय चाहते हैं। मैंने उनसे कह दिया कि जब बापू इतने महत्त्वपूर्ण कार्य में संलग्न हैं, तो मैं उनका समय कदापि नहीं लेना चाहूंगा।

सप्रेम,
घनश्यामदास

पुनश्च

यह पत्र लिख चुकने के बाद मैंने ब्रजमोहन से श्रीमान् गांधी के बारे में बात की। उनका कहना है कि जिन्हान उपयुक्त स्थान की पूर्ति करने का कोई इरादा नहीं है। तो भी उन्होंने जमनादास की सिफारिश करने का वचन दिया है।

१५७

२१ दिसम्बर १९३९

प्रिय महादेवभाई

आजकल मैं बड़े लोगों से मुलाकात कर रहा हूं क्योंकि इस समय कलकत्ता में कई बड़े बड़े लोग आये हुए हैं। किससे क्या-क्या बातें हुई इसका विवरण नहीं दे रहा हूं। पर इस वार्तालाप के फलस्वरूप मैंने निम्नलिखित मुद्दों का लगभग एक निश्चित धारणा बनाई है

१ वेस्टमिन्सटर विधान की शर्तों का औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्य है और युद्ध की समाप्ति के तुरन्त बाद उपलब्ध होगा।

२ युद्ध के दौरान औपनिवेशिक स्वराज्य का दर्जा अधिकाधिक मात्रा में अमल में लाया जायगा। ऐसा परामर्शदायिनी समिति के माध्यम से तथा वाइसराय की कैबिनेट के विस्तार के द्वारा किया जायगा और अन्त में उसकी पूर्ति हमारी सलाह के अनुसार आवश्यक संशोधन के बाद संघ की स्थापना करके होगी।

३ साम्प्रदायिक तनाव हमारे मार्ग का सबसे बड़ा रोड़ा है पर इस समस्या का हल युक्त प्रांत बिहार, बंगाल तथा पंजाब में मिली-जुली सरकारों की स्थापना के द्वारा सम्भव है। ऐसी मिली जुली सरकारों का आधार बहुमतवाली पार्टी की निर्वाचनकालीन घोषणा पर सहमति द्वारा निर्धारित होगा जिसके पश्चात विभिन्न सम्प्रदाय अपने अपने अंचलों से अपने प्रतिनिधि चुनेंगे। जहां अल्पसंख्यक सम्प्रदाय की जनसंख्या १० प्रतिशत से कम होगी वहां मिली जुली सरकार बनाने की जरूरत नहीं है। जब हम पंजाब और बंगाल में मुख्यतः अपने ही प्रोग्राम पर मिली जुली

सरकारें बनाने में समथ होंगे, तो हम युक्त प्रात और बिहार मे भी वैसा ही आचरण करने से नही हिचकना चाहिए। यदि ऐसी मिली-जुली सरकारें विशद विचार विमश के द्वारा सम्भव प्रतीत हो तो फिर आशका की कोई बात नही है।

४ युद्ध के दौरान भारतीय नरेशो की समस्या और देश की रक्षा की समस्या का समुचित हल खोज निकालना होगा। पर एक बार वाइसराय की कैबिनेट म जा पहुचने के बाद इन प्रश्नो का निबटारा सहज हो जायेगा क्योंकि तब वातावरण बिलकुल बदला हुआ रहेगा। और यदि युद्ध के दौरान ही इन दोनो प्रश्नो का निबटारा हमारे और सम्राट की सरकार के बीच सम्भव हो जाय तो हम व्यावहारिक रूप म एक पूण स्वतत्र राष्ट्र जसा आचरण करने लगेंगे।

क्या तुम्हारा यह खयाल नही है कि मैंन ऊपर जो चित्र उपस्थित किया है उसके द्वारा हमारी आकाक्षाओ की यथेष्ट मात्रा मे पूर्ति हो जाती है ? हम इतना ही पचा सकेंगे इसम अधिक नही। और क्या तुम्हारी भी यह धारणा नही है कि यह प्रणाली अपनाने से 'स्वराज्य' एक स्वयंसिद्ध विषय बन जायेगा ? और यदि एसी बात हो तो हम सघष का वातावरण क्यो पैदा करें ?

कुछ समय बाद बापू को दिल्ली आने का निमत्रण मिलेगा ऐसा लगता है। मैं समझता हू कि मैंने जो सकेत दिए हैं उन पर समझौता सम्भव है। बगाल म वैसी मिली जुली सरकार बनाने की इच्छा अभी से दिखाई देने लगी है। यदि बगाल मे एसी सरकार बनी तो वह अय प्रातो के लिए एक उदाहरण होगी जिसका वे अनुकरण करेंगे। पर चूकि काग्रेस पद त्याग चुकी है इसलिए ऐसा उदाहरण पश करने म दुविधा है। यदि बगाल म मिली-जुली सरकार बनी तो उसस सभी का एकसमान हित साधन होगा क्योंकि वर्तमान सरकार अकेले मुस्लिम लीग को छोडकर और सबको एकसमान अप्रिय है।

आशा है तुम यह पत्र बापू को पढकर सुना दोगे।

सप्रेम,
घनश्यामदास

१५८

मगनवाड़ी
वर्धा (मध्य प्रान्त)

प्रिय घनश्यामदासजी

आशा है आपको बापू के स्वास्थ्य-समाचार नियमित रूप मे मिलते रहते होंगे। आपका तार मिल गया था। उत्तर म बापू ने तार भिजवाया था कि डा० गिल्डर और डॉ० जीवराज ने परीक्षा कर ली है पर विधान को आने का अधिकार है जब चाहे आ जाए। आशा है आपको वह तार मिल गया होगा। उसके बाद से कल डा० क्लीमेंट चेस्टरमन एम० डी० एम० आर० सी० पी० ने बापू की परीक्षा की। उन्होंने उनकी हालत बम्बई के डॉक्टरो द्वारा बताई गई हालत से अधिक संतापजनक पायी। आज का बुलेटिन साथ जा रहा है। पर अस्थायी रूप से लक्षणो के शमन से सान्त्वना मिलनेवाली नही है क्योंकि यदि लक्षण इसी प्रकार उभरते दबते रहे तो इसका अर्थ यही है कि मूल व्याधि ज्यो की-त्यो है। स्वय बापू को यह सब जीवन के एक नय दौर का प्रारम्भ जैसा लगता है और वह उसके अनुरूप अपनी दैनिक जीवन चर्या म हेर फेर करने की बात सोच रहे हैं। उन्हे अपनी प्रवृत्ति म काट छाट करके सकल्प पर चलना होगा और मौन व्रत का पालन करना होगा। ऐसा करने म वह कहा तक सफल होंगे जिससे उनका स्वास्थ्य सुधर सके यह हम सब लोगो के सहयोग पर निर्भर करता है। मैं यह बात आपको इसलिए बता रहा हू कि आप जैसे सगठन शक्तिवाले पुरुष के लिए इस दिशा म ठोस कदम सुझाना सम्भव है।

आपने जिस पत्र की नकल मागी है वह राजकुमारी से प्राप्त होने की देर है तुरत भेज दूगा।

आपसे बात करते हुए लेथवेट ने वाइसराय के जिस पत्र का हवाला दिया था वह उस दिन यहा पहुच गया था। उत्तर मे बापू न लिखा था कि 'यदि पारस्परिक सम्पर्क के द्वारा मेरा अज्ञान दूर करना सम्भव हो तो मैं दिल्ली आने को तयार हूं भले ही वैसा करने मे मेरा स्वास्थ्य साथ न दे।"

बापू की यह धारणा उत्तरोत्तर दृढ होती जा रही है कि राजकोट जैसे मामले मे जहा नैतिक प्रश्न उठ खडा होता है झुकने का सवाल ही नही है। वहा ठाकुर

साहब की स्थिति ब्रिटिश सरकार की बदौलत कायम है। अत उन्होने जो वचन दिया था उसके पालन की जिम्मेदारी सरकार पर आती है। यदि हम रियासतो म गुडागर्दी खत्म न कर सके, तथा किसी नरेश को वचन भग करन से ऊपरी दबाव डलवाकर न रोक सके, तब ता भारतीय शासन विधान का किसी दिन अत ही हुआ समझना चाहिए। ऐसी स्थिति म हम निरुपाय होकर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे, और यह सब कुछ होता रहगा।

कल मैं काग्रेस के प्रधान को लेन स्टेशन पर गया था। वापसी के समय हम लोग जमनालालजी के बगले पर रुके। ठीक उसी समय राजकोट से ट्रक कॉल आई। बा और मणिबहन बोल रही थी। ठाकुर साहब ने कहलवाया था कि उन्हें खबर मिली है कि बापू सख्त बीमार हैं, इसलिए बा के वर्धा लौटने म कोई रुकावट नही है। बा और मणिबहन इस खबर की पुष्टि करना चाहती थी, इसीलिए शायद उन्ह राजकोट लाया गया था। मैंने उन्ह बापू के स्वास्थ्य के पूरे हालचाल बता दिये और सतर्क कर दिया कि वे इन चालबाजियो म न आवें। दोनो बडी प्रसन्न हुइ। बा ने कहा कि स्वय उनके बारे मे किसी को चिन्ता करने की जरूरत नही है।

भवदीय
प्यारेलाल

१५९

स्वास्थ्य बुलटिन

प्रकाशनाथ नही

कल स पावो की सूजन फिर कुछ बढ गई है। रक्तचाप भी ऊचा जा रहा है। पिछले तीन दिनो स बापू ने मौन-व्रत नही लिया है, और मुलाकातियो का जमघट है। शारीरिक विश्राम और स्वल्प भोजन जारी है। कल सध्या का रक्तचाप १६०/११० था। आज दोपहर की नीद के बाद १७६/१०४ पर आ गया।

सुशीला नयर

१६०

स्वास्थ्य बुलेटिन

सेगाव, वर्धा

बापू का स्वास्थ्य बराबर सुधर रहा है। आज पावों की सूजन बिलकुल उतर गई। आज उनका वजन १०७ पौंड था—अर्थात गत रविवार से सवा दो पौंड कम।

भोजन मे ८ औंस दूध ६ ७ सतरे ४ औंस ग्लूकोज ६ औंस हरी सब्जी।

शारीरिक विश्राम एक सप्ताह और जारी रहेगा और यदि सब-कुछ ठीक ठीक चलता रहा तो अगले हफ्ते से घूमना शुरू कर देंगे।

हृदय की ध्वनि पहले की अपेक्षा अधिक अच्छी है। आज प्रात काल ५ बजे रक्तचाप १८०/१०४ था।

सुशीला नयर

१६१

तार

सेगाव वर्धा

प्रमुख सदस्य
राजकोट

तार के लिए धन्यवाद। भूख हडताल के बारे म आप खामोश हैं। अत्याचार सम्बधी एक लम्बा तार फिर आया है। विश्वास न करन म कठिनाई हो रही है। ठाकुर साहब के वचन भग तथा दिना दिन बढ़ते हुए आतकवाद की कहानियो से मुझे बडी व्यथा हुई है और मैं स्वय सग्राम म कूद पडने को प्रेरित हो रहा हू। ठाकुर साहब अथवा परामर्शदायिनी समिति को व्यस्त करने का कोई इरादा नही

है। एक ऐसे वृद्ध पुरुष के चीत्कार की ओर ध्यान दीजिए, जो राजकोट का हितैषी होने का दावा करता है।

—गांधी

१६२

गांधीजी से "न्यूयार्क टाइम्स" के संवाददाता श्री स्टील की मुलाकात का अप्रकाशित विवरण

प्रश्न स्वतंत्रता से आपका क्या अभिप्राय है?

उत्तर स्वतंत्रता से मेरा आशय यही है कि भारत से ब्रिटिश राज्य पूर्णरूप से हट जाए। दोनों स्वतंत्र देशों के बीच साझेदारी का नाता कायम हो सकता है। यह नाता औपनिवेशिक तरीके से भिन्न ही हो यह भी कोई जरूरी नहीं है। हां, यह अवश्य है कि चूंकि भारत अपनी संस्कृति और अपने राजनैतिक गठन में भिन्न है, इसलिए इस नाते का औपनिवेशिक दर्जे का नाम देना शायद उचित नहीं होगा। पर यह नाम ब्रिटिश शासन व्यवस्था की तरह ही लचकदार है और यदि इस नाम को खींच-तानकर भारत की स्थिति के अनुकूल ढांचे में ढाला जा सके और भारत और इंग्लैंड के बीच सम्मानप्रद समझौता हो जाए तो मैं शब्दों को लेकर बखेड़ा खड़ा नहीं करूंगा। यदि उस सम्मानजनक समझौते को ब्रिटिश राजनेता औपनिवेशिक दर्जे के नाम से जानना चाहें, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

प्रश्न कांग्रेस में बोस और उनके दल जैसे तत्त्व भी मौजूद हैं जो ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर रहकर पूर्ण स्वतंत्रता की कामना करते हैं।

उत्तर यह केवल शब्दों के हेर फेर का प्रश्न है। हम भिन्न भिन्न शब्द भले ही काम में लायें पर हम सबका उद्देश्य एक ही है। यदि मैं सुभाष बाबू से पूछूं कि "साझेदारी सभान्य हो तो उसे आप किस नाम से पुकारेंगे?" तो वह उत्तर में कहेंगे कि अंग्रेजों में अपनी बात मनवाना उतना सहज नहीं है, जितना मैं समझे बैठा हूं। सुभाष बाबू इस विचार का प्रतिपादन करना चाहते हैं कि भारत के लिए एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपना

अस्तित्व बनाये रखना सम्भव है। इसके जवाब मे मैं कहूगा कि जिस भाषा का प्रयोग मैं करता हू वही मेरी अभिरुचि के अधिक अनुकूल सिद्ध होगी। वैसी भाषा के द्वारा मैं यह भी दिखा सकूगा कि मानव-स्वभाव सर्वत्र एकसमान है।

प्रश्न क्या इस समय संघ व्यवस्था के बारे में आपके और अधिकारियों के बीच कोई बातचीत चल रही है ?

उत्तर ऐसी कोई बात नहीं है। वर्तमान वाइसराय वैसी मिट्टी के नहीं बने हैं।

प्रश्न इससे आपका क्या अभिप्राय है ?

उत्तर वर्तमान वाइसराय निजी तौर से और गुप्त रूप से काम करने में विश्वास नहीं रखते। वह अपने सारे कार्ड मेज पर रख देंगे। कम से-कम मेरी यही धारणा है। मेरी धारणा है कि उनका यह विश्वास है कि संघ अस्तित्व में कदापि नहीं आयेगा क्योंकि कांग्रेस मुसलमान और राजा नवाब सब समान रूप से उसके खिलाफ हैं। मेरी धारणा बन रही है कि ब्रिटिश राजनेता संघ-व्यवस्था को भारत पर जबर्दस्ती नहीं लादेंगे। वे सभी दलों को सन्तुष्ट करना चाहेंगे। कम से-कम मुझे तो ऐसी ही आशा है। यदि संघ-व्यवस्था भारत पर लादी गयी तो यह एक अव्वल दर्जे की दुखद घटना होगी। संघीय ढांचे को विरोध और असंतोष के दौरान जन्म देना सम्भव नहीं है। यदि उसका स्वागत करने को कोई भी दल या वर्ग तैयार नहीं पाया जाएगा तो उसे बलात लादना परले सिरे का अविवेकपूर्ण कार्य होगा।

प्रश्न विकल्प क्या है ?

उत्तर या तो कोई ऐसी चीज दी जाए जिसे सब स्वीकार करें, या फिर वह तीनों दलों में से दो को स्वीकार्य हो।

प्रश्न पर आप मिस्टर बोस की इस बात से सहमत नहीं हैं कि चुनौती देना फलप्रद होगा ?

उत्तर मिस्टर बोस में और मुझमें इसी आधारभूत बात को लेकर मतभेद हैं। वैसे चुनौती देना कोई बुरी चीज नहीं है पर उसके पीछे प्रभावोत्पादक समर्थन रहना आवश्यक है। हिंसात्मक समर्थन के आज तो कोई लक्षण दिखाई नहीं दे रहे हैं। यदि सारे दल आपस में समझौता कर लें तो अहिंसात्मक शक्ति को प्रभावी बनाना कठिन नहीं होगा।

प्रश्न क्या हिंदू मुस्लिम प्रश्न को लेकर स्थिति दिन-ब-दिन खराब होती जा रही है ?

उत्तर लगता तो ऐसा ही है। पर मैं यह आशा लगाये बैठा हू कि एक न एक दिन दोनो को एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना है। हम एक सूत्र म बाध रखनेवाले हित इतने व्यापक और इतने अधिक हैं कि दोना जातिया के नेताओ को एक दूसरे के साथ समझौता करना ही होगा। हम एक दूसरे से इतने दूर हो गये प्रतीत होते हैं, उसका एकमात्र कारण यही है कि सबम जागृति की लहर आ गई है। इस जागति क परिणामस्वरूप दोनो की विभिन्नताआ, परस्पर विरोधी भावनाआ और ईर्ष्या को बल मिल रहा है और नित्य नयी मागें आ रही हैं जिससे पहले से अधिक खराब स्थिति हुई है। पर मेरी आशा तो यही है कि इस अराजकता के वातावरण से ही व्यवस्था का उदय होगा।

प्रश्न क्या मुस्लिम लीग और काग्रेस के मतभेदो की खाई का पाटा जाना सम्भव है?

उत्तर इन मतभेदो म कोई सार नही है।

प्रश्न आपकी यह धारणा है कि चुनौती देने का समय नही आया है तो अब आपकी राय म अगला कदम क्या होना चाहिए?

उत्तर हमारा अगला कदम यही होना चाहिए कि सबसे पहले हम अपना घर सभालें। जहा हमने यह किया और विभिन्न तत्त्वा को घेर-बटोरकर एक स्थान पर एकत्र किया कि हम चुनौती देने की स्थिति म आ जायेंगे।

प्रश्न आप अमरीका से किस ढग की सहायता की अपेक्षा रखते हैं?

उत्तर मैं अमरीका से बहुत कुछ आशा करता हू। यह बहुत कुछ ज्ञानयुक्त और मत्रीपूण आलोचना क रूप मे होना चाहिए यदि आलोचना ही करनी है तो फिलहाल तो मैं यही देख रहा हू कि या तो हमार प्रयत्ना की भूरि भूरि प्रशसा छपती है या फिर ज्ञान शून्य आलोचनाए प्रकाशित होती हैं। आपके देश के पत्रो न वहा की जनता का हमारे बार म ठीक ठीक जानकारी देने की दिशा म अब तक जो कुछ किया है, वह नही के बराबर है।

प्रश्न आपने व्यापर निणय का परित्याग कर दिया है। क्या इसका यह मतलब है कि अब उस दिशा म कोई प्रयत्न नहीं किया जायगा?

उत्तर इसके विपरीत, अपनी गलती का भार उतार फेंकने के बाद अब मैं एक पन्नी की स्वच्छदता की अनुभूति कर रहा हू। देशी रियासतो की स्थिति म सुधार लाने के लिए आवश्यक प्रयत्ना को अपने हाथ मे लेने म मैं पूण रूप से अपने को स्वतत्र पा रहा हू।

१६३

सेगाव, वर्धा

प्रिय अगाथा

आखिर तुम्हारे निजी पत्र की नकल मिल ही गई। इसमें सारी बात खुलासा कर दी गई है। तुम जब आने का सोचो आ सकती हो। घनश्यामदास को तुम्हारी समुद्र-यात्रा के बारे में लिख रहा हूं। तुम्हारे मित्रों ने तुम्हारे बारे में मुझे लिखा, इसके लिए तुम्हें उन पर कुपित कदापि नहीं होना चाहिए। पर अब जब कि तुमने मुझे यह आश्वासन दे दिया है कि तुम अपनी जरूरतों के बारे में मेरी जानकारी बनाये रखोगी तो मैं निश्चिन्त हो गया हूं। मैं तुम्हारी सारी जरूरतें पूरी न कर पाऊं यह दूसरी बात है।

वहां तुम लोगों को बड़ी चिन्ता के दौर से गुजरना पड़ रहा है। तुम्हारे सम्पर्कों का फल अच्छा ही निकलेगा इसमें संदेह की गुंजाइश नहीं है। वहां जो कुछ हो रहा है उसका विवरण भेजोगी ऐसी आशा है।

यहां संघ संबंधी बातचीत से मुझे कोई चिन्ता नहीं है। पर राजनैतिक बन्दियों की रिहाई के प्रश्न ने मुझे अवश्य व्यग्र कर रखा है। मैं अभी तक अधिकारियों को अपनी इस दलील की सार्थकता का विश्वास नहीं दिला सका हूं कि बन्दियों की रिहाई से शांति स्थापना के कार्य में सहायता मिलेगी। बन्दियों ने अहिंसा-व्रत-पालन करने की जो घोषणा की है उसे वैसा ही स्वीकारने की जरूरत नहीं है पर मैं उनकी घोषणा का उपयोग उनके वचन के रूप में अवश्य कर सकता हूं। अधिकारी लोग सहमे हुए हैं। पर मैं धैर्यपूर्वक अपने काम में लगा हुआ हूं और मैंने यह आशा नहीं गंवाई है कि उन्हें रिहा करने में बहुत अधिक देर नहीं लगाई जायेगी।

कार्यभार जितना कुछ है उसे देखते हुए मुझे स्वस्थ ही समझना चाहिए।

सस्नेह,
बापू